अक्तूबर / नवम्बर, 1973

★ समाज सन्देश ★

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र
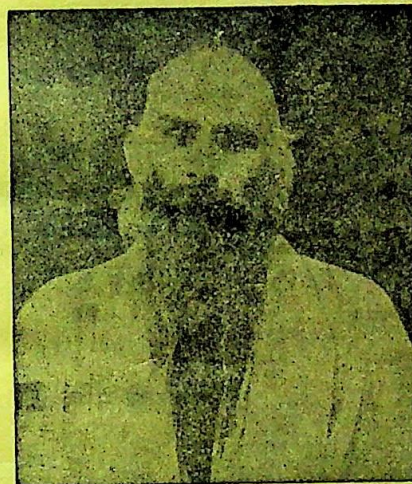
स्वर्गीय श्री भक्त फूलसिंह जी

यो रायो वनिर्महान् सुपारः सुन्वतः सखा।
तस्मा इन्द्राय गायत ॥ ऋ० १, ४, १० ॥

उसी इन्द्र की स्तुतियां गाओ जो धन की है खान बड़ी।
चरण बनी अवनी वन पर्वत शोभित जिसकी शरण पड़ी॥
निज भक्तों को पार लगाने वाला सच्चा मित्र वही।
धन बल विद्या बुद्धि विभाजक सब का है अधिराज वही॥

—निधि

मूल्य : एक प्रति 55 पैसे ● वार्षिक चन्दा 6 रुपये

❀ विषय-सूची ❀

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना ग्रावश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो ग्रपने लोकहितकारी विचार ग्रथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा ग्रखबार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार का पता—

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (रोहतक)

* ओ३म् *

व्यवस्थापक : श्री धर्मभानु

गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलां

तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

* समाज सन्देश *

प्रकाशन तिथि : २५ अक्तूबर, १९७३

सम्पादक : आचार्य हरिश्चन्द्र

सहायक सम्पादिका : आचार्या सुभाषिणी

वर्ष पन्द्रहवां | अक्तूबर/नवम्बर, १९७३ | अङ्क : सातवां/आठवां

सम्पादकीय

श्री माड़ू सिंह आयुर्वैदिक डिग्री कालेज

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

समाज सन्देश के पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि कन्या गुरुकुल में आयुर्वैदिक डिग्री कालेज की स्थापना हो गई है। हरियाणा आयुर्वैदिक तथा यूनानी फैकल्टी ने कालेज प्रवेश के लिए सशर्त मान्यता दे दी है। प्रथम वर्ष की छात्राओं का प्रवेश भी हो गया है।

यह कालेज केवल महिलाओं के लिए पहला कालेज है। दूसरी जगह सहशिक्षा है या महिलाओं को प्रवेश हो नहीं मिलता। इस कालेज की स्थापना पर पांच वर्ष में 20 लाख रुपया खर्च आयेगा।

जो फैकल्टी ने शर्त लगाई हैं वे निम्न हैं :—

1. कालेज भवन, 2. छात्रावास, 3. हस्पताल तथा 4. स्थिर निधि।

इन चारों शर्तों को पूरा करने में जनता के सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है। क्योंकि भवन, छात्रावास, हस्पताल तथा स्थिर निधि जनता के सहयोग के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। हमने डिग्री कालेज, ट्रेनिंग कालेज तथा गुरुकुल भैंसवाल में अलंकार कक्षाओं के संचालन तथा भवन निर्माण में आस-पास के इलाके से भरपूर धनराशि का संगह किया है। यह सब दानी महानुभावों की स्तुत्य उदारता से पूर्ण हुआ है।

यद्यपि ये योजना अभी व्यय साध्य लगती है। पर जहां दूसरी संस्थाओं से शिक्षा प्रसार तथा जीवन निर्वाह के साधन मिले वहां इस कालेज से जीवन निर्वाह में स्वातन्त्र्य तथा दीन हीन दुःखी रोगी लोगों की सेवा का क्षेत्र बढ़ेगा और आस-पास की जनता को उत्तम वैद्य सुलभ होंगे ही। यह आयुर्वेदिक कालेज पाश्चात्य, तथा भारतीय मिली-जुली चिकित्सा पद्धति की सिखलाई करेगा। हमारा यह भी प्रयत्न होगा कि यहां प्रशिक्षित महिलाएं नौकरी की दौड़ में सम्मिलित न होकर स्वावलम्बी बन अपना निर्वाह तथा लोक सेवा करें। अभी तक गांवों में प्राथमिक चिकित्सा के साधन यथा चिकित्सक उपलब्ध नहीं हैं। आशा है कन्या गुरुकुल आयुर्वेदिक डिग्री कालेज इस कमी को पूर्ण करने में पग बढ़ा कर गांव के साधन हीन लोगों को सुन्दर सस्ती चिकित्सा उपलब्ध करा सकेगा।

कन्या गुरुकुल खानपुर में जहां हमने अन्य शिक्षण संस्थायें चालू कीं, वहां आयुर्वेदिक कालेज की नितान्त आवश्यकता थी। क्योंकि महिलाओं की बहुउद्देशीय शिक्षण संस्था में चिकित्सा की शिक्षा का प्रबन्ध न होना हमें खटक रहा था। तथा हम उपयुक्त समय की तलाश में थे। क्योंकि कन्याओं की सर्वांगीण शिक्षा देने वाली संस्था स्थापित करना श्रद्धेय भक्त फूल सिंह जी महाराज का विचार था। और वे अपने बलिदान दिवस से पूर्व स्थान का भी निश्चय न कर पाये थे कि संस्था कहां स्थापित की जावे।

श्रद्धेय भक्त फूल सिंह जी महाराज के बलिदान के बाद उनके अनुयायियों ने चौ० माड़ूसिंह जी के नेतृत्व में यह निर्णय किया कि यह संस्था कन्या गुरुकुल के नाम से खानपुर कलां में ही स्थापित की जावे। जहां भक्त जी महाराज का बलिदान हुआ। खानपुर कलां के भाई भी अत्यन्त बधाई के पात्र हैं उन्होंने समय-समय पर सामूहिक तथा व्यक्तिगत तौर पर आवश्यकतानुसार कई सौ बीघा भूमि दान दी। तथा समय-ममय पर धन भी दिल खोल कर दिया। वे आज भी उतने ही सादे, सरल, सज्जन तथा संस्था हितैषी हैं। आज भी वे मुंह मांगी धरती तथा धन देने को तैयार हैं।

वस्तुतः हमारी संस्थाओं का बढ़ना, फलना-फूलना जहां आन्तरिक कार्यकर्ताओं की सेवा का परिणाम है वहां महासभा के सदस्यों का परिवार की तरह बैठना-उठना, विचार कर कार्य करना तथा किसी एक व्यक्ति के नेतृत्व सेवा, विश्वास, आदेश को

मानना है तो वे चौ० माडू सिंह जी हैं जिन्होंने भक्त जी के बलिदान के बाद अपना सारा समय संस्थाओं की प्रगति उन्नति में लगाया है।

आयुर्वैदिक कालेज की स्थापना तो प्रारम्भ मात्र है। इसके विस्तार तथा हस्पताल के साथ मेटरनिटी हॉस्पिटल तथा नर्स की ट्रेनिंग आरम्भ करने का हमारा इरादा है। ये दोनों कार्य समय, साहस तथा श्रमसाध्य हैं और यथाशीघ्र साधन उपलब्ध होने पर उन्हें आरम्भ कर दिया जायेगा। क्योंकि नर्स की ट्रेनिंग प्राय: देहाती लड़कियां लेना पसन्द नहीं करती तथा यदि करतीं हैं तो देहात में आना पसन्द नहीं करती। अत: गांव की जच्चा बच्चा की देखभाल के लिए यह ट्रेनिंग भी अन्यावश्यक है। और गांव की महिलाओं का झुकाव भी इस तरफ करना अनिवार्य है। वह तभी हो सकता है जब कन्या गुरुकुल जैसी संस्था में यह ट्रेनिंग आरम्भ हो।

इस कालेज का नाम महासभा ने श्री माडू सिंह जी के सेवाओं के फलस्वरूप उन के ही नाम पर श्री माड़ू सिंह आयुर्वैदिक डिग्री कालेज उनके अत्यन्त विरोध तथा मना करने के बाद भी रख दिया है।

उन्होंने (माडू सिंह जी ने) पुन: मन्त्री महासभा को कहा है कि इस से मेरा नाम हटा दिया जावे। अब महासभा का काम है कि वह पुन: क्या निर्णय ले।

हमारी दोनों संस्थाओं कन्या गुरुकुल खानपुर तथा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल अपने अपने क्षेत्र में अग्रणी हैं गुरुकुल भैंसवाल नि:शुल्क शिक्षा के साथ अनेक छात्रों को छात्रवृत्ति देकर उत्तर भारत की सर्वोत्तम संस्कृत शिक्षण संस्था है। यही कारण है कि यहां भारत के सभी गुरुकुलों, संस्कृत पाठशालों तथा महाविद्यालयों में सब से अधिक छात्र हैं। वहां आज भी प्रवेश की समस्या पब्लिक स्कूलों की तरह है। तथा छात्रावास में अत्यन्त भीड़ है। सभी छात्र अन्तेवासी हैं। सब का समान भोजन छादन अत्यन्त सात्विक सादा शुद्ध है। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की अलंकार उपाधि की परीक्षा दिलाई जाती है। सभी कोर्स गुरुकुल कांगड़ी के अनुसार हैं।

कन्या गुरुकुल खानपुर उत्तर भारत की देहात में स्त्री शिक्षा की प्रेरणा देने वाली तथा यों कहिये महिलाओं में स्त्री शिक्षा की प्रतीक एक मात्र संस्था है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रारम्भ करने पर अब यह स्नातकोत्तर (Post Graduation) की शिक्षा दी दी जाती हैं।

यहां प्राइमरी, हाई स्कूल, डिग्री कालेज, ट्रेनिंग कालेज तो थे ही, अब आयुर्वैदिक कालेज भी है। किसी कारणवश जिन महिलाओं की शिक्षा रुक गई उनके लिए भी समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालि कन्डेन्सड कोर्स है।

हमारारी दोनों संस्थायें फल-फूल रही हैं और उन्हीं का परिणाम है कि आज हम श्री माढ़ू सिंह आयुर्वैदिक डिग्री कालेज कन्या गुरुकुल खानपुर की स्थापना कर सके हैं।

—सम्पादक

चौ० गणेशी राम जी का स्वर्गवास

माननीय चौ० गणेशी राम जी आवली का शनिवार, 20 अक्तूबर को देहावसान हो गया। माननीय चौधरी जी हमारे स्नातक श्री बलदेव शास्त्री तथा श्री धर्मवीर मलिक A. B. M. लाईफ कारपोरेशन, भिवानी के ताऊ तथा श्री कपिल देव शास्त्री के मामा थे। वस्तुतः सभी स्नातकों के ताऊ थे। उनकी अपनी कोई सन्तान नहीं थी। उनका सारा जीवन उत्तम सामाजिक प्रथाओं के संचालन तथा न्याय दिलाने में बीता। गुरुकुल के लिए उनके परिवार ने हजारों रुपया दान दिया। उन जैसे निर्भीक, न्याय प्रिय, सच्चरित्र, तपस्वी, निश्छल थोड़े जन-सेवक होते हैं। वे पुरानी पंचायत प्रथा के बड़े कट्टर हामी थे। उन्होंने सदा अपना ध्येय गुरुकुल सेवा तथा समाज सेवा रखा। वे दृढ़ निश्चयी थे। एक बार निश्चय करने के बाद चाहे हिमालय टस से मस हो जावे। वे अपनी बात पर अटल रहते थे। सब प्रकार के प्रलोभनों से दूर रहते थे।

सर छोटू राम ने दो बार उन्हें पद देने की पेशकश की। एक बार पंचायत आफिसर बनाना चाहा तथा दूसरी बार कर्जा समझौता बोर्ड का सदस्य। उन्होंने दोनों बार यह कह कर इन्कार कर दिया चौधरी जी मैं तो अनपढ़ हूँ। आप न्याय के काम कर गरीबों का भला करें तथा गुरुकुल भैंसवाल को न भूलें। उन्होंने सदा गुरुकुल की तन मन धन से सेवा की। जब भी उन्हें हम कहते, ताऊ जी अब तो आप आकर कोई से गुरुकुल में बैठिए। तो वे कहते भाई मेरे लायक जो काम है मुझ से लो। मैं गुरुकुल बैठ कर क्या करूंगा।

उनकी अवस्था इस समय 94 वर्ष की थी। वे अभी तक आसानी से चल फिर लेते थे। उनको ठीक सुनता, दीखता था तथा अभी तक वार्धक्य उन पर यह दबाव न डाल सका था कि वे अपंग की तरह पड़े रहें। वे हरियाणा के माने हुए पंचायती थे सदा न्याय पक्ष को बढ़ावा देकर उसके लिए अनेक कष्ट पाते थे।

उनके देहावसन से हमारे दोनों गुरुकुलों का संरक्षक उठ गया, तथा हमारे बीच से निर्भीक, निष्पक्ष, निस्वार्थ व्यक्ति जाता रहा। कुरुकुलों के कार्यकर्ता तथा गुरुकुल प्रेमी उनकी इस रिक्तता को तो अधिक तन्मयता से कार्य कर दूर कर सकेंगे। और उनकी कर्मठता को लक्ष्य बनायेंगे।

हमारी परम प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। तथा परिवार के सभी जनों के शोक सन्तप्त हृदयों में शान्ति प्रदान करें।

—सम्पादक

शोक-समाचार—

एक मुसाफिर था रास्ते में नीन्द आ गई

—अरविन्द कुमार 'विद्यालंकार'

मनुष्य का जीवन एक ऐसी चीज है जिसे कोई आसानी से नहीं समझ सकता। जीवन की डोर पता नहीं किस समय कट जाय क्योंकि यह बहुत कमजोर होती है। कई बार ऐसा होता है कि मनुष्य सोचता कुछ है और दैव उसे दूसरी ही तरफ़ ले जाता है। 'सिराज' लखनवी का कहना है :—

"फ़ूल बनने की खुशी में मुस्कराती थी कली।
क्या खबर थी ये तग़ैयुर मौत का पैग़ाम है ॥"

इस संसार में अनेक जीवनीयां ऐसी होती हैं जो अपने यौवन से आने से पूर्व ही अकाल काल के क्रूर जबड़ों में समा जाती हैं। तभी तो कवि इन्दीवर ने लिखा है :—

ज़िन्दगी का सफर, है ये कैसा सफर ?
कोई समझा नहीं, कोई जाना नहीं।
ऐसे जीवन भी हैं जो जिये ही नहीं,
जिनको जीने से पहले ही मौत आ गई;
फ़ूल ऐसे भी हैं जो खिले ही नहीं,
जिनको खिलने से पहले खिज़ां खा गई ॥

कुछ इसी प्रकार के विचार 'ज़ौक़' के भी हैं :—

"फ़ूल तो दो दिन बहारे-जां-फ़ज़ा दिखला गए।
हसरत उन गुंचों पे है जो बिन खिले मुर्झा गए ॥"

कुछ यही बात हमारे परम मित्र सुरेश चन्द्र के साथ घटी। 22 सितम्बर की सुबह के साढ़े चार बजे का समय। घर-घर की भयंकर आवाज से वातावरण को अशान्त करती हुई एक कुछ बिगड़ी हुई कार उपकुलपति श्री आचार्य विष्णु मित्र जी के

साथ चार-पांच अन्य व्यक्तियों को गुरुकुल में लाई। हमें कौतूहल हुआ—इतने सवेरे यह कार क्योंकर आई ? लगभग एक घण्टे बाद जो खबर हमें मिली, उसने हमें एकदम चौंका दिया। हम भौंचक्के रह गये। हमारे परम मित्र तथा गुरुकुल के उपाचार्य श्री पं० धर्मभानु जी के सुपुत्र सुरेशचन्द्र की दिल्ली से रोहतक आते समय पिछली रात (21 सितम्बर) के लगभग साढ़े नौ बजे बस-ट्रक दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी थी। सुनकर कतई विश्वास नहीं हुआ। पच्चीस दिन पहले ही तो मैं अपने साथी फूल सिंह के साथ जब समाज सन्देश लाने के लिए प्रैस में रोहतक गया था तो उससे मिलकर आया था। हम पांच-छः घंटे उसके कमरे में रहे थे। मुझे वहां का दृश्य अच्छी तरह याद है। टेबल-फैन कमरे की गर्मी को शीतलता में परिवर्तित कर रहा है और सुरेश की निगाहें लैसन लिखित कापी पर टिकी हुई हैं। बड़ी तन्मयता से उसका डॉक्टरी विद्या का अध्ययन-व्यापार चल रहा है और मैं मन ही मन उसकी प्रवृत्ति की सराहना कर रहा हूँ।

सुरेश एक होनहार व सुशील युवक था। अपने अच्छे गुणों व कार्यों के कारण वह सारे गांव में लोकप्रिय हो गया था। अपने गांव खानपुर कलां में सुधार लाने व उसे प्रगतिशील बनाने हेतु 'एडवांस यूथ ऑरगेनाइजेशन' को जन्म सुरेश ने ही दिया था। इस वर्ष वह डॉक्टर बनने ही वाला था किन्तु विधाता की इच्छा को कौन जान सका है ? मेरे विचार से तो सर्वज्ञ ईश्वर भी कई बार ऐसी भूलें कर बैठता है।

इस दुःखद घटना को जिसने भी सुना, वही खानपुर कलां की ओर चल पड़ा। गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर की महासभा के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों के अतिरिक्त अनेक अन्य महानुभाव भी शोक-समानुभूति प्रकट करने श्री पं० धर्मभानु जी के घर पर पहुँचे। गुरुकुल भैंसवाल के महाविद्यालयीय छात्र अपने आचार्य जी व प्राध्यापकों के साथ पहुँचे किन्तु देर से पहुँचने के कारण हम अपने मित्र का अन्तिम दर्शन न कर सके।

एक पिता को अपने स्वस्थ युवक पुत्र की अकाल मृत्यु से कितना धक्का पहुँचता है—यह किसी से छिपा नहीं है। किन्तु श्री पं० धर्मभानु जी योगी के समान उस दिन जितना धैर्य धारण किये हुए थे उससे यही लगता था कि साक्षात् धैर्य ही सशरीर हमारे समक्ष उपस्थित हो।

24 सितम्बर को मैं फिर दो बारा पण्डित जी के घर गया। दुर्घटना का पूर्ण विवरण बताते हुए उन्होंने कहा – 'सुरेश का दिल्ली जाने का कोई कार्य-क्रम न था। उसे तो घर आना था किन्तु अपने एक मित्र के बारम्बार अनुरोध करने पर वह दिल्ली गया। दिल्ली में सभी रिश्तेदारों से भलीभान्ति मिला। रिश्तेदारों के मना करने पर भी वे दोनों दिल्ली से सायं आठ बजे अन्तिम बस में सवार हो लिये। सुरेश ने टिकट-

घर से टिकटें खरीदीं तो उसके मित्र ने बस की अगली तीन सीटों के पास जगह सुरक्षित रखी। टिकट लेकर जब सुरेश पहुँचा तो अपने मित्र को कहने लगा 'यार, इन सीटों पर हम सो न सकेंगे क्योंकि सामने 'अगली 1, 2 व 3 सीटों पर सोना मना है' लिखा है।" दोनों बस की पीछे की सीट पर बैठे। यात्रा में नीन्द आई। आसौदा ग्राम के समीप एक ट्रक ने अपना पिछला हिस्सा बस से टकरा दिया।" फिर! फिर जो घटित हुआ वह तो जानलेवा ही साबित हुआ।

इसी बीच वहां एक सज्जन आ पहुँचे। उन्होंते पण्डित जी से समानुभूति प्रकट की तो पंडित जी धैर्य्यपूर्वक बोले—"जो होना था सो हो गया, अब चिन्ता करने से क्या बनता है? मेरे पुत्र ने तो अपनी मृत्यु से मेरा यश ही फैलाया है। लोग मुझ से अधिक मेरे पुत्र को जानते थे। वे सभी मुझसे समानुभूति प्रकट करने आये थे।" बात को तनिक बदलते हुए उन्होंने कहा "परार्थ करने का सौभाग्य किसी किसी को मिलता है। यदि सुरेश डॉक्टर बन कर हमारी सेवा करता तो हमने जो उसकी पढ़ाई पर खर्च किया था उसी का बदला मिलता। यह एक प्रकार से स्वार्थ ही कहलाता कि मैंने अपनी सेवा के लिए उसे पढ़ाया लिखाया। अब तो मुझ से परार्थ ही हुआ है।"

खैर, मौत कब किसे आ जाय किसे पता है? शायर दिल ने कहा है: —

"मौत क्या है ज़माने को समझाऊं क्या?
इक मुसाफिर था रास्ते में नींद आ गई।"

अन्त में हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति और परिवार-जनों को इस भारी दु:ख को सहन करने के लिए धैय्य प्रदान करें।

योजनाएँ बनाम—
व्याप्त भ्रष्टाचार

—वाचस्पति यादव

भारत एक लोकतन्त्रात्मक गणराज्य है। लोकतन्त्र का मतलब है—जनता के द्वारा जनता के लिए जनता का राज्य। अतः प्रत्येक भारतीय नागरिक को समान अधिकार प्राप्त होने चाहिएं। हर प्रकार की स्वतन्त्रता सीमानुसार सबको मिलनी चाहिए। उसकी प्रत्येक पुकार को सरकार को सुनना चाहिए। हमारे देश को आजाद हुए 26 वर्ष हो चुके हैं परन्तु प्रशासन ने गरीब जनता के लिए क्या-क्या कार्य किए हैं? गरीब जनता जिन समस्याओं में फंस रही है उनको कहाँ तक सुलझाया? क्या सरकार ने देश के लिए आपत्ति बने गरीबी, मंहगायी, बेईमानी, भ्रष्टाचार को खत्म किया है? जब हम इन सब कार्यों पर नजर दौड़ाते हैं तो पता चलता है कि जो कुछ सरकार को 26 वर्ष में कर देना चाहिए था उसका शतांश भी पूरा नहीं हुआ है। सरकार सब कुछ समझती है लेकिन वह भी क्या करे? प्रशासन भ्रष्ट हो गया है। ईमानदारी आज कल कथा-मात्र है। देश का ज्यादा आर्थिक संकट पैदा करने वाली बाढ समस्या भी अब तक ज्यों की त्यों है। देश में आय के साधन भी काफी हैं तथा कृषि भी खूब की जाती है। अखिर यह धन कहां जाता है? यह सब माल उन भ्रष्टाचार फैलाने वाले नीच व्यक्तियों के पेट में हड़प हो जाता है। न जाने उन का पेट कितना बड़ा है कि सब कुछ हड़प कर जाते हैं। आज कल जो अनाज़ का संकट है इसका मूल कारण वे सम्मानित 'चोर' हैं जो सामान को इधर उधर करने में लगे रहते हैं। आखिर इसका दोष हम किसको दें? दोष तो सरकार या प्रशासन को ही देना होगा। क्योंकि यही इसके लिए जिम्मेदार है। देश भ्रष्टाचार का बोलबाला है।

एक वक्तव्य में संगठन कांग्रेस के नेता श्री कामराज जी ने कहा देश में फैले भ्रष्टाचार के लिए प्रशासन दौषी है। यदि प्रशासन चाहे कि भ्रष्टाचार न फैले तो प्रशासन बहुत जल्दी खत्म कर सकता है। उन्होंने देश के प्रशासन अधिकारियों पर यह आरोप लगाया कि वे भ्रष्टाचारियों से मिले हुए हैं तथा आपस में सहयोग से रहते हैं। यदि वे मिले न हों तो क्या यह भ्रष्टाचार इतनी तेजी से फैल सकता है? उनको इनका पता होता है पर वे कुछ भी तो इनके विरुद्ध कार्यवाही नहीं करते। आज कल कम्युनिष्ट पार्टी कुछ जमाखोरों को पकड़ने में लगी है। परन्तु एक व्यक्ति गिरफ्तार किया जाता है

तो सांयकाल कुछ लोग जाकर जमानत पर फिर छुड़ा लाते हैं। और वह फिर पकड़ा जाता है तथा इसी प्रकार छुड़ाया जाता है। मतलब साफ है कि वे भी इस साजिश में शामिल हैं। कहां तक सुनाएं आज कल अखबार इन भ्रष्टाचार की खबरों से भरे रहते हैं। कहीं बलात्कार किया जा रहा है, कहीं गरीब ग्रामीण तगं किए जा रहे हैं, कहीं अपहरण तो कहीं डाके डाले जा रहे है कहीं हत्या हो रही है इस प्रकार भारत में भ्रष्टाचार अपनी सीमा को पार कर चुका है। अब रोकना ही होगा।

मैं यह नहीं कहता कि भ्रष्टाचार हमारे ही देश में है। अपितु यह तो सारे संसार में ही है। अपने आप को सभ्यता का प्रवर्तक कहने वाले अमेरिका में भ्रष्टाचार का बोल-बाला है। सन् 1960 में वहां एक गिरोह जिसका नाम "नरक के दूत" था का बोलबाला था। वे लोग इसी प्रकार डाके डालते, बलात्कार करते थे जिस प्रकार की खलबली भारत में नक्सलियों ने मचादी थी। पर भ्रष्टाचार का पतन भी होता है तथा हुआ भी है। पर आज कल वह अपनी हद के बाहर है उसे रोकना होगा। अमेरिका के पत्रकारों को भारत की अपेक्षा ज्यादा स्वतन्त्रता प्रदान की गई है अतः वे भ्रष्टाचार का जल्दी ही भाण्डाफोड़ कर देते हैं। निक्सन के विरुद्ध आज कल जो सर्वत्र जोरों से चर्चा का विषय बना हुआ है यह सब उन पत्रकारों की ही महिमा का ही फल है। भारत के भी पत्र सम्पादक स्वतन्त्र हैं पर इतने नहीं जितने अमेरिका के पत्रकार।

हम यह नहीं कहते कि सरकार चुप बैठी है। सरकार कर रही है पर बहुत थोड़ा। दिल्ली की एक ताजा खबर लीजिए सरकार ने 24 अगस्त को एक गिरोह को पकड़ा है। वह गिरोह अन्तर्राष्ट्रीय समग्लर गिरोह था अर्थात् तस्करी करता था। उनका दुर्भाग्य ही मानों की उनका भाण्डाफोड़ हो गया। पुलिस ने एक दिन में लाखों रुपये बरामद किए हैं। दो व्यक्तियों के साथ एक अन्य भारयीय दिल्ली के दुकानदार को पकड़ा है। पुलिस के पुछने पर एक वहुत ही सनसनीखेज बात का उन्होंने पर्दा उठाया और कहा कि पंजाब के बड़े-बड़े नेताओं से हमारे गहरे सम्बन्ध हैं। भगवान जाने कहां तक यह बात ठीक है। परन्तु भारत को जहां देशभक्त वीर योद्धा पैदा करने का गौरव प्राप्त था और है वहां साथ मे देशद्रोही लोगों को पैदा करने वाला सौभाग्य भी आज पीछे नहीं रह गया है। भारत की राजनीति में भला ऐसे आदमियों के रहने से क्या कभी उन्नति की आशा हम कर सकते हैं कभी नहीं। भारत में ऐसे राजनीति में फंसे लोग हैं जो विदेशी जासुसों को सब कुछ बता देते हैं। रुपये लालच में वे इस घृणित काम को भी कर देते हैं अतः हम यह कह सकते हैं कि भ्रष्टाचार में नेताओं का भी हाथ है।

शराब को लीजिए। जी हां शराब विदेशी। जो विदेशी शराब 30 रुपये की बोतल मिलती है। एक बोलत देकर कुछ भी काम करवा लो उनसे। 30 रुपये की बोतल आज 250 रुपये की मिल रही है। तथा भ्रष्टाचार को पनपा रही है। अपने बैडरुम भी विदेशी बोतलों से सजाए जा रहे हैं।

जरा इस तरफ भी ध्यान दीजिए। साइन्स की तरफ। भारत में बड़े-बड़े साइन्सदान हुए हैं तथा हैं भी। डा० खुराना जो कि एक महान् आविष्कारक निकले भारत के नागरिक थे। भारत उनका उचित आदर न कर सका अतः उन्होंने अमेरिका में जा कर वहां कि नागरिकता प्राप्त कर ली तथा आज वहां के सम्मानित व्यक्तियों में से हैं।

डा० विनोद एच० शाह ने भी अपने से उंचे अयोग्य पदाधिकारियों के व्यवहार से असन्तुष्ट हो आत्महत्या करली।

इसी प्रकार डा० निर्मला चटर्जी जो कि आज कल चर्चा का विषय बनी हैं। वे लापता हैं। भागने से पहले अपनी सहेली के नाम पत्र में लिखा था—"मैं जा रही हूँ मुझे तलाशने की कोशीश न की जाए।"

आखिर सरकार ध्यान क्यों नहीं देती। सरकार को चाहिए कि इन प्रतिभाओं को नष्ट होने से बचावे।

प्रधान मन्त्री श्रीमति गांधी भी भ्रष्टाचार को रोकने में जनता का सहयोग मांगती हैं तथा दूर करने की कोशी कर रही हैं।

कहां वह समय था जब राजा अश्वपति ने आम सभा में कहा था—"न में स्तेनो जनपदे ···अर्थात् मेरे राज्य में न कोई चोर है न कोई भ्रष्टाचारी है न शराबी इत्यादि पर आज ये कहां। फाहचान आया तथा एक बार वह सोने की एक लाठ एक जगह रोपकर कहीं चला गया था। दो साल बाद में वह आया तथा लाठ को वही देखकर चकित हुआ और अपनी पुस्तक में लिखा कि भारत एक आदर्श देश है वहां चोरी व भ्रष्टाचार का नाम भी नहीं है। लोग ताला नहीं लगाते इत्यादि। आज विदेशी यात्री आते हैं तथा देश की बुराई करते हुए लिखते हैं कि "भारत में भ्रष्टाचार अपनी सीमा पर है"। जमाखोरी बढ़ रही है।

अतः भारतीय प्रशासन के साथ साथ भारतीय जनता को भी चाहिए कि वह भ्रष्टाचार को पनपने से रोके। यदि सहयोग से कार्य होगा तो वे दिन दूर नहीं की भारत फिर से "सोने की चिड़िया" कहलाएगा।

शोक समाचार

समाज सन्देश के पाठकों को यह जान कर बड़ा दुःख होगा कि अगस्त मास 1973 में श्रीमती चलती देवी धर्मपत्नी श्री शिब्बा राम जी बुआना (पानीपत) करनाल का लम्बी बीमारी के कारण स्वर्गवास हो गया। आप गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर के उपकुलपति श्री विष्णु मित्र जी आचार्य की पूजनीय माता थीं। आप बड़ी धर्म परायण तथा पूण्यात्मा देवी थीं।

समाज सन्देश के ग्राहकों तथा पाठकों की ओर से श्री आचार्य विष्णु मित्र जी तथा परिवार के सदस्यों की सेवा में हार्दिक सहानुभूति है। परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि मृतात्मा को सद्गति प्रदान करें।

—सम्पादक

शोक सम्वेदना

22-9-73 को श्री सुरेशचन्द्र होनहार नवयुवक का ट्रक तथा बस दुर्घटना में अकस्मात निधन हो गया। आप श्री धर्मभानु विद्या प्रभाकर स्नातक गुरुकुल भैंसवाल के योग्य होनहार ज्येष्ठ पुत्र थे। आप बड़े मिलनसार थे। आपने मैडिकल कालेज रोहतक से डी० फार्मेसी कोर्स भी पूरा कर लिया था। श्री सुरेश चन्द्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही सारा क्षेत्र कुछ समय तक स्तब्ध सा हो गया। मानो सारा इलाका मूक हो गया हो।

सम्वाद दाता का कहना है कि गांव के बाल, वृद्ध, नवयुवकों का रुदन देखा नहीं जाता था। हजारों की संख्या में लोग दाह-संस्कार में सम्मिलित हुए।

समाज सन्देश के पाठकों की ओर से परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि श्री सुरेश चन्द्र जी के माता पिता को धीरज धारण करायें जिससे उनका स्वास्थ्य बना रहे। नवयुवक की आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

—सम्पादक

प्रभु की मित्रता

— हरिदत्त

प्रभु की मित्रता से तात्पर्य भगवान से स्नेह करना अथवा प्यार करना है। विचारणीय यह है कि प्रभु क्या है और उससे स्नेह क्यों किया जाय, कैसे किया जाय और उसका लाभ क्या है। आइये सर्वप्रथम विचार करें—प्रभु क्या है। प्रभु शब्द स्वयं स्पष्ट कर रहा है—प्र उपसर्ग पूर्वक भू सत्तायाम् धातु से प्रभु शब्द बना है जिसका अर्थ है प्रकृष्ट, सर्वोत्कृष्ट सत्ता। किसी को सर्वोत्कृष्ट मानने के लिए आवश्यक है कि उससे भिन्न अन्य सत्ताएं भी हैं। यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि ये सत्ताएं कितनी हैं जिन में प्रभु प्रकृष्ट-सर्वोत्कृष्ट है? चारों ओर दृष्टि करने पर ज्ञात होता है कि कुछ चीजें हैं, जो हैं तो सही, पर किसी अन्य की सहायता के बिना स्वयं कुछ भी चेष्टा नहीं कर पातीं, अर्थात् वे जड़ हैं। उन में जानने अथवा बताने की कोई शक्ति नहीं होती। जिसे प्रकृति कहते हैं। एक और सत्ता है, जिसमें जानने, बताने और कुछ करने का अल्प मात्रा में सामर्थ्य दिखाई देता है परन्तु फल प्राप्ति में परतन्त्र है और उसे किसी के नियम के आधीन रहते हुए भी कर्म करने की स्वतन्त्रता है। यह है जीव। इन तीनों सत्ताओं में क्या अन्सर है यह इस तरह से समझ में आ सकता है प्रभु सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तिर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है जिसका वर्णन वेद में इस प्रकार आया है —

> स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धं कविर्मनीषी
> परि भूः स्वयं भू याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥
>
> (यजु० अ० ४०)

जीव चेतन, अल्पज्ञ, अल्प शक्ति आदि वाला है। प्रकृति तो है ही सर्वथा अचेतन अर्थात् जड़ और परापेक्षी। यह न किसी से स्नेह कर सकती है और न द्वेष आदि ही। रहा जीव जिसको बहुत सी चीजों का अभाव है अथवा अल्प मात्रा में प्राप्त हैं। वह उस अभाव को दूर करना अथवा अल्प को अधिक मात्रा में प्राप्त करना चाहता है। इसके लिए वह अपने से उत्कृष्ठ से स्नेह करके उसके पास जो अधिक पदार्थ है उसे

प्राप्त करने की चेष्टा करता है। क्या जीव प्रभु से स्नेह अथवा मित्रता कर सकता है? उत्तर है—हां। क्योंकि लोक में भी उक्ति प्रसिद्ध है—

'योरेव समं वित्तं ययोरेव समं कुलम्।
तयोर्मैत्री विवाहश्च नान्योरन्ययोः क्वचित्॥

तो क्या प्रभु और जीव में समानता है? प्रश्न का उत्तर स्वयं वेद देता है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति॥

अर्थात् जीव और ईश्वर परस्पर सखा हैं और एक साथ विराजमान हैं। जब दोनों मित्र हैं तो पुनः प्रभु से मित्रता का क्या प्रयोजन? जीव अल्पयज्ञ होने से अपने मित्र को बार-बार भूल जाता है और स्वयं को एकांकी अनुभव करने लगता है। इसी लिए मित्र की खोज में रहते हैं। प्रयत्न करने पर पुनः प्रभु की मित्रता पा लेता है।

अब एक प्रश्न और उत्पन्न होता है कि क्या मित्र के गुण अथवा लक्षण ईश्वर में हैं? उत्तर स्पष्ट है—हां हैं। यदि मित्र के गुण ईश्वर में नहीं होते तो जीव उससे मित्रता करना ही क्यों चाहता? मित्र के लक्षण जानने के लिए आइये भर्तृहरि जी की सेवा में चलें। वे कहते हैं:—

पापान्निवारयति, योजयते हिताय, गूह्यं च गूहति गुणान् प्रकटी करोति।
आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले, सन्मित्र लक्षणमिदं प्रवदन्ति संतः॥

यह ऋग्वेद मंडल ५ सूक्त ६५ के चौथे मन्त्र—मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयायगातु वनते। मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः॥ का अनुवाद है। अर्थात् सज्जन पुरुष अच्छे मित्र लक्षण बतलाते हैं:—

1. पाप से बचाता है। ईश्वर जीव को सदा पाप से बचने की प्रेरणा करता रहता है। जब भी मनुष्य कोई पाप कर्म करने को उद्यत होता है तो सच्चा मित्र प्रभु उसे सावधान करता है कि ऐसा न कर। उसी समय मनुष्य के मन में भय, शंका और लज्जा उत्पन्न होना प्रभु द्वारा पाप से बचने की प्रेरणा है।

2. हितकर कार्यों में लगाता है अर्थात् शुभ कर्मों को करने के लिए उत्साहित करता है। जब मनुष्य शुभ कार्य में प्रवृत्त होता है तब ईश्वर उसके अन्तःकरण में उत्साह उत्पन्न करता है और उससे मनुष्य को वह कार्य करने में खुशी होती है और उस कार्य के करने में उसे कोई ग्लानि नहीं होती।

3. गुप्त रहस्यों को गुप्त रखता है। ईश्वर भी सबके गुप्त रहस्यों को गुप्त ही रखता है किसी को प्रकट नहीं करता।

4. गुणों को प्रकट करता है। भगवान् की कृपा से उसके मित्र के गुण सब को प्रकट हो जाते हैं।

5. आपत्ति आने पर छोड़ता नहीं। प्रभु ही ऐसा मित्र है जो अपने मित्र को कभी नहीं छोड़ता। घोर से घोर संकट की घड़ी में जब अन्य सब छोड़ देते हैं तब अकेला प्रभु ही उसका साथ देता है।

6. समय पड़ने पर देता है। प्रभु तो सब को सब समयों और सब स्थानों पर निरन्तर देता ही है। उसके द्वार सबके लिए हमेशा खुले रहते हैं। चींटी से हाथी पर्यन्त सब उसके भंडार में से ही भोजन प्राप्त कर रहे हैं फिर उसके मित्र को भला किसी वस्तु की कमी कैसे रह सकती है?

प्रभु की मित्रता कैसे प्राप्त की जा सकती है। प्रभु की आज्ञाओं और शिक्षाओं के मानने पर ही उसकी मित्रता सुलभ होती है। जब मनुष्य अहंभाव का त्याग कर सर्वात्मना प्रभु को आत्म-समर्पण कर उसी के आदेशों-उपदेशों का पालन करता हुआ प्राणिमात्र को अपने समान समझता और समानता का व्यवहार करता है तो उसे न किसी प्रकार का मोह होता है और न ही शोक। यही पहिचान है प्रभु की मित्रता प्राप्त करने की।

ईश्वर की मित्रता से क्या लाभ होता है? प्रश्न जितना सरल है उत्तर भी उतना ही सरल है। वेद कहता है:—

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम: शवसस्पते।
त्वामभिप्रणोनुम: जेतारम पराजितम् ॥

अर्थात् सर्वशक्तिमान जगदीश की मित्रता प्राप्त होने पर मनुष्य को किसी प्रकार का भय नहीं रहता और वह निर्भय होकर सर्वत्र विचरता है। निर्भय हो जाने पर उसमें नम्रता आ जाती है। नम्रता आने पर वह सर्वत्र विजयी होता है और पराजय कभी सम्मुख नहीं आती। सर्वत्र उसका जय-जयकार सुनाई देने लगता है।

पुन: प्रश्न उत्पन्न होता है—क्या यह केवल कल्पना मात्र ही है अथवा इसमें कुछ वास्तविकता भी है? इसके समाधान के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं। अपने ही देश में कितने ही उदाहरण इतिहास में मिल सकते हैं। भक्त प्रह्लाद, ध्रुव, गौतम बुद्ध, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गान्धी क्या प्रभु की मित्रता पाकर अमर

नहीं हो गये ? महर्षि दयानन्द में वह कौनसी शक्ति थी जिसके बल-बूते पर अकेले सारी दुनिया से टक्कर लेते रहे। प्रभु की मित्रता के कारण ही अनेक बार हलाहल विष का पान, ईंट-पत्थरों की वर्षा और घातक आक्रमणों से भी नहीं घबराये और सत्य का प्रचार और असत्य का खण्डन निर्भय होकर करते रहे। अन्त समय के उनके वचन—"प्रभु तूने खूब लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।" अटूट प्रभु मित्रता के ज्वलन्त प्रमाण हैं।

प्रभु की मित्रता के बल पर ही स्वामी श्रद्धानन्द ने गोरों की संगीनों के सामने छाती तान दी थी। ईश्वर का स्नेही बन कर ही महात्मा गान्धी उस समय के सब से शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य का सामना कर सके और उसे झुकने पर मजबूर कर सके। यह अद्भुत् शक्ति मिलती है प्रभु की मित्रता से। आइये, हम सब भी उसी प्रभु की मित्रता प्राप्त कर निर्भय नम्र, विजयी और अपराजित बनने का प्रयत्न करें। क्योंकि:—

पितु मातु सहायक स्वामी सखा तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिन के कछु और आधार नहीं तिनके तुम ही रखवारे हो॥

साहित्य समालोचना

पुस्तक का नाम :— हिन्दु जाति के अस्तित्व की रक्षा।
लेखक : – स्वामी विद्यानन्द जी 'विदेह'
प्रकाशक :— वेद-संस्थान, बाबू मोहल्ला, ब्यावर रोड, अजमेर।
मूल्य : 1) रु० मात्र पृष्ठ संख्या : 52

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने 'हिन्दु जाति के अस्तित्व की रक्षा' नामक पु तक लिख कर हिन्दु जाति का महान् उपकार किया है। उन्होंने हिन्दु जाति में पनप रहे विभिन्न सम्प्रदायों की ओर इंगित करते हुए हिन्दु जाति को सचेष्ट किया है। साथ ही पुस्तक में खोज पूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गई है तथा हिन्दु जाति में फैल रहे आडम्बर वाद को स्पष्ट शब्दों में दर्शाते हुए हिन्दु जाति को इसके प्रति सावधान किया गया है। यदि समय रहते हिन्दु जाति न चेती तो इसके अस्तित्व को ही खतरा हो जावेगा। पुस्तक में विशेष रूप से आर्यसमाज एवं सनातन धर्म को हिन्दु जाति की रक्षार्थ सचेष्ट रहने के लिए स्पष्ट निर्देश किया गया है। इसमें जरा भी अत्युक्ति नहीं है। वैसे पुस्तक की भाषा शैली ललित एवं प्रसाद गुणयुक्त है। कागज, छपाई आदि सभी उपादेय सामग्री है। प्रत्येक हिन्दु परिवार को यह पुस्तक अपने यहां रखनी चाहिए जिससे उन्हें अपनी जाति की रक्षार्थ सचेष्ट होने में सहायता मिल सके।

—सत्यपाल शास्त्री
गुरुकुल भैंसवाल कलां

शान्ति के पुजारी—
श्री शास्त्री जी

— बाल कृष्ण 'विद्यालंकार'

★

10 जनवरी 1966 की निबिड निशा। ताशकन्द की वीरान राजमार्गों, तथा ऊंची राज प्रासादों को धने कुहरे ने ढक रखा था। वातावरण में खामोशी थी। पीला चांद कुछ धुन्धला गया था तारों में उदासी छाई हुई थी। हठात् हवा का तेज झोंका निःस्तब्धता को चीरता हुआ निकल गया। गंगा की पावन लहरों, हिमायल की तुषार मण्डित शृंगों से बहुत दूर स्थित भारत के जन नायक श्री शास्त्री जी काल कवलित हो गए। अगले दिन उनके निर्धन का समाचार बड़े दूःख के साथ सुनने को मिला। उन का निर्जीव शरीर तिरंगों में लिपटा जब स्वदेश पंहुचा लोगों का दिल टूट गया। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक विस्तृत आकाश शोक समुद्र में डूब गया। संसार के करोड़ों लोगों ने बड़े दु:ख से उनको मूक श्रृद्धांजली दी।

राष्ट्र नायक श्री नेहरु का निधन एक दुर्दिन बन कर आया। शोक के इस महान् अन्धकार के बीच इस प्रजातन्त्र की दीप शिखा को प्रज्वलित तथा इसकी ज्योति देश के प्रत्येक गांव में पहुँचाने तथा तूफानों से रक्षा के लिए एक कुशल नेता की जरुरत थी। सर्व सम्मति से एक दुबले-पतले व्यक्ति को नेता चुन लेने पर आश्चर्य व्यक्त किया गया। श्री लाल बहादुर जी भारत के प्रधान मन्त्री बने। उन्होंने जब यह कांटों का ताज अपने सिर पर रखा उस समय देश की स्थिति बहुत खराब थी।

एक ओर चीन का आक्रमण, दूसरी ओर पाकिस्तान द्वारा कश्मीर मामले में तनाव बढ़ाना, देश के अन्दर तथा बहार स्थिति बहुत बदतर थी। इसी मध्य में पाकिस्तान ने रण कच्छ पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटेन ने बीच में पड़ एक समझौता करा दिया। अभी कुछ ही दिन हुए घाव भरा भी न था कि अन्य सुनियोजित आक्रमण कश्मीर पर हुआ। इस बार पाकिस्तान ने पूरे कश्मीर को हड़पने का निर्णय कर आक्रमण

किया था। इस युद्ध में हमारी परीक्षा थी। हमारी सहायता किसी ने न की, जब कि अनेक देशों ने पाकिस्तान को शस्त्र उपकरण, राजनैतिक समर्थन आदि दिया, यहां तक की युद्ध की योजन भी अन्य देशों में बनी। इस युद्ध में हमको रूस ने नैतिक समर्थन दिया। यह युद्ध, भारत ने अकेला लड़ा, यह हमारे सिद्धान्तों, आदर्शों की परीक्षा का समय था। इस युद्ध में पहली बार, भारत ने जो शान्ति प्रिय देश था, जिसके नेता शान्ति के भक्त थे, दूत थे, शक्ति का परिचय दिया और अपना धाक विश्व रंगमंच पर जमाया। भारत की शान्ति नीति, अहिंसा की नीति कमजोर के लिए न होकर बहादुरों के लिए है। और इस नीति पर शास्त्री जी को पूरा विश्वास था। शास्त्री जी दुबले पतले, नाटे कद के, लेकिन सिद्धान्तों में, आदर्शों में उतने ही बड़े और निश्चत थे जितना कि हिमालय। श्री शास्त्री जी ने युद्ध के समय अपने को एक सिद्ध नेता और नायक सिद्ध कर दिया। इस प्रकार शान्ति-पथ की साधना का एक नवीन स्तंभ भी स्थापित हो गया।

हमारे पुराने ऋषियों ने, नेताओं ने विश्व को शान्ति का सन्देश दिया। गांधी ने तो इसी शस्त्र द्वारा ससार के बड़े देश के चंगुल से देश आजाद कराया। उन्हीं पथ का अनुसरण कर श्री शास्त्री जी ने रूस द्वारा प्रस्तावित शान्ति वार्ता को मान कर हमारे आदर्श को कायम रखा। शास्त्री जी ऐसे नेता थे जिनका वज्र से ज्यादा कठोर तथा फूल सा कोमल स्वभाव था उनमें पानी आग एक साथ था। 3 जनवरी, 1966 को शास्त्री शान्ति वार्ता में भाग लेने गए। 10 जनवरी को संधि पर हस्ताक्षर हो गए। दोनों नेता अयूब तथा शास्त्री जी गले मिले।

रात्रि को दिल का दौरा पड़ा और खुशी गम में परिवर्तित हो गई। युद्ध विजेता ने शांन्ति की वेदी पर अपनी बली चढ़ा दी। 15 अगस्त 1965 को उन्होंने कहा कि हम रहें या न रहें लेकिन यह झंडा रहना चाहिए और मुझे विश्वास है कि यह रहेगा, हम या आप रहें ना रहें लेकिन भारत का सिर ऊंचा रहेगा। भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा। इस प्रकार उन्होंने अपने प्राण देकर प्रण पूर्ण किया। आज उनकी जयन्ती है यह दिन वर्ष में एक बार इस लिए आता है कि हम उनके जीवन से प्रेरणा लें तथा उनके गुणों को धारण करने का प्रयत्न करें। शास्त्री जी एक स्वाभिमानी सादगी और सज्जनता की मूर्त थे। वे जन-नम के प्रतिनिधि, भारतीय संस्कृति में पूर्ण रूप से ढ़ले हुए थे। उनका पार्थिव शरीर यद्यपि अब नहीं है लेकिन उनके कार्य जो देश के लिए तथा शान्ति के लिए थे वे सदा अमिट रहेंगे।

जब तक दुनियां में शांति के पूजारी रहेंगे श्री शास्त्री जी का नाम बड़ी इज्जत से लिया जाएगा बिल्कुल उसी तरह जैसे लिंकन, केनेडी और नेहरु जी के नाम .... ।

पंजाब से गौवंश निकास बन्द कराने, गौपालन के लिए पुरस्कार एवं वृत्तियां देने तथा साधु हत्या की उच्चस्तरीय जांच के लिए, प्रान्तीय गौसंरक्षण एवं गौपालन-सम्मेलन जालन्धर के महत्वपूर्ण निर्णय

नई दिल्ली— 29 सितम्बर 1973 पंजाब के प्रमुख नगर जालन्धर शहर में गत दिनों हुए प्रान्तीय गौसंरक्षण एवं गौपालक सम्मेमन में पंजाब में हो रही सामुहिक साधु हत्या की उच्चस्तरीय जांच की मांग की। इस सम्मेलन में दैनिक प्रताप जालन्धर के मुख्य सम्पादक श्री ललितमोहन जी, दैनिक वीर प्रताप के मुख्य सम्पादक ग्राचार्य श्री विश्वनाथ जी, हिन्द समाचार एवं पंजाब केशरी (दैनिक) के मालिक लाला जगत नारायण जी भूतपूर्व संसद सदस्य तथा कौमी दर्द गुरुमुखी दैनिक के मुख्य सम्पादक सरदार हरभजन सिंह जी तथा प्रान्त के प्रमुख लोगों एवं साधु सन्तों ने भाग लिया। इस सम्मेलन की ग्रध्यक्षता भारत सरकार द्वारा पुनर्गठित गौरक्षा समिति के सदस्य स्वामी श्री योगेश्वर विदेही महाराज ने की। इस ग्रवसर पर पंजाब के सुविख्यात गौभगत सन्त बाबा खौड़ी वाले भी उपस्थित थे। सम्मेलन के स्वागत समिति के ग्रध्यक्ष सुविख्यात उद्योगपति श्री चतुर्भुज जी मित्तल, उपाध्यक्ष पण्डित मुरलीधर जी, महामन्त्री श्री सुरेश कुमार जी गोयल तथा ग्रनेक प्रमुख नागरिक ग्रौर ग्रन्य ग्रधिकारी तथा सदस्य थे।

विषय निर्धारिणी समिति :—

विषय निर्धारिणी समिति का उद्‌घाटन करते हुए नवयुवक श्री ललित मोहन जी ने कहा कि इस ग्रभियान के लिए ठोस योजना बनानी चाहिए। गोरक्षा भावनात्मक, धार्मिक एवं ग्रार्थिक दृष्टि से विचार कर ही होगी, ग्रार्थिक दृष्टि से पूज्य स्वामी श्री जी ने जो लेख लिखा है वह बहुत ही उपयुक्त है। गोदुग्ध न मिलने से राष्ट्रीय स्वास्थ्य गिरने का स्पण्ट ज्ञान हमें खेलों के मैदान में हार से मिला है। ग्रसहाय पशुग्रों के सम्बन्ध में भी कोई ठोस योजना नहीं है। सभी समस्याग्रों पर गम्भीर विचार करना चाहिए।

सरकारी कमेटी से कुछ आशा नहीं :—

आचार्य श्री विश्वनाथ जी ने सरकारी गोरक्षा समिति का उल्लेख करते हुए कहा कि इस से कोई आशा नहीं रखनी चाहिए। संसार शक्ति को मानता है इस लिए हमारा संगठन प्रभावी होना चाहिए। गोमूत्र का महत्व बतलाते हुए आप ने कहा कि इसके सेवन से कैन्सर जैसा भयानक रोग दूर किया जा सकता है। गौमाता की व्याख्या करते हुए कहा कि भारतीय दृष्टि से हमारी पांच मातायें—जननी, गऊ, जन्मभूमि, गायत्री तथा गंगा हैं। आचर्य जी ने गौ साहित्य प्रकाशन पर अधिक बल दिया। आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी श्री सत्यानन्द जी महाराज ने कहा कि गौरक्षा हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। साधु हत्या के प्रस्ताव पर बोलते हुए आर्य सन्यासी ने कहा कि यह सामुहिक हत्या सोची-समझी योजना प्रतीत होती है। इस सम्बन्ध में भी हमें जागरूक रहना होगा।

महाराजा रंजीत सिंह एवं नामधारियों का सीमा प्रान्त में स्मरण :—

<u>सर्वोच्च राष्ट्रीय गौ संरक्षण परिषद् के प्रधान श्री हरि जी का अध्यक्षीय भाषण</u>

सज्जनों एवं देवियो ! पंचनद (पंजाब) प्रान्त ऋषियों एवं गुरुजनों की भूमि है। सरस्वती तट पर वेद व्याख्या तथा उच्च कोटि के शास्त्रों की रचना हुई। आज इस क्षेत्र को पंजाब कहने में भी टीस उत्पन्न होती है, क्योंकि पांच नदियों के नाम से ही इसका नाम पंचनद था। आज रावी चनाब एवं जेहलम नदियां तो नाम मात्र के पाकिस्तान में हैं। सरस्वती हरियाणा प्रदेश में है। पंजाब में पंजाब केसरी ने अंग्रेजों से सन्धि करते समय गोरक्षा को नहीं भुलाया। नामधारी सिंहों ने गौरक्षार्थ अपूर्व बलिदान दिये। पंजाब की वीर जनता ने अंग्रेजों द्वारा लाहौर के निकट बुचड़खाना नहीं बनने दिया। प्राचीन काल से इस प्रान्त में गौ हत्या निरोध कानून रहा जिसका शासन कठोरता से पालन कराते रहे। यहां तो गौ-हत्या का नाम सुनकर ही लोगों का रक्त उबल पड़ता था। देहातों में आज भी अपना विश्वास कराने के लिए 'गौ दी सों' अर्थात् गाय की सोगन्ध का वास्ता दिया जाता है।

गौ हत्या :—

स्यामी श्री हरि जी ने अपना भाषण चालू करते हुए कहा कि खेद का विषय है इस प्रान्त में भी गौहत्या के समाचार मिल रहे हैं। पंजाब का सर्वप्रिय गौ वंश कलकत्ता आदि नगरों में लेजा कर और साधारण गौ वंश को लाल पगड़धारी अपने को राजस्थानी बंजारे गौवाल बता कर दूसरे प्रदेशों के बूचड़खानों में लेजा कर मरवा रहे हैं। कुछ गौवंश पाकिस्तान भी भिजवाया जा रहा है। गौ रक्षण को प्रोत्साहन देने के लिए प्रदेश

में कोई प्रभावी संस्था नहीं है। रासायनिक खाद का भी राशन होने लगा है। गरीब किसान बैल खरीदने में असमर्थ है। ऐसी हालत में अन्न की उपज कैसे बढ़ेगी।

डीजल एवं पैट्रोल की कमी :—

स्वामी जी ने नई नई योजनाओं को शेखचिल्ली का मनोरंजन बतलाते हुए कहा कि अरबों रुपया प्रान्त का बरबाद किया जा रहा है। प्रान्त के देहाती बच्चे दूध और लस्सी को तरस रहे हैं। मक्खन, घी तो स्वप्न बन गया है। लोग डालडा के लिए भी लड़ते हैं। पैट्रोल और डीजल की कमी से ट्रैक्टर एवं कृषि की दूसरी मशीनरी अनेकों बार बेकार पड़ी रहती हैं जो किसान के लिए बोझा बनती हैं। मशीनरी ने गरीब को अधिक गरीब और अमीर को अधिक अमीर बनाया है। गाय का शुद्ध घी और दूध न मिलने से मन्त्रियों तक के चरित्र में परिवर्तन आ गया है। भ्रष्टाचार का बोलबाला आ गया है।

सीमा प्रान्त एवं गौरक्षा :—

श्री स्वामी जी ने कहा कि इस सीमा प्रान्त में किसी समय भी मार्ग रुक सकते हैं यदि किसान को समय पर मशीनरी, डीजल, पैट्रोल, खाद आदि न मिले तो समस्त देश भूखा मरेगा इस लिए गौ की रक्षा से ही घर-घर में ट्रैक्टरों के स्थान पर बैल, गोबर मूत्र की उपयुक्त खाद, खाद्य पदार्थ में सर्वश्रेष्ठ गौ दुग्ध एवं बेकारी को दूर करने के लिए गौपालन का उपयोग धन्धा तथा चरित्र निर्माण के लिए शुद्ध आहार देने के लिए गौमाता ही है। यदि प्रान्त के लोग गौसंरक्षण एवं गौपालन पर पूर्ण ध्यान नहीं देंगे तो बाद में पश्चाताप से कुछ नहीं बनेगा।

स्वामी जी ने सुझाव दिया कि सर्वोच्च गौसंरक्षण परिषद् की शाखा के रूप में प्रान्तीय गौसंरक्षण परिषद् गठित करनी चाहिए। यह जनता एवं सरकार दोनों को उचित कार्यक्रम के लिए जागृत करे। गौ वंश का निकास बन्द किये बिना कोई योजना सफल नहीं हो सकती। आपने कहा कि भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री रामकृष्ण जी के आश्वासन तथा उनकी सरकार द्वारा तैयार बिल कौनसी रद्दी की टोकरी में पड़ा है? अनेक मन्त्रीमंडल बदले किन्तु कोई यह पवित्र कार्य न कर सका। ज्ञानी जेल सिंह जी की सरकार यदि गौ वंश का निकास प्रान्त से बन्द कर दे और गौपालन के लिए गौ पालकों को प्रोत्साहन दे यह प्रान्त की बहुत बड़ी सेवा होगी। प्रान्त में गौशाला संघ बना हुआ है उस सम्बन्ध की जानकारी प्रतिनिधियों द्वारा तथा उद्घाटन एवं स्वागत भाषण से बहुत सी बातें मिलेंगी जिन पर गम्भीरता से विचार कर अग्रसर होना होगा। पंजाब की सभा संस्थाएं एवं जनता गौसंरक्षण एवं समृद्धन का पूर्ण समर्थन करती है अतः गौरक्षा कार्य

का आदर्श उदाहरण समस्त देश के लिए प्रान्त को अग्रसर करना होगा। इन्हीं शब्दों के साथ सभी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए ऋषियों का परम्परागत आशीर्वाद है 'सर्वत्र का भला'।

प्रतिनिधि सम्मेलन :—

प्रतिनिधि सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए सरदार हरबजन सिंह जी ने गौरक्षा कार्य में अपना पूर्ण सहयोग समर्पित करते हुए गौवंश को आवारा छोड़ने वालों पर खेद प्रकट किया। गौरक्षा कार्य जालन्धर से प्रारम्भ करने की अपनी प्रेरणा दी। इस सम्मेलन में सरहन्द, कुराली, अमृतसर आदि के प्रतिनिधियों ने चर्चा में विशेष भाग लिया।

खुला अधिवेशन

खुले अधिवेशन का उद्‌घाटन करते समय ला० जगत नारायण जी ने सहयोग की इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि गौरक्षा अभियान को विधिपूर्वक संगठित करना चाहिए। आपने बहुत देर से अटके हुए गौवंश के निकास के प्रश्न पर सुझाव दिया कि चण्डीगढ़ में पंजाब के सभी विधायकों की बैठक बुलाई जाये।

प्रान्त का संगठन बल शाली बनाने के लिए स्वामी श्री जी अपना कुछ समय पंजाब को दें हम उनके सहयोगी बनें। साधु सन्तों की हत्या के लिए लाला जी ने सुझाया कि सभी दुर्घटनाओं की पूरी-पूरी जांच हो। सम्मेलन ने निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये :—

१- सन्तों की हत्या :

कुछ वर्षों से भारत के विभिन्न प्रान्तों से आतंकजन समाचार प्राप्त हो रहे हैं। इन दिनों पंजाब के अनेक स्थानों मोगा, बरनाला, मोड़ आदि में साधु-सन्तों को मारा गया। सम्मेलन की यह धारणा है कि इसके पीछे बहुत बड़ा षड़यन्त्र एवं संगठन है। इससे जनसाधारण भी अतंकित हो उठा है। रोष और रोष प्रकट करने के लिए बरनाला में हड़ताल और मौगा में धरने दिये गये। अत: यह सम्मेलन षड़यन्त्र द्वारा बलिदान हुए साधु-सन्तों को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। साथ ही सम्मेलन इस अवैधानिकता और देश के लिए शोचनीय घटनाओं पर घोर रोष प्रकट कर पंजाब सरकार से सानुरोध मांग करता है कि षड़यन्त्र की उच्चस्तरी जांच कराते हुए षड़यन्त्र-कारियों तथा उनके सहायकों को कठोर दण्ड दिया जाय। साधु महात्माओं के जीवन एवं हिन्दु धर्म स्थानों की रक्षा का उचित प्रबन्ध करें।

पूज्य स्वामी विदेही हरि जी महाराज ने इस विषय में घोषणा की है कि यदि

पंजाब सरकार ने 2 अक्तूबर तक इस सम्बन्ध में कोई उचित पग नहीं उठाये तो वह पंजाब सचिवालय के सम्मुख धरना देगी। सम्मेलन इस घोषणा का स्वागत कर देश की जनता का आह्वान करता है कि पूज्य स्वामी जी के इस आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दें। साधु-सन्तों एवं भक्तों से आशा रखता है कि वह 2 अक्तूबर को यदि पूज्य स्वामी जी को धरना देना पड़े तो समर्थन में एक दिवसीय उपवास कर धर्म की गिरती हुई साख को बचाने के लिए भगवान से प्रार्थना करें और किसी भी त्याग के लिए तत्पर रहें।

२- गौवंश की प्रान्त से निकासी :

सम्मेलन को यह ज्ञात कर खेद है कि प्रान्त से दुधारू गौवंश कलकत्ता आदि नगरों में ले जाकर एवं सर्व साधारण दूसरे प्रान्तों के बूचड़खानों में ले जाकर समाप्त किया जा रहा है।

अतः सम्मेलन पंजाब सरकार से अनुरोध करता है कि बहुत देर से निकासी बन्द करने का लटका हुआ प्रश्न ज्ञानी जेलसिंह सरकार अपनी आयु में ही विधान का रूप देकर प्रान्त से गौवंश निकास बन्द कर दें। सम्मेलन जनता जनार्दन से प्रार्थना करता है कि उपरोक्त गौवंश को मृत्यु से बचाने के लिए हर संभव उपाय करें। यदि कहीं अहिंसक मोर्चा भी विवश होकर लगाना पड़े तो लगाया जाय। गौशाला के प्रबन्धकों से प्रार्थना है कि वह ऐसे गौवंश को हर समय संभालने के लिए तैयार रहते हुए वास्तविक गौभक्ति का परिचय दें।

३- प्रान्त सरकार से मांग :—

(क) सम्मेलन प्रान्त में गौवंश हत्या निरोध कानून होते हुए भी अनेक संस्थानों पर विभिन्न प्रकार से हो रही गौवंश हत्या को जानकर अत्यन्त खेद प्रकट करता है और पंजाब सरकार से अनुरोध करता है कि :—

1. प्रान्त में गौवंश हत्या निरोध कानून का कठोरता से पालन कराया जाय।

2. केन्द्रीय सरकार पर गौवंश हत्या निरोध केन्द्रीय कानून बनाने के लिए प्रभाव डाला जाय।

(ख) सम्मेलन गौपालन के सम्बन्ध में प्रान्त सरकार से अनुरोध करता है कि गौपालकों को प्रोत्साहन देने के लिए :—

1. अधिक गौवंश सुरक्षित करने वाले को गौसेवक एवं सर्वोत्तम गौवंश रखने वालों

को गौपाल नामक वृत्तियां ग्राम, तहसील, जिला एवं प्रान्त अनुसार दी जायें और उनके लिए विशेष रकम पुरस्कार के रूप में दी जाय।

2. गौचर भूमियों की व्यवस्था करने के लिए ग्राम पंचायतों एवं नगरपालिकों को उचित सहयोग दिया जाय।

3. असहाय गौवंश सम्बन्धी कठोर नियम बनाने के लिए नगरपालिकाओं एवं ग्राम पंचायतों को अधिकार दिया जाय तथा गौशालाओं की सहायता एवं गौ-संरक्षण कार्य में सहयोग देने के लिए नगरपालिकाओं एवं पंचायतों को विशेष अधिकार दिये जायें।

—अनन्त राम जैन
कार्यालय मन्त्री,
गौरक्षा परमर्शदात्री परिषद्
12, भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली – 1

शोक प्रस्ताव

प्रगतिशील युवा संघ खानपुर कलां (सोनीपत) के सदस्य अपने एक कर्मठ सदस्य श्री सुरेश चन्द्र के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोक-सन्तप्त परिवार को इस महान् विपत्ति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—जसवन्त सिंह
प्रधान, प्रगतिशील युवा संघ खानपुर कलां
जि० सोनीपत

विचारकणिकाः

—अरविन्द कुमारो विद्यालंकारः
(अन्त्यः)

१ अल्जीयर्ससम्मेलनम् :—

गुटनिरपेक्षदेशानां अल्जीयर्ससम्मेलने सर्वेऽपि प्रतिनिधयः शक्तिसम्पन्नदेशानां लघुदेशेभ्यः शस्त्रास्त्रप्रदाननीतिमनिन्दन् । साम्राज्यवादप्रसारकस्यामेरिकादेशस्य कटुरालोचनाभूत् । "लघुदेशैः शक्तिशालिराष्ट्राणामधीनतां भीतिञ्च विहाय स्वविकासः स्थिरशान्त्यै च यत्नो विधातव्यः" इत्यासीद् देव्याः इन्दिरायाः उद्बोधनवक्तव्यम् ।

सम्मेलनेऽस्मिन् प्रतिनिधिदेशानामाधिक्यं निशाम्य निशम्य च तेषां घोषणां एवमनुमीयते यदधुना उपनिवेशवादस्य दिनान्यतीतानि एव यद्यपि नात्यन्ताय । विश्वशान्तये सर्वेऽपि गुटनिरपेक्षदेशाः यथाशक्यं सहयोगं दास्यन्ति इत्याशा अधुना बलवती वरीवर्ति ।

२ विश्वकपहॉकीप्रतियोगिता :—

अमस्तरदमनगरे सम्पन्नायां विश्वकपहॉकीप्रतियोगितायां गणेशस्य नेतृत्वे भारतं वर्षं द्वितीयं स्थानमधिगम्य रजतपदकमङ्गीचकार । जापान-कीनिया-स्पेन-पाकिस्तान प्रभृतिदेशानां पराजयानन्तरं पश्चिमजर्मनी-न्यूजीलैण्डदेशाभ्यां सार्द्धं क्रीडाक्षेत्रे निर्णयाभावे च भारतहॉलैण्डदेशयोर्मध्ये अन्तिमक्रीडाप्रतियोगितायां प्रतियोगितानिर्णयकप्रणाल्या (टाई ब्रेकर इति) हॉलैण्डदेशो विजयश्रियं स्वर्णपदकञ्चालभत । भारतस्य सर्वेऽपि प्रतियोगिनः साध्वक्रीडन् । सौभाग्यप्राप्ताः पैनल्टीकॉर्नरपैनल्टीस्ट्रोकाश्च परिणता अभविष्यंश्चेत्तर्हि नूनमेव भारतस्य विजयोऽभविष्यत् ।

चार्ल्सगोविन्दसुरजीतप्रभृतीनां प्रदर्शनं क्रीडानैपुण्यपूर्णमासीत् किन्तु पैनल्टीकॉर्नरस्य पैनल्टीस्ट्रोकस्य वानैपुण्यं चित्तं दुःखाकुलं करोति । आगामिन्यां मुम्बईनगरे सम्पत्स्यमानायां तृतीयविश्वकपहॉकीप्रतियोगितायां विश्वकपभाग् भवितुमर्हति भारतं यदि भारतीयैः प्रशिक्षकैरधिकृतैश्च पैनल्टीकॉर्नरस्य सम्यगुपयोगाय ध्यानं दीयते । अधुना तु नैकपैनल्टीकॉर्नरावाप्तावपि कन्दुकंलक्ष्ये न पतति ।

३ सुरगिरा समाचारप्रसार: :—

अत्यन्तं हर्षास्पदं समाचारोऽयं श्रूयते यदाकाशवाणी प्रत्यहं अर्धंतृतीयां कलां यावत् सुरगिरा समाचारप्रसाराय यतमाना वर्तते। संस्कृतप्रेमिविदुषां विद्यार्थिनाञ्च कृते इयं महती उपलब्धिर्वर्तते। क्षिप्रमेव प्रसारव्यवस्था भविष्यति इत्येव आशास्महे वयम्।

४ गान्धिशास्त्रिजन्मदिवस: :—

प्रतिवर्षं अक्तूबरमासस्य द्वितीयायां तारिकायां गान्धिशास्त्रिजन्मदिवस: 'पावनो दिवस:' इति मन्यते भारतीयै:। परं यावन्न क्रियते उभयोरप्यनयोरनुकरणं तावन्न भारतस्य कल्याणं भवितु मर्हति। भारतस्य साम्प्रतिकी दशा अत्यन्तं शोचनीया कष्टप्रदा च वरीर्वति। कोऽपि देशहिताय न यतते। सर्वत्र सर्वेऽपि कलुषितराजनीतिसक्ता: धनलोलुपाश्च परिवीक्ष्यन्ते।

"होठों पे सच्चाई रहती है,
जहां दिल में सफाई रहती है;
हम उस देश के वासी हैं,
जिस देश में गङ्गा बहती है।"

इति शैलेन्द्रस्य कविता अद्य केवलं मुख एव शोभते न तु दृश्यतेव्यवहारे।

अथवा एवं वक्तव्यम् —

"होठों पे सफाई रहती है,
जहां दिल में बुराई रहती है;
हम उस देश के वासी हैं,
जिस देश में ....।"

यह धरती हिन्दुस्तान की

★

उठो साथियो बिगुल बज रहा बेला है बलिदान की
मांग रही फिर से कुरबानी धरती हिन्दुस्तान की।

उस आजादी को क्या खतरा तेरी भरी जवानी में
लाखों प्राण-प्रसून चढ़ाये हैं जिसकी अगवानी में
एक नया अध्याय जोड़ दो बलि की अमर कहानी में
लहर-लहर तूफान बनादो आग लगा दो पानी में।

इस बगिया का फूल न देंगे
इस धरती की धूल न देंगे।

कफन बांध कर सिर से निकलो लगे होड़ बलिदान की।

पैटन टैंक हिन्द वीरों ने हथ गोलों से तोड़े हैं
नन्हे नेटों ने सैबरजैटों के पंख मरोड़े हैं
अपने फौलादी सीनों से तोपों के मुंह मोड़े हैं
अन्यायी को तुमने नाकों चने चबवा कर छोड़े हैं।

अर्जुन का गांडीव उठा है
आज भीम की उठी गदा है

चक्र सुदर्शन उठा रही तर्जनी कृष्ण भगवान की।

वही हिन्दु मुसलिम सिख ईसाई के लोहू की धारा
यह संगम कितना पवित्र है यह संगम कितना प्यारा
भारत मां बोली हमीद तेरी आरती उतारूंगी
उस मान सरीखे बेटों पर मैं सौ सौ हिन्दू वारूंगी।

मंदिर मसजिद गुरुद्वारों का
स्वर गिरजे की मीनारों का
इस धरती से धूल उड़ा दो पापी बेईमान की।

ओ अयूब-रावण मां-सीता का हरण नहीं होगा
तेरा, कुंभकरण-भुट्टो का निश्चय मरण यही होगा
मेरे राम लखन हाथों में साधे तीर कमान खड़े हैं
हनुमान चौहान जलाने लंका पाकिस्तान चले हैं।

चीनी अहिरावण मरना है
धरती को हलका करना है
लिखी जा रही एक नई रामायण फिर बलिदान की।

स्नेह जहां ढाला जाता है दीपक वहीं जला करता है
होता है बलिदान जहां पर गौरव वहीं मिला करता है
बहनें अपने भाई दे दें, माताएं दें लालों को
वीर पत्नियां तिलक लगा कर भेजें रण मतवालों को।

स्वर्ण-दान दो भामाशाहो
आज देश की लाज बचाओ
आए मां के काम जरूरत है उसी सन्तान की।

—राजवीर सिंह मलिक

गत वर्ष श्री चौ० माड़ू सिंह जी के आर्य महाविद्यालय दादरी मे पधारने पर यह गीतिका बटुगण यादव की ओर से गाई गई

स्वागत गीतिका

★

मन मोर ने शोर मचाया, जब देखे घर मेहमान।
है यह प्रति निराली, करती आँखें सन्मान॥

हम सब कुलवासी मन में, नहीं फूले आज समाते।
रह रह कर बंशी बजती, जब प्रेम के फूल चढ़ाते।
लो प्रेम तुम्हारा पाकर, भाया सबको दिन मान॥

उत्तम हैं भाग्य हमारे, घर माड़ू सिंह जी आये।
आँखें लो जल भर लाई, चरणों पर अर्घ्य चढ़ाये।
खुशियों से भर गई झोली—जंगल में मंगल गान

सरस्वती और लक्ष्मी, दोनों के हो तुम स्वामी।
हम करते गौरव अनुभव, बनकर तेरे अनुगामी।
अभ्यागत! तेरा स्वागत, जगती में बनो महान्॥

सामाजिक संस्था चाहे, गुरुकुल हो या विद्यालय।
तुम दान की गंगा बहाते, बन कर के वीर हिमालय।
हम कितने पुण्य गिनायें, सब जानते ये इन्सान॥

तुम प्यारे हरियाणे के, शिक्षा मन्त्री हो श्रीमान्।
करते हैं कामना भगवन्, तुम बने रहो आजीवन।
सत्य काम समादृत होते, करके तेरागुण गान॥

—सत्यकाम यादव

हिन्दुस्तान अभी तक भाषा के क्षेत्र में अपने को स्वतन्त्र नहीं कर पाया है

—विद्यार्थी सत्यपाल आर्य
आर्य गुरुकुल टटेसर जोन्ती,
दिल्ली – 41

भारत के स्वतन्त्र होने पर उच्च अधिकारियों, राष्ट्रनिर्माताओं, राजनीतिज्ञों और जनसाधारण सभी का ध्यान भाषा की ओर आकर्षित हुआ। वैधानिक रूप से हिन्दी को राष्ट्रभाषाओं के सिंहासन पर आसीन किया गया। क्योंकि यही भाषा सर्वाधिक बोली और समझी जाती है। दक्षिण के कुछेक अपवादों को छोड़ कर, हिन्दी का समस्त भारत में प्रभुत्व है। भारत की यगभग दो तिहाई जनता इसका प्रयोग करती है। जिन भू-भागों की यह मुख्य भाषा नहीं है, वहां भी इसका व्यवहार होता हैं।

हिन्दी में राष्ट्रभाषा के सभी गुण विद्यमान हैं। उसे राष्ट्रभाषा का पद उचित मिला है। वह इस पद की एक मात्र अधिकारिणी है। हिन्दी की बराबरी दूसरी भाषा नहीं कर सकती। राष्ट्र भाषा में राष्ट्र की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक सभी विचारधाएं प्रतिविम्बित होती हैं जो वर्तमान तथा भावी सन्तान को अनुप्राणित करती है। हिन्दी संस्कृत की पुत्री होने के कारण उसके सभी अंग संस्कृत के जीवन रस से निर्मित तथा परिपुष्ट है।

इतना सब कुछ होते हुए भी हिन्दी को भारत में अभी तक समुचित स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है। इसका सबसे बड़ा कारण है—हमारा शासक-वर्ग। वास्तव में,

शासकवर्ग में अधिकांशत: वे लोग हैं जो अंग्रेजी शिक्षा की उपज हैं; उनके हृदय में और मस्तिष्क में जभी तक अंग्रेजी का मोह कूट-कूट कर भरा है। अभी तक अंग्रेजी ने ही भारतीयों का पिण्ड नहीं छोड़ा है जबकि सरकार ने एक और भाषा जिसका जन्म लगभग सन् 1526 (पन्द्रह सौ छब्बीस) में मध्यकालीन भारत में हुआ था स्कूलों में प्रवेश करा दिया है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है जो उत्तर प्रदेश में हुआ था और हो रहा है। राष्ट्र-भाषा बन जाने पर भी हिन्दी का कोई मूल्य नहीं रहा। उर्दू को आज उसके सामने उच्च स्थान प्राप्त है, प्राप्त नहीं बल्कि दिया गया है। सरकार कहती है—चाहे किसी स्कूल में उर्दू पढ़ने वाले छात्र हों या न हों, अध्यापक अवश्य रखा जायेगा उसको दूसरे अध्यापकों की भांति ही मासिक वेतन मिलता रहेगा। क्या ऐसे शब्द कभी हिन्दी के प्रति भी कहे गये थे ?

राष्ट्र-भाषा होकर भी हिन्दी अभी तक 'अगर-मगर' की स्थिति में फंसी हुई है। स्वतन्त्रता के छब्बीस वर्ष पश्चात् भी व्यवहारिक रूप में, हिन्दी की स्थिति 'निश्चित' नहीं हो पाई है। विभिन्न प्रकार के भाषायी-आन्दोलन, विरोध तथा हड़तालों आदि के चंगुल से हिन्दी निकल नहीं पा रही है। शोक तथा लज्जा की बात है कि अभी तक पत्र व्यवहार, लिखाई-पढ़ाई, बोल-चाल में उसका आश्रय लिया जा रहा है। यह हमारी हीनत्व-भावना का द्योतक है। रूसी राजदूत का यह कथन कितना सत्य है कि 'मैं भारत में आकर हिन्दी को भूलता जा रहा हूँ।' कारण यह कि भारत अभी तक भाषा के क्षेत्र में अपने को स्वतन्त्र नहीं कर पाया है। अंग्रेजी के प्रति इतना मोह शायद अंग्रेजों में भी नहीं होगा जितना भारतीय-अंग्रेजों में मिलता है।

किन्तु आज आवश्यकता विरोध-भाव को बढ़ाने की नहीं, वरन् समाप्त करने की है। यदि तटस्थ होकर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि हिन्दी की उपेक्षा के कारण हिन्दी-विरोधी और हिन्दी हितैषी दोनों ही हैं।

वास्तव में 'हिन्दी-समस्या' कोई समस्या नहीं है। स्वार्थ के कारण बलपूर्वक उसे समस्या बना दिया है। कुछ हो, अब हमें हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठा रहना चाहिए और तन, मन, धन से हिन्दी के प्रचार तथा प्रमार में जुट जाना चाहिए। प्रत्येक को हिन्दी के अध्यापन, शोध और समीक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हम जो कुछ लिखें हिन्दी में लिखें। पत्र-व्यवहार भी हिन्दी में करें।

हिन्दी में इतनी सरलता है कि दूसरे देश का निवासी उसे आसानी से समझ और सीख सकता है और अपने विचार प्रकठ कर सकता है। हिन्दी भाषा का विस्तार बहुत अधिक है। हिन्दी में शब्दों की भी कमी नहीं है। यदि किसी विषय का भाव-

व्यंजक शब्द नहीं भी प्राप्त है तो वह हिन्दी की जननी अर्थात् संस्कृत से लिया जा सकता है अथवा उसकी सहायता से बनाया जा सकता है। अतः हिन्दी से समर्थ कोई भाषा नहीं जिससे आज तक भारत का हित-साधन हुआ हो।

अतः प्रत्येक भारत वासी को हिन्दी से प्रेम होना चाहिए और अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए। भारत को भाषा के क्षेत्र में स्वतन्त्र होना चाहिए क्योंकि हिन्दी स्वतन्त्र भारत की राष्ट्र-भाषा है और राष्ट्रीय एकता तथा देश की अखण्डता राष्ट्र-भाषा पर निर्भर होती है।

शोक प्रस्ताव

गुरुकुल भैंसवाल की वाग्वर्द्धिनी सभा गुरुकुल के उपाचार्य श्री पं० धर्मभानु जी के होनहार, सुयोग्य, सुशील सुपुत्र श्री सुरेश चन्द्र की 21 सितम्बर को बस-ट्रक दुर्घटना के कारण हुई अकाल भृत्यु पर गहन शोक प्रकट करती है और प्रभु से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं भारी दुःख से सन्तप्त कुटुम्ब को धैर्य शक्ति प्रदान करें।

पूजनीय चलती देवी माता श्री आचार्य विष्णुमित्र जी के स्वर्गवास होने पर सभा में दो मिनट खड़े होकर शोक प्रकट किया गया।

– अरविन्द कुमार विद्यालंकार
मन्त्री, वाग्वर्धनी सभा,
गुरुकुल भैंसवाल

स्वर्गीय सुरेश चन्द्र
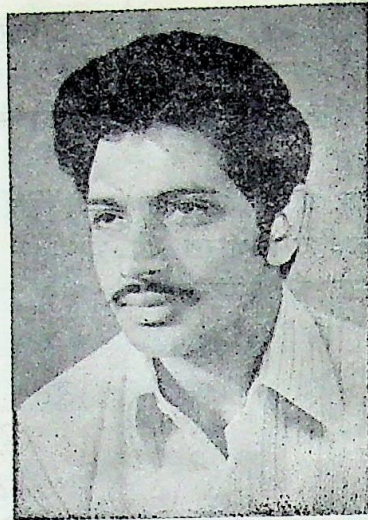
अर्द्ध पुष्प

धर्म की थी क्यारी उसमें लगी कली थी।
भानु की किरण से फुलवारी वह फली थी।।
अर्द्ध पुष्प जो अब हमको है याद आता।
उस लोक से भी सबको शुभ रास्ता दिखाता।।
वह पुष्प जब तने पर एक छोटी सी कली थी।
वाटिका की उससे उमीद बढ़ चली थी।।
बढ़ चली कली जब वह पुष्प बनने आई।
उस अर्द्ध पुष्प की गन्ध सब पुर जनों को भाई।।
लेकिन न जानें कैसी दुर्भाग्य की घड़ी थी।
बादल बगैर बिजली अर्द्ध पुष्प पर गिरी थी।।
आलोक नष्ट हो कर छाया जहां में तम था।
जिसको भी हमने देखा सबके ही दिल में गम था।।
उसकी छोटी बहना का जन्म दिन था आया।
आया था भैया लेकिन आकर के भी न आया।।
वह पौधा जिसने उसको पाला बड़ा किया था।
न जाने उसका कैसे पत्थर सा दिल बना था।।
आंसू न उसने डाली जब रो रहा जहां था।
उस दृश्य दुःख से वहां तो योगी भी रो उठा था।।
अर्द्ध पुष्प को क्यों ऐ माली तूने तोड़ा।
पूरी उमर तक उसको क्यों शाख पर न छोड़ा।।
ऐसा लगता हमको कि अब भी तुम यहीं हो।
जान बूझ कर ज्यों हमसे छुपे कहीं हो।।
हमको नहीं पता तुम अब खो गए कहां पर।
श्रद्धान्जलि हैं देते अब 'देव' भी यहां पर।।

—देवराज मलिक

आभार प्रकाशन

सुपुत्र सुरेशचन्द्र के आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार सुनकर जिन महानुभावों ने घर पर पहुँच कर तथा पत्र द्वारा समवेदना प्रकट की है तथा इस विपत्ति में शोक-सन्तप्त परिवार को धीरज बँधाया है उन सभी का मैं 'समाज सन्देश' द्वारा आभार व्यक्त करता हूँ।

—धर्मभानु
गुरुकुल भैंसवाल कलाँ

Approved for Libraries by D. P. I's Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8 1 62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P 416

सदस्य संख्या

नाम श्री अध्यक्ष जी,

स्थान वाचनालय

पत्रालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

जिला हरिद्वार (U.P.)

✽ विज्ञापन की दरें ✽

टाइटल पेज एक चौथाई—	...	...	२० रुपये
बैक पेज आधा—	...	...	१५ रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ—	...	...	१२ रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ—	...	...	६ रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल से मुद्रित तथा प्रकाशित किया ।

दिसम्बर/जनवरी, 1973/74

★ समाज सन्देश ★

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र
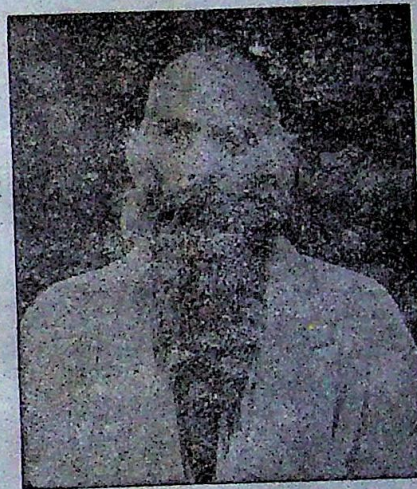
स्वर्गीय श्री भक्त फूलसिंह जी

आ त्वेता निषीदतेन्द्रमभि प्रगायत ।
सखायः स्तोमवाहसः ।। (ऋ- १,५,१)

आओ मित्रजनो ! तुम बैठो इन्द्रदेव की स्तुति गाओ ।
श्रुति मन्त्रों के वाहक हो तुम, प्रभु की महिमा बतलाओ ।।
इन्द्र बहुत आह्लादक है विभु रोचक शोक विमोचक है ।
पथबोधक मतिशोधक उत्तम भक्त जनों का मोदक है ।।

—निधि

मूल्य : एक प्रति 55 पैसे

वार्षिक चन्दा 6 रुपये

❀ विषय-सूची ❀

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा अखबार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार का पता—

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (रोहतक)

॥ ओ३म् ॥

व्यवस्थापक : श्री धर्मभानु

गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलां

तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

समाज सन्देश

प्रकाशन तिथि : २५ दिसम्बर १९७३

सम्पादक : आचार्य हरिश्चन्द्र

सहायक सम्पादिका : आचार्या सुभाषिणी

वर्ष पन्द्रहवां | दिसम्बर/जनवरी, १९७४ | अङ्क : नवां/दसवां

सम्पादकीय

महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां की संस्थायें

हमारी संस्थाओं से हरियाणा ही नहीं उत्तर भारत के सभी लोग परिचित हैं। आधी शताब्दी पहले गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना श्रद्धेय भक्त फूलसिंह जी महाराज ने की। वे अपने बलिदान से पूर्व संस्था को ऋणभार से दबा तथा लड़खड़ाती स्थिति में छोड़ गए थे। क्योंकि श्रद्धेय भक्त जी का सारा समय जनता जनार्दन की सेवा में बीतता था तथा वे संस्था को सम्भाल नहीं पाते थे। वे जब भी कहीं धन संग्रह का उपक्रम बनाते तो कोई दीन दुःखी उन्हें अपनी पुकार आ सुनाता और वे काम छोड़ उस की सहायता पर चल पड़ते। किसी भी प्रकार की पीड़ा हो मानसिक, शारीरिक, पारिवारिक, सामाजिक सभी प्रकार के पीड़ित जन श्रद्धेय भक्त जी महाराज की शरण में आकर अपना त्राण समझते थे। उनकी इस सेवा में न मजहब बाधा डालता था न जाति; न प्रान्तीयता रोक लगाती थी न भाषा भेद। श्रद्धेय भक्त जी का उद्देश्य तो प्राणी मात्र

की रक्षा करना सहायता करना था। फिर इतने लम्बे उद्देश्य का बन्दा संस्था को कैसे सम्भाल पाता। क्योंकि संस्था तथा परिवार को सम्भाल समान है। भक्त जी गुरुकुल भैंसवाल के संचालक संस्थापक तो थे पर उन का ध्यान संस्था पर नगण्य था।

गुरुकुल के स्नातक आचार्य श्री हरिश्चन्द्र, विष्णुमित्र, महामुनि, धर्मभानु, प्रभूदयाल आदि सेवक थे जो संस्था को बिल्कुल अवैतनिक रूप से कार्य कर संचालित कर रहे थे। वे सभी पीर बवर्ची भिश्ती खर की कहावत चरितार्थ करते थे।

इनके अलावा स्वनाम धन्य चाचा स्वरूपलाल जो थे जो अपना तन मन धन लगा कर संस्था के लिए अपना जीवन दान कर चुके थे। अन्दर तथा बाहर यही टोली संस्था को संभाल रही थी। तथा भक्त जी महाराज का सेवा का क्षेत्र बढ़ता जा रहा था। हरियाणे के लोग सभी क्षेत्रों में उन पर आश्रित हो चुके थे।

आज गुरुकुल भैंसवाल को स्थापित हुए आधी शताब्दी से अधिक समय हो गया। संस्था दिन प्रतिदिन प्रगति पथ पर है। इस संस्था में भारत के सभी संस्कृत शिक्षण संस्थाओं से अधिक ब्रह्मचारी छात्र हैं। वे सभी अन्तेवासी हैं। वहां कोई भी Day School नहीं है अर्थात् सब वहीं रहते हैं। सबकी भोजन छादन, आहार व्यवहार वेश भूषा समान है।

शिक्षा निःशुल्क है। इस सब का श्रेय संस्था के आस पास के लोग, महासभा के सदस्य तथा गुरुकुल के स्नातक जो अब तक निःस्वार्थ भाव से प्रायः अवैतनिक सेवा कर रहे हैं उनको जाता है। महासभा के प्रधान माननीय चौ० माडू सिंह जी का अपूर्व त्याग है जो उन्होंने भक्त जी महाराज के बलिदान के बाद अपनी वकालत की चिन्ता न कर, अपनी राजनैतिक शक्ति का सारा फल संस्थाओं के लिए अर्पित कर दिया। न उन्हें जीत की खुशी हुई न हार का गम। दिलोजान से वे संस्थाओं की सेवा में लगे रहे।

उनके ही प्रयत्न का परिणाम है कि महासभा के पांच हजार के लगभग सदस्य होने पर भी संस्थाओं के लिए परिवार की तरह संगठित होकर कार्य करते हैं। यही कारण है कि हमारा हर कदम आगे की तरफ पड़ता है तथा सफलता हमारे चरण चूमती है। वहां न कोई बड़ा है न कोई छोटा। सारी टीम स्पिरिट (भावना) है। फारवर्ड, गोलकीपर तथा साथी खिलाड़ी सभी एक जैसे जीत के भागीदार होते हैं। यही हमारी महासभा के सदस्यों की भावना है।

भक्त जी महाराज के बलिदान के बाद खानपुर में ही कन्या गुरुकुल की स्थापना महासभा ने की। कन्या गुरुकुल खानपुर गौशाला की कच्ची इमारतों में शुरु किया। झोंपड़ियों में पठन पाठन हुआ। वहीं धीरे धीरे बढ़ता यह आज उतर भारत की स्त्री शिक्षा की सब से बड़ी संस्था है। कन्या गुरुकुल के हाई स्कूल में आज सर्वतोमुखी शिक्षा दी जा

रही है। स्थिर अध्यापिका वर्ग है। अपना शानदार विद्यालय भवन है। सुन्दर छात्रावास है। आधुनिक ढंग की जल कल व्यवस्था है। स्वच्छ विशाल (Dinning Hall) भोजनालय है। मन्दिरनुमा विशाल यज्ञशाला है। फ्लश के शौचालय (टट्टियां) तथा स्नानागार हैं। प्राचीन ढंग का घाट वाला तालाब है।

कन्या गुरुकुल की अपनी गौशाला है। क्योंकि गुरुकुल गौशाला की ही भूमि में शुरु हुआ था। गौशाला में हरियाणा नस्ल की गायों की पालना की जाती है। गौशाला का अपना सुन्दर स्वच्छ आधुनिक भवन तथा कुट्टी आदि काटने की बिजली चालित मशीन है। अपनी चरागाह है तथा गायों के चारा पैदा करने के लिए भूमि तथा भूमि के उपयोग के लिए ट्रेक्टर आदि सभी यन्त्र हैं।

कन्या गुरुकुल में भक्त फूलसिंह मैमोरियल गर्ल्ज डिग्रि कालेज है। उसमें इंगलिश हिन्दी, संस्कृत, अर्थ शास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, संगीत, गणित, गृह विज्ञान (Home Science) आदि सभी विषयों के पठन पाठन की उत्तम व्यवस्था है तथा आगामी वर्ष से फिजिक्स, कैमिस्ट्री, बोटोनी, जोलोजी के पठन पाठन की व्यवस्था कर दी गई है। प्राचार्या, तथा प्राध्यापिका वर्ग सुयोग्य तथा परिश्रमी हैं।

यद्यपि अभी डिग्री कालेज के पास भवनों की कमी है पर आशा है महासभा आगामी वर्षों में इसे पूर्ण कर देगी।

कन्या गुरुकुल में भक्त फूलसिंह मैमोरियल कालेज आफ एजुकेशन ट्रेनिंग कालिज) भी है जिसमें B. Ed. ओ टी. (L. T. C), J. B. T., P. T. I. नर्सरी आर्ट क्राफ्ट ट्रेनिंग हैं। कालेज सर्वथा सब साधनों से युक्त तथा पूर्ण अत्यन्त सुयोग्य तथा परिश्रमी प्राध्यापिका वर्ग है। समुचित भवन है। शानदार रसायन शाला है। ट्रेनिंग कालेज की अपनी स्वस्थ परम्परा है। अपना छात्रावास है जिसमें शुद्ध सात्विक निरामिष भोजन मिलता है। छात्रायें अपनी संस्था को अपनी कुलभूमि समझती हैं। सब प्रकार की आधुनिक बुराईयों से दूर हैं।

कन्या गुरुकुल में इस वर्ष महिला आयुर्वैदिक कालेज भी आरम्भ किया है। आयुर्वैदिक कालेज का यह प्रथम प्रवेश है। वह अभी गुरुकुल के दूसरे भवनों में टिका है। अभी उसका छात्रावास बनकर तैयार होने वाला है। कालेज हस्पताल फार्मेसी अभी बनने हैं।

इस कालेज के भवन तथा निर्माण और सामान पर पांच वर्ष में पच्चीस लाख रुपया व्यय होना है। इस के कालेज के साथ शानदार सुसज्जित आधुनिक हस्पताल बनने जा रहा है। जिससे आस पास की जनता को अत्यन्त लाभ होगा।

कन्या गुरुकुल की वृद्धि का श्रेय विशेषतौर से खानपुर गांव के भाइयों को है

क्योंकि वे वहां पढ़ने वाली सभी छात्राओं को अपनी पुत्री तथा बहिनों से अधिक पवित्र आंख से देखते हैं। सुबह शाम छात्राओं का आगमन निरापद रहता है। यदि कहा जाये कि खानपुर गांव की सीमा में छात्रा अपने घर से अधिक सुरक्षित हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं ।

ये सब देन है श्रद्धेय भक्त फूलसिंह के बलिदान की तथा हमारे बुजुर्गों के पवित्र विचारों की।

यहां बहिन सुभाषिणी जी तथा पं० अभिमन्यु जी ने अपना जीवन लगाया है। वे दोनों यौवन में आये थे तथा अब पूर्णतया वार्धक्य से अभिभूत हैं। उन्हें कितने ही विष के घूंट पीने पड़े हैं, फिर भी वे शिव की तरह स्थिर हैं। प्रबन्ध में उनका सहयोग श्री सत्यप्रिय शास्त्री, पं० धर्मभानु तथा अब आचार्य विष्णुमित्र जी उपकुलपति कर रहे हैं। वस्तुत: बाह्य प्रबन्ध की तरफ से उन्हें बिल्कुल निश्चिन्त कर दिया जाता है तथा अन्दर के इन्तजाम का भार उन्हें उठाना पड़ता है।

हमारी संस्थायें माननीय चौ० माडूसिंह के नेतृत्व तथा इस प्रान्त के राजनैतिक धार्मिक नेताओं, महासभा के सदस्यों तथा कन्या गुरुकुल तथा गुरुकुल भैंसवाल के भूतपूर्व छात्र छात्राओं, स्नातक स्नातिओं के अपार सहयोग से चल रहीं हैं।

आशा है हरियाणा ही नहीं उत्तर भारत की आकांक्षाओं को पूर्ति में हमारी दोनों संस्थायें बढ़ चढ़ कर काम करेंगी और फूलती फलती रहेंगी।

नम्र निवेदन:— भूल से 13 पेज के पीछे की ओर पेज 16 छप गया है। कृपया पढ़ते समय ध्यान रखें। कष्ट के लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

रूस अमेरिका सम्बन्धों के सामान्यीकरण से विश्व-शांति की आशा

—धीरेन्द्र कुमार

बीसवीं सदी का यह उत्तरार्ध स्थायी शान्ति का पैगाम लिए बीत रहा है। ज्यों-२ नया वर्ष बीतता जाता है त्यों-२ शान्ति स्थापना के बारे में किये गये 'बड़े' देशों के प्रयास हमारे दिमागों को झटका देते हैं। प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ भी अपनी भविष्यवाणियों को बदलते देख दांतों तले उंगली दबाते हैं।

विश्व की दो सबसे बड़ी ताकते हैं रूस और अमेरिका। जब इनका पुराना इतिहास देखा जाता है तो पता चलता है कि विश्व महायुद्ध में ये दोनों देश प० जर्मनी के खिलाफ एक थे। उसके पश्चात् दोनों देशों ने उन्नति की और वे अपनी युद्ध में खोई हुई ताकत दुबारा प्राप्त कर सकने में सफल हो गए। अमेरिका का प्रजातन्त्र शासन रूस के साम्यवादी शासनतन्त्र से घृणा करने लगा और उसके विरुद्ध अपनी कार्रवायी करनी प्रारम्भ कर दी। फल निकला कि क्यूबा में दोनों की टक्कर आमने-सामने आ गई। तनाव बढ़ गया। दोनों अपने आप को दूसरे से असुरक्षित समझते गए परिणामस्वरूप अणु-आयुधों का निर्माण भारी संख्या में होना प्रारम्भ हो गया। भारत-पाक युद्ध (१९७१) के दौरान यह स्पष्ट हो गया था कि अमेरिका और रूस आणविक युद्ध के लिए तैयार थे जिसका उदाहरण रहा अमेरिका के सातवें बेड़े का पाकिस्तान की सहायतार्थ हिन्द महासागर में प्रवेश करना तथा रूसी बेड़े का भी पीछे आना। वियतनाम में दोनों देश खुलकर सामने आ गए परन्तु वहां कोई आणविक-युद्ध का खतरा दिखाई नहीं दिया था।

चीन भी अमरीका को फूटी आंख नहीं सुहाता था। अमेरिका उसे गैर-जिम्मेदार 'राजनीतिज्ञों का देश' कहता था जबकि चीन ने भी उसके खिलाफ कुछ भी कहने को शेष न रखा था लेकिन राष्ट्रपति निक्सन जो उपरोक्त अमेरिका के विचारधारा के कट्टर समर्थक थे ने चीन से दोस्ती का हाथ बढ़ाया और दोस्ती को प्रगाढ़ करने की कामना की। चीन के साथ दोस्ती करने के बाद विभिन्न राजनीतिज्ञों का यह विचार था कि अमेरिका

रूस के खिलाफत में ही चीन का दोस्त बन रहा है लेकिन निक्सन की मास्को यात्रा ने उनके इस विचार को झुठला दिया। अब तो निक्सन-ब्रेझनेव वार्ता के पश्चात् उनको अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर फिर से विचार करने पर विवश होना पड़ा।

रूस और अमेरिका की इस नई दोस्ती के कारण अभी 'रहस्य' बने हुए हैं लेकिन इस विचार को भी नहीं झुठलाया जा सकता कि यह सब अमेरिका द्वारा डरे जाने पर ही हुआ है। तुलसीदास जी ने एक जगह कहा है— बिन भय होत न प्रीति कृपाला।' अमेरिका के खिलाफ रूस और चीन द्वारा विभिन्न अणु-आयुधों के निर्माण को देख श्री निक्सन ने अपनी विदेश नीति पर फिर से विचारने का निश्चय किया। डा० किसिंजर द्वारा चीन तथा रूस की यात्रा ने विश्व-ताकतों के सम्बन्धों में एक नया मोड़ दिया। अणु शक्ति ही एक ऐसा चमत्कार था जिन्होंने कट्टर दुश्मन दिलों को भी मिलने को विवश किया। खैर, ब्रेझनेव ने अमेरिका की अपनी महत्वपूर्ण यात्रा में जो रंग दिखाए हैं उससे शेष विश्व ने अवश्य ही कुछ कुछ शांति की सांस ली। निक्सन-ब्रेझनेव समझौता का विश्लेषण करने के बाद पता चलता है कि शीत-युद्ध का संतापकारी काल समाप्त प्रायः हो चुका है। समझौतों के अनुसार यह हमें मानना होगा कि रूस और अमेरिका में सच्चे अर्थों सैद्धान्तिक नहीं तो मानवीय हितों की रक्षा करने के विचारों में एकता है। रूस और अमेरिका ने वास्तव में ही अपने आपको एक दूसरे के साथ सम्बन्ध सुधारने में योग-दान देने के लिए कृतसंकल्प कर लिया है। उनमें सहयोग और शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता की भावनाओं के युग की शुरुआत हो गई है।

इस शिखर वार्त्ता के ऐतिहासिक महत्व भी हैं। इन्होंने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है कि दोनों देश न तो स्वयं न किसी अन्य देश को परमाणविक युद्ध में जलने देंगे। जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है इससे मानव जीवन के बचे रहने की कुछ कुछ आशा है। लेकिन अफसोस है यह समझौता 'पूर्ण' नहीं कहा जा सकता। इस समझौते में यह धारा नहीं शामिल की गई कि अणुबमों, जो कि बमों के गोदामों में भर दिए गए हैं, का क्या उपयोग होगा। इस वार्त्ता में यह निश्चित् होना था कि अणुबम का उपयोग किसी भी शान्तिपूर्ण कार्य के लिए होगा। एक दैनिक पत्र की रिपोर्ट के अनुसार चीनी समाचार समिति ने रिपोर्ट दी है कि अमेरिका तथा रूस दोनों ने ही अभी अभी दो अणु परीक्षण किये हैं पंक्तियों के लिखने तक तो इस समाचार की न तो रूस ने न ही अमेरिका ने पुष्टि की है। यदि ऐसा है तो शिखर वार्त्ता न केवल अपूर्ण ही रह जायेगी अपितु इसके परि-णाम भी धूमिल हो जायेंगे। इस तरह दुनियाँ में जो भविष्य के प्रति आशा और विश्वास का वातावरण पैदा हुआ है, विनाशकारी युद्ध की आशंका बनी रहेगी। विचारों में टक-राव होते रहेंगे और परिणाम एक विध्वंस हो जाएगा। अणु-परीक्षण भी इसी दिशा का एक अंग है। क्योंकि अणु-परीक्षण चाहे वायु में किया जावे चाहे पानी में मानव के दैन्य व्यवहार में परिवर्तन अवश्य लायेगा। मानव की उम्र पहले ही थोड़ी रह गई है। और भी थोड़ी कर देने के लिए ये चार पांच महा शक्तियाँ आपस में होड़ लगा लेंगी तो

सह-अस्तित्व एक शान्तियुक्त वातावरण की कल्पना किस बिन्दु से की जा सकती है। शान्तिवादी भावनायें जो रूस और अमेरिका ने अपने नेताओं के प्रीतिभोज के अवसर पर प्रकट कीं, केवल भावनायें मात्र रह जायेंगी। लेकिन यह भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि ब्रेझनेव की १८ जून से २६ जून तक की अमेरिका यात्रा सफल रही है। कुछ न कुछ तो प्रलयंकारी विश्वविनाशक युद्ध से बचने की आशा अभी बनी है। इस प्रकार विश्व की जनता 'ऐसे' युद्ध की आशंका से यत्किञ्चित् मुक्त होकर अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में सहयोग और शान्ति पथ पर अग्रसर हो सकेगी। फ्रांस, चीन और ब्रिटेन ने हालाँकि ऐसा प्रण (समझौता) अभी किया नहीं है लेकिन राजनीतिक क्षेत्रों के अनुसार विश्व को उनसे तनिक भी डर नहीं होगा फिर वे वाशिंगटन समझौतों से भी प्रभावित तो होंगे ही।

निरस्त्रीकरण —

दोनों देशों ने संकल्प किया है कि वे आपस में अस्त्रों का निर्माण विशेषकर परमाणु अस्त्रों का निर्माण रोक देंगे जिससे विश्व की जनता में ताप-केन्द्रीय युद्ध की आशंका समाप्त हो जाए तथा अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा में मजबूती आए। १९७४, जिस साल निक्सन मास्को की यात्रा कर रहे हैं — में इस विषय में महत्वपूर्ण समझौते होंगे जो न केवल अमेरिका और रूस के सम्बन्धों में सामान्यीकरण दृढ़ीकरण की प्रगति करेंगे अपितु विश्व की जनता को परमाणु-शक्ति का उचित दाम दिला सकने में समर्थ होंगे। अस्त्रों के सीमाबन्दी से जो पैसा बचेगा वह लोक हितकारी कार्यों में लगेगा तथा इससे बढ़कर यह बात होगी कि विश्व की जनता किसी अचानक' भय से मुक्त रहेगी। अन्तस्तल में चाहे कुछ भी हो विश्व के प्रमुख नेताओं का तो यही आशामय विश्वास है।

शोक समाचार

ग्राम माहरा (सोनीपत) निवासी चौ० मौजीराम जी के सुपुत्र एवं गुरुकुल महाविद्यालय के छात्र ब्र० चन्दराम के कनिष्ठ भ्राता राजेन्द्र सिंह के दिनाङ्क 9-11-73 को स्कूल में अचानक मृत्यु पर हम शोक-भाव प्रकट करते हैं। यह छात्र बुद्धिमान व सुशील था। अपनी श्रेणी में सर्वप्रथम रहता था। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह विगत आत्मा को सद्गति व शोक-सन्तप्त परिवार को शान्ति प्रदान करे।

—अरविन्द कुमार विद्यालंकार

सरकार की सबसे बड़ी समस्या—वर्तमान शिक्षा

दयाप्रकाश

शिक्षा का अर्थ है मनुष्य-जीवन का सर्वाङ्गीण विकास तथा उन्नति का लक्ष्य प्राप्त करने का साधन। इस प्रकार शिक्षा मनुष्य को पशु से स्पष्ट अन्तर भी सिखलाती है। शिक्षा ऐसा साधन है जो मनुष्यों को समाज के लिए उपयोगी बनाने में सहायता करता है। मानव विभिन्न राजनैतिक, अन्तर्राष्ट्रीय, स्थानीय, आर्थिक, वातावरण में अपने आप को ढ़ालने के लिए विभिन्न गतिविधियों में अपने आप को शामिल करने के लिए शिक्षा प्राप्त करता है। वह शिक्षा से अपने कर्त्तव्यों का, अकर्त्तव्यों का ज्ञान करता है। शिक्षा ही तो ऐसा साधन है जो किसी भी मनुष्य को एक श्रेष्ठ नागरिक बनाती है। शिक्षा का उद्देश्य वर्त्तमान-जीवन की आध्यात्मिक एवं भौतिक गूढ़ताओं को समझाना है। आदर्श शिक्षा उपर्युक्त गुणों को सिखाती है। आदर्श शिक्षा एक व्यक्ति को सभ्य एवं श्रम का आदर करने वाला बनाती है। विभिन्न कलाएं जो मानव-जीवन के लिए एकदम से आवश्यक हैं आदर्श शिक्षा उपस्थित करती है। विश्व का प्रत्येक संस्थान व प्रत्येक उत्तरदायी व्यक्ति यही चाहता है कि उसके देश की शिक्षा सुधरे और प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली :—

प्राचीन काल शिक्षा जगत् का स्वर्ण युग था। प्राचीन काल की शिक्षा, व्यक्ति को पूर्ण विद्वान् बनने की चेष्टा में ही लगी रहती थी। शिक्षा-प्रणाली ऐसी थी कि कोई भी शिक्षा-प्राप्त जन किसी राष्ट्र-कल्याण के कार्य में लगा रहता था।

प्राचीन काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से छात्रोंको पढ़ाया जाता था। अनेकों विद्यालय व विश्वविद्यालय भारत के तथा विश्व के हजारों लाखों अशिक्षितों को शिक्षित किया करते थे। अलग-अलग विश्वविद्यालय का अलग-अलग विभाग था जैसे वाराणसी का कला संगीत, नृत्य आदि तो तक्षशिला का राजनीति धर्म आदि। विद्यार्थी समूह नगर व ग्राम वातावरण से दूर एकान्त सुरम्य सुवासित प्रदेश में प्राकृतिक छटाओं के वातावरण में अपनी शिक्षा ग्रहण किया करता था। उसे सांसारिक किसी भी कार्य

से कोई लगाव न था। भारत शिक्षा के क्षेत्र में विश्व भर का अग्रुवा था। प्रत्येक विषय की शिक्षा यहां दी जाती थी। आज के प्रत्येक 'प्रगतिशील' एवं 'विकसित' कहलाने वाले विषय गुरुकुलों में, विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाते थे। तात्कालिक शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण गुण यह था कि यह शिक्षा केवल आर्थिक विपन्नता को दूर करने के लिए ही नहीं थी अपितु आत्मा व मन की समस्त क्रियाकलापों पर अभिनियन्त्रण करके उनकी प्यास बुझाने वाली थी। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य कुछ आध्यात्मिक पक्ष में झुका था।

आजकल शिक्षा का उद्देश्य या कहिए शिक्षा से ज्यादा कीमत धन की होने लगी है। वही व्यक्ति, जिसके पास मोटर कार है—परिवहन के उचित साधन हैं, रहने को बंगला है—महंगे महंगे विद्यालय, कालिजों में पढ़ता है, जो धनवान है, शिक्षक बन जाता है। कहने का तात्पर्य है कि शिक्षा-जगत् में आर्थिक प्रश्न भी जुड़ गया है। ऊपरोक्त बातें बहुत पुराने जमाने की बात कही जाने लगी है। निर्धन छात्र के लिए स्कूल कॉलिज के दरवाजे बन्द हैं—अच्छी शिक्षा का पढ़ना उसके लिए मना ही है और इस तरह उसे सुशिक्षित होना, तो सपने में भी भूल जाना पड़ता है। भारत सरकार जब भारतीय 'शिक्षित' जन से 'निराशा' प्राप्त करती है तो उस के पीछे यही कारण रहता है कि धनी वर्ग धन के नशे में अपनी योग्यता अपेक्षित नहीं कर पाता तथा निर्धन बिना आर्थिक रूप से सुधरे पर्याप्त शिक्षा व योग्यता ग्रहण नहीं कर सकता। अस्तु ऐसे समय धन की कीमत शिक्षा से ज्यादा हो जाती है। साधारण जन जल्दी से जल्दी ही धन कमाने की सोचता है न कि कौटिल्य की भाँति धन की तरफ से निर्लिप्त हो कर पूरा ज्ञान प्राप्त करके देश की सेवा करने की।

सभ्यता के चक्र से हम आगे बढ़ते गए और अपनी शिक्षा को ऐसी स्थिति में ला खड़ा किया है कि यह किसी भी स्थिति में 'भविष्य' सुधारने की परिस्थिति में नहीं हो सकती। शिक्षा की इस दुनियां में राजनीति का आना विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त हानिकारक रहा है। इस जगत् में बिना किसी धार्मिक भेद भाव वा राजनीतिक विचारों से छात्रों को ओतप्रोत किये जाने पर ही देश को किसी भी अच्छी दिशा में ले जाने की सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके विकल्प में तो अन्धकार ही नजर आएगा। कुछ ही दिन बीते लखनऊ विश्वविद्यालय की घटना ने देश में एक जबर्दस्त मोड़ दिया। राजनीतिक नेताओं को एक भावना दी जो शिक्षा पद्धति को सुधारने की थी। भारत में विदेशी शिक्षा पद्धति लागू है — विदेशी भाषा ही माध्यम है — विदेशी अध्यापक तकनीक है—क्या हम इससे यह भी चाह सकते हैं कि हमारे देश के युवकों में स्वदेश-प्रेम, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धार्मिक, पवित्रता, आचरण की श्रेष्ठता जैसे विचार भरे जा सकते हैं। हमें वही गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पुनः लानी होगी—तभी समस्याओं का अन्त हो सकेगा। क्या हमारे लोकप्रिय नेता, जो शिक्षा के लिए इतना सब कुछ कर सकने का दावा करते हैं बता सकते हैं, शिक्षित करने के बाद युवकों का भविष्य क्या है? यदि स्वर्णिम है

तो क्यों आजकल 'शिक्षित'जन, सरकार के सिरदर्द है, यदि अन्धकार मय तो क्यों शिक्षा का इतना प्रचार किया जा रहा है—अशिक्षित क्यों नहीं रहने दिया जा रहा है ? यहां एक प्रश्न और है ? क्या जो शिक्षा यहां अधिकृत एवं स्वीकृत पुस्तकों द्वारा एक छात्र को दी जा रही है उसमें सत्यता का निवास क्यों हटा दिया जाता है —यदि प्रसिद्ध वैज्ञानिक वेकंट रमन् की मृत्यु हो जाती है तो छात्र को क्यों उसका 'वर्तमान' दिखाया जाता है। क्या शिक्षा की सरकारी मशीनरी छात्र को उपयोगी ज्ञान देने में असमर्थ है । छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करके धन कमाना चाहता है क्या उसके लिए कोई व्यवस्था स्थायी व्यवस्था राज्य द्वारा विचारी गई है ? बेरोजगारी, महंगाई, गरीबी में शिक्षा का कितना बड़ा योगदान है क्या सरकार ने यह सोचा भी है ? शिक्षा-क्षेत्र को राजनीतिक अड्डा बनाने से देश को नुकसान भी हो सकता है—क्या आज के कर्णाधार इस ओर से आंखें मून्द लेंगे ? क्या ताजा लखनऊ विश्वविद्यालय का घटनाक्रम उसे जगाएगा नहीं ? आर्थिक अस्थिरता, राजनीतिक, अस्थिरता, देश को अन्धकार मय स्थिति में डाल देने वाले, युवा आक्रोश के शिकार शिक्षा-पद्धति को सरकार द्वारा वक्तृतात्मक तौर पर नहीं क्रियात्मक तौर पर और अविलम्ब ही परिवर्तित करना होगा नहीं तो भारतवर्ष, वह पुराना धर्मगुरु सोने की चिड़िया तो दूर चारों ओर फैने अन्धकार में ही विलीन हो जाएगा—संसार के नक्शों में इस का रूप धुंधला जाएगा और वही होगा जो आज से लगभग 26 साल पूर्व था।

भारत सरकार इस बात को भली भांति समझती है। उसके पास योजनाएं हैं मगर वे लागू क्यों नहीं हो पाती ? यह समझ में नहीं आता हम भारतीय नागरिकों को भी समस्या को सुलझाने के लिए कोई ठोस सुझाव देने चाहिए। सरकार से सहयोग करके उचित वातावरण बनाने के लिए छात्रों को ही सम्मुख आना होगा तथा उन्हीं को फिर से भारत को विश्व-गुरु, कहलाना है। 'विश्व-गुरु'—एकशान है—मगर आज उस पर गहरा धब्बा है जिसे ये युवा छात्र ही धो सकते हैं।

सामाजिक प्रसङ्ग

नारी
अहिंसा की मूर्त्ति

अरविन्द कुमार

नारी एक ऐसी जाति है जो काल क्रम के अनुसार ही उन्नति और अवनति के मार्ग को प्राप्त करती है। वह एक ऐसी जाति है जिसे ऋग्वेद में गृह-स्वामिनी कहा है। वह एक ऐसी जाति है जिसे मुस्लिम साम्राज्य में 'घर की कैदी' कहा गया है। वह एक ऐसी जाति है जिसे आधुनिक काल में पुरुषों से बराबर मुकाविला करने के रास्ते पर ले जाया जा रहा है। उसे इस काल में पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में चाहे वह राजनैतिक हो, सामाजिक हो, शैक्षिक हो, कम रहने की अनुमति नहीं मिलती है। आजकल न केवल महिला ही पुरुष भी उसी के हमदर्द हैं—नारी के पक्ष के अधिवक्ता हैं।

आइये वैदिक काल का हम अवलोकन करें। मनु जी ने नारी के विषय में तो यहां तक कहा है —

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'

तात्पर्य यह है कि प्राचीन वैदिक युग में नारी का स्थान बहुत ही ऊँचा था। वह गृह-स्वामिनी थी। वह केवल गृह कार्य चलाने के लिए मात्र नहीं थी अपितु गृह-लक्ष्मी कहाती थी। पति के धार्मिक एवं आर्थिक कार्यों की भागीदार थी। कोई भी धार्मिक कृत्य का आयोजन नारी के अनुपस्थिति में अधूरा समझा जाता था। वे उच्च शिक्षा ग्रहण करती थीं। महाभारत में तथा पुराणों में अनेकों विदुषियों के नाम पाये जाते हैं। नारी एक ग्रन्थकार' भी होती थी। वह तपस्या करती थी। संक्षेप में समाज में उनका सर्वत्र सम्मान था। वह 'अर्धभागा मनुष्यस्य' महाभारत के कथन की अधिकारिणी थी। वह एक देवी समझी जाती थी। उनको पुरुषों जितने अधिकारों को उपभोग करने की स्वतन्त्रता थी लेकिन यहां एक बात विचारणीय है कि आजकल की इसी स्थिति से वह

कहीं उज्जवल एवं उत्तम स्थिति थी।

वह पुरुष की अर्धांगिनी थी। सभी क्षेत्रों में पुरुषों का सहयोग करती थी। सच्चे मायनों में वह 'नारी' थी।

मध्ययुगीन नारी-स्थिति एकदम से करुणाजनक है। इस काल में यह जाति पिछाड़ दी गई और ऐसे सामाजिक बन्धन इस पर लगाए गऐ जिन्होंने इसकी सभी स्वतन्त्रताओं का हनन किया और इसको सभी क्षेत्रों में पीछे धकेल दिया। वे पुरुषों के, जिन्होंने उसे खूब लूटा हाथ के खिलौने मात्र रह गए। उसे ऐसे कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं थे जो उसे परिवार की सम्पत्ति की भागीदार बनाते हों। घर का सारा कार्य उसी के ऊपर था। उसे गृह दासी का दर्जा मिला हुआ था। वह पर्दे के अन्दर रहती थी। उसे प्रातः सबसे पहले उठना पड़ता था और घर के अन्य सदस्यों के लिए नाश्ता तैयार करना पड़ता था। घर की सफाई करनी पड़ती थी तथा अन्य गृह सदस्यों की आज्ञा की प्रतीक्षा करनी होती थी। दिन भर घर में बन्द रहने पर रात को वह सबको खाना खिला कर स्वयं खाना खाती थी और रात को सास ससुरों के पैर दबाकर वह सोती थी। यही स्थिति आधुनिकाल में भी वर्तमान है।

घर में लड़की का जन्म लेना बहुत बुरा समझा जाता था। प्रायः उसका वध करने का प्रयास किया जाता था। मध्यकाल का यह रूप अत्यन्त घिनौना था। शुक्र है अब यह प्रथा बन्द हो गई है। स्त्री का विवाह एक ही होता था। विधवा विवाह गैर कानूनी (असामाजिक) था। अन्तर्जातीय विवाह तो दूर अन्तः वर्गीय विवाह भी कठिन कार्य था। बाल-विवाह की प्रथा थी। यहां के पाखण्डियों ने सती-प्रथा को प्रारम्भ कर दिया। इतिहासकार का मन विचलित हो उठता होगा जब वह हजारों युवतियों के सती हो जाने की घटना का वर्णन कर रोना होता है। पति की मृत्यु के बाद उसका एक ही आदर्श, एक ही कर्त्तव्य रह गया था और वह था 'सती हो जाना'। उसे द्वितीय विवाह की कल्पना भी करने की अनुमति नहीं थी। घर के कार्यों में उस की राय तक नहीं ली जाती थी। पर्दे के बगैर तथा अकेली घर से निकलने की अनुमति नहीं थी। उसे धर्म और शिक्षा से दूर रखा गया। धर्म और शिक्षा की एक मात्र ज्ञान 'वेद' को पढ़ना तो दूर सुनना भी अपराध समझा जाता था। कहा जाता था 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' धर्म के क्षेत्र में वह कोसों दूर थी—संकुचितमना हो गई थी। आर्थिक क्षेत्र में वह केवल परावलम्बी रही है। वह जीवित रहते पति के धन पर गुजर करती थी।

उस काल का नीति श्लोक था :—

'पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
पुत्राः रक्षन्ति वार्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्रयमर्हति'॥

अधिकार के नाम पर :—

'ढ़ोल गंवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी'॥

कानून तो इस काल में भी बने लेकिन सभी कानूनों ने जहां पुरुषों की श्रेष्ठता का ध्यान रखा स्त्री को शूद्र बनाते हुए एक पशु से भी नीचे ले गए।

संक्षेप में इस काल में स्त्रियों को इतना सताया गया कि वह दुष्काल-चक्र में बिल्कुल पिस गई है और पुनरूत्थान के लिए उसे अभी आगे भी प्रयास करने होंगे।

सुधारवादी आन्दोलन हुए। आचार्यप्रवर महर्षि दयानन्द जी इसके अग्रेसर थे। उन्होंने भारतीय नारी को वही दुबारा प्राचीन पद 'देवी' (Goddess) प्रदान करने का यत्न किया। स्वरचित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' में उन्होंने नारी को सम्मान पद देने का सफल प्रयास किया। उनके प्रयत्नों से नारी जाति के उत्थान का सूर्य उदित हो चुका था। उन्होंने अपने उपदेशों में नारी को 'अहिंसा का अवतार' कहा जिसे महात्मा गान्धी ने पुनर्भाषित किया। उन्होंने नारी समाज में जागृति पैदा की। और प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया कि वह भी अमर ज्ञान 'वेद' पढ़ने की अधिकारिणी है। शिक्षा प्राप्त करने की अधिकारिणी है। नारी जाति के उत्थान में पाश्चात्य सभ्यता का भी आंशिक प्रभाव है। अंग्रेजों ने सति-प्रथा का मूलतः उन्मूलन किया। उसकी शिक्षा के प्रबन्ध किए।

नारी जाति के पुनरूत्थान में महात्मा गान्धी का बड़ा योगदान रहा है। वे नारी के पक्ष में बोलने में 'वकील' थे। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन करते हुए नारी जाति को भाग लेने का आह्वान किया। हजारों नारियों ने गिरफ्तारी दी। इस प्रकार वे नारी जाति को राजनीतिक क्षेत्र में ले आए।

परिणाम स्पष्ट है नारियां शिक्षा क्षेत्र में राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में आगे ही आगे बढ़ती जा रहा हैं। स्त्रियां भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षाओ (I. A, S. Examinations) में बैठती हैं। पास होती हैं। गत परीक्षा (I. A. S.) में प्रथम एवं द्वितीय स्थान छात्राओं ने (बिहार निवासी) अधिकृत किये थे। वह आजकल कई देशों की बागडोर सम्भाले हुए हैं। एक महिला ने यू-एन० ओ० के अधिवेशन की अध्यक्षता भी की है। वह किसी राज्य की गवर्नर है तो किसी दूसरे देश में राजदूत भी है। संविधान उसे पुरुष के बराबर मानता है। पुरुषों समान उसे सभी मौलिक अधिकार प्राप्त हैं।

सहायता करने की सोची वहां उसने दोनों राज्यों के बीच एक शान्ति समझौते कराने की भी सोची। अमेरिका भी इसी प्रयास में सतत था लेकिन वह भारत को राजी न कर सका। ब्रिटेन ने भी दोनों राज्यों के बीच एक समझौता कराने का प्रयास किया लेकिन वह उस प्रयास के लिए अयोग्य ही सिद्ध हुआ। रूस ने चूंकि पाकिस्तान को भी काफी अस्त्र-शस्त्र-सामग्री दी थी - पाक को अपने पक्ष में करने का सफल प्रयास किया। भारतीय नेता भी जानते थे कि युद्ध से लाभ के बजाय हानि का द्विगुणीकरण अथवा इससे भी ज्यादा हो सकता है—अतः समझौते के उत्सुक थे। पाक-नेता भी यह समझते ही थे कि अगर यथाशीघ्र युद्ध नहीं रोका गया तो न केवल आर्थिक रूप से अपितु जमीन से भी अपंग हो जायेंगे अतः वे भी समझौते के उत्सुक थे। आखिरकार रूस ने समझौते करने को दोनों राष्ट्रों को कहा तथा मध्यस्थता के लिए अपने आप को पेश किया। सारा विश्व तब हक्का-बक्का रह गया जब पाकिस्तान ने रूस की इस तटस्थता को प्रत्यक्ष रूप से अविलम्ब ही स्वीकार कर लिया। खैर, समझौता हुआ और इस सारे प्रयास का श्रेय रूस को मिला। फलतः रूस का प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे ज्यादा तथा स्थायी प्रायः हो गया है। पाक-भारत (१९७१) युद्ध ने रूस को फिर भारत का साथ देने के लिए प्रेरित किया और रूस ने भारत से बीस वर्षीय सन्धि करके भारत को हर सम्भव मदद देने का निश्चय किया। इसी युद्ध के दौरान भारत सरकार, जिस का नेतृत्व श्रीमती इन्दिरा गांधी कर रही हैं—की शानदार विदेश व रक्षा नीति के परिणामस्वरूप भारत ने एक नये देश के अभ्युदय से अपूर्व सहयोग दिया। अपनी सेना भेजकर केवल १६ दिनों की दर्द-नाक लड़ाई में पाक सेना के घुटने टेक दिये। इस युद्धके दौरान अमेरिका का प्रत्यक्ष समर्थन पाक को प्राप्त था तथा रूस का समर्थन भारत को। भारत को प्राप्त विजय व बंगला देश के अभ्युदय ने रूस का इस उपमहाद्वीप में प्रभाव कहीं ज्यादा हो गया। निक्सन-ब्रेझनेव वार्त्ता पुरानी पड़ गई। माओ-निक्सन वार्त्ता ने इस उप महाद्वीप को महा-शक्तियों के प्रभाव का अड्डा बनाए जाने की आशंका रोपित कर दी थी जिसका निवारण खुद श्री निक्सन ने कर दिया है।

ताजे घटनाक्रम पर भी हम एक नजर दौड़ाएं। अफगान राज्य का तख्ता उलटकर दाऊद सरदार द्वारा अपने आप के नेतृत्व में गणराज्य की स्थापना ने भारत तथा पाक के राजनीतिक क्षेत्रों में हलचल मचा दी है। हालांकि पाक ने नई सरकार को मान्यता दे दी है लेकिन इसके तथा अफगान सरकार के बीच वाक्युद्ध जारी है। इसी बीच ईरान के शाह तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति के समझौते ने इस महाद्वीप में नया बखेड़ा पैदा कर दिया है। ईरान के शाह का यह कथन कि पाकिस्तान के विघटनकारी तत्वों से हम प्रत्यक्ष रूप से निबटेंगे—अपने आप में बहुत महत्व रखता है। ईरान द्वारा अमेरिका से हथियारों का क्रय तथा भारत के खिलाफ प्रयोग करने के लिए पाक को देना एक नये अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को जन्म देती है। इतना जरूर है कि पाक-भारत युद्ध किसी भी आकस्मिक आक्रमण के रूप में हो सकता है क्योंकि पाकिस्तान भारत से चिढ़ा हुआ है। न जाने कब डंक मारने को आ जाए।

ऐसी स्थिति में किसी स्त्री की यह मांग कि उस को और भी अधिकार दिए जाएं -- मेरी समझ में बिलकुल अनुचित है। वह परिवार की एक महत्त्व पूर्ण सदस्य है। वह परिवार रूपी गाड़ी की पुरुष के समान ही दूसरा पहिया है। वह मानवजाति की माता है प्रशिक्षक है और मानव-जाति को सभ्य तथा उन्नत करने में सहयोगी है। ऐसी सामाजिक स्थिति प्राप्त करके यह उनका दुर्भाग्य होगा कि वह और भी अधिकारों की मांग करें। यह पुरुष-जाति का भी अपमान होगा कि उसे अपनी क्रिया-शीलता की सीमा का उल्लंघन करते देखे।

विदाई-गीत

☆

गुरुकुल भैंसवाल महाविद्यालय ! तुझको आज बधाई।
तेरे विद्या के प्रकाश से, धूम जगत् में छाई ॥

अन्धकार को दूर भगाया, विद्या ज्योति जगाई।
दुर्गुण खोकर, तुझसे हमने उत्तम शिक्षा पाई ॥

परोपकारी होकर तूने, दुखियों का दुःख दूर किया।
तुमने विद्या के प्रकाश से ज्ञान हमें सम्पूर्ण दिया ॥

मेरा जीवन-कुसुम खिलाया, ज्ञानामृत भरपूर दिया।
तूने विद्या सर्वोत्तम दी, दुर्गुण-गण को दूर किया ॥

अब जाने को तत्पर हूँ मैं, प्रेम-विदाई चाहता हूँ।
प्रेम-भाव की भेंट तुम्हें है, सदा प्रेमगुण गाता हूँ ॥

—शंकरदेव विद्यालंकार

भारतीय उपमहाद्वीप में अनिश्चय का वातावरण भारत को सजग रहना है !

हरिराम विद्यालंकार

●

विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति इस कदर उलझी हुई प्रतीत होती है कि न जाने कब कौन राष्ट्र किस अन्य राष्ट्र का मित्र वा शत्रु बन जाता है। आज का युग पारस्परिक सहयोग का युग है। बगैर उसके दुनियां का कोई भी राष्ट्र समुन्नत व विकसित नहीं हो सकता। कोई भी महाशक्ति, दूसरी महाशक्ति के सहयोग के बिना अपना प्रभाव किसी भी क्षेत्र में विस्तृत नहीं कर सकती। निक्सन की मास्को यात्रा ने कुछ ऐसे संकेत दिए हैं कि विश्व में जो विनाश की भावना की लहर चल रही थी वह कुछ अंशों में रुक रही है—सह-अस्तित्व की भावना इन दोनों महाशक्तियों के मन में आई है। अमेरिका के राष्ट्रपति श्री निक्सन के निमन्त्रण पर सोवियत संघ की कम्युनिष्ट पार्टी के अध्यक्ष श्री ब्रेझनेव की वाशिंगटन यात्रा से उपरोक्त भावना अर्थात् सह-अस्तित्व की भावना को प्रबल प्रवाह मिला है। विकासशील एवं न्यूनोन्नत राष्ट्र अपने आप को सुरक्षित (आंशिक तौर पर) समझने लगे हैं। उनका अस्तित्व निराशा के गर्त में पड़ने से कुछ न कुछ बचा अवश्य है। यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि विश्व में युद्ध लड़ने की भावनाओं के बजाय शान्तिपूर्वक अस्तित्व की भावना ने जोर पकड़ा है। इस नए आये युग में लड़ाई की बात करने वाला, लड़ाई का समर्थन करने वाला हानि उठाएगा—न कि उसे कुछ लाभ-प्राप्ति की आशा हो।

भारतीय उपमहाद्वीप की स्थिति कुछ ऐसी है कि विश्व-प्रमुख महाशक्तियां यहां सदा से अपना प्रभाव क्षेत्र बनाने की कोशिश में रहीं हैं। ब्रिटेन ने इस महाद्वीप के देशों को आजाद किया तो राष्ट्रमण्डल में सदस्य बनाकर इस उपन्महाद्वीप में अपना प्रभाव जमाने का प्रयास किया। भारत-चीन युद्ध में अमेरिका द्वारा भारत को सहायता प्रदान करना उसका चीन का प्रभाव बढ़ने से रोकने तथा अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने का प्रयास था। १९६५ के युद्ध तक भारत तथा पाकिस्तान का वैमनस्य बहुत हद तक बढ़ गया था तथा अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को हथियार देना भारत से अमेरिका के मतभेद का प्रमुख कारण बना। अमेरिका की यह चाल कि वह भारत के साथ साथ पाकिस्तान में भी अपना प्रभाव स्थापित करे—विफल हो गई। १९६५ में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया - फलतः रूस भारत की मदद पर आया। जहां उसने भारत की परोक्ष रूप से

श्रद्धाञ्जलि : मुक्तक्

—जयपालसिंह श्योकन्द

सच्चा उपदेष्टा :—

'सच्चा ग्राह्य' सुनाने वाला,
मार्ग–प्रदर्शन करने वाला,
स्वामी जी का वह शिष्य था।
आर्य समाज की प्रेरणा से,
छोड़ दी थी मांस और मदिरा,
अज्ञान की रात्रि सचमुच ज्ञानचन्द्र,
वेद-प्रकाश-कर्त्ता, धर्म-धौरेयी महान् था।
क्रूर काल ने उसको छीना,
नहीं भक्तों का ख्याल किया,
तेईस दिसम्बर को गोली ने,
'धीरेण्विन्द्र' को परलोक दिया।
नहीं भूलेगा इतिहास उसे,
आर्यसमाज उसके भी गुण गायेगा,
सीना ताने जिसने अन्याय का
किया सामना, वह तो 'जय-पाल' था।
हम सब बोलें जय उसकी श्रद्धानन्द दिव्य महान् था॥

इतिहास का एक पन्ना

स्वतन्त्रताप्रिय महाराणा प्रताप

– वाचस्पति यादव

आजादी सब को प्रिय लगती है। सब लोग स्वतन्त्रता चाहते हैं। कोई नहीं चाहता कि मैं परतन्त्र होउँ, परन्तु आजादीं बलिदान मांगती है। इस आजादी को ही प्राप्त करने के लिए भारतवासियों ने सन् १९४७ से पहले अनेक बार अनेक लोगों ने अपने अमूल्य जीवन की आहुतियां इस स्वतन्त्रता-संग्राम के होम में अर्पित की। पटेल, तिलक गोखले, गान्धी, नेहरू, सुभा , चन्द्रशेखर, भक्तसिंह इत्यादि न जाने कितने ही लोगों ने अपने प्रिय भारत को गोरों की हुकूमत से मुक्ति दिलवाने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार से बलिदान दिए। सुभाष, शेखर व भगतसिंह आदि ने तो अपने जीवन को बलिदान ही कर दिया। भारतवर्ष में न जाने कितनी आक्रमणकारी जातियां आयीं या तो उन्हें मुँह की खानी पड़ी या वे भारतवर्ष को मां मानते हुए इसी में रहने लगे। इसी प्रकार इन आर्यों के देश में इन्हीं की आपसी फूट को देखकर मुगल आये उन्हीं का दूसरा रूप आज भारत का एक भाग लेकर बसे हुए पाकिस्तान के रूप में दिखाई देता है। अब की बात छोड़िये अब आप आज से लगभग 450 या 500 साल पहले के युग में चलिए। भारतवर्ष के एक प्रान्त राजस्थान में अपने अर्थ के अनुसार न जाने कितनी रियासतें कितने राजा थे उस समय। पर जब मुगलों का आक्रमण जोर पकड़ा तो अकबर के सामने सब ने आधीनता स्वीकार कर ली और वे लोग आजीवन अकबर के चमचे बने रहे तथा दासता की कीचड़ में धंसे रहे। परन्तु चित्तौड़ अपने आप में ही बहुत गौरव रखता है। यह चित्तौड़ राजस्थान का ताज है। यहां बड़े वीर बहादुर साहसी राजाओं ने जन्म लिया है। इसी शिशोदिया वंश में वंश के नाम को चमका देने वाला राणा प्रताप भी हुआ है।

राणा प्रताप उदयसिंह का पुत्र तथा शेरदिल साहसी व निर्भीक राणा संग्रामसिंह (सांगा) का पौता था। दादा के सारे गुण इसमें समाए थे। जब मुगलों का लगभग अकबर के समय में सारे भारत पर अधिकार होने जा रहा था उस समय एक वीर सेनानी राणा प्रताप थे जिन्होंने अकबर को नाकों चने चबाए। अकबर ने चित्तोड़ पर आक्रमण किया था तो उदयसिंह स्वयं तो पुत्र के साथ व अन्य आत्मीय जनों को लेकर वहां से

भाग निकला। जयमल और फत्ता अन्ततः अकबरी सेना से लड़ते मारे गए। उदयसिंह ने अपने नाम पर एक शहर बसाया जो आजकल उदयपुर के नाम से विख्यात है।

यहीं पर महाराणा प्रताप का प्रारम्भिक जीवन बीता। उसने शेरों से मर्दानगी व स्वतन्त्रता का पाठ सीखा तो पर्वतों से अटलता का पाठ सीखा। अकबर की आंखों में कांटे के समान खटक रहा था। जब राणा प्रताप ने अकबर के तेवर बदलते देखे तो राणा ने जो अपने पिता की मृत्यु पर गद्दी पर बैठा था और जो बिना राज्य के राजा था अपने विश्वस्त लोगों को इकट्ठा किया तथा आजादी व शूरता की शिक्षा देने लगा। भीलों से सम्पर्क किया जो इस पर जान तक देने के लिए तैयार थे। राणा ने उन सब को इकट्ठा करके एक प्रतिज्ञा ली कि "प्रतिज्ञा करो कि जब तक हम चित्तोड़ को आजाद न करा लेंगे कभी उत्तम बर्तनों में नहीं खायेंगे, धरती पर सोयेंगे तथा चैन की सांस न लेंगे।" सब राजपूतों ने हां में सिर हिलाया तथा महाराणा के साथ जुट गये।

राणा ने उन सब राजाओं से जिन्होंने अकबर से सम्पर्क कर लिया था सम्पर्क तोड़ दिया। एक दिन राजा मानसिंह महाराणा से मिलने आया। राणा उसके साथ सहभोज में सम्मिलित न हुआ। वह चला गया तथा कहता गया कि तुम्हारी दवाई मैं साथ लाउँगा। अकबर नहीं चाहता था कि वह मुगल सेना से राणा का दमन करे। अतः जब मानसिंह ने राणा से लड़ने का प्रस्ताव रखा तो वह राजी हो गया और अपने पुत्र को सेनापति बनाकर भेजा। दोनों तरफ से लड़ाई की तैयारी होने लगी। आखिर जलील, ईर्ष्यालु मानसिंह राणा प्रताप से भिड़ने के लिए अपनी सेना सहित जिसमें शक्तिसिंह भी था आ गया।

राणा प्रताप अपने देशभक्त, वीर साहसी तथा मरने के लिए तैयार बाईस हजार योद्धाओं को लेकर हल्दी घाटी में ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए अपनी सेना को मरने मारने के लिए कटिबद्ध कर आ जमा। वफ़ादार भील व राजपूत उसके साथ थे।

देखते देखते लड़ाई आरम्भ हो गयी। वहां पर खून की होली खेलने वाले राजपूतों ने मुगलों को नाकों चने चबवाए। काफी मुगल हताहत हुए पर बाईस हजार सेना 2 लाख सेना के सामने क्या कर सकती थी। राणा मुगलों को गाजर मूली की तरह काट रहे थे। अन्ततः वे घिर गए। राणा मानसिंह तक पहुंचना चाहता था पर न पहुंच सका। सलीम मरते मरते बचा। मुगल राणा के खून के प्यासे थे फिर भी राणा बढ़ रहे थे। मार-काट में उनका घोड़ा घायल हो गया। राणा की स्थिति घायल शेर की तरह थी।

एक सरदार ने देखा कि राणा के प्राण संकट में हैं वह आगे बढ़ा तथा वीरता का परिचय देता हुआ राणा तक पहुंच गया तथा छत्र को राणा से लेकर वह वीर राणाको बचाने के लिए स्वयं अपने प्राण आजादी के लिए अर्पित कर गया। राणा युद्ध भूमि से दूर चेतक पर चढ़ा जा रहा था। पीछे दो मुगल सरदार थे। राणा ने अचानक एक

आवाज सुनो "ओ नीले घोड़े के सवार ! ओ नीले घोड़े के सवार !" और दो गोलियां चलीं तथा दोनों मुगल ढेर हो गए। राणा रुक गया उसका भाई शक्तिसिंह आ रहा था। राणा ने सोचा यह पापी मेरे खून का प्यासा है चलो भाई के हाथ से मरना ही अच्छा है।

पर माजरा कुछ और ही था। राणा के पैरों में पड़ा शक्तिसिंह क्षमा माँग रहा था तथा बच्चे की तरह रो रहा था। दो भाईयों के मिलन की खुशी में पेड़ों ने फूल बरसाए। राणा प्रताप अब अकबर से बचता घूम रहा था। पर एक दिन उससे अपने बच्चों का दुःख न देखा गया। वह रो पड़ा तथा एक पत्र में अकबर के नाम लिखा "मुझ पर रहम करो।" अकबर को विश्वास न आया तो पृथ्वीराजसिंह नामक राजपूत जो वीररस की कविता भी उतनी अच्छी तरह कर सकता था जैसे तलवार चला सकता था, उसने राणा के हृदय को बदला पर राणा क्या करता। वह सिन्धु पार जाकर राज्य स्थापित करना चाहता था अतः वह चल दिया। धन्य है इतने कष्टों पर भी इतने महान् विचार उत्पन्न होते हैं।

राणा जा रहा था तो बीच में एक सुखद घटना घटी। भामाशाह ने उन्हें इतना धन दिया कि 25 हजार आदमी 12 साल तक गुजारा कर सकें। जहां हम लोग प्रताप पर फूल चढ़ाते हैं तो फूल भामाशाह के नाम पर भी चढाने चाहियें।

राणा ने फिर सेना इकट्ठी की तथा बेखबर सो रहे मुगलों पर भूखे शेर की तरह टूट पड़ा। आखिर अन्तिम घड़ियां (मृत्यु) नजदीक थी। राणा बिस्तर पर लेटे हुए थे। मरणासन्न थे पर एक टीस थी मन में कि चित्तोड़ परतन्त्र है। उसने पुत्र सहित सब सरदार इकट्ठे किए तथा कसम खुआई "जब तक चित्तोड़ स्वतन्त्र नहीं हो जाता तुम चैन से न बैठना" और सुख से मर गया। और अमरसिंह ने चित्तोड़ आजाद करवा लिया।

राणा प्रताप बड़ा वीर व सच्चा देशभक्त राजपूत था। शत्रु के कोप, घृणा तक कि तिरस्कार भाव को भी सहन कर सकता था। इस प्रकार उस विक्रमप्रिय राजपूत व स्वतन्त्रता सेनानी प्रताप का अन्त हो गया। उस की मृत्यु पर अकबर ने भी प्रेमभरे शब्द कहे थे। राणा प्रताप के नाम से मन्दिर बनायें जायें तथा लोग वहां जाकर स्वतन्त्रता देवी की पूजा करें और स्वतन्त्रता का सबक सीखें। स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ें।

विचार—कण

—अरविन्द कुमार विद्यालंकार

1– पश्चिम एशिया की स्थिति :—

6 अक्तूबर से 22 अक्तूबर तक पश्चिमी एशिया में मिस्र, सीरिया व इस्राईल में युद्ध के बाद अमेरिकी विदेशमन्त्री श्री हेनरी किसिंगर के प्रयत्नों से युद्ध विराम हुआ। इस युद्ध में पहल करने का प्रारम्भिक लाभ मिस्रियों को तो कुछ मिला किन्तु सीरियाइयों को गोलान की पहाड़ियों से खदेड़ दिया गया। एक समय तो ऐसा भी आया जबकि सीरियाई राजधानी दमिश्क को खतरा पैदा हो गया था। इधर मिस्री क्षेत्र में इस्रायली सेना ने स्वेज नहर के पश्चिमी तट पर जाकर रूस प्रदत्त सेम–6 के अड्डों को नष्ट किया तथा नहर के पूर्वी तट पर गए हुए 20 हजार मिस्री सैनिकों को घेर लिया जिसके परिणामस्वरूप मिस्र को बातचीत के लिए झुकना पड़ा। अब स्थिति यह है कि मिस्र और इस्राईल के प्रतिनिधि काहिरा से 101 मील दूर काहिरा स्वेज राजमार्ग पर शान्ति का मार्ग खोज रहे हैं। उनमें युद्धबन्दियों की अदला बदली भी हुई है। मिस्र इस्राईल से कह रहा है कि वह अपनी सेना को २२ अक्तूबर वाली जगह पर ले जाये किन्तु इस्राइली प्रधानमन्त्री श्रीमती गोल्डा मायर व रक्षामन्त्री श्री मोशे दायान को यह प्रस्ताव मन्जूर नहीं।

मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात को लीबिया के कर्नल गदाफी काफी जली कटी सुना रहे हैं। उनका कहना है कि सादात ने मुझसे बिना परामर्श किए ही युद्ध शुरु किया और अब शान्तिवार्ता भी मुझसे बिना परामर्श के ही की जा रही है। उधर सऊदी अरब के राष्ट्रपति शाह फ़ैज़ल यह नहीं चाहते कि लीबिया से इस सम्बन्ध में कोई राय ली जावे। मिस्र की आर्थिक स्थिति सीमित ही है। युद्ध के लिए अरबों में सऊदी अरब ही मिस्र की सर्वाधिक सहायता करता है। मिस्र के सादात ने सारी अरब जाति के 1967 के अपमान का इस्राईल से बदला लेने का उत्तरदायित्व अपने ही ऊपर ले रक्खा है। उधर ईराक सीरिया को इस्राईल से किसी प्रकार की भी वार्ता करने से रोक रहा है। फलतः इस बार एक साथ इस्राईल पर आक्रमण करने वाले मिस्र व सीरिया असमंजस में पड़ गए हैं। फिलहाल स्थिति जटिल ही है। फिर भी समाधान ढूँढने के प्रयत्न जारी हैं। भविष्य

ही बताएगा कि इस्राईल 1967 में अधिकृत मिस्र का सीनाई क्षेत्र व सीरिया के गोलान पहाड़ियों को खाली करता है या नहीं। 'अरब राष्ट्र फिर कभी इस्राईल की भूमि पर लोलुप दृष्टि न डालेंगे'—इस्राईल इस बात की गारण्टी मांग रहा है।

यदि हाल के युद्ध में इजराईल के पास मिस्रियों का सिनाई का विस्तृत रेगिस्तानी क्षेत्र तथा सीरियाइयों की गोलान हाईट्स का क्षेत्र न होता तो अवश्य ही 16 दिन के इस भयङ्कर युद्ध में इजराईलियों की दुर्दशा हो जाती। इजराईलयों को अनुभव है कि अरब जाति विश्वसनीय नहीं है। यही अविश्वास उन्हें 1967 में अधिकृत अरब क्षेत्रों से हटने से रोक रहा है।

2- भुट्टो और भारत :—

पिछले वर्ष पाकिस्तान के जुल्फीकार अली भुट्टो जब शिमला आये थे तो इन्दिरा–भुट्टो वार्ता के बाद विश्व को आशा की किरण दीख पड़ी थी कि भारतीय उप-महाद्वीप में स्थिर शान्ति स्थापित हो जायेगी। पाकिस्तान ने समय समय पर इस आशा को तोड़ने का ही दुष्प्रयास किया है। किन्तु हाल ही में पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री भुट्टो ने पाक-अधिकृत कश्मीरी इलाकों में जो खतरनाक भाषण दिये हैं उनसे तो भारत को उन्होंने चपत ही रसीद की है।

तथाकथित 'आजाद कश्मीर'.को पाकिस्तान का एक सूबा बनवाने के लिए उन्होंने वहां के निवासियों को विद्रोह के लिए भड़काया है। हालांकि भारतीय विदेशमन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने लोकसभा में भुट्टो के भाषणों पर आपत्ति करते हुए कहा है कि 'कश्मीर भारत का अभिन्न अङ्ग है; भुट्टों के भाषणों से कुछ परिवर्तन नहीं होने वाला' तथापि यह सुझाव कि— भारत को भुट्टों के साथ कड़ाई से ही निपटना चाहिए शान्ति से नहीं' क्या गलत होगा ? हमारा शान्ति नीति की तो.भुट्टो अपने हर किसी भाषण में धज्जियां उड़ा देते हैं और हम हैं कि हर बार उन्हें विश्वसनीय समझ बैठते हैं। भारत को अपनी विदेश नीति में आमूल परिवर्तन करना ही होगा अन्यथा भविष्य में पाकिस्तान कभी भी आक्रमण कर सकता है क्योंकि वह समझता है कि भारत युद्ध के बाद जीती हुई भूमि व पकड़े हुए सैनिक तो वापिस दे ही देगा; युद्ध के लिए शस्त्राशस्त्र अमेरिका और चीन से मिल ही जायेंगे; फिर क्यों न भारत को तंग किया जाये और उसे विकसित होने से रोका जाये ?

3- काश ! ऐसा हो जाये :–

इस समय सारे देश में महंगाई का बोलबाला है। जीवन की अत्यावश्यक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए लोगों को काफी संघर्षों के बीच होकर गुजरना पड़ रहा है। पिछले

दिनों केन्द्रीय सञ्चारमन्त्री श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा को उत्तर प्रदेश का नया मुख्यमन्त्री बयाया गया। उनके आने से पहले उ० प्र० में अनाज, चीनी, सीमेण्ट, रासायनिक खाद मिट्टी कां तेल आदि का कृत्रिम अभाव हो रहा था। किन्तु अब श्री बहुगुणा ने ये चीजें केन्द्र से माँगी हैं और केन्द्र ये चीजें पर्याप्त मात्रा में उत्तर प्रदेश भेजने की व्यवस्था कर रहा है ताकि लोगों को जीवनोपयोगी सामग्रियों से वञ्चित न रहना पड़े। हरेक वस्तु सस्ते में और आसानी में मिल जाये। कारण ? उ० प्र० का आगामी फरवरी मास में चुनाव जो निकट आ रहा है। ऐसे में जनता के सभी प्रकार के कष्ट दूर किये जाते हैं तो किसी को आपत्ति क्यों होनी चाहिए ?

पिछले दिनों राजधानी के एक समाचार पत्र के सम्पादक ने लिखा था कि "क्या ही अच्छा हो कि भारत में वार्षिक चुनावों की व्यवस्था हो जाये ! फिर तो सारी भारतीय जनता को कष्टों से मुक्ति मिल जाये। सत्तारूढ़ दल अपनी विजय व कुर्सी के लिए जनता के सभी अभाव-अभियोगों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेगा; जीने के सामानों की खोज में जनता को तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी। काश ! भारत में वार्षिक चुनावों की व्यवस्था हो जाये।

हरियाणा भारत के सामने एक आदर्श

(रमेश भाटिया – प्रेस रिपोर्टर द्वारा)

कलकत्ता।

हरयाणा छात्र परिषद् के तत्वाधान में गत वृहस्पितिवार को हरियाणा राज्य के आठवें स्थापना दिवस समारोह पर श्री ओमप्रकाश बहलवाला ने अपने अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहा कि हरयाणा ने राष्ट्र के सामने अपने सात वर्षों में जो चित्र प्रस्तुत किया वह स्मरणीय है, परिषद् के महा-सचिव श्री सीताराम कलानोरिया ने उक्त अवसर पर बोलते हुए कहा कि हरियाणा ने सात वर्षों के अन्दर कृषि, बिजली उद्योग, सड़क परिवहन के क्षेत्र में जो उन्नति की है, वह भारत के इतिहास में एक आदर्श बनकर रहेगा। उन्होंने हरियाणा के नौजवान मुख्यमन्त्री को बधाई देते हुए कहा कि दूसरे प्रान्तों के मुख्यमन्त्री इनके इन कार्यों से शिक्षा ग्रहण करें। इस अवसर पर अनेक वक्ताओं ने हरियाणा की प्रगति पर प्रकाश डाला। कार्यवाहक श्री नवल बैरीवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

वन्दामहे तम् ऋषिम् आप्तम् इद्धम्

उपजातिच्छन्दः

योऽभूत् सदा वैदिक धर्मधामा,
गिरां तथा सम्भजते श्रुतीनाम् ।
राशि र्बभूवोत्तमवेदभानोः,
जोषं हि येनाऽनुभवन्ति लोकाः ॥ १ ॥

ददाह योऽज्ञानतरुं समस्तम्,
यागप्रणालीं पुनरुद्दधार ।
नन्दन्ति लोका अवलोक्य यस्य,
दोषज्ञतां वेदविचारभूमौ ॥ २ ॥

दीप्तं कृतं भारतवर्षमेतत्,
पानं विषस्यापि विधाय येन ।
वज्रात्मकं यस्य दृढं वचोऽभूत्,
लौहात्मकं चैत्र शरीरमासीत् ॥ ३ ॥

दिवाकरो यो निगमार्थदेशे.
वंदामहे तमृषिमाप्तमिद्धम् ।
गतं च तन्नाम तथाऽमरत्वम्,
तोयं हि गंगागतमस्ति यावत् ॥ ४ ॥

प्रणेता – प्रशस्य मित्र शास्त्री, एम० ए० (स्वर्णपदक विजेता)
प्राध्यापक - संस्कृत विभाग, फिरोज गान्धी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज रायबरेली ।
एवं संचालक —
'सुरभारती' वाचनालय २३/३ शास्त्री नगर कानपुर–५

आर्य-संस्कृति

विद्यार्थी सत्यपाल आर्य
'स्नातक' एम. ए.
आर्य गुरुकुल टटेसर, जौन्ती, दिल्ली-41

●

एक समय था जब पुण्य सलिला पयस्विनी भागीरथी के जल से सिञ्चित ऋषि-मुनियों की तपो भूमि आर्यावर्त में उदित आर्य संस्कृति सुधाकर अखिल विश्व में अपनी शीतल एवं शुभ्र चन्द्रिका छिटक रही थी। उसकी शान्ति-प्रदायिनी मृदुल रश्मियां सुदूर यूरोप तथा अमेरिका की असभ्य जातियों में भी उज्ज्वल प्रकाश विकीर्ण करके उन्हें जागृत कर रही थी। ऐसी कौनसी जाति तथा कौनसा देश था जिस पर आर्य-संस्कृति की छाप नहीं पड़ी थी। सर्वत्र उसकी तूती बोलती थी। पर आज समय के फेर से वह अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष में ही समाहृत नहीं है। चिरकालीन पराधीनता के अभिशाप पाश्चात्य सभ्यता के व्यापक प्रचार से पदाक्रान्त होकर वह करुण क्रन्दन कर रही है। उश पर चारों ओर से विजातीय एवं विदेशी संस्कृतियों के आक्रमण हो रहे हैं किन्तु उच्च सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण वह अमर है। युग के प्रभाव से भले ही उसका कितना ही ह्रास क्यों न हो गया हो परन्तु उसका लोप नहीं हो सकता!

आर्य-संस्कृति का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। मानव जीवन के कल्याण एवं अभ्युदय के लिए जितने भी कार्य-कलाप हो सकते हैं वे सब संस्कृति के अन्तर्गद्व आते हैं। आर्य-संस्कृति की आधार शिला आध्यात्मिकता है। उसमें लौकिक तथा पारलौकिक सभी विषयों पर आत्यात्मिक दृष्टिकोण से विचार किया गया है। अन्य संस्कृतियों में भले ही भौतिक तत्वों का प्राबल्य हो किन्तु आर्य संस्कृति में उसका गौणातिगौण स्थान है।

आर्य संस्कृति हमें 'आतमवत् सर्व भूतेषु' का पाठ पढ़ाती है। वह हमें सिखाती है कि हम जीवमात्र को अपनी आत्मा समझें। इसी आदर्श के कारण आर्य-संस्कृति 'वसुधंव कुटम्बकम्' का सन्देश विश्व को देती है। अहिंसा और दया की प्रधानता भी आर्य संस्कृति में निहित है। आर्य-संस्कृति मनुष्य मात्र का ही नहीं समस्त जीवधारियों का हित करने की शिक्षा देती है।

पुनर्जन्म में विश्वास भी आर्य-संस्कृति की एक विशेषता है। उसके अनुसार शरीर का अन्त हो जाने पर जीवात्मा का अन्त नहीं होता। मनुष्य जैसा कर्म करेगा उसको अगले जन्म में वैसा ही फल मिलेगा। सत्कर्म करने वाला धर्म पूर्वक जीवन बिताने वाला जन्म मरण के बन्धन से छूटकर मोक्ष को प्राप्त करता है। इसी आधार पर मनुष्य शुभ कर्म करने के लिए प्रवृत्त होता है तथा दुष्कर्मों से दूर रहता है।

आर्य-संस्कृति की अन्य विशेषता आशावाद है। हमारे यहां निराशावाद के लिए कोई स्थान नहीं है। जो बात आज नहीं हो सकती वह कल हो सकती है या भविष्य में समय आने पर पूरी हो सकती है फिर निराशा किस बात की? आशावाद में फलने फूलने के कारण आर्य-साहित्य की प्रवृत्ति सदैव आदर्शवान की ओर रही है। उसमें सर्वत्र सत्य की असत्य पर, पुण्य को पाप पर, सदाचार को दुराचर पर, नीति को अनीति पर विजय दिखाई गई है।

आर्य-संस्कृति में अपनी आकांक्षाओं एवं कल्पनाओं को समेट कर अपने मनोबल को शक्तिशाली बनाने का विधान है। जो प्राप्त है उसी से सन्तुष्ट होकर प्रसन्न तथा उल्लसित रहना विकास एवं प्रगति में महान् सहायक है। इसी के आधार पर 'मागृध: कस्यस्विद् धनम् तथा मातृवत् परदारेषु' जैसे उच्च आदर्शों की स्थापना हुई है।

आर्य-संस्कृति अपने मूल में उदात्त भावनाओं से परिपूर्ण है। उसके अन्तर्गत समन्वय, सहिष्णुता, विवेक एवं त्याग की जो भावना निहित है वह भारतीय जन-जीवन को अनुप्राणित कर संसार के समस्त प्राणियों की प्रेरणा स्रोत बनी हुई है। मानवता का शुभ्र शंख फूँकने वाली यह आर्य-संस्कृति चिरकाल में अनेक युग युगान्तरों में होती हुई अक्षुण्ण रूप से अद्यतन प्रवाहित हो रही है एवं इसी प्रकार चिरकाल तक पयस्विनी भागीरथी के समान प्रवाहित होती रहेगी।

बाणी बाणो बभूव

भीमसिंह शास्त्री

बाणभट्टेन स्वीये हर्षचरिते सम्राज्ञो हर्षवर्धनस्य चरित्रं लिखितम्। सम्राट हर्षवर्धन: ६०६ ईशवीय समयादारम्य ६४८ पर्यन्तं थानेश्वर नाम्नि स्थाने राज्यमकार्षीत। तेन बाणस्य समय: सप्तम शतकं सिध्यति। बाणभट्टो वात्स्यायन वंशो जन्म गृहीतवान्। तस्य पिता चित्रभानु: माता च राज्यदेवी ग्रासत्। बाणभट्टेन ग्रन्थ द्वयनेव गद्यमयं प्रणीतम्। हर्षचरितं कादम्बरीचेति। हर्षचरितं हि ग्राख्यायिकारूपोग्रन्थ:। ग्रन्थेऽस्मिन् ग्रष्टावुच्छ्वासा:। तत्राद्ये उच्छ्वासत्रये बाणेन स्वीया कथाऽलेखि। चतुर्थादुच्छ्वासादारभ्य समाप्तिपर्यन्तं हर्षस्य चरितं वर्णितम्। हर्षचरितं केवलमुत्तमं गद्यकाव्यमेवनास्ति प्रत्युत् सप्तमशतकस्य प्रकटेतिहासप्रकाशकत्वेनापि प्रशस्यतममास्ति। तेन वन्यग्रामाणां तत्रत्यगृहाणां च नितान्तं सत्यं सरसं वर्णनं कृतमुपलभ्यते।

कादम्बर्यामुक्ता कथा गुणाढ्यकृताया: वृहत्कथाया गृहीता। भूतंभाषामयी ग्रद्भुतार्था च सा वृहत्कथा बाणकाले लभ्यासीदिति वक्तुं शक्यते। कादम्बरी कथायाँ चन्द्रापीडो नायक: कादम्बरी च नायिका। एतदीया कथा जन्मत्रयवृत्तान्तमङ्गीकरोतीति जटिला। ग्रस्थां कथायां पात्रचित्रणमप्युत्तमत्। राजा शूद्रक:, जाबाति:, तारापीड:, महाश्वेता कादम्बरी चेति सर्वाण्यपि पात्राणि महाकविना बाणेन तथा वर्णितानि यथा तानि वाचकानां पुर:स्थितानीव प्रतिभासन्ति। एकत्र पाठको यदि शबरसेनाप्रयाणं पठित्वा विस्मयाविष्टो जायते तदाऽयरत्र स एव जाबालेराश्रयं दृष्ट्वा स्तिमितान्त: करणो भवति। कादम्बर्या महाश्वेताया वा वर्णनं पठित्वा लोकान्तरसमुपस्थित इव, ग्रच्छोदसरो

वर्णनं श्रुत्वा कुतुकाकुल इव, सुधासिक्त इव च जायते। यदि शुकनासोपदेशमधीत्य हृदयं निर्मलदर्पणतां नयति तदाऽन्यत्र राजान्तःपुरवर्णनमाकर्ण्य हृदयं रञ्जयति। प्राकृतिक वस्तूनां वर्णनेऽपि बाणस्य कादम्बरी न कुतोऽपि हीयते। कवितायां यावत् कलापक्षस्य विभावनं तावत्यंशेऽलंकाराणां संनिवेशेऽर्थचयने शब्दगुम्फने च न केवलं गद्यकाव्यान्येव, अपितु समस्तमपि संस्कृतभाषानिबद्धं वाङ्गयमतिशय्य वर्तते कादम्बरी इति कथनं नात्युक्तिं स्पृशति। उक्तं च तेनैव:—

"नवोऽर्थो जातिरग्राम्या, श्लेषोऽक्लिष्टः स्फुटो रसः।
विकटाक्षरबन्धश्च, कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम् ॥"

यद् दुर्लभत्वेनोक्तं तदेव कादम्बर्यांसुलभम्। कविरयं स्वप्रबन्धे प्रायः श्लेषानुप्राणितामुपमां, श्लेषानुप्राणितंसमुच्चयं, श्लेषानुप्राणितां परिसंख्यां, श्लेषानुप्राणितं विरोधं च अलंकारं निबध्नाति।

तद्यथा श्लेषानुप्राणितोपमा :—

"गुह इवाप्रतिहतशक्तिः, कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः, दिग्गज इवानवरतप्रवृत्तदानार्द्रीकृतकरः" इत्यादौ श्लेषानुप्राणितोपमा स्पष्टं निर्दिष्टोपलभ्यते।

"यस्मिश्च राजनि गिराणां विपक्षता, प्रत्ययानाँ परत्वम्, चित्रकर्मसु वर्णसङ्कराः, चापेषु गुणच्छेदाः" इत्यादौ श्लेषानुप्राणिता परिसंख्या स्पष्टी भवति।

'आसने स्थितमपि धनुषि निषण्णम्, महादोषमपि सकलगुणाधिष्ठानम्, अकरमपि हस्तस्थितभुवनतलम्" इत्यादौ श्लेषानुप्राणितो विरोधः प्रद्योतितो भवति।

"प्रेताधिपनगरीव सदासन्निहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च, कात्यायनीव प्रचलित खड्गभीषणा, रक्तचन्दनालकृता च, कल्पान्तप्रदोष संध्येव प्रनृत्यन्नीलकण्ठा पल्लवारुणा च" इत्यादौ श्लेषानुप्राणितः समुच्चयः प्रकटी भवति।

किं च:— "अखिल विगलितजलनिबहधवलजलधर शकलानुकारिणा" इत्यादौ विंशतेरधिकानां केवलं लघ्वक्षराणां प्रयोगः सहृदय हृदयाह्लानकः कामपि कमनीयता मावहति।

"नाम्नैव यो निर्भिन्नारातिहृदयो विरचितनरसिंहरूपाऽम्बरम् एकविक्रमाक्रान्त-सकलभुवनवलो विक्रमत्रयायासिव भुवनत्रयं जहासेव वासुदेवम्" इत्यादौ व्यतिरेकसहः कृताया उत्प्रेक्षायाः चमत्कारः स्फुटं रसं परिपुष्णाति। एवं तयोधनाश्रम वर्णने सरसा, सरला, सुगमा, मसृणा तदनुगुणाशैली।

विन्ध्याटव्यादिवर्णने च कर्कशा तदनुरूपवर्णानुस्यूतैव शैली बाणस्य वाणी वीणा क्वाणे प्रगुणी भवति।

प्रातः सन्ध्यादिवर्णने तु अनुपमा सुषमा परिलक्ष्यते प्रायः सर्वेषामेवालंकाराणां तत्र समन्वयात्।

कवितायाः उद्देश्यस्य "सत्यं शिवं सुन्दरम्" इति लक्षितस्य लोक कल्याणस्यापि निवेशने बाणो जागरूकः। यत्रासौ दीर्घसमासां वाक्यावलि विन्यस्यति तत्र लघुवाक्यानां प्रयोगेऽपि न मन्दायते। भाषा समृद्धिमालोक्यैव पाश्चात्याः बाणस्य कादम्बरीमरण्यानी-मन्यन्ते।

वयं तु मन्महे यत् बाणभट्टसदृशः कोऽपि शब्दचित्रप्रस्तुतौ सिद्धहस्तो नाभूदिति। बाणप्रशंसायां गोवर्धनः कविराह :—

"जाता शिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि। प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बभूव" इति ॥

—: नव वर्ष शुभ :—

समाज सन्देश की ओर से पाठकों तथा ग्राहकों एवं लेखकों को
नये वर्ष 1974 की शुभ कामनायें प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

गांव कासण्डी में ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

लगभग तीस वर्ष पूर्व चलाई गई प्रथानुसार आर्यसमाज कासंडी में दिपावली से छः दिन पूर्व प्रति वर्ष की भांति 20-10-73 को यजुर्वेद का साप्ताहिक यज्ञ आरम्भ हुआ तथा 26-10-73 को पूर्णाहुति हुई। जिसमें पण्डित ब्रह्मा का स्थान आदरणीय पं० अभिमन्यु जी कन्या गुरुकुल खानपुर (कलां) ने सुशोभित किया। तथा जिसमें दो दिन 25-10-73 तथा 25-10-73 को माननीय आचार्य विष्णुमित्र जी उपकुलपति कन्या गुरुकुल खानपुर कलां तथा गुरुकुल भैंसवाल कलां ने उपस्थित होकर यज्ञ की शोभा को बढ़ाया तथा अपने मधुर प्रवचनों द्वारा अमृत वर्षा की। यज्ञ में उल्लेखनीय घटना 25 ता० की है। इस दिन यज्ञमान श्री प्रभुदयाल जी बानप्रस्थी तथा श्री युधिष्ठर जी सरपंच थे। यज्ञवेदी पर श्री प्रभुदयाल वानप्रस्थी ने आचार्य विष्णुमित्र जी उपकुलपति से संन्यास की दीक्षा ली तथा उनका नया नाम स्वामी प्रभुआश्रित जी रक्खा गया और उन्होंने शेष जीवन को संन्यासी के रूप में बिलकुल निर्लेप बिताने की यज्ञवेदी में आहुति डालकर प्रतिज्ञा ली। 26-10-73 को प्रातः छः बजे यज्ञ आरम्भ हुआ। उस दिन यज्ञमान श्री रामदत्त जी शास्त्री तथा भूतपूर्व थानेदार चौ० बलवीरसिंह जी थे। यज्ञ में बड़ी संख्या में उपस्थित वैदिक धर्म प्रेमी महानुभाव तथा बच्चे वेद मन्त्रों के अन्त में 'ओं स्वाहा' शब्द बड़े उच्च नाद से बोल रहे थे। प्रातःकाल की पवित्र वेला में ठण्डी ठण्डी हवा वातावरण को अति सुहावना बना रही थी। आकाश बिल्कुल साफ था। सूर्य भगवान् भी अपनी मन्द गति से धीरे-धीरे उपर को उठकर अपनी स्निग्ध किरणें यज्ञवेदी पर नीम की शाखाओं से बिखेर रहे थे। दृश्य को देखकर अतीत वैदिक काल की स्मृति हो जाना स्वाभाविक था। यज्ञ कुण्ड से अग्नि की लपटें घी तथा सामग्री को अपने अन्दर समेट कर विश्व के प्राणी मात्र को शुद्ध वायु प्रदान कर रही थी। दूसरी ओर ब्रह्मा के आसन पर उपकुलपति आचार्य विष्णुमित्र जी, पूज्य पं० अभिमन्यु जी तथा प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री जौहरीसिंहजी विराजमान थे। यज्ञ के अन्त में 101 गायत्री मन्त्र की आहुति देकर समाप्त किया गया। इसके बाद श्री सत्यपाल जी ने अपने प्रवचन में महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित विद्वत्ता भरी कविता सुनाई। इसके बाद शास्त्री भद्रसेन ने तथा पं० अभिमन्यु जी ने अपने मधुर तथा शिक्षाप्रद प्रवचन सुनाए। अन्त में उपकुलपति आचार्य विष्णु मत्र जी ने मानव जीवन का पथ बड़ी सुन्दर तथा मनोरंजक युक्तियों से समझाया जिससे लोग

बड़े प्रभावित हुए। इसके बाद निम्नलिखित आर्य समाजों ने यज्ञवेदी में आहुति डाल कर एक एक बुराई छोड़ने का व्रत लिया।

1. श्री सत्यपाल जी सुपुत्र श्री बनवारीलाल जी (प्रधान आर्य समाज कासंडी) ने क्रोध न करने का व्रत लिया।

2. श्री युधि र जी (सरपंच पंचायत कासंडी) ने किसी भी आदमी को दुःख या कष्ट न देने का व्रत लिया।

3. श्री बलबीरसिंह जी सुपुत्र श्री उजालाराम जी ने गाली न देने का व्रत लिया।

4. श्री भद्रसेन जी शास्त्री ने सत्य बोलने का व्रत लिया।

5. श्री श्योदयाल नम्बरदार ने वर्ष में समाज मन्दिर में होने वाले अमावस्या तथा पूर्णमासी तथा अन्य पर्वों पर यज्ञों के लिए घी को व्यस्था करने का प्रण किया।

सायंकाल को वेदप्रचार में आचार्य विष्णुमित्र जी का प्रवचन हुआ तथा उसके बाद श्री जौहरीसिंह जी ने मधुर भजन तथा इतिहास सुनाया। इस प्रकार आर्यसमाज कासंडी ने ऋषि निर्वाण दिवस मना कर वर्षों से चली मर्यादा को कायम रखा।

—रामदत्त शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज कासंडी

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

तथा

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां

का

★ वार्षिकोत्सव ★

सब सज्जनों को सेवा में नम्र निवेदन है कि कन्या गुरुकुल खानपुरकलां का वार्षिक महोत्सव 2, 3 फरवरी, शनिवार रविवार 1974 को मनाने का निश्चय हुआ है। सपरिवार उत्सव पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

इसी प्रकार गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां का वार्षिक महोत्सव एक, दो, तीन मार्च वार शुक्र, शनि, रवि 1974 को मनाया जा रहा है। सब विद्या प्रेमी महानुभावों से नम्र निवेदन है कि वे उत्सव में समय पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें। तथा अपने दानरूपी जल से दोनों संस्थाओं को सींच वेदामृत पान करें।

निवेदक :—

महेश्वरसिंह

मन्त्री

महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा

हरियाणा छात्र परिषद्

(सोसायटीज रजिस्ट्रेशन अधिनियम अन्तर्गत पंजीकृत)

४६, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

(रमेश भाटिया प्रेस रिपोर्टर द्वारा)

माननीय महोदय/महोदया,

आज का छात्र ही कल का निर्माता है। इसी उद्देश्य को लेकर कलकत्ता में हरियाणा के साहसी छात्रों ने 'हरियाणा छात्र परिषद्' का निर्माण किया था जो गत १२ वर्षों से छात्र समाज की हर सम्भव सहायता करती आ रही है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी परिषद् के तत्वावधान में एक 'छात्र सहायक समिति' का गठन हुआ है जिसका मुख्य उद्देश्य मेधावी, जरूरतमन्द एवं गरीब छात्र छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान करना है।

गत १२ वर्षों में हरियाणा अन्चल के कई छात्र एवं छात्रायें इस योजना से लाभान्वित हो चुके हैं।

समिति का आर्थिक वर्ष एक अप्रेल से आरम्भ होता है। हरियाणा अचन्ल के छात्र एवं छात्रायें अपने शिक्षण संस्था के प्रधानाध्यापक या प्रधानाध्यापिका के मार्फत आर्थिक सहायता के लिए समिति के नाम आवेदन कर सकते हैं।

अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने विद्यालय/महाविद्यालय के मेधावी जरूरतमन्द एवं गरीब छात्रों को इससे अवगत कराके सूचनापट पर लगवा दें।

—: नियम :—

१— हरियाणा प्रान्त का कोई भी अष्टम या इससे ऊपर की श्रेणी का छात्र या छात्रा आर्थिक सहायता के लिए आवेदन कर सकता है।

२— आवेदन पत्र हिन्दी में ही भरा जाना चाहिए।

३— आवेदन पत्र के रिक्त स्थानों को सावधानी एवं स्वच्छता से भरना चाहिये।

४— २० पैसे का लिफाफा भेज कर आवेदन परिषद् के कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

५— आवेदन पत्र में मांगे गये सभी संलग्न पत्रों का पूरी तरह प्रमाणित (Duly Certified) होकर आना आवश्यक है।

६— छात्रवृति की अवधि १ अप्रेल से ३१ मार्च (एक वर्ष) होगी।

७— परिषद् 'समिति' का निर्णय सर्वमान्य होगा।

८— गत वर्ष का परीक्षा फल आवेदन पत्र के साथ भेजें।

मन्त्री

छात्र सहायक समिति

Approved for Libraries by D. P. I's Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8 1 62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. D/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम

स्थान

पत्रालय

जिला

* विज्ञापन की दरें *

टाइटल पेज एक चौथाई—	...	...	२० रुपये
बैक पेज आधा—	...	...	१५ रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ—	...	...	१२ रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ—	...	...	६ रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल से मुद्रित तथा प्रकाशित किया ।

फरवरी, 1974

★ समाज सन्देश ★

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र
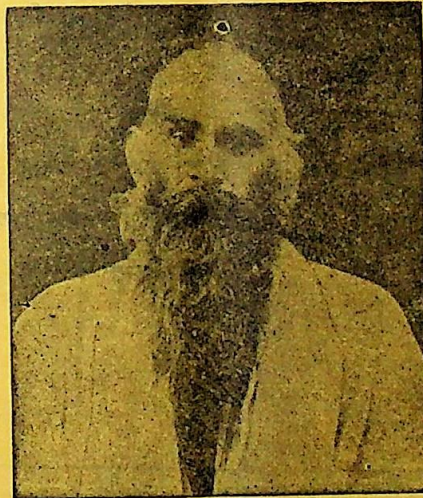
स्वर्गीय श्री भक्त फूलसिंह जी

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते ।। (ऋ- १,५,२)

इन्द्र भुवन का राजा है वह बहुतों में भी बहुत बड़ा ।
स्वामी है वरणीय धनों का, कौन यहां उससे तगड़ा ।।
साथ सोम के अभिषव में सब उसी इन्द्र के स्तोत्र पढ़ो ।
उसकी ही आज्ञा पालन कर उन्नति पथ पर शीघ्र बढ़ो ।।

—निधि

मूल्य : एक प्रति 55 पैसे ● वार्षिक चन्दा 6 रुपये

❀ विषय-सूची ❀

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा अखबार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार का पता—

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (रोहतक)

❀ ओ३म् ❀

व्यवस्थापक : श्री धर्मभानु

गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलाँ

तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

समाज सन्देश

प्रकाशन तिथि : २५ जनवरी १९७३

सम्पादक : आचार्य हरिश्चन्द्र

सहायक सम्पादिका : आचार्या सुभाषिणी

वर्ष पन्द्रहवां | फरवरी, १९७४ | अङ्क : ग्यारहवां

सम्पादकीय

महंगाई का कुप्रभाव

इस बार पाठकों को हम समाज सन्देश के आधे अंक दे सके हैं इस का कारण पाठक भली प्रकार जानते ही हैं। फिर भी हम अपनी लाचारी अपने पाठकों के सामने रख कर अपना भार हल्का करना चाहते हैं।

पाठकों को भली प्रकार मालूम है कि जीवनोपयोगी प्रत्येक वस्तु नित्य प्रति महंगी होती जा रही है। अखबारी कागज का जो अभाव है उसे समाचार पत्रों के संचालक ही समझ सकते हैं। पहली बात कागज का न मिलना तथा दूसरी बात उसका महगा होना। अतः इस बार विगत वर्षों से हम कुछ कम अंक पाठकों की सेवा में दे सके हैं। फिर मजदूरी, छपाई आदि प्रत्येक वस्तु महंगी है। हमें मालूम है कि कुछ नामधारी दैनिक. साप्ताहिक, मासिक पत्र बन्द हो रहे हैं या बन्द होने जा रहे है। इस महगाई की चपेट से हम लड़खड़ा कर गिर पड़े हैं। फिर भी खड़े होकर चलना चाहते हैं।

तथा यह भी लगता है कि आगामी वर्ष समाज सन्देश की पृष्ठ संख्या घटायें। या अंक कम करदें। क्योंकि पन्द्रह वर्ष इस के संचालन प्रकाशन के बाद इस का प्रकाशन होना ही चाहिए।

आशा है पाठक वृन्द हमारी इस मजबूरी को समझ कम प्रकाशन को क्षम्य समझेंगे।

—सम्पादक

गुरुकुल भैंसवाल चलिए

पहली, दूसरी तीसरी मार्च को गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां का वार्षिक महोत्सव हो रहा है। यह उत्तर भारत के आर्यों का सब से बड़ा मेला है। यहां पधार कर लोग जहां अपनी धार्मिक पिपासा बुझाते हैं, वहां वर्ष बाद परस्पर मिलन. सुख दुख की कहने सुनने का प्रसंग भी अनायास उपस्थित करते हैं। गुरुकुल भैंसवाल वस्तुत: एक कुल है परिवार है। उसमें जाति वर्ण का कोई भेद नहीं है। न वहां प्रान्तीयता बाधा है न भाषा ही। वहां उडिया भाषी छात्र हैं तथा भोजपुरी तथा अवधी भाषी भी। सबकी समान वेशभूषा है समान खानपान है। वहां धर्मी का अधर्मी का झगड़ा भी नहीं, न देव दानवों की लड़ाई है। वहां न वेश पर विवाद है, न पाखण्ड की गुंजाईश है। कपड़ों में थोड़ा गेरू हो या अधिक यह भी चर्चा नहीं है। सब का सीधा सादा रहन सहन है तथा वेद और संस्कृत शिक्षा का प्रचार है। वहां अनपढ़ मूर्खों को पण्डित नहीं बनाया जाता। वेद को न जानने वालों को वेद का विद्वान नहीं कहा जाता। वाद-विवाद के भूखे लोगो के लिए केवल जूते सुरक्षित हैं। उनकी एक मंजिल है, एक लक्ष्य है। वेदों के नितान्त पण्डित हैं पर दम्य नहीं हैं। दर्शन के ज्ञाता हैं पर आडम्बर नहीं है। संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ हैं पर प्रचार नहीं है। उपनिषद् स्मृति के ज्ञाता हैं पर बकवास नहीं है। गो सेवक हैं पर नारों में विश्वास नहीं है। हर जन आन्दोलन में आहुति देने वाले हैं पर अटारी की शोभा के इच्छुक नहीं हैं। न पद की भूख है न अन्य प्रदर्शन की। न कोई अधिकारी है न सेवक। सब समान हैं। कुल की परम्परा में गुरु हैं, शिष्य हैं, पिता हैं, पुत्र हैं। उस शान्त मुनिभक्तों की नगरी के उत्सव में चलिए तथा अपनी ज्ञान पिपासा शान्त कर वेद के ऋण से उऋण होईये।

देखिये 53-54 वर्षों में हमारा हर डगर आगे पड़ा है। आगे बढ़ें। संगठन हमारा मूलमन्त्र है।

—सम्पादक

ग्रामीण बालकों का भविष्य

—ब्र० यशपालसिंह पुनिया

★★

भारतीय शिशु सर्वदमन (भरत) ने सिंहनी से उसका शावक छीन कर बच्चे के दांत गिनने शुरु कर दिये तथा पास बैठी हुई सिंहनी गुर्राती रही। इसी सर्वदमन (भरत) के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

भारत की 80% जनता गांव में रहती है अर्थात् भारत का बचपन गांवों में बसता है। वास्तविक भारत का दर्शन गांव में किया जा सकता है। बच्चे ही देश की सम्पत्ति होते हैं। ग्रामीण बच्चों को जानने के लिए उन महापुरुषों के जीवन पर दृष्टिपात करना होगा जो उस मिट्टी में पैदा हुए हैं, जो ग्रामीण धरती पर सोना चांदी उगाते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण का जीवन ग्रामीण वातावरण में गऊ चराते हुए बीता। स्वामी दयानन्द टंकारा ग्राम में पैदा हुए। स्वामी विवेकानन्द भी एक गरीब ग्रामीण घर में पैदा हुए। सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव इत्यादि देशभक्त क्रान्तिकारियों का बचपन भी गांव में बीता। भगत सिंह एक किसान का बेटा था जिसने बचपन में अपने पिता से खेत में बन्दूक बोने की बात कही थी। यह ग्रामीण वातावरण ही था जिसने इस बालक को देश-प्रेम के भावों से भरकर अंग्रेजी असैम्बली में बम फैंकने का साहस प्रदान किया था। लाला लाजपतराय शेरे पंजाब भी एक ग्रामीण बालक था। लाल बहादुर शास्त्री जिसने इस देश को 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया, वह भी एक गांव में गरीब अध्यापक के घर पैदा हुए। नेफा और लद्दाख मोर्चे का शहीद वीर सपूत ब्रिगेडियर होशियार सिंह भी रोहतक जिले के एक गांव में पैदा हुआ था।

लेकिन अफसोस! आजादी के बाद भी गांव में बेहद गरीबी है। गांव में हल चलाने वाला किसान स्वभाव से साधु और आत्मा से पवित्र होता है। वह अपने शरीर का हवन किया करता है। खेत किसान की यज्ञशाला है। अन्न पैदा करने में किसान ब्रह्म के समान है परन्तु आज उसी किसान का बचपन भूख से पीड़ित है। जरा आप सोचें जिस देश का बचपन भूखा है उस देश की जवानी क्या होगी। गुरु नानक ने कहा था – भोले भाले किसानों को ईश्वर खुले हृदय से दर्शन देता है। इन्हीं किसानों के चरणों में ग्रामीण बच्चों के जीवन का विकास होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के स्कूल तो गांव-गांव में विद्यमान हैं परन्तु उस ग्रामीण बचपन के वातावरण के अनुकूल शिक्षा का वातावरण नहीं है। शिक्षा में धर्म, चरित्र एवं नैतिकता का अभाव होने से

बच्चे सच्चे नागरिक बनने से वञ्चित हो रहे हैं। सरकार भी उच्च शिक्षा, रोजगार, शिल्प कला, विज्ञान आदि की शिक्षा का प्रबन्ध गांव में न करके शहरों में कर रही है जिससे गरीब किसान का बच्चा ऊंची शिक्षा से वंचित हो रहा है।

ग्रामीण बच्चा चन्दगीराम यदि आज भारत केसरी बना है तो इसका श्रेय गांव के शुद्ध घी, दूध और पवित्र वातावरण को है। आज गांव में विपरीत अवस्था है। ग्रामीण बच्चों का खेल कूद का चाव गया और सांग सिनेमा का शौक आ गया है। ग्रामीण बालिका का सीधा सादा लिबास गया और वह भी शहरी तितली बनने की होड़ करने लगी है। कपड़ों में लड़का, लड़की लगता है और लड़की, लड़का लगती है। शहर में बढ़ रहे पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव ने गांव को भी दूषित करना आरम्भ कर दिया है। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारतीय ग्रामीण समाज पर इस प्रकार बढ़ता जा रहा है। जैसे खाली पड़ी जमीन पर किसी साहसी पुरुष का क़ब्जा हो जाये। यूरोप और अमेरिका में नारी सीना, कन्धे और जांघें खुली रखती हैं परन्तु हाथों में दस्ताने पहनती हैं। वही सब शनैः शनैः भारत का ग्रामीण बालक-बालिका भी सीखती जा रही हैं क्योंकि बच्चे के सामने भारतीय संस्कृति के आदर्श एवं उसके सिद्धान्त की शिक्षा प्रस्तुत नहीं की जाती, फिर भी यह ठीक है कि ग्रामीण बच्चों को हस्त कार्य एवं स्वावलम्बन की शिक्षा तो दी जा सकती हैं। हाथ की मेहनत से बनी चीज में जो रस भर जाता है भला वह रस लोहे के द्वारा बनाई गई टीन में बन्द वस्तुओं में कहाँ? मनुष्य और मनुष्य की मेहनत का तिरस्कार करना नास्तिकता है यही शिक्षासार ग्रामीण बच्चों में भरने की कोशिश की जा रही है। ग्रामीण बालकों का जीवन स्तर ऊँचा हो एवं उनके भविष्य के निर्माण हेतु कुछ समस्याओं का हल जहां सरकार को करना है वहां ग्रामीण जनता माता पिता एवं शिक्षक तथा स्वयं बालकों को भी इकट्ठे बैठकर सोचना होगा। गांव में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। भाई-भाई की शत्रुता बढ़ने से भाईचारा समाप्त होता जा रहा है। बच्चे, शराब सुल्फा बीड़ी, सिगरेट, हुक्का तथा गन्दे साहित्य का शिकार हो रहे हैं। बाल विवाह, दहेज प्रथा, झगड़ेबाजी, अन्ध विश्वास, समय नष्ट करना फिजूल खर्ची आदि बुराइयां भी ग्रामीण वातावरण को दूषित करती हैं। विज्ञान का कहना है कि बच्चे के निर्माण में वातावरण का विशेष योग है। अतः ग्रामीण वातावरण को सुधारना आवश्यक है जिस का प्रभाव ग्रामीण बच्चों के जीवन पर पड़ता है। संक्षेप में जिस प्रकार किसान को अपने लह-लहाते खेतों पर, सिपाही को पगड़ी पर, साहूकार को देनदार पर, स्त्री को गहनों पर जो अभिमान होता है, वही अभिमान राष्ट्र को अपने बच्चों पर होता है। इसी के अनुसार आज आवश्यकता है ग्रामीण बालकों का भविष्य उज्ज्वल किया जाये क्योंकि बच्चे राष्ट्र के भावी निर्माता होते हैं। गान्धी जी ने कहा है कि बच्चों! तुम्हारे कन्धों पर ही देश का भविष्य निर्भर है। क्या गान्धी जी के शिष्य ये नेता लोग ग्रामीण बच्चों का ध्यान रखने की कोशिश करेंगे?

छात्र - असन्तोष—
उपाय यहाँ है

—धीरेन्द्र कुमार

आज के प्रत्येक समझदार व्यक्ति की यही चिन्ता है कि आज का छात्र किस ओर चला गया है। छात्र के मन में यह क्या आ गया है कि वह शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को भूलता जा रहा है और गलत मार्ग पर आ गया है? क्या यह शिक्षा पद्धति का दोष है अथवा छात्रों की मानसिक दुर्बलता का परिणाम?

लखनऊ विश्वविद्यालय की इमारतों पर भारी आगजनी, कम से कम चालीस लाख रुपये के नुकसान का अनुमान रेलवे स्टेशन को आग लगाने की विफल चेष्टा, विधान सभा में पर्चेबाजी तथा यू० पी० के सशस्त्र पुलिस के विद्रोहियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलना क्या अराष्ट्रीय गतिविधि नहीं कही जा सकती? क्या इनसे यों ही मुँह मोड़ लिया जा सकता है—नहीं, जब कोई उत्तरदायी व्यक्ति इस समस्या पर विचार करता है तो उसे इसे गम्भीरता से लेना होता है। वास्तव में छात्र आजकल भारत सरकार के सामने समस्या है। वह इनकी समस्याओं का अध्ययन करती तो है लेकिन छात्रों की समस्या इसके लिए अब जटिल पहेली बन चुकी है तथा बड़ी समस्याओं में यह समस्या भी गिनी जा रही है।

हमारे प्राचीन धर्मशास्त्रियों ने मनुष्य जीवन की पूर्ण अवधि को चार भागों में बांटा था तथा इन्हें अलग-अलग रहने के लिए सख्त हिदायतें लिखी थी। इसे हम आश्रम व्यवस्था भी कहते हैं। इसके अनुसार मनुष्य जीवन की चार सीढ़ी हैं जिनमें से पहली ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य काल ही विद्यार्थी काल है। इस काल में एक बालक प्रारम्भिक अवस्था में ही गुरुकुलों में दाखिल करा दिया जाता था। वह पच्चीस वर्ष की उम्र तक घर की ओर से निश्चिन्त होता हुआ गुरु की कृपा सदन में बैठकर तथा अपना निवास, गुरुकुल में ही बनाकर अध्ययन करता था। उसका पाठ्यक्रम उसका आचार्य तैयार करता था—इस विषय में राज्य शासन की ओर से कोई हस्तक्षेप नहीं होता था। गुरुकुलों की पूरी सुविधा जुटाने के लिए शासन जिम्मेवार होता था। छात्र गुरुकुल में गुरुओं की निःस्वार्थ एवं निष्कपट सेवा करता हुआ उनको प्रसन्न रखता था। वह जानता था कि गुरु की कृपा में सभी विद्यायें निहित हैं। वह पूर्ण शिक्षा पूरी होने तक गुरु के सानिध्य

में रहता था वास्तव में 'ब्रह्मचारी' था। छात्रों द्वारा दंगा किया जाना कल्पना के भी बाहर था।

और आज ······ दशा विचारते समय हृदय कंपकपा जाता है—छात्र गुरु की हत्या तक कर सकता है। शिक्षक छात्र को छुरा या गोली मार सकता है। दोनों ही शिक्षा-जगत् में अशान्ति फैला रहे हैं तो शासन इस आग को भड़काने में कोई भी कोशिश नहीं छोड़ता उसे पता होते हुए भी समय पर इस समस्या को हल नहीं करता। छात्र तथा शिक्षक राजनीति में प्रवेश कर गए हैं। प्रत्येक का दृष्टिकोण राजनीतिक है। संघों का चुनाव राजनीतिक दलों का चुनाव होता है। देश एक भयङ्कर धधकती आग में फँस रहा है एक भयङ्कर आग जो देश को पूरी तरह से फूंक देगी, सारा सम्मान खो डालेगी। वह प्राचीन संस्कृति, जिसे अर्वाचीन शिक्षा ने समाप्त प्रायः कर डाला है, इसी आग में पूर्णतया भस्म हो जायेगी। बड़ा बीभत्स दृश्य पैदा होगा यदि शिक्षा जगत् में ऐसी असन्तोष की भावना रही तो।

यह जो छात्रों में असन्तोष की भावना है—क्या दोषयुक्त शिक्षा प्रणाली के कारण है? प्रश्न विकराल है, उत्तर लिये हुए है। गण्यमान्य प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को इस छात्र असन्तोष की जड़ बतलाया है। लार्ड मैकाले की इस शिक्षा पद्धति को बदलने के सुझाव दिए हैं। क्या भारतीय राष्ट्रपति, क्या प्रधानमन्त्री, क्या शिक्षा मन्त्री, क्या एक छोटा सा चपरासी आद्योपान्त 'सम्माननीय' व्यक्ति इस प्रणाली को बदलने की सिफारिश तो अवश्य करते हैं लेकिन ठोस सुधार भी तो प्रस्तुत नही करते। कुछेक विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों ने मांग की कि इस शिक्षा पद्धति में सुधार हो—लेकिन मांग किससे की है। क्या सरकार से, जो स्वयं ऐसी मांग कर रही है—क्या प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों से जिनके हाथों में कुछ अधिकार नहीं - क्या श्रोताओं से, जो केवल सुनने मात्र के लिए बैठे हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत में बिना किसी 'भयङ्कर' क्रान्ति आए बिना शिक्षा पद्धति में सुधार नहीं हो सकता।

आजकल शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य कोई रोजगार प्राप्त करना है जो बाबू बनाता है—तो क्या उसके लिए यही शिक्षा प्रणाली उपयुक्त रहेगी। मेरी समझ में तो ऐसा असम्भव है। छात्र को कुछ ऐसी शिक्षा देनी होगी जो किसी भी व्यक्ति को बेरोजगार नहीं रहने देगी। वह है टैक्नीकल शिक्षा जिसमें कोई भी व्यक्ति अपना रोजगार ढूंढने में पूरी आसानी महसूस करेगा। प्राचीन आर्षपद्धति अपनानी होगी—प्रत्येक को धर्म शिक्षा का पाठ पढ़ाना होगा जिससे कोई भी व्यक्ति अधार्मिक कार्य की ओर प्रवृत्त नहीं होगा अराष्ट्रीय क्रिया में भाग नहीं लेगा। परिणामस्वरूप गुरु-शिष्य सम्बन्ध बढ़ेगा तथा छात्र के चरित्र का विकास होगा। चरित्र की उन्नति होगी और इस प्रकार वे राष्ट्र के नव-निर्माण में शानदार योगदान दे सकेंगे। राष्ट्र विद्रोही न होकर सच्चे राष्ट्रभक्त कहलायेंगे एवं उसकी असन्तोष की भावना का ह्रास होगा।

घातकानां मुक्तिः

—अरविन्द कुमारो विद्यालंकारः
भैंसवाल गुरुकुलस्य

म्युनिखनगरे सम्पन्नासु ओलिम्पकक्रीडासु अवस्कन्तॄणां कारणाद्यज्जघन्यं हत्याकर्म अभूत् तत् प्रथमेव दुर्भाग्यपूर्णमासीत् किन्तु सम्बद्धानामपराधिनां मुक्तिस्तु अत्यन्तं दुःखदा घटना वर्तते। सर्वेऽपि मानवतावादिनः न्यायप्रियाः देशास्तत् हत्याकर्म अनिन्दन्, अतएव उत्तरदायिनां अपराद्धानां मुक्तिः नैतादृशी घटना विद्यते। या खलु साधारणी उपेक्षणीया च भवेत्।

न दृश्यते साम्प्रतं यावत् सुस्पष्टा बोनसर्वकारस्य सहमति अस्मिन् विषये, किन्तु कल्पनेयं मिथ्यैव प्रतीयते यत् तस्य (बोनसर्वकारस्य) सहमतिं विना हि एवम्भूतं स्यात्। बावेरियासर्वकारः सम्बद्धान् अपराद्धान् मोक्तुं शक्नोति किन्तु "बोनसर्वकारस्य मतं तिरस्कृत्यैव तेन एवं विहितं" इति खलु अविचारणीया वार्ता। अतएव यदि "पश्चिम-जर्मनीदेशस्य सर्वकारेण मानवताघातकानामग्रे पराजयोऽङ्गीकृतः न्यायसत्ययोश्च रक्षा विस्मृता" इति कथ्यते तर्हि एष मिथ्यालापो नास्ति। न केवलं तस्य अनेन घातकानां मुक्तिघृतेन इस्राइलदेश एव शोभाग्निः प्रज्वलिष्यति यस्य क्रीडानिपुणाः युवानो म्यूनिख-नगरे आख्यानां प्राणहराणां कोपानलेऽपतन्, अपितु निखिलान्यपि राष्ट्राणि दुःखं क्षोभं च प्रकटयिष्यन्ति यानि खलु म्यूनिखघटनां मानवताविरोधिनीं अकथयन्।

सत्यमेवैतत् यत् द्वाभ्यां आरब्याभ्यां जर्मनविमानस्य अपहरणं कृतम्। "वैमानि-कानां यात्रिणाञ्च मुक्तिः म्यूनिखहत्याकाण्डसम्बद्धानां बद्धानां अपराद्धानां मुक्त्यनन्तरमेव सम्भवति" इत्यासीत् तयो संकल्पः। किन्तु "अवस्कन्तॄणां मुक्तिः अन्यायात्याचार-योरग्रे आत्मसमर्पणं न" इति वक्तुं न शक्यते। बोनसर्वकारः स्ववैमानिकानां विषये चिन्तितोऽभूत् किन्तु विनिमयोऽयं महार्घतामेव दर्शयति अस्मिन् विषये। न तु परमात्मो-पलब्धिरभूत् न च लक्ष्मीलाभः।" यात्रिणां वैमानिकानां प्राणरक्षायाः वचनमगृहीत्वैव जर्मनसर्वकारेण घातकाः मुक्ताः। अपचालकौ तान् सर्वानीय गृहीत्वैव पलायितौ।

यदाम्यूनिखकाण्डस्य घातकानां मुक्तिः यात्रिणां वैमानिकानाञ्च विनिमये सुनिश्चिता तदैव दोषरहिता व्यवस्था करणीया आसीत् यया तौ घातकैः सार्द्धं सर्वानपि गृहीत्वा पलायितुं असमर्थौ स्याताम् । साम्प्रतं तु सुस्पष्टमेव यदवस्कन्तारौ जर्मनसर्वकारं अवञ्चयताम् । वैमानिकानां यात्रिणाञ्च सुरक्षा अपचालकानां कृपामेवाश्रित्य तिष्ठत्यधुना । का आवश्यकता आसीत् एवंविधस्य सद्भावप्रदर्शनस्य यत् बन्धकानां मुक्तिवचनं विनैव "तत् विमानं उड्डयितुं शक्नोति" इति भणितं जर्मनसर्वकारेण ? पुनश्च किमर्थमेव ते घातकाः समर्पिताः मुक्तिं विनैव निरपराधानाम् ? एवं सम्भवति यत् "अन्यथा विमानं विध्वंसयितुं शक्यते" इति तयोरवस्कन्त्रोः तर्जनैव जर्मनसर्वकारं वञ्चयितुमलमभूत् ।

नास्ति संशीतिलेशोऽप्यत्र यत् यूगोस्लावसर्वकारः दोषरहित एवास्ति अस्मिन् विषये यतो हि नासीत् उपायान्तरं अपहृतविमानस्यावतरणाय आज्ञाप्रदानं विना । जर्मनसर्वकारस्य प्रार्थनामाकर्ण्य तेन वैमानिकानां यात्रिणाञ्च सुरक्षायाः वचनं प्रदत्तं किन्तु यदि बन्धकानां मुक्तिं विनैव अवस्कन्तृणां गमनाय आज्ञा नाभविष्यत् तर्हि किं तेषां जीवनरक्षा शक्याभविष्यत् ? तादृश्यामवस्थायां विमानस्य विध्वंसः सुस्पष्ट एव । इदमेव कारणमभूत् यत् 'जगरेब' विमानस्थलस्याधिकारिणः न केवलं तयोः मुक्तानां घातकानां विमानमेव पूर्वं अवतरिष्यति पश्चाच्चैतत् लुप्तहसां, विमानम्" इति वार्तां अपितु "अपहृताय विमानाय बन्धकानां मुक्तेः पूर्वमेव आवश्यकं तैलादिकमपि प्रदेयं भविष्यति" इत्यपि अङ्गीकृतवन्तः ।

यद्यपि सर्वेऽपि वैमानिकाः यात्रिणश्च मुक्ताः पुनरपि इदमेव मन्तुं शक्यते यत् आरब्यौ अवस्कन्तारौ नितान्तं कुशलौ सिद्धौ अभवताम् परिणामे च 'बोनसर्वकारः' केवलं मनसा एव दुःखमनुभवितुं शक्नोति न च कर्मणा किमपि कर्तुम् ।

॥ इति ॥

"भारत भक्तो दीनबन्धु ऐराड्रूज् महाशयः"

—हरिरामो विद्यालंकारः

भैंसवाल गुरुकुलः

००

सर्वज्ञः परमात्माऽपि कदाचित् भौगोलिकीं त्रुटिं विदधाति । सुविख्यातस्य अमेरिकादेशस्य दार्शनिकस्य एमर्सनमहानुभावस्य विषय आंगलविश्वकोषे उल्लिखितमस्ति यत् "एमर्सन् महाशयः बुद्धिवादी ब्राह्मण आसीत्" । अन्येन एकेन 'पर्सिबल चब' नाम्ना लेखकेन एमर्सननिबन्धानां भूमिकायां लिखितं यत्—"कतिपयेषु स्थानेषु एमर्सनमहोदयस्य भावा अत्युच्चाः भवन्ति, तत्र वयं तं ब्राह्मणं वक्तुं शक्नुमः । तस्य विचारान् पठित्वा शिक्षत आर्य कथयितुं पारयते यत् एमर्सनमहाशयो भौगोलिको त्रुटिरासीत् । तस्य जनिस्तु भारते वर्षे यद्यभविष्यत् तर्हि एव उचितमभविष्यत्" । एषैव वार्ता विलायतदेशे विख्यातस्य लेखकस्य एडवर्ड कार्पेन्टर महोदयस्य विषये सम्यक् वर्तते, किन्तु दीनबन्धु एण्ड्रज् महानुभावस्तु साक्षात् भौगोलिकी विस्मृतिरेवासीत् । अस्य महानुभावस्य जन्म भारतभूमौ न भूत्वा आंगलदेशस्य उत्तरस्याँ दिशि स्थित 'न्यू कैसिल औन टाईन' नाम्नि नगरे फर्वरीमासे द्वादश तारिकायाँ एकसप्तत्युत्तराष्ठादश शततमे ख्रीस्ताब्दे समभूत । महाशयस्यास्य पितामह ईदृशः सरलो बभूव यत् शिक्षको भूत्वाऽपि कदापि स्वशिष्यान् न दण्डयांचकार । एवं श्रूयते यत् एकदा तस्य अनेके शिष्याः तमूदुः "भवन्तुऽत्याधिकमस्मासु कृपां विदधति । साम्प्रतं तावदनेन वेत्रदण्डेन ताडनां कुर्वन्तु ।

चतुर्दशसन्ततिपालकयोः 'जान् एडविन् ऐण्ड्रज्—मेरी शारलोटयोश्च पित्रोः श्रीमान् दीनबन्धु ऐण्ड्रज् चतुर्थी सन्ततिरासीत् महतः कुटुम्बस्यास्य पालने पोषणे पितरौ महान्तं कष्टमभजताम् ।

एण्ड्रज् महोदयस्य मातुः किंचिद् धनं सुरक्षितमासीत्। तस्य यः प्रधानः न्यासो 'ट्रस्टी इत्याङ्लभाषायाम्' आसीत् सः तस्य पितुः परमं मित्रमासीत्। पश्चादसौ धूर्तः सिद्धोऽभूत्। निखिलऽपि सम्पत्तिस्तेन धूलिधूसरिता कृता। तस्मिन् काले ऐण्ड्रज् नववर्षः किशोर आसीत्। तात्कालिकीं दुर्घटनाँ वर्णयता तेन इत्थमुक्तम्– जनकेन क्षिप्रसन्देशप्रेषकयन्त्रेण धनालयस्य व्यवस्थापकः मातुरवशिष्टं धनं पृष्टः। व्यवस्थापकस्य उत्तरमासीद्यत् 'नैकमपि रुप्यकमस्ति तस्यास्तु''। समाचारमिममाकर्ण्य पिता हृदयगत्यवरोधमिव अन्वभवत्, अहञ्च इमां दुर्घटनाँ कदापि विस्मर्तुं न पारयामि। पिता अत्यन्तं शुशोच, यतो हि तस्यैकेन एवंविधेन मित्रेण विश्वासघातः कृतः यं हि स भृशं आदद्रे। सायंसमये पित्रा बायबिलग्रन्थस्य इदं वाक्यमपाठि यत्— ''यदि कोऽपि मे शत्रु एवंविधं विश्वासघातमकरिष्यत् तर्हि अहं तमसहिष्ये किन्तु इदं कार्यं तु त्वया – मम परिचितेन मित्रेण विहितं यस्मिनहं अत्यन्तं विस्रब्धोऽभवम्''। क्षणानन्तरं नतजानुरसौ प्रभुं प्रार्थयत, हे प्रभो! मम मित्रेण योऽपराधो विहितः, तदर्थमसौ क्षन्तव्यः। तस्य हृदि अपराधमवगन्तुं प्रेरणा क्रियतां येनासौ पश्चात्तापं विधाय साधीयस्या रीत्या जीवनं यापयेत्''।

एण्ड्रज् महाशयः कथयति यत् अनया दुर्घटनया सर्वेषां कुटुम्बप्राणिनां प्रेमबन्धनं दृढं जातम्। इयं दैवी आशीरासीत् अस्मभ्यं यद् वय धनहीना अभवाम्। नास्ति संशीतिलेशोऽप्यत्र यत् एण्ड्रज् महोदयो निर्धनानां दुःखान्यवगन्तुं समर्थोऽभवत् तस्य कारणमिदमेव बभूव यदसौ निर्धनताजन्यानि सर्वाण्यपि कष्टानि सम्यक् प्रकारेण असहिष्ट।

विद्याध्ययने ऐण्ड्रज् महाशयोऽतीव निपुणो बभूव। निपुणतायाः ज्ञानमनेनैव भवति यदध्ययनकाले विद्यालये, महाविद्यालये, विश्वविद्यालये च सर्वत्रैव छात्रवृत्तिमलभत। लैटिनग्रीकाभ्याँ भाषाभ्यां कविताकर्म तस्य रुचिकरं कर्म अवर्तत। साहित्ये तस्यातिशयं प्रेम आसीत्। गणितविषये तस्य रुचिर्नासीत्, विषयमिमं अजुगुप्सिष्ट।

अत्यधिकाध्ययनवशादेण्ड्रूज्महानुभावः किञ्चन्नत्वा चलति स्म, अतः छात्रास्तं व्यङ्ग्येन कथयन्ति स्म— "पश्यत, अयमागच्छति प्राध्यापकः"। कैम्ब्रिजविश्वविद्यालयस्य पैम्ब्रोकमहाविद्यालयस्य थियोलाजीविभागे उपप्रधानाचार्यः सन्नपि असौ तादृशीं जीवनचर्यां नारोचयत अपितु लन्दननगरस्य असहायानां जनानां सेवामेव महत्कार्यमवागच्छत्। तस्य जीवनस्य चत्वारि वर्षाणि बालवर्थ-सन्दरलैंडस्थानां श्रमिकाणां मध्ये व्यतीतानि। एवमसौ निर्धनानां उदरपूर्त्याः कष्टं साधु अवागच्छत्।

भारतं प्रति प्रेम ऐण्ड्रूज्महाशयस्य बाल्यकालादेव बभूव। कदापि कुत्रापि किमपि पुस्तकं पठन्नसौ अज्ञासीत् यत् भारतीया ओदनं प्रचुरं भक्षयन्ति अतः महानुभावोऽयमपि मातरं विवशां करोति स्म ओदनं पक्तुम्, कथयति स्म च – "अहं भारतं वर्षं गमिष्यामि"। माता तु तमुपहसन्ती कथयति स्म, प्रेयन्! त्वं कदापि भारतं अवश्यमेव गमिष्यसि"। मातुरियं भविष्यद्वाणी सत्या एव सिद्धाऽभूत्, एण्ड्रूज्महोदयश्च मार्चमासस्य विंशतितारिकायां चतुरुत्तरैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्ताब्दे भारतमाजगाम। मार्चमासस्य विंशतितारिकां द्वितीयं जन्मदिवसममन्यत। एवमसौ 'द्विज' आसीत्।

श्रीमान् ऐण्ड्रजमहानुभावः 'कैम्ब्रिज' मिशनस्य प्रचारको भूत्वा भारतमागच्छत् अचिरादेव च 'सेण्ट स्टीफेन्स' महाविद्यालयस्य अध्यापकपदं सुशोभितमकारि तेन। वर्षानन्तरमेव अधिकारिणस्तं प्रधानाचार्यं कर्तुमवाञ्छन्। पंचनदप्रान्तस्य प्रशासकेन लार्डविशपेन ऐण्ड्रज्महोदय एवमुक्तः— "केनापि आंग्लदेशवास्तव्येनैव प्रधानाचार्येण भवितव्यम्, यतो हि भारतीया मातरः पितश्च आंग्लमेव प्रधानाचार्यं विश्वसनीय मंस्यन्ते। भारतीयः प्रधानाचार्यस्तु अनुशासितुं सर्वथा असमर्थो भवति, संकटे पतिते च विद्यार्थिनस्तमभिभविष्यन्ति, अतएव भवानेव प्रधानाचार्यो भवितुं योग्यः"। एवं कथितवति सति विशपेऽसो प्रत्युत्तरमदात्, "श्रीमान् सुशीलकुमारो रुद्रोऽस्मिन् महाविद्यालय विंशतिवर्षेभ्यः प्राध्यापको वर्तते, स एव प्रधानाचार्यः कार्यः। यदि वर्णभेदहेतोः प्रधानाचार्यो न भवति श्रीमान् रुद्रस्तर्हि अहं महाविद्यालयादस्मान्यग् भविष्यामि, इति। नाहं कदापि वर्णभेदस्य नीतिं सोढुं शक्नोमि।

अन्ततः रुद्र एव प्रधानाचार्योऽभूत् । इयं घटना यत्र तस्य न्यायप्रियतां दर्शयति स्वार्थत्यागं च प्रकटयति तत्र तस्य स्वभावमपि बोधयति नः । स कथयति स्म यत् यदि कोऽपि आंग्लः भारतमुपकर्त्तुं वांछति तर्हि तेन धन-पद नेतृत्वादिभ्यः प्रलोभेभ्यो वस्तुभ्यः पृथक् भवितव्यम्, तेन सेवकेन भवितव्यं न तु शासकेन । ऐण्ड्रज्महाशयस्य सफलतायाः मूलमिदमेव आसीत् यत् एभ्यः प्रलोभनेभ्यः सर्वदा आत्मानं न्यक् अकार्षीत् ।

"कदापि कस्यामपि दशायाँ कस्माच्चिदपि भारतीयात् मा अभिभूता भूत । भारतीयाः नीचाः सन्ति, वयंच असिबलेन भारत शिष्मः । कामं लोकव्यवहारे सरलो भवतु भवान् किन्तु सर्वदा सावधानेन भवता भवितव्यं, आंग्लं गौरवञ्च कदापि न त्याज्यम्" --इति बहुश उपदिष्टोऽपि महानुभावोऽयं वर्णविद्वेषाय दूरत एव नमश्चकारा शनैः शनैः तस्य हृदय राष्ट्रियान्दोलनेऽपतत् । यदा लाला लाजपतरायो देशान्निसारितस्तदा एकस्मिन् भाषणे सर्वकारस्य निन्दामकरोत् । मुक्ते कृते च लाजपतराय 'सेण्ट स्टीफेन्स' महाविद्यलये दीपमाला कृता अस्यैव सम्मत्या । आंग्लास्तु भृशमकुप्यन् । अन्तोगत्वा राष्ट्रियान्दोलने सम्मिलितुं महाविद्यलयस्या वृत्तिमत्यजत् ।

यदा अस्याः शताब्द्याः त्रयोदशतमे वर्षे अफ्रिकाया दक्षिणे भागे महात्मनो गान्धिनः सत्याग्रह-संग्रामः प्रचलित आसीत्तदा भारतेऽनेन गोखलेमहोदयस्य धनसंग्रहाय भृशं सहायता अकारि । गोखलेमहोदयस्यादेशं शिरसा वहता च अफ्रिकायामपि गत्वा जनरलस्मट्सेन सन्धिं कर्तुं गान्धिनः सहायता अकारि ।

ऐण्ड्रज्महोदयकृतेषु कार्येषु अत्याधिकं महत्वपूर्णं कार्यं पणबन्धेन भारवाहप्रथायाः निरोधनमस्ति । प्रथेयं पंचत्रिंशदुत्तराष्टादशशततमे ईशाब्दे प्रारब्धाऽभूत् । परिणामे च भारतीयानां ललनानां सतीत्वनाशः पुरुषाणाञ्च नैतिकं पतनमभूत् । इदं कार्यं सर्वथा दुष्करमासीत् यतोशक्तियुक्तः प्लांटरोऽन्येन पूंजीपत्यश्च अस्याः प्रथायाः समर्थका अभूवन्. किन्तु अस्य उद्योगेन आन्दोलनेन च प्रथेयं समूलं विनष्टा ।

प्रवासिनाँ भारतीयानान्तु अयं गुरुः सहायकोऽभवत् तेषां दशां च उन्नतां कर्तुं जगतः सर्वेषु भागेषु भ्रमणमकारितेन । फिजी-आस्ट्रेलिया-कनाडा न्यूजीलैंड-पूर्वाफ्रीका-दक्षिणाफ्रीका–ट्रिनीडाड ब्रिटिशगायना-सुरीनाम–मलाया-सीलोनाद्युपनिवेशवास्तव्याः तस्य सहायतायाः पात्रतामलभन्त । अकालजल-प्लावन-सत्याग्रहदिवसेषु तु तस्य दुःखग्रस्तानां जनानां सेवा अविस्मरणीया प्रशस्या चास्ति ।

ऐण्ड्रूज्महाशयस्य व्यक्तित्वे अलौकिकमाकर्षणमासीत् । सत्यता-सहृदयता सहिष्णुता-सरलतादिगुणानां सुन्दरं सम्मिश्रणं एकस्मिन् ऐण्ड्रूज्महाशये एवावर्तत । गान्धो अपि अलेखीत् यत् एण्ड्रूज्महानुभावं परित्यज्य नास्ति कोऽपि सत्यभाषी, विनीतो भारतभक्तश्च अस्मिन् भारतभूमौ ।" लाला लाजपतरायोऽपि कलिकातानगरे कांग्रेसदलस्य सभायामघोषयत् यत्—"एक एव आंग्लो वर्तते यो खलु अस्माभिः कृतज्ञतापूर्वकमभिनन्दनीयः । स खलु वर्तते ऐण्ड्रूज् महापुरुषः, असौ च भारतीय एव वर्तते हृदयेन । महात्मना गान्धिनाऽपि एकदा भणितम्:-

"ऐण्ड्रूज् दीनबन्धुस्तु पुरुषवेशेन स्त्री एव वर्तते । तस्य हृदयं स्त्रियाः हृदयमिव कोमलं वर्तते ।" एकमेव इदं वाक्यं तस्य व्यक्तित्वं प्रकटयितुं अलम् । इयं सहृदयता एव भारतीयानां दुःखानि दूरीकर्तुं समस्तेऽपि संसारे तं भ्रमयति स्म । महानुभावायास्मै आंग्लदेशोऽपि प्रिय आसीत् किन्तु तस्य भारतं प्रति प्रेम उच्चैस्तरमभूत् ।

पाणिग्रहणबन्धनेऽनिबन्धनाद्धेतोः पितृत्वस्य गौरवं कामं न जानातु किन्तु मातृत्वस्य उच्चतमं गुणं कोमलं स्नेहं अत्यन्तमवागच्छान्महापुरुषोऽयम् । इदं प्रेम मातुः सकाशादलभत । माता यदा विलायते मृत्युशय्यास्थाऽभूत्

तदा सा स्वपुत्रं आत्मान्तिकस्थं द्रष्टुमियेष। तदासौ गोखलेमहोदयेन सार्द्धं कार्यरतोऽभूत्। मातुः पत्रं लब्ध्वा अलिखत्, 'दक्षिणस्याँ अफ्रिकायां भारतीयाः पुरुषाः स्त्रियश्च विपत्तिग्रस्तास्सन्ति। आज्ञा भवेच्चेत् तान् सेवितुं गच्छामि अन्यथा भवत्याः सकाशं आगन्तुं उद्यतोऽस्मि। माता तु यदापाठीत् भारतीयानाँ जनानां कष्टवृत्तान्तं तदा तस्या हृदयं द्रवितमभूत् आत्मचिन्ताँ च विहाय स्वपुत्रः सन्दिष्टस्तया—

"दक्षिणस्यां अफ्रिकायां गत्वा भारतीयानां सहायता कार्या, अकृतकार्येण च त्वया अत्र न आगन्तव्यम्।" मातुराज्ञां शिरसा वहता पुत्रेण किञ्चित् कालानन्तरमेव श्रुतं यत् माता द्युलोकं गता। तत आरभ्य मातुः सहृदयस्तनयोऽयं भारतमातरमेव स्वमातरमवगम्य असेविष्ट।

यदा आंग्लशासकानां, साम्राज्यवादिनां जनानाञ्च नामानि साम्राज्येन सार्द्धं विस्मृतिगर्भे विलीनानि भविष्यन्ति तदापि एकस्यास्य आंग्लजनस्य नाम भविष्यत्कालिकानां भारतीयानां कृतज्ञतापूर्णेषु हृत्पटलेषु अमरत्वेन उल्लिखितं भविष्यति इति॥

पापों से छुटकारा और महर्षि दयानन्द

लेखक—आचार्य महामुनि

●

[२७ सितम्बर १९७० के आर्य मित्र में श्री पं० मदनमोहन जी विद्यासागर, महर्षि दयानन्द मार्ग हैदराबाद के 'पाप को क्षमा कर" लेख के उत्तर में]

स्वाध्यायशील आर्य जनों को सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों के पढ़ने से महर्षि दयानन्द जी का निम्नलिखित मन्तव्य सूर्य प्रकाशवत् विदित है – 'जो मनुष्य जैसा शुभ अशुभ कर्म करता है वह उसके तदनुरूप फल को अवश्य प्राप्त करता है। कोई भी कृत कर्म निष्फल नहीं जाता। किया हुआ शुभाशुभ कर्म फल यथाकाल (समय पर) कर्त्ता को भोगना ही पड़ता है। कर्मफल स्वयमेव नहीं मिलता, उसको देने वाला परमेश्वर है। परमेश्वर न्यायकारी है, वह किसी के साथ पक्षपात (रियायत वा ज्यादती) नहीं करता। कर्मानुसार यथोचित व्यवहार करता है। इत्यादि।

परन्तु कहीं कहीं ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना आदि के प्रकरण में श्रद्धालु विचारशील साधकों को ऐसा प्रतीत होता है कि – स्वामी जी महाराज भी अपने पूर्वोक्त सिद्धान्त के विरुद्ध अन्य पन्थाइयों के समान ही कह रहे हैं। इसका समाधान होना चाहिए।

अत: 'पाप को क्षमा कर' नामक लेख में प्रदर्शित स्थलों के विषय में तथा अन्य अप्रदर्शित (अलिखित) स्थलों के सम्बन्ध में भी समाधान प्रस्तुत किये जाते हैं:—

प्रथम विचारशील जनों को यह बात हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए (समझ लेनी चाहिए) कि भाषा की रचना विद्वान् जन प्रतिपाद्य विषय के अनुरूप ही किया करते हैं। प्रत्येक विषय का अपना अपना उद्देश्य होता है वह उद्देश्य तत्तत् (उस उस) विषय की भाषा से पूर्ण होना चाहिए; इसी में वक्ता की सफलता समझी जाती है।

महर्षि दयादन्द जी का बनाया हुआ 'आर्याभिविनय' नामक ग्रन्थ ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना रूप विषय का प्रतिपादक है।

स्तुति कहते हैं गुण कीर्त्तन (वर्णन) को, प्रार्थना = याचना (मांगना), उपासना समीप स्थिति (समीप होना) अर्थात् ईश्वर के स्वरूप में मग्न होना। स्तुति से ईश्वर में

प्रेमभाव की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। प्रार्थना से निरभिमानिता, सामर्थ्य और सहायता की प्राप्ति होती है। उपासना से तल्लीनता और ईश्वरीय गुणों की प्राप्ति होती है

दूसरी बात यह भी ध्यान रखनी चाहिए कि— अभिविनय (ईश्वर के प्रति नम्रता प्रदर्शन वा ईश्वर को सर्व व्यापक जानकर आत्मसमर्पण (आदि) में भाषा के भावों को सिद्धान्तानुसार ही ढ़ालना चाहिए (निकालना चाहिए) । अभिविनय के शब्दों से किन्हीं सिद्धान्त विशेषों का निर्माण करना (वा निकालना) अनुचित होगा। अर्थात् जहां जहां सिद्धान्त की भाषा में और अभिविनय की भाषा में विरोधाभास (विरोध प्रतीत) हो वहां वहां विरोध के परिहारार्थ (दूर करने के लिए) अभिविनय की भाषा के भावों को ही सिद्धान्तानुसार ढालना (निकालना) होगा; क्योंकि अभिविनय (स्तुति प्रार्थना) की भाषा काव्यमयी (चमत्कारपूर्ण) लचक वाली हुआ करती है तथा सिद्धान्त (नियम) की भाषा सदा कठोर (दृढ) और अपरिवर्तनशील होती है।

मान्यवर विद्वान् पं० विद्यासागर जी ने आर्याभिविनय के चार स्थल शंकनीय समझ कर विचारार्थ प्रस्तुत किये हैं। अब उन पर क्रमशः विचार किया जाता है—

१ – आर्याभिविनय द्वितीय प्रकाश के प्रथम मन्त्र की व्याख्या में आता है– 'मनसा वाचा कर्मणा अज्ञानेन प्रमादेन वा यद् यद् पापं कृतं मया तत्तत् सर्वं कृपया क्षमस्व। ज्ञानपूर्वक पाप करणान्निवर्त्तयतुमाम्। मन से, वाणी से और कर्म से अज्ञान वा प्रमाद से जो पाप किया हो, किं वा करने का हो उस उस मेरे पाप को क्षमा कर और ज्ञानपूर्वक पाप करने से भी मुझको रोक दे।) जिससे शुद्ध होके मैं आपकी सेवा में स्थिर होऊं।'

समाधान— पूर्वोक्त सन्दर्भ में शंकाऽऽस्पद (शंका का विषय) पद 'क्षमस्व' (क्षमाकर) है। महाभाष्यकार आचार्य पतञ्जलि जी का वचन है— 'अनेकार्था अपि धातवो भवन्ति' अर्थात् 'धातूनाम् अनेकार्थाः'। इसका भाव यह है कि— धातुपाठ में जो धात्वर्थ आचार्य पाणिनी जी ने लिखे हैं केवल वही अर्थ उन धातुओं के नहीं हैं अपितु उन अर्थों से भिन्न भी अनेक अर्थ उन धातुओं के होते हैं। वे अर्थ प्रकरणानुसार विद्वानों को जान लेने चाहियें।

धातुपाठ में भवादिगण में 'क्षमूष सहने' ऐसा पड़ा है। तथा सह धातु का अर्थ षह मर्षणे' ऐसा पढ़ा है। मर्षण शब्द के अनेक अर्थों में एक अर्थ पृथक्करण=दूर करना अर्थात् परे हटाना (जुदा करना) भी है। जैसे संध्या के 'अघमर्षण' मन्त्रों का अर्थ करते हुए 'अघमर्षण' पद का यही पूर्वोक्त अर्थ स्वामी जी महाराज ने किया है।

पाप का दूरीकरण वा छुडाना क्या है? अकृत पाप को अपने पास (मन में भी) न आने देना तथा कृत पाप कर्म का पुनः (दो बार तीन बार आदि) न होने देना ही पाप का दूरीकरण है।

'क्षमस्व' इस क्रिया पद से पूर्व 'कृपया' पद भी पठित है जिसका अर्थ है सामर्थ्य के द्वारा; ईश्वर की सामर्थ्य क्या है? 'प्राकृतिक नियम ही' ईश्वर की सामर्थ्य है। नियम तोड़ना वा नियम विरुद्ध करना ईश्वर की सामर्थ्य नहीं है। इसलिए 'क्षमस्व' पद का अर्थ किये हुए (कृत) पाप कर्म के फल को माफ कर (न दे वा नष्ट कर दे) ऐसा समझना भूल है (अज्ञानता है)। क्योंकि पूर्वोक्त अर्थ का स्पष्टीकरण (खुलासा) स्वामी जी महाराज ने स्वयमेव इसी वाक्य के अन्तिम पद 'निवारयतु' से कर दिया है। अर्थात् 'क्षमस्व' और 'निवारय पर्यायवाची हैं (यहां पर एकार्थक जानने चाहियें)। अपि च — हिन्दी भाषार्थ में जो क्षमस्व, का अर्थ 'क्षमा कर' किया है यहां भी 'क्षमा' का अर्थ 'निवारण' ही उपयुक्त (ठीक) है क्योंकि भाषार्थ में एक वाक्यांश है— "किं वा करने का हो।" जो पाप कर्म अभी तक कर्मणा, वाचा, मनसा किया ही नहीं है उसको क्षमा=माफ न देने वा नष्ट करने का क्या अर्थ? 'क्षमा' का निवारण अर्थ स्वीकार करने पर अर्थ की संगति लग जाती है। अर्थात् जो पाप अभी तक हमसे हुआ हो नहीं है उसका निवारण यही है कि वह हमारे पास कभी न आने पावे, उसकी मन से भी किंचित इच्छा भी न हो।

अथर्व वेद में एक मन्त्र है - "शं च नो मयश्चनो मा च नः किं चनाममत्। क्षमा-रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम्॥ काण्ड ६ सू० ५७ मं० ३। यहां पर भी क्षमा का (क्षम्धातु का) अर्थ निवारण (उपशमन) ही संगत बैठता है। ऐसा ही सायणाचार्य व पं० क्षेमकरण जी आदि भाष्यकारों ने भी स्वीकार किया है।

'क्षान्त्या शुद्धयन्ति विद्वांसो दानेनानिष्टकारिणः। प्रच्छन्नपापा जप्येन तपसावेद-वित्तमाः॥' मनु. अ. ५ श्लोक १०७। (संस्कारविधि गृहाश्रम प्रकरण) "विद्वान् जन क्षमा से शुद्ध होते हैं।" यहां पर भी क्षमा का अर्थ कुकाम कुक्रोध, कुलोभ, मिथ्याभिमान मिथ्याभय आदि मानसिक विकारों का विचार द्वारा उपशमन अर्थात् दूर करना अर्थ ही अभिप्रेत है।

२– द्वितीय शङ्का स्थल —

"आप जिसको चाहो उसको ऐश्वर्य देओ" आ० द्वि० प्र० मं० ११। इस पर अन्य टिप्पणी विद्यासागर जी ने नहीं लिखी।

मेरे विचार में इस वाक्य को इसलिए शकनीय समझा गया है कि—इससे यह ध्वनित होता है कि कर्म फल देना, न देना, न्यूनाधिक देना, कर्म के बिना भी अच्छा वा बुरा फल दे देना ईश्वराधीन है। जैसा कि इसाई मुसलमान आदि मतवादी मानते हैं कि—ईश्वर स्वतन्त्र है वह अपनी इच्छा से सब कुछ कर सकता है, इत्यादि।

समाधान - 'आप जिसको चाहो उसको ऐश्वर्य देओ' इस वाक्य से पूर्व (प्रथम) और अपर (पश्चात्) वाक्य इस प्रकार हैं —

"आपके ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य हैं, अन्य किसी के आधीन नहीं। 'आप जिस को चाहो उसको ऐश्वर्य देओ।' सो आप कृपा से हम लोगों का दारिद्रय छेदन करके हम को परमैश्वर्य वाले करें। क्योंकि ऐश्वर्य के प्रेरक आप ही हैं।" यहां पर प्रथम वाक्य में अर्थात् 'आप के ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य हैं।' इस वाक्य में 'आप के ही आधीन .... हैं' ऐसा न कह कर 'स्व' शब्द का जो अधिक सन्निवेश किया गया है उसका यह अर्थ (अभिप्राय) है कि—आप का जो स्व = प्राकृतिक नियम' उसके आधीन सकल ऐश्वर्य हैं तथा 'सो आप कृपा से (कृपया) इत्यादि पश्चाद्वर्त्ती वाक्य में 'कृपया' (कृपा से) पद भी पूर्वोक्त 'नियम' का ही बोधक है।

ऐश्वर्य देने और न देने के विषय में ईश्वरीय नियम क्या है ? ? इस विषय में आर्ष वचन हैं— 'न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा:।' 'इन्द्र इच्चरत: सखा।' इत्यादि।

अर्थात् जब तक मनुष्य किसी ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए पूर्ण (शक्ति भर) परिश्रम करके श्रान्त (थका हुआ) नहीं हो जाता तब तक परमदेव परमात्मा उसकी मित्रता के लिए अभिमुख नहीं होता अर्थात् उसको मनोवांछित फल नहीं देता। इन्द्र अर्थात् ऐश्वर्य प्रदाता ईश्वर परिश्रम करने वाले का ही मित्र है आलसी का नहीं। इत्यादि आर्ष वचनों को जानता हुआ ही ज्ञानी भक्त जन ज्ञानपूर्वक परिश्रम (उद्योग) करता है। उस को दृढ़ विश्वास है कि मेरा भगवान् न्यायकारी है मेरे परिश्रम का फल अवश्य देगा। किं वा— वस्तुत: चाहना (इच्छा करना) ईश्वर में घटता ही नहीं। क्योंकि ईश्वर तो सर्वव्यापक सर्वज्ञ होने से आप्त काम है। इच्छा करने वाला तो एक देशी (परिच्छिन्न) अल्पज्ञ अल्पशक्ति जीव है। उसी का गुण इच्छा है। ईश्वर में इच्छा गुण नहीं घट सकता, अत:— 'जिसको चाहो' का अर्थ (भाव) होगा— जिसको आप अधिकारी समझो' उसको देओ।

३– तृतीय शङ्का स्थल—

"जैसी आपकी इच्छा हो वैसा हमारे लिए आप कीजिए।" आ द्वि. प्र. मन्त्र २३.

समाधान — स्वकीय आयु प्राण चक्षु श्रोत्रादि इन्द्रिय मन बुद्धि आत्मा आदि सर्वस्व का समर्पण करने के पश्चात् ही ये पूर्वोक्त शब्द ज्ञानी भक्त ने कहे हैं। यहां तो स्पष्ट रूप से इच्छा शब्द का अर्थ न्याय (नियम) ही है। इन शब्दों से भक्त का भगवान् के न्याय के प्रति पूर्ण विश्वास ही प्रकट होता है।

४–चतुर्थ शङ्का स्थल—

'आर्याभिविनय द्वितीय प्रकाश के १७वें मन्त्र के 'अङ्घारि:' और 'मार्जालीय:' इन दोनों पदों के अर्थ हैं। यथा –

'अङ्घारि:' स्व भक्तों का जो अंघ (पाप) उसके अरि (शत्रु) हो। उस समस्त पाप के नाशक हो।

'मार्जालीयः' पापों का मार्जन (निवारण) करने वाले आप ही हो। अन्य कोई नहीं।"

समाधान— जिस प्रकार बीज से वृक्ष पैदा होता है और वृक्ष से पुनः उसका बीज बन जाता है। इसी प्रकार कुसंस्कार से कदाचार (कुकर्म) होता है तथा उस कदाचार से पुनः तत्सदृश कुसंस्कार बन जाता है। उन कुसंस्कारों से पुनरपि कदाचार पैदा होंगे।

यहां उसी कुसंस्कार को अंघ (वा अघ) शब्द से कहा गया है। उस कुसंस्कार रूपी पाप का शत्रु = शातयिता = छिन्न भिन्न करने वाला अर्थात् नष्ट करने वाला परमात्मा ही है। क्योंकि परमेश्वर की उपासना के बिना कुसंस्कार का सर्वथा नाश नहीं हो सकता। उसकी उपासना से ही कदाचार (पापकर्म) मूल (कारणरूप संस्कार) सहित छिन्न भिन्न (भस्मीभूत) हो सकता है (हो जाता है)। इसीलिए मन्त्रार्थ में स्वामी जी ने परमात्मा को— उस (कारण कार्य रूप सूक्ष्म स्थूल) समस्त पाप के नाशक हो' ऐसा कहा है।

मार्जालीयः— पापों का मार्जन शोधन निवारण वा पृथक्करण का भाव यही है कि जो दुष्टकर्म हम से हो जाते हैं जिनको हम अपने लिए हानिकारक (अनिष्टकर) समझते हैं परन्तु अज्ञान प्रमाद आदि दोषों (कमजोरियों) के कारण हम से बार बार हो जाते हैं उनको हमसे छुड़ाने वाले अर्थात् वे पाप कर्म हमसे फिर न हों ऐसा हम परमात्मा की सहायता (ज्ञान व आत्मिक शक्ति प्राप्ति) से ही कर सकते हैं, अन्यथा नहीं। यह भाव है। जो परमात्मा के न्याय पर पूर्ण विश्वास करके उसकी वेदोक्त आज्ञाओं का पालन करने वाला है वही वास्तव में परमात्मा का भक्त है (उसको ही परमात्मा का भक्त कहना चाहिए)। ऐसा भक्त यह कभी नहीं सोच सकता कि वेद (ईश्वरीय नियम) विरुद्ध आचरण तो करता रहूँ परन्तु उसका कुफल मुझे न मिले (न मिलेगा) अथवा उस कुफल को ईश्वर नष्ट कर दे कर सकता है)।

५– पञ्चम शङ्कास्थल –

"हम सब मनुष्यों के भी पाप दूर करने वाले एक आप ही दयामय पिता हो। हे महाअनन्त विघ ! जो जो मैंने विद्वान् वा अविद्वान् होके (अर्थात् जाने अनजाने) पाप किया हो उन सब पापों का छुड़ाने वाला आप के बिना कोई भी इस संसार में हमारा कारण नहीं।" आर्याभिविनय २य प्र० मं० १८।

इन वाक्यों में वही पाप क्षमा की बात कही गई है।

समाधान— इस पूर्वोक्त (ऊपर लिखे गये) आर्य मित्र में छपे पाठ में तथा आर्याभिविनय ग्रन्थ के पाठ में कुछ अन्तर (भिन्नता) है। तद्यथा— 'और हम सब मनुष्यों को भी पाप से दूर रखने वाले एक आप ही दयामय पिता हो। हे महाऽनन्त विघ ! जो जो

मैंने विद्वान् वा अविद्वान् हो के पाप किया हो, उन सब पापों का छुड़ाने वाला आप के बिना कोई भी इस संसार में हमारा शरण नहीं है। इससे हमारे अविद्या आदि सब पाप छुड़ा के शीघ्र हम को शुद्ध करो।" आ. द्वि. प्र. मन्त्र १९।

समाधान— मनुष्यों के पाप दूर करने में और मनुष्यों को पाप से दूर रखने में किंचित अन्तर (भिन्नता) है।

प्रथम में तो चोरी जारी शराब खोरी मिथ्या व्यवहार आदि बुरी आदतें (कर्म) जिनसे मनुष्य ग्रस्त (जिनमें फंसा हुआ) है। उनका छुड़ाना अभिप्रेत है। द्वितीय में जो बुरे कर्म (बुरी आदतें) मनुष्य से अभी तक सम्बद्ध नहीं हैं जिनमें फंसना सम्भव है उनसे मनुष्य बचा रहे कभा लिप्त न हो; यह भाव है। दोनों कार्य शुभ (अच्छे) हैं। दोनों के उपाय भी भिन्न भिन्न हैं। आगामिनो (आने वाली) बुराई (पाप कर्म) के कुफल (बुरा परिणाम) समझा कर अन्यत्र प्रत्यक्ष दिखाकर (उदाहरण द्वारा पुष्ठ करके) पाप कर्म से मनुष्य को दूर रखा जा सकता है तथा उस बुराई से विपरीत अच्छाई (शुभ कर्म) के अच्छे परिणाम उदाहरण आदि द्वारा बताकर शुभ कर्म में प्रेरित करके भी बुराई (पाप कर्म) से मनुष्य को पृथक् रखा जा सकता है।

इसी प्रकार मनुष्य से सम्बद्ध बुराई (पाप कर्म) को छुड़ाने के भी अनेक उपाय हैं। कुछ मनुष्य प्रेमपूर्वक समझाने मात्र से ही बुराई करना छोड़ देते हैं और अच्छाई (शुभ कर्म) करने लग जाते हैं।

कुछ मनुष्य बुराई (पाप कर्म) के कठोर भाषा में भयङ्कर परिणाम दिखाने से बुराई करना त्याग देते हैं। कुछ मनुष्य ताड़ना आदि कठोर उपायों का अवलम्बन (आश्रय) करने से बुराई का त्याग कर जाते हैं।

पूर्वोक्त सभी उपाय पाप छुड़ाने वाले ही कहे जाते हैं

इसी प्रकार परमात्मा भी अनेक उपायों से मनुष्यों को यथायोग्य रीति से पापों से दूर रखता है और पापों को छुड़ाता है।

आशा है मेरे पूर्वोक्त समाधानों से विचारशील स्वाध्याय प्रेमी श्री मान्यवर पं० मदनमोहन जी विद्यासागर आदि सज्जन महाशयों की कुछ सन्तुष्टि हुई होगी।

आशा है इसी रीति से इसी प्रकार के अन्य स्थलों का भी समाधान विद्वज्जन कर लेवेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश राष्ट्रोद्धार की कुञ्जी है

लेखक धर्मदेव

●

उस जमाने में जबकि देश में सर्वत्र अनैतिकता व अनेक सामाजिक बुराइयों का सर्वत्र अस्तित्व था तथा हिन्दुओं में सामाजिक चेतना का अभाव था, लोग जाति-पांति से इतने कायल हो गये थे कि मनुष्य, मनुष्य से घृणा करने लगा था। ठीक ऐसे भारत की अवनति के समय में एक दिव्य पुरुष ने जन्म लिया जिसने देश की हिन्दू जाति को एक नया मोड़ दिया। हिन्दुस्तान को 'आर्यावर्त' कहना सिखाया और हमें हिन्दू से आर्य बनाया। हम परतन्त्रता की बेड़ी में कसे हुए थे कि उसने आर्य समाज को—आर्यावर्त को ललकारा और स्वाधीनता का नारा दिया। महर्षि दयानन्द एक ऐसा तैराक था जिसने चलती धारा की विभिन्न तेज लहरों के खिलाफ टक्कर ली और सफल प्रयास वाला होकर लहरों को मोड़ा। इस हिन्दुस्तान को 'आर्यावर्त' का वही पुराना गौरव दिलाने का प्रयास किया। उन्होंने देश में घूम-घूम कर प्रचार किया और जनता को बताया कि ऐ मनुष्यो! तुम इस दुःख को सुख समझे बैठे हो। उन्होंने सदा सत्य को ही समझाने का प्रयास किया तथा असत्य को त्यागने को कहा, लेकिन स्वार्थी, अन्धविश्वासी लोगों ने उनका विरोध किया, उन पर रोड़े बरसाये लेकिन उस दिव्य पुरुष ने उन्हें फूल से ज्यादा कठोर नहीं समझा। लेकिन कहा है —

"सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततोदेवयानः।"

इस मुण्डकोपनिषद्–वाक्य के दृढ़ निश्चय को धारण करते हुए सत्पुरुष कभी पीछे नहीं हटते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने सोच रखा था— "यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्" गीता के इस वचन का अर्थ है जो जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं वे प्रथम करने में विष के समान तथा पीछे अमृत के समान होते हैं। यही सत्यार्थ प्रकाश की रचना का आधार । सत्यार्थ प्रकाश में सभी सत्य विद्याओं का समावेश, उनका मण्डन तथा असत्य विद्याओं का स्पष्ट खण्डन है, जिस पर आक्षेप किसी भी दशा में सम्भव नहीं है। कई मान्य विद्वान् सत्यार्थ प्रकाश के अर्थ पर ही भ्रम प्रस्तुत कर देते हैं। इस बारे में कुछ मास पूर्व एक पत्रिका में भी छपा था, लेकिन 'इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उस

को मिथ्या प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा गया है। ऐसी पंक्तियां आचार्यवर दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखी हैं।

सत्यार्थ प्रकाश की देन विश्व-समाज के लिए है। इस ग्रन्थ को साम्प्रदायिक कहना भूल होगी। इसकी शिक्षायें बच्चे से बूढ़े तक सभी के लिए हैं। इस बारे में एक रोचक किस्सा है :—

एक बार किसी ने तिलक जी से, जोकि पौराणिक थे, पूछा— 'भई, क्या आप भी आर्य समाजी हो गये हो?' 'कैसे?' जब तिलक जी ने पूछा तो उस व्यक्ति ने कहा 'आपके हाथ में मैंने कई बार सत्यार्थ प्रकाश देखा है।' उस पर तिलक जी का जवाब था— 'मैं आर्य समाजी तो नहीं हो गया हूँ लेकिन सत्यार्थ प्रकाश इसलिए पड़ता हूं कि इससे मुझे स्वराज्य की प्रेरणा मिलती है।'

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है उनमें एक यह भी है कि संस्कृत भारत की राजभाषा होनी चाहिए। बस इसी वाक्य से लोग घबरा उठते हैं। उनके मुख से यही निकलता है कि "संस्कृत राज भाषा कैसे हो सकती है? जबकि उसे 4 प्रतिशत जनता भी नहीं जानती है।" क्या मजाक है भाषाओं का? जब सभी भाषाओं की मूल भाषा संस्कृत, है जोकि एक व्याकरणबद्ध है।

इस ग्रन्थ में जनता को बताया है कि राम और कृष्ण नाम से दो ईश्वर नहीं हैं। ईश्वर साकार नहीं है अतः मूर्ति पूजा किसी भी दशा में युक्तियुक्त नहीं कही जा सकती। देश को चक्रांकित वैष्णवों, देवी, भागवतों, शैवों, वाममार्गियों ने नीचे गिरा रखा था। जैन, ईसाई, मुसलमानों ने धर्म के डोरे डालकर भारत को, विश्व को नचा रखा था, तब सत्यार्थ प्रकाश ने उनकी वस्तु स्थिति से विश्व को परिचित कराया। उसमें वर्ण व्यवस्था व आश्रम व्यवस्था पर जोर दिया गया है जो समष्टि और व्यष्टि दोनों के लिए स्वर्गकारी है। इसमें राजधर्म के सभी सूक्ष्म तत्वों का उल्लेख है जिससे यह ग्रन्थ सामाजिकता से राजनीतिक और आर्थिक विषय का भी केन्द्र बन गया है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह भी है कि इसमें वैदिक सिद्धान्तों की ही व्याख्या की गई है। व्यक्ति को नम्र होना सिखाया है। इसका उपदेश है कि व्यक्ति को साहित्य, कला, संगीत में बराबर रुचि व योग्यता रखनी चाहिए। हमारी सरकार नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए तो इतना पैसा खर्च कर रही है लेकिन सत्यार्थ प्रकाश जैसे 'सब विद्याओं के केन्द्र' ग्रन्थ को यदि छात्रों को पढ़ने के लिए निर्धारित करे तभी मैं समझता हूं कि भारत पुराना गौरव, सुन्दर राजनीति प्राप्त करने और सुधारने में सफल हो सकेगा।

उर्दू राजनीति : एक विडम्बना

लेखक– डॉ० प्रशान्तकुमार वेदालंकार
(हंसराज कालिज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
8/8 रूपनगर, दिल्ली–7

●

जब से उत्तर प्रदेश के चुनाव का समाचार ग्राया है तब से उर्दू की चर्चा ने जोर पकड़ा है। उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का प्रयत्न प्रारम्भ हो गया है। राजनीति भी ग्रजीब बला है, जो इस प्रकार की बेतुकी मांगों को उभारती है। चुनावों में उसका फायदा उठाती है ग्रौर चुनावों के बाद फिर कुछ समय के लिए उस मसले को दबा देती है। उत्तर प्रदेश में उर्दू की स्थिति के सम्बन्ध में सत्तारूढ़ दल द्वारा दो मुँही बातें विचित्र स्थिति पैदा कर रही हैं। 'हम उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने के सवाल पर सोच रहे हैं', 'हम उर्दू को दूसरी राजभाषा नहीं बनाना चाहते', 'हम उर्दू की तरक्की की हर कोशिश में लगे हैं' 'हम चाहते हैं कि उर्दू जबां का विकास हो' ग्रादि ये वे वाक्य हैं जोकि सत्तारूढ़ दल के ग्रलग ग्रलग नेताग्रों ने समय समय पर कहे हैं। ग्रसलयित यह है कि उर्दू के सवाल पर मुसलमानों के या उर्दू प्रेमियों के वोट किस प्रकार बटोरे जा सकते हैं, यही एक सवाल सबके मन में घूम रही है।

उत्तर प्रदेश के स्कूलों में उर्दू की पढ़ाई की व्यवस्था के नाम पर पांच हजार में से 4997 मुसलमानों को नौकरियां बांट कर (शेष तीन पदों के लिए योग्य मुसलमान नहीं मिले) ग्रागामी चुनाव जीतने का ही षड्यन्त्र किया है। सुना है कि ऐसे स्कूलों में भी उर्दू के उस्ताद भर्ती किये गये जहां उर्दू पड़ने वाला एक भी लड़का नहीं था। उर्दू जानने वाले हिन्दू भी बहुत थे उन्हें न जाने क्यों नौकरी के काबिल नहीं समझा। जब यह भण्डा फोड़ हुग्रा तो लखनऊ में उर्दू के गैर मुस्लिम लेखकों का सम्मेलन बुलाना पड़ा ग्रौर उसमें गैर साम्प्रदायिक कहलाने वाले चन्द लेखकों ने निहायत प्रतिक्रियावादी रुख ग्रपनाया ग्रौर भाषागत विघटन को बढ़ावा देने वाले जहरीले वक्तव्य खुले ग्राम सीना तान कर दिये। गैर मुसलमान लेखक भी उर्दू की तरक्की में लगे हैं, उसे दूसरी राजभाषा बनाना चाहते हैं, सरकारी नौकरियों में उर्दू जानने वालों को रखना चाहते हैं, किसी स्तर तक उर्दू की पढ़ाई जरूरी समझते हैं ग्रादि प्रस्ताव रखवा कर यह प्रकट करने की कोशिश की कि हम मुसलमानों के वोटों के लिए यह सब नहीं कर रहे। उर्दू मुसलमानों का

सवाल नहीं है। हम भी कहते हैं नहीं है, पर आपके दिल में जो है, वह हर समझदार व्यक्ति भानता है। अभी 28 नवम्बर 1973 को राज्य सभा में गृह उपमन्त्री श्री फखरुद्दीन मोहसिन ने यह कह कर कि उर्दू भाषियों की संख्या 10·5 प्रतिशत होने के कारण वह द्वितीय राजभाषा नहीं बन सकती—उन सभी लोगों को खुश करने की कोशिश की जो उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने के विरोधी हैं किन्तु उसी दिन उसी समय वहीं राज्य सभा में ही कांग्रेस के दूसरे नेता मौलाना असद मदनी ने यह शिकायत की कि उर्दू की अवहेलना हो रही है उर्दू प्रेमियों को प्रसन्न किया। इस प्रकार दो मुँहो बातें करके सत्तारूढ़ दल और उर्दूदां दोनों ही अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। दोनों ही इस नाजुक समय का फायदा उठाना चाहते हैं।

पर मुल्क का एक ऐसा समझदार वर्ग भी है जो राजनीति की उछाड़ पछाड़ से दूर सत्य को ढूँढते और परखने की कोशिश करता है। उसके सामने वस्तु स्थिति साफ होनी चाहिए। पं० नेहरू ने भाषावार प्रान्तों का गठन कर देश की एकता की दृष्टि से गलत कदम उठाया था। त्रिभाषा फार्मूले के निर्माता राजनीतिज्ञों ने संस्कृत की उपेक्षा कर भारतीय भाषाओं को संकट की स्थिति में खड़ा किया था। और अब राजनीति के खिलाड़ियों द्वारा उर्दू को एक पृथक् भाषा के रूप में मान्यता प्रदान कर एक भयंकर भूल की जा रही है। भाषा के सम्बन्ध में भाषा वैज्ञानिकों का मत ही प्रामाणिक होना चाहिए। राजनीतिज्ञों का नहीं। किसी भाषा का क्या महत्व है, उसकी क्या स्थिति होनी चाहिए, इस पर भाषा विशेषज्ञ ही ठीक राय दे सकते हैं, वोट के लालची राजनीतिक नहीं। उर्दू के सम्बन्ध में प्रो० आजाद इंशा, चन्द्रबली पाण्डेय आदि उर्दू विशेषज्ञों के ग्रन्थों को उलट कर कोई निष्पक्ष निर्णय लेना होगा। श्री मसीहुज्जमां से उर्दू को उत्तरप्रदेश में क्या स्थान दिया जाये यह पूछना होगा। श्री मसीहुज्जमां ने अपने एक लेख में कहा था कि 'उर्दू खड़ी बोली का ही आधुनिक या साहित्यिक रूप है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से मूलतः दोनों ही एक हैं। यहां मैं भाषा-विज्ञान का एक विद्यार्थी और अध्यापक होने के अधिकार से उर्दू की स्थिति को स्पष्ट करना चाहता हूं।

भारत में आकर मुसलमानों ने दिल्ली मेरठ की बोली को अपनी बोलचाल के लिए चुना। जिसे हिन्दी या हिन्दवी नाम दिया गया, जोकि बाद में उर्दू कहलायी। मुसलमानी सेना के सैनिकों, शासकों तथा सूफी सन्तों के द्वारा इसे अन्तः प्रान्तीय रूप मिला।

उर्दू के लिए विभिन्न राज्यों में हिन्दुस्तानी, हिन्दवी, रेख्ता, हिन्दी, हिन्दवी-उर्दू आदि नामों का प्रयोग होता रहा है। 18वीं सदी के प्रारम्भ से लगभग 19वीं सदी के मध्य तक उर्दू का रेख्ता नाम रहा। फोर्ट विलियम कालिज में उर्दू के लिए हिन्दुस्तानी शब्द चला। उर्दू के मीर, गालिब आदि अनेक कवियों ने उर्दू के लिए हिन्दी नाम का व्यवहार

किया— 'ग्राया नहीं है लफ्ज यह हिन्दी जुबां के बीच।' इसी प्रकार हिन्दवी तथा हिन्दवी उर्दू नाम उर्दू के लिए प्रयुक्त होते रहे।

शब्दावली पर विशेष ध्यान देकर कुछ लोगों ने उर्दू की उत्पत्ति फ़ारसी या ग्ररबी से मानी है। पर भाषा विज्ञान केवल शब्दावली के ग्राधार पर भाषा का निर्णय न करके उसके व्याकरण के ग्राधार पर भाषा का निर्णय करता है। प्रो० ग्राज़ाद ने 'ग्राबेहयात' में उर्दू का जन्म ब्रज भाषा से माना है। बेली ग्रादि ने उर्दू को पंजाबी या लाहौरी से उत्पन्न माना है। इसी प्रकार कुछ ने सिन्धी से कुछ ने दक्षिण में उर्दु की उत्पत्ति स्वीकार की। उर्दू पर ब्रज ग्रौर पंजाबी, सिन्धी ग्रौर दक्षिण भाषाग्रों का प्रभाव स्पष्ट है, पर उसकी उत्पत्ति ब्रज, पंजाबी, सिन्धी ग्रथवा दक्षिणी भाषाग्रों से हुई यह कहना ठीक नहीं। उर्दू खड़ी बोली एवं परितिष्ठत खड़ी बोली की तरह दिल्ली के ग्रास पास की खड़ी बोली पर ग्राधारित है। उसमें कुछ रूप (मूल या विकसित रूप में) पूर्वी पंजाबी, बांगरु तथा ब्रज के भी हैं। पुरानी हिन्दी की तरह पुरानी उर्दू पर ग्रवधी का भी प्रभाव है। इस प्रकार व्याकारणिक दृष्टि से हिन्दी उर्दू प्रायः एक है। केवल शब्दावली का ग्रन्तर है, वह भी साहित्य में। साहित्यिक उर्दू में ग्ररबी फ़ारसी के शब्द ग्रधिक होते हैं। पर व्यावहारिक उर्दू में ग्रौर बोलचाल की हिन्दी में कोई ग्रन्तर नहीं है। मुझे स्मरण है कि बचपन में मैं जब ग्रपने गांव गया ग्रौर लोगों से मुलतानी के स्थान पर हिन्दी में बोला (मैं मुलतान का रहने वाला हूँ ग्रौर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में पढ़ता था) तो मेरे चाचा ने कहा कि इतनी ग्रच्छी उर्दू कैसे सीखे? इधर उर्दू का साहित्य भी इसी प्रकार की बोलचाच की उर्दू में लिखा गया है। जिसे गांधी जी के शब्दों में हिन्दुस्तानी कह सकते हैं। कृष्ण चन्दर, मंटो, ख्वाजा ग्रहमद ग्रब्बास, इस्मत चुगतई ग्रादि की कहानियां हिन्दी की पत्र पत्रिकाग्रों में प्रकाशित होती हैं ग्रौर हिन्दी के पाठक उसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। जोश, सरदार जाफरी, वामिक ग्रादि की कविताग्रों का रस हिन्दी जानने वाले भी लेते हैं। इसलिए उर्दू को हिन्दी की फारसी ग्ररबी शब्दावली से युक्त शैली कहना ही ठीक है। दोनों का व्याकरण एक है। उन्हें ग्रलग ग्रलग भाषाएं मानना ग्रनुचित है। उर्दू के निर्माण के सम्बन्ध में इंशा, चन्द्रबली, पाण्डेय तथा डा० उदयनारायण तिवारी ग्रादि विद्वानों के ग्रनुसार उस समय की प्रचलित भाषा में से कुछ शब्दों को निकाल कर उनके स्थान पर ग्ररबी फ़ारसी शब्दों को रख कर उर्दू का निर्माण किया गया। इंशा के शब्दों में— 'यहां (शाहजहानाबाद) के शुश बयानों ने मुत्तलक होकर मुतादर ज़वानों से ग्रच्छे ग्रच्छे लफ्ज निकाले ग्रौर बाज़े इमारतों ग्रौर ग्रलफाज में तसर्रफ करके जवानों से ग्रलग एक नयी जबान पैदा की जिसका नाम उर्दू रखा (दरिया-य-लताफत पृ० 4) स्पष्ट है कि उर्दू कोई जबान नहीं है। फिर भी ग्रगर उर्दू ग्रलग भाषा लगती है तो उसका कारण साहित्यिक वातावरण शब्द समूह तथा लिपि का भेद है।

उर्दू के विकास के लिए स्वाभाविक स्थान भारत में ही है। अगर इसकी स्वाभाविकता बनाये रखनी है तो उर्दू की दो लिपियां स्वीकार करनी होंगी। देवनागरी लिपि का सहारा लेकर उर्दू आज भी भारत में बढ़ सकती है। उर्दू वालों को समझना चाहिए कि उर्दू यदि धर्म सम्प्रदाय की भाषा मानी जाये तो उसका विकास रुक जाएगा। हिन्दुस्तान की समन्वयवृत्ति ने जो वायुमण्डल तैयार किया था उसका मुसलमानों ने हृदय से स्वागत नहीं किया। उन्होंने उर्दू को हिन्दुस्तानी का जामा नहीं पहनाया। अगर अब भी भारत में उर्दू को अपना स्थान बनाना है तो उर्दू के लिए दो लिपि का सहारा लेना अनिवार्य है। आज भी भारत में उर्दू प्रेमियों की संख्या मुसलमानों तक ही सीमित नहीं है और भी कई लोग भारत में हैं जो उर्दू को प्रेम और आत्मीयता से देखते हैं।

हिन्दुस्तान में फारसी लिपि रहेगी पर उसकी प्रधानता नहीं रहेगी। फ़ारसी लिपि भारतीय भाषाओं के पूरी अनुकूल नहीं है। फ़ारसी लिपि के कारण भारतीय भाषाओं का उच्चारण शुद्ध नहीं रहता। भारतीय भाषाओं की सब ध्वनियों को आसानी से व्यक्त करने की शक्ति फ़ारसी लिपि में नहीं है। घसीट उर्दू में कुछ भी लिखा जाता है उसको आसानी से पढ़ना बहुत ही कठिन है। किसी अंग्रेज ने सही कहा है —

"दि रीडिंग आफ़ उर्दू मैनुस्क्रिप्ट इज़ ए परफारमैन्स नैवर ए प्लैजर" अर्थात् उर्दू प्रतिलिपि पढ़ना एक कठिन कार्य है न कि आनन्दप्रद।

फारसी लिपि को एकदम छोड़ देने का परामर्श मैं नहीं दूंगा। एक तो केवल फ़ारसी लिपि जानने वाले अपने को निरक्षर मानने लगें दूसरे वे जो पाकिस्तान से तुर्किस्तान तक और अफ्रीका में मिश्र से लेकर मोरक्को तक सम्बन्ध रखते हैं फ़ारसी से अपना काम चलाएं किन्तु भारत में उसके प्रचार और प्रसार के लिए नागरी लिपि का सहारा लेना होगा।

हिन्दुस्तान की सब भाषाओं में अरबी फ़ारसी के कुछ शब्द आए हैं। हिन्दी में भी हैं। इनकी संख्या बढ़ने की सम्भावना अब कम है। उन्हें घटाने की आवश्यकता भी नहीं है। यदि उर्दू साहित्य नागरी लिपि में लिखा जाने लगे तो बिना किसी दबाव के अरबी फ़ारसी शब्द हिन्दी में आयेंगे, आ रहे हैं। नागरी लिपि अपनाने से उर्दू में भी संस्कृत की सुगन्ध आयेगी और अरब फ़ारसी तथा संस्कृत के त्रिवेणी संगम से उर्दू एक समृद्ध भाषा बनेगी।

उर्दू के सम्बन्ध में राजनीति से ऊपर उठकर कुछ निर्णय लेने होंगे। राजनीतिज्ञों को हम बुरा भला कह सकते हैं, किन्तु राजनीतिज्ञों से अपना स्वार्थ पूरा करने के इच्छुक उर्दू के साहित्यकार जिस सौदेबाजी में लगे हैं—उनके विषय में हम क्या कहें?

साहित्यकार सम्मान का पात्र है। उनसे हम केवल निवेदन ही कर सकते हैं कि वे देश को एक सूत्र में बांधने की कोशिश में लगें। उर्दू के विकास का यह राजनीतिक तरीका देश में विघटन पैदा करेंगे। पहले भी उर्दू राजनीति ने देश का बंटवारा करवाया है। उर्दू राजनीति ने ही पाकिस्तान में बंगला देश को पृथक् किया है। इस उर्दू राजनीति से हमें बहुत सावधान रहना है।

हम अपने लेख की समाप्ति ख्वाजा गुलामुस्सैयदेन के निम्नलिखित कथन से करते हैं 'मैं इस सिलसिले में यह जिक्र भी करता चलूँ कि आजकल बाज़ हलकों में उर्दू और हिन्दी का जो झगड़ा चल रहा है वह बिल्कुल बेमानी है। हिन्दुस्तान में कोई दो ज़बानें ऐसी नहीं जो एक दूसरे से इतनी करीब हों जितनी ये दो जबानें हैं और इनकी तरक्की के लिए जरूरी है कि यह एक दूसरे के साथ सुलह और उन्नति के साथ रहें।'

वार्षिक निर्वाचन

दिल्ली—आर्य युवक परिषद्, दिल्ली (पंजी) के वर्ष १९७४ के लिए निम्न पदाधिकारी चुने गये: -

प्रधान—पं० देवव्रत धर्मेन्दु
उपप्रधान—ला० रामलाल ठेकेदार, श्री नवनीतलाल एडवोकेट।
महामन्त्री प्रो० ओ३म् प्रकाश
उपमन्त्री—प्रो० शम्भुदयाल, श्री आनन्द कुमार आर्य।
कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र अग्रवाल
परीक्षामन्त्री—ला० चमनलाल एम. ए.
प्रचारमन्त्री—श्री मांगेराम एम. ए.
लेखा-निरीक्षक—श्री मूलराज दत्त।

निवेदक: —

आनन्द कुमार उपमन्त्री,
आर्य युवक परिषद्, दिल्ली (पंजी०)

योग मार्ग

आचार्य विष्णुमित्र

☆

मनुष्य से भिन्न योनियों का ज्ञान प्रायः स्वाभाविक होता है। मानव का ज्ञान स्वाभाविक तथा अर्जित होता है। अतः मानव को ज्ञान का अर्जन करना चाहिए। जो मानव ज्ञान का अर्जन नहीं करता है, उसको बढ़ाता नहीं है, उसे बढ़ाने की जिसकी इच्छा नहीं है वह मानवता से दूर जा रहा है।

मनुष्य के विचार ही उसको उठाते हैं तथा विचार ही उसे गिराते हैं। सुविचार उठाने वाले हैं, कुविचार गिराने वाले हैं। जो ज्ञान सुविचारों को बढ़ाता है वही वास्तविक ज्ञान है। विद्या का अध्ययन ज्ञानार्जन के लिए आवश्यक है। जिस प्रकार विद्या मानव के ज्ञान को प्रदान कराने वाली है उसी विद्या की श्रेणी में योग विद्या भी आत्मिक ज्ञान को बढ़ाने वाली है। आत्मा के अज्ञान से सदा सर्वत्र अन्धकार रहेगा। भौतिक जगत् को आप कितना ही सुन्दर बनावें परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान के बिना उसमें वास्तविकता नहीं आने पाती है। अतः प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को योग विद्या सीखनी चाहिए तथा उसकी ओर रुचि रखनी चाहिए।

आजकल भौतिक भोगवाद में फंसे लोग इस विद्या की उपयोगिता नहीं समझते हैं। यह उनका दुर्भाग्य है। प्रत्येक मानव को भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए योग विद्या सीखनी चाहिए। कुछ लोगों का विचार है कि योग विद्या बुढ़ापे में सीखनी चाहिए, तभी इसकी आवश्यकता है यह उनकी भूल है।

प्राचीन काल में छात्रों के लिए, गृहस्थों के लिए भी योग विद्या को आवश्यक समझा जाता था। जिसके प्राप्त करने से वे मार्ग भ्रष्टता से अपने को सुरक्षित रखते थे। अतः जीवन को सुखी, समृद्ध तथा स्वस्थ रखने के लिए योग का अभ्यास प्रतिदिन नियत समय पर, उसे जीवन का आवश्यक अंग मान कर करना चाहिए।

आत्मा के साथ चित्त सम्बद्ध रहता है। वह भौतिक तत्त्वों से बना हुआ है। अतः भौतिक तत्त्वों की अभिलाषा करता है। उसे भौतिक तत्त्व अपनी ओर खींचते हैं। वह आत्मतत्त्व के पास रहता हुआ भी उसको छोड़कर भौतिक तत्वों को ओर भागता है। यह स्वाभाविक भी है। दुःख तो यह है कि वह किसी एक भौतिक तत्व पर भी अपने को

स्थिर नहीं कर पाता है। नवीन-नवीन भौतिक तत्वों के अन्वेषण में अपना समय लगाता है परन्तु उसे कहीं भी शान्ति तथा सुख नहीं मिलता। मानव के जीवन की समाप्ति पर उसी तरह क्लान्त तथा अस्थिर रहता हुआ इस शरीर से लीन हो जाता है। इस पर दुःखिया चित्त को सुखी बनाने के लिए योग में प्रयत्न किया जाता है। यद्यपि सुख दुःख आत्मा के गुण हैं फिर भी वह उनको अपने ही दुःख मान कर दुःखी रहता है अतः। ऐसे चित्त को प्रसन्न करने के लिए या आत्मिक शान्ति के लिए विद्वानों ने योग विद्या का निर्माण किया है। या वेदों में इस विद्या का दर्शन होता है।

विद्वानों या योगियों का कहना है कि उस दौड़ते हुए, भागते हुए, दुःखी तथा चञ्चल चित्त को भौतिक तत्वों से हटा कर आत्मिक तत्व से जोड़ो। भौतिक तत्वों का सर्वथा त्याग इसमें नहीं किया जाता है परन्तु इसमें आत्मतत्व का संयोग किया जाता है। इसको और भी समझिए। जिस प्रकार उत्तम गुरु या पिता से उत्तम शिक्षा प्राप्त करके शिष्य या पुत्र संसार में सफल होने के लिए अपनी योग्यता से अपना स्थान बनाता है। इसी प्रकार आत्मतत्व से पवित्र हुआ चित्त भौतिक जगत् में जो काम करता है उसके वे सारे काम पवित्र होते हैं तथा ठीक प्रकार के होते हैं। जिस प्रकार गुरु की शिक्षा शिष्य को प्रेरित करके आगे बढ़ाती है इसी प्रकार आत्मतत्व का योग, चित्त को पवित्र बनाता है। अतः प्रतिदिन निश्चित समय पर दोनों समय चित्त को आत्मा के साथ युक्त करना चाहिए। आत्मतत्व से जुड़ा हुआ चित्त पवित्र होकर ही सारे काम करता है।

जब प्रतिदिन आत्मतत्व से मिलने का अभ्यासी चित्त हो जाता है तब शनैः शनैः उसकी चञ्चलता दूर हो जाती है। वह भौतिक जगत् में रहके कार्य करता हुआ भी अपने को निश्चल समझने लगेगा। उसकी वृत्तियां दीप्त होकर प्रत्येक कार्य को भली प्रकार करने लगेंगी। चित्त की या मन की चञ्चलता मानव की वास्तविक शक्ति का प्रयोग नहीं होने देती हैं। अतः महान् शक्ति का भण्डार यह मानव अपने को निर्बल समझता है। अपने को निर्बल समझने से फिर निर्बल ही हो जाता है। यह मानव जगत् भावना या विचारों से ही प्रेरित हो के चलता है। जब वे इसके शिथिल हो जाते हैं तब यह मानव अपने को शिथिल मानने लगता है। अतः सबसे प्रथम यह आवश्यक है कि यदि सबल बनकर आप काम करना चाहते हैं तो चित्त की वृत्तियों को अपने वश में करने का प्रयत्न करें।

जिसका अपना कुटुम्ब बस में नहीं है वह औरों को क्या बस में करेगा। जिसके चित्त की वृत्तियां नहीं रुकी हैं, चञ्चल हैं, वह दूसरों को अपने वश में कर सकेगा इसकी आशा सर्वथा छोड़ देनी चाहिए।

राजा भी जो चञ्चल वृत्ति वाला, अस्थिर स्वभाव वाला है वह प्रजा पर कभी स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ सकता है।

आत्मा के पास जो चेतना केन्द्र है वही चित्त है। जिस प्रकार सूर्य से किरणें निकलती हैं इसी प्रकार चित्त से उसकी वृत्तियें निकलती रहती हैं। ये वृत्तियां भी अनेक हैं। अनेक वस्तुओं के अवरोध के लिए विशेष प्रयत्न अपेक्षित है।

अच्छा गोपाल वही माना जाता है जिसको आवाज के साथ उसकी गायें उसके पास आवें। जो डण्डों के सहारे गायों का अवरोध करता है वह उत्तम गोपाल नहीं कहा जाता है। कृष्ण को उत्तम गोपाल इसीलिए कहा गया है क्योंकि वह गायों से सच्चा प्रेम करता था अत: गाय श्री कृष्ण से प्यार करती थीं। जहां उनको ले जाना चाहता था वहां ले जाने में उसे किसी प्रकार का कष्ट न होता था। इसी प्रकार आप भी अपने चित्त की वृत्तियों पर ऐसा प्रेम का प्रभाव डालें कि वे भी आपको इच्छानुसार आपके साथ ही चलें तथा आपके साथ चलने में आनन्द अनुभव करें।

जो बार बार इधर उधर आवृत्ति करें. आवें जावें उन्हें वृत्ति कहते हैं। उनके बाहर भीतर जाने को योग में नहीं रोका जाता है, वे जावें परन्तु आपकी इच्छानुसार हो बाहर भीतर जावें। यदि आपकी इच्छा के प्रतिकूल उनका प्रचलन है तो चित्त वृत्तियां आपकी नहीं हैं।

योग शास्त्र में लिखा है चित्त की वृत्तियों के रोकने या रुकने का नाम ही योग है। वे इस प्रकार रोकी जावें कि वे अपने आप ही रुकी हुई सी प्रतीत होने लगें। प्रेम के कारण बालक आपके पास देर तक बैठ सकता है। डण्डे के दबाव से तो दबाव तक ही बालक आपके पास बैठ सकता है। अत: प्रयत्न कीजिये कि आपकी वृत्तियां भी आपको इच्छानुसार आपके कथन को प्रेम से स्वीकार करें।

प्रत्येक वस्तु में प्रेम ही नियन्त्रण करने में सब से बड़ा साधन होता है। क्रोध का नियन्त्रण निर्बलता की पहचान है। प्रेम करने में प्रथम अपने को पवित्र किया जाता है। क्रोध में मानव स्वयं अपवित्र हो जाता है तब वह औरों को क्या पवित्र करेगा। प्रेम आनन्द का सागर है, क्रोध जलती हुई अग्नि की भट्टी के समान है। अत: चित्त की वृत्तियों से प्रेम कीजिए। उन पर क्रोध न कीजिए, उनसे घृणा न कीजिये। यदि कभी वे वृत्तियां आपकी अवज्ञा करती हैं तो उन पर क्रुद्ध न होइये तथा सोचिए यदि वे आपके बस में नहीं हो पा रही हैं इसमें कोई आपकी ही कमी है। जब इस प्रकार चिन्तन करेंगे तब आपको प्रकाश के दर्शन होंगे तथा आपको सारा मार्ग स्पष्ट दिखाई देगा।

आप यदि किसी छात्र को पढ़ाने लगते हैं और वह पढ़ नहीं पाता है यदि आप निराश होके यह कह देते हैं कि वह पढ़ नहीं सकता तो आप अच्छे अध्यापक नहीं हैं। उसके लिए आपको विशेष पुरुषार्थ विशेष विधिपूर्वक करना होगा। यदि आप इस प्रकार

पुरुषार्थ करेंगे तो आप अवश्य सफल हो जावेंगे। साहसहीनों से कोई भी काम पूरा नहीं हो पाता है। इसी प्रकार यदि आप की चित्तवृत्तियां आप के बस में नहीं होती हैं तो आप निर्बल हैं। आपसे कोई काम पूरा न होगा। यदि यह निश्चय करके बैठेंगे कि मैं इनको अवश्य अपने नियन्त्रण में करूंगा, यह हो नहीं सकता कि चित्तवृत्तियां आपके बस में न हों। तब देखेंगे कि वे चित्तवृत्तियां आपके बस में होती नजर आवेंगी। जो काम हमको कठिन दिखलाई देता था वह नितान्त सरल हो गया है।

अतः प्रत्येक मानव यह समझकर कि जब ये चित्तवृत्तियां मेरी हैं मेरी वस्तु मेरे नियन्त्रण में रहनी चाहिए तो ये मुझसे दूर क्यों हैं, मेरे अनुशासन में क्यों नहीं हैं, मेरी इच्छानुसार क्यों नहीं चलता हैं। उस समय देखेंगे कि ये चित्तवृत्तियां विनीत सेवक या पुत्र की तरह आपके बस में हो गई हैं तब ऐसी विनीत चित्तवृत्तितों का मार्ग परिवर्तन आत्मदर्शन या प्रभु दर्शन के लिए कीजिए। आप देखेंगे कि ये चित्तवृत्तियां आपकी इच्छा-नुसार उसी मार्ग में जिस मार्ग में आप उन्हें ले जाना चाहते हैं आपके आगे आगे दौड़ती सी दृष्टिगोचर होंगी। आप अनुभव करेंगे जो काम मैं इतना कठिन समझता था वह इतना सरल कैसे हो गया। चित्तवृत्तियों के नियन्त्रण से आप अपनी इच्छानुसार आत्म-दर्शन कीजिये प्रभु दर्शन कीजिए। राज्य के सारे अधिकारियों के आपके प्रेमी होने पर राजा के दर्शन में जैसे कोई रुकावट नहीं ऐसे ही आपको आत्मदर्शन में कोई रुकावट न होगी। यह योग है।

(क्रमशः)

विचार—कण

—अरविन्द कुमार विद्यालंकार

★★

१- लेखक पर नियन्त्रण—

आजकल प्रसिद्ध लेखक अलेक्सेंडर सॉल्ज़ेनित्सिन की ताजा किताब "गुलाग द्वीप-समूह" सोवियत संघ के शासकों के दिल में बेचैनी उत्पन्न कर रही है। इस पुस्तक में लेखक ने स्टालिन के समय के यातना शिविरों का आंखों देखा विवरण प्रस्तुत किया है। अपने से भिन्न 227 अन्य साथी कैदियों की कहानी को भी उसने वर्णित किया है। इसमें न केवल यातना शिविरों का ही इतिहास है अपितु कम्युनिस्ट दल, सोवियत सरकार, सुरक्षा पुलिस, द्वितीय महायुद्ध तथा सोवियत संघ की घरेलू और विदेश नीति का भी इतिहास है। स्टालिन की तुलना लेखक ने हिटलर से की है और भूतपूर्व सुरक्षामन्त्री अबाकुमोव और उनके सहयोगी रियुनिन की अमानवीय हरकतों का चित्रण भी इस पुस्तक में किया है।

चूँकि रूस में यह पुस्तक प्रकाशित न हो सकती थी, अतः लेखक ने किसी तरह यह किताब पश्चिमी प्रकाशकों को प्रकाशनार्थ दे दी है। सोवियत संघ जी तोड़ प्रयत्न कर रहा है कि इस पुस्तक को छपने से रोका जाए।

सोवियत नेता अपने को लोकतन्त्र में आस्था रखने वाले बतलाते हैं किन्तु सॉल्ज़े-नित्सिन की विचाराभिव्यक्ति पर नियन्त्रण रखने की कोशिश करके उन्होंने लोकतन्त्र की भावना को आघात नहीं पहुंचाया ?

किन्तु पश्चिमी प्रकाशकों ने भी निश्चय कर लिया है कि वे इसे अधिक से अधिक भाषाओं में प्रकाशित करेंगे और कम्युनिस्ट दोस्तों तक सच्चाई पहुँचाई जाएगी।

२- कांग्रेस की स्थिति—

कुछ दिन पहले बी० बी० सी० लन्दन के रत्नाकर भारतीय ने भारतीय संसद के कांग्रेसी सदस्य श्री अमरनाथ विद्यालंकार से साक्षात्कार में कांग्रेस की वर्तमान दशा विषयक एक प्रश्न पूछा था। श्री विद्यालंकार ने कहा था कि "आज जनता पहले की अपेक्षा ज्यादा समझदार हो गई है। यदि सत्तारूढ़ कांग्रेस दल ने भारतीय जनता की कठिनाइयों को दूर नहीं किया तो जनता उसे सत्ताच्युत करने से हिचकिचायेगी नहीं।"

भारत की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि कांग्रेस यदि सत्ता में रहना चाहती है तो उसे तुरन्त जनता के कष्टों को दूर करना होगा। अभी तक

यही देखा गया है कि जब कहीं चुनाव होने होते हैं, केवल उसी समय के दौरान गरीब को अमीर बना देने की कोशिश कांग्रेसी जन करते हैं।

हाल ही में कांग्रेसी शासकों की करतूतों से क्षुब्ध होकर गुजरात की जनता ने कई अच्छे बुरे कांग्रेसियों की पिटाई की है। और तो और देश की प्रधानमन्त्री ने भी इस दशा को देखकर बम्बई यात्रा को स्थगित कर दिया। क्योंकि नागपुर का चप्पलों वाला तो अनुभव उन्हें था ही, गुप्तचर पुलिस ने भी वहां के खतरे से उन्हें सूचित कर दिया था।

समय आ गया है कि कांग्रेसी जन स्वार्थ साधन को त्यागकर विवेक के साथ जनता के कष्टों को दूर करने में तत्पर हो जायें।

३- पख्तूनों का दमन: —

पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री जुल्फिकार अली भुट्टो के संकेत पर राष्ट्रपति फजले इलाही ने पिछले दिनों एक अध्यादेश जारी किया जिसके अन्तर्गत ऐसे सभी संगठनों को गैर कानूनी घोषित कर दिया जाएगा जिनके अन्दर सैनिक शक्ति का रूप धारण करने की क्षमता हो। यह अध्यादेश पाकिस्तान के अन्दर होने वाले पख्तूनों के स्वतन्त्रता आन्दोलनों को कुचलने की दृष्टि से जारी किया गया है।

फिलहाल बलोचिस्तान प्रान्त में पख्तूनों और पाक सैनिकों के बीच अक्सर लड़ाईयां हो रही हैं जिन्हें देखते हुए तुर्की के एक प्रसिद्ध समाचार पत्र ने सम्भावना व्यक्त की है कि बलोचिस्तान में बगावत की आग शोलों का रूप धारण कर सकती है।

अफगानिस्तान पख्तूनों से सहानुभूति रखता है और परिणामस्वरूप अफगानिस्तान और पाकिस्तान के सम्बन्ध दिन प्रतिदिन बुरे होते जा रहे हैं। अफगानी विदेश मन्त्री ने गत मास घोषणा की थी कि 'पाकिस्तान में पठानों और बलूचियों के खिलाफ सेना व शक्ति के प्रयोग का क्रम जारी रहा तो अफगानिस्तान इसे नजर अन्दाज न कर सकेगा।'

भुट्टो आजकल इन परेशानियों से तंग आकर 'कश्मीर' वाली रट दोहराते फिरते हैं और जनता में भारत के विरुद्ध विष वमन करते फिरते हैं। दूसरी ओर सैनिकों का पख्तूनों पर अत्याचार करने का आदेश देते हैं। परिणामस्वरूप ये सैनिक पख्तूनों की स्त्रियों का अपहरण कर लेते हैं, छीन लेते हैं और बलात्कार आदि न जाने कितने अत्याचार करते हैं।

हालाँकि पख्तून अहिंसा के पुजारी हैं किन्तु उन्हें अपने अधिकारों और आजादी की प्राप्ति के लिए शस्त्र उठाने पड़ रहे हैं और उनका यह कथन कि "हमारी औरतें भी बन्दूक चलाना जानती हैं और अच्छी तरह जानती हैं" यही दर्शाता है कि पाकिस्तान अब अधिक दिनों तक पख्तूनों पर अत्याचार न कर सकेगा क्योंकि वे (पख्तून) कमर कसकर युद्धाग्नि में कूद पड़े हैं।

Approved for Libraries by D. P. I's Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

सितम्बर, 1974

★ समाज सन्देश ★

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र
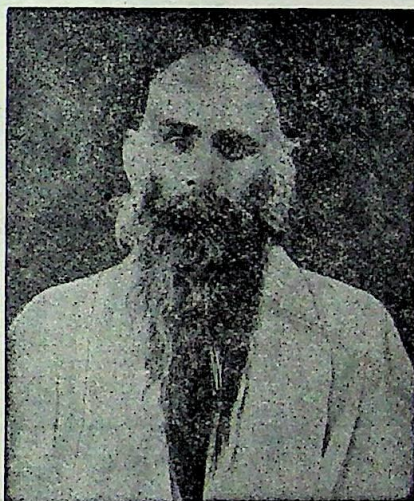
स्वर्गीय श्री भक्त फूलसिंह जी

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः ।
तस्मा इन्द्राय गायत (ऋ० १-५-४)

उसी इन्द्र की गाश्रो स्तुतियां जिसके दो प्रिय हैं घोड़े ।
जिसने अपनी संस्था में ये वाहन करके हैं जोड़े ॥
किसी शत्रु की क्या हस्ती है जो इन को रण में घेरे ।
रवि शशि के सम्मुख मुख अपने तिमिर पामरों ने फेरे ॥

—निधि

मूल्य : एक प्रति 55 पैसे ● वार्षिक चन्दा 6 रुपये

* विषय-सूची *

विषय	लेखक	पृष्ठ

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा अखबार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार का पता—

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (रोहतक)

❋ ओ३म् ❋

व्यवस्थापक : श्री धर्मभानु

गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलां
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

समाज सन्देश

प्रकाशन तिथि : २५ अगस्त १९७४

सम्पादक ।
आचार्य हरिश्चन्द्र

सहायक सम्पादिका ।
आचार्या सुभाषिणी

वर्ष पन्द्रहवां | सितम्बर, १९७४ | अङ्क : 6

सम्पादकीय

●

समाज सन्देश भी मंहगाई की लपेट में

विगत वर्ष समाज सन्देश के केवल सात अंक निकले। वे भी आकार प्रकार कलेवर में छोटे थे। कागज छपाई की मजदूरी की कीमतें आसमान को छू रही हैं।

कागज का अभाव तथा मंहगाई की मार में बड़े-बड़े पूंजीपतियों, विश्वव्यापी पार्टियों के अखबार भी गिन-गिन कर सांस ले रहे हैं। इस अभाव युग में हमने समाज सन्देश को जीवित रखने का संकल्प किया है। अभी उसकी कीमत भी नहीं बढ़ाई गई। इन सब बाधाओं में कोई सहारा हो सकता है तो पाठक वृन्द का सहयोग सहानुभूति तथा स्नेह ही काम आ सकता है। क्यों कि समाज सन्देश न तो विज्ञापन लेने के लिए सरकारी अधिकारियों के साथ-साथ घूमने वाले कार्यकर्ता रखता है और न ही विज्ञापनों के लिए सरकारी प्रभाव को काम में लेता है। हां ! पाठक वृन्द अवश्य एक सहायता कर सकते हैं कि यदि वे एक-एक ग्राहक और बना दें कुछ अर्थ संग्रह होकर गति बढ़ सकती है।

गुरुकुल विद्या पीठ हरियाणा भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां ने वे दुर्दिन देखे हैं जब सर्वत्र अभाव ही अभाव था। उस समय भी ये संस्थायें जब खड़ी रह गई और आगे बढ़ सकीं तो उस में एक मात्र कारण इस प्रदेश के लोगों का संस्थाओं के प्रति प्रेम तथा उन्हें अपना मन्दिर समझना है। यहां के कार्यकर्ताओं ने भी अपना जीवन न्याय पूर्वक संस्थाओं के लिए अर्पित कर दिया है। न उन्होंने धनकी इच्छा रखी तथा न ही सम्मान की। वे नींवका पत्थर बनकर संस्थाओं को संभाले हुए हैं। वहां ऐसे कार्यकर्ता एक नहीं दो नहीं दर्जनों हैं। गुरुकुल भैंसवाल में आचार्य महामुनि, पं० धर्मभानु जी, मुन्शी प्रभुदयाल जी, आचार्य विष्णु मित्र जी, आचार्य हरिश्चन्द्र जी ने अपनी जवानी की आहुति ही नहीं दी अपितु जीवन का सार सर्वस्व सब कुछ कुल भूमि के अर्पण कर दिया। न घर सम्भाला न बाल बच्चे। वे बने या बिगड़े। सब प्रभु आश्रित छोड़कर कुल माता को सर्वस्व भेंट कर दिया। जवानी में पुष्टिकारक भोजन नहीं खाया। न यात्रा की चिन्ता थी न रात्री जागरण की। दिन रात सब समान हो गए।

जब और गुरुकुलों में भवन हैं, भारी वेतन भोगी अमला है, बैंकों में स्थिर निधि के रूप में धन जमा है। पर छात्र संख्या कहीं तो एक भी नहीं है, कहीं पांच-पांच सात-सात घेर कर बैठा रखे हैं। उन गुरुकुलों में छात्रों के अभाव का कारण वहां कार्यकर्ताओं की संस्थाओं के प्रति निष्ठा श्रद्धा विहीन होना तथा केवल उदर भरण के लिए वहां ठहरना ही लक्ष्य है। उनके जीवन में गुरुकुलत्व समाया नहीं है।

गुरुकुल भैंसवाल में आज भी करीब पांच सौ छात्र हैं वस्तुत: यहां के आन्तरिक कार्यकर्ता तथा बाहर के सहयोगी गुरुकुल को मन्दिर समझ कर श्रद्धा से पूजा करते हैं।

कन्या गुरुकुल भक्त फूलसिंह जी महाराज के बलिदान के बाद स्थापित हुआ। वहां महासभा के सहयोग तथा खानपुर गांव की प्रेरणा, प्यार, दान से महासभा की प्रेरणा पर बहिन सुभाषिणी जी सरकारी नौकरी छोड़कर आ बैठी। और उनके पति देव पं० अभिमन्यु ने भी सफेद कपड़े रखते हुए भी संन्यास ले लिया। अनेक प्रकार के दोषा-रोपण किए गए। न धन से न चलन से ही मुक्त रखा। पर हजारों भाइयों का स्नेह, बड़े परिवार का आशीर्वाद, उदारता से दोष लगाने वाले धीरे-धीरे निरस्त हो गए। और परिवार के सहयोग के साथ में जिस पत्थर को भी हम ने हाथ लगा दिया वही हीरा बन गया। विरोधी चुप हो छुप गए। तथा संस्था निरन्तर प्रगति पथ पर चलती रही।

दोनों संस्थाओं के विकास में दोनों गुरुकुलों के आस पास के खास तौर पर तथा हरियाणा प्रदेश के लोग सामान्य तौर से प्रशंसा तथा बधाई के पात्र हैं। क्योंकि जिस से जो मांगा गया उसने वही दे दिया। कभी कसर रही तो मांगने वालों की। संस्थाओं की भिक्षा माँगने वाली टोली को किसी ने कभी न दान से इन्कार किया तथा न अपमानित

किया। क्योंकि लोग उन्हें सम्मान भी देते रहे और धन भी। इन संस्थाओं में हजारों देने वाले हजारों आदमी हैं।

सरकारी तौर पर भी संस्था से सहानुभूति ही चलती रही। हरियाणा बनने से पूर्व जो भी सरकार आई उसने जो मांगा वही दिया। संयुक्त पंजाब में हिन्दी रीजन से बनने वाले हर मन्त्री ने उदारता पूर्वक सहयोग सहायता दी। हरियाणा बनने के बाद राव सरकार तथा प्रथम कांग्रेस सरकार हमारी तरफ सहानुभूति की नजर न उठा सकी। क्योंकि उन को न फुर्सत थी और न उन सरकारों में स्थिरता थी। आज भी हरियाणा सरकार की सँस्था के प्रति पूर्ण सहानुभूति है।

इस सब विकास प्रगति में यदि आन्तरिक कार्यकर्ताओं को छोड़कर किसी एक अन्य व्यक्ति को श्रेय दिया जा सकता है तो वे हैं चौ० माडूसिंह जी। उन्होंने भक्त जी महाराज के बलिदान के बाद संस्था के लिए अपना समय/धन हित चिन्तन में लगा दिया। और उनकी शांति स्नेह में यह कुल संगठित चलता रहा। इस में राजनीति बाधा बनी न कुछ और ही। उन्होंने संस्था हित में अपने जीवन को सर्वथा पवित्र रखा। न उन्हें अर्थ लिप्सा तंग कर सकी न लोकेषणा ही।

गुरुकुल के स्नातक स्नातिकाओं ने भी कुल भूमि पर अपना सर्वस्व अर्पण करने में कभी आना कानी न की।

फिर समाज सन्देश इन संस्थाओं का पत्र होकर क्यों बन्द होगा। बाधा हमें स्थिर तौर पर नहीं रोक सकती।

समाज सन्देश चलता रहेगा। आप का आशीर्वाद तथा सहयोग चाहिए।

—सम्पादक

"स्व--देश भक्ति"

—ब्र० महीपाल 'पुनिया'

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।

निःसन्देह देश-भक्ति से विहीन मनुष्यों का हृदय पत्थर के समान होता है। ग्राह ! जननी जन्म-भूमि कितनी महति वस्तु है। जिस माता के गर्भ से हम उत्पन्न हुए हैं। ग्रौर जिस देश में हम पलित-पोषित हुए हैं उससे बढ़कर हमारी ग्रास्था ग्रौर किस वस्तु में होगी ? "जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" के ग्रनुसार जननी ग्रौर जन्म-भूमि का स्थान स्वर्ग से कहीं श्रेष्ठ है। जिस देश की धूल में लोट-लोटकर हम बड़े हुए हैं, जिस देश की जलवायु तथा ग्रन्न से हमारा शरीर विकसित हुग्रा है, क्या हम ऐसी परोपकारी माता से उऋ्ण हो सकते हैं ? कदापि नहीं।

यह बिलकुल स्वाभाविक है कि जहां मनुष्य रहता है, उस स्थान को प्यार करता है। मनुष्य ही क्यों ! पशु पक्षियों ग्रौर पेड़ पौधों तक में मैंने यह बात देखी है। गाय दिन भर जंगल में घूमकर सायं काल स्वयं ग्रपने खूटे पर ग्रा खड़ी होती है। घोड़ा छूटकर ग्रपनी घुडसाल में पहुँचता है। पक्षी दिन भर कोसों का चक्कर काटकर शाम को ग्रपने-ग्रपने घोसलों में ग्रा जाते हैं। पेड़ पौधे भी ग्रपनी जन्म-भूमि में जैसे फूलते फलते हैं वैसे ग्रन्य स्थानों में नहीं। मातृ-भूमि का वियोग उन्हें ग्रन्य स्थानों में सदैव ग्रखरता है। चमन के ग्रंगूर ग्रौर इलाहाबाद के ग्रमरूद ग्रागरा में वहाँ के से फल नहीं देते। ग्रपना बुरे से बुरा भी वहां के निवासियों को प्यारा होता है। सहारा के रहने वालों को स्विट्जरलैंड में रहना ग्रच्छा नहीं लगेगा। परन्तु इस प्रेम की मात्रा किसी में ग्रधिक होती है ग्रौर किसी में कम। कोई स्वदेश को इतना प्यार करता है कि उस पर ग्रपने प्राण भी न्यौछावर कर सकता है। ग्रौर कोई इतना कम कि थोड़ा-सा भय, स्वार्थ या ग्रापत्ति उसके स्वदेश प्रेम को नष्ट कर देती है। पश्चिम वालों में पहले प्रकार का प्रेम देखा जाता है ग्रौर भारतवासियों में ग्रधिकांश दूसरे प्रकार का।

देश की उन्नति के लिए देश-भक्ति का ग्राधिक्य नितान्त ग्रावश्यक है। उसी देश का ग्रभ्युत्थान हो सकता है जिसके निवासी देश पर तन-मन ग्रौर धन न्यौछावर करने को

उद्यत रहते हैं। देश के अभ्युदय में अपना अभ्युदय समझते हैं। देश के सुख में अपना सुख समझते हैं। देश की शांति अपनी शांति गिनते हैं। देश के दुःख को अपना दुःख गिनते हैं। देश के नाम में अपना नाम समझते हैं। और देश की स्मृद्धि में अपनी स्मृद्धि समझते हैं। वह देश अपना सिर ऊंचा कर सकता है जहां के स्त्री, पुरुष, बालक, युवक और वृद्ध सभी देश के मंगलार्थ अपने हितों का ही नहीं शरीर का भी बलिदान चढ़ाने को उद्यत रहते हैं। संसार के कई देश जो आज सुख और स्मृद्धि के शिखरों पर चढ़े हुए हैं। देश भक्ति की प्रचुरता के कारण ही इतने ऊंचे उठे हैं। इङ्गलैंड, जर्मनी, जापान, आदि के इतिहास देश-भक्ति की कहानियों से भरे पड़े हैं।

भारतवर्ष की अवनति का कारण यहां के निवासियों में देश-भक्ति की भावना की कमी है। यहाँ देश का किसे ध्यान है, हम सबको अपनी पड़ी है। हम सभी अपने-अपने स्वार्थ में संलग्न हैं। देश हित के लिए कोई थोड़ा सा भी बलिदान नहीं कर सकता। ऐसी नीचता के लिए हमें धिक्कार है। क्या यह हमारे लिए लज्जा की बात नहीं कि हम अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करते। जिस देश का अन्न खाकर हम पुष्ट होते हैं उसके उत्थान के लिए सदैव प्रयत्नशील होना चाहिए। और उसकी दशा सुधारने के लिए हमें स्वार्थ की तनिक भी परवाह नहीं करनी चाहिए।

हमारे देश में छत्रपति शिवाजी, राणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह, महारानी लक्ष्मी-बाई और लोकमान्य तिलक सरीखे देशभक्त आत्माओं ने जन्म लिया। आधुनिक काल के स्वर्गीय महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, सुभाष चन्द्र बोस आदि कई ऐसे देश भक्त महानुभाव उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने अपना सर्वस्व भारत माता के चरणों में अर्पित कर दिया।

हमें चाहिए कि इनका आदर्श सामने रखकर हम भी देश-सेवा में संलग्न हो जायें। हमें चाहिए कि अपने हितों को, अपने स्वार्थों को देश के हितों पर न्यौछावर करके तन मन और धन से उसका हित-साधन करें। तभी हमारे देश का कल्याण होगा, तभी हमारा देश उन्नति के मार्ग में अग्रसर होगा, तभी हमारे देश के दुःख दूर होंगे, यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम मृतकों के समान हैं। किसी ने ठीक कहा है—

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर-पशु निरा है और मृतक समान है।"

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी हंसते हुए कहते हैं: –

"मातृ-भूमि के शीश पर वार दिये सुत चार।
चार दिए तो क्या हुआ जीवित कई हजार।"

जनता की समस्या है

लोकतन्त्र बनाम व्याप्त भ्रष्टाचार

सोमदत्त खासपुरिया
गांव गादोज P.O. गूंति (अलवर)

आजादी से पूर्व हमारे स्वतन्त्रता के सेनानियों ने यही नारा उद्‌घोष किया था कि हम अपने स्वप्नों का स्वतंत्र भारत बनायेंगे तथा हमें घिनौनी ब्रिटिश हकूमत से, जो कि हमारा आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक शोषण कर रही है, एक दिन अवश्य मुक्ति मिलेगी, ये दासता की बेड़ियां टूटेंगी और फिर से इस धरातल पर उसी प्राचीन भारत का आविर्भाव होगा जो 'सोने की चिड़िया' कहलाता था।

दासता की जंजीरें भी टूटी, अपना स्वयं का शासन भी हुआ तथा लोकतन्त्रात्मक गणराज्य की स्थापना भी हुई लेकिन वे स्वप्न, जिनको मूर्त्त रूप देने के लिए आजादी के दीवानों ने हंस-हंसकर फांसी के फन्दे चूमे तथा खून की होली खेली, अधूरे ही नहीं बल्कि धराशयी हो गये। जनता का (जैसा कि इसका विश्वास है) शोषण आज भी हो रहा है फर्क इतना ही है पहले किन्हीं विदेशी शासक से होता था आज वह हमारे हुक्मरानों से। चहुँ ओर भ्रष्टाचार, बेईमानी व रिश्वतखोरी तथा लाल फीता शाही व भाई–भतीजावाद का बोलबाला है। एक अमेरिकन बुद्धिजीवी के अनुसार "India is top most corrupt country in the world" वास्तविक स्थिति यही है कि corruption is circulated in Indian citizen blood.

आज भौतिक सम्पन्नता की बुरी तरह होड़ लगी हुई है चाहे वह दूसरों की एक-एक रक्त की बून्द से ही प्राणित क्यों न हों। किसी भी अफिस में प्रवेश से पूर्व चपरासी की जेब गरम करनी होती है फिर मिलिये बाबू जी से जो मुँह में पान दबाए कागजों के नीचे दबा रहता है। यदि आपके पैसे पहुंच गये तो समझो आपका काम तैयार है अन्यथा लगाए जाईयेगा साल दो साल तक चक्कर। ऑफिसरों के तो हाल मत पूछिये उनके यहां

तो बगैर बार त्यौहार के उपहार पहुंचते रहते हैं। हस्पतालों में रोगी के प्रवेश से पूर्व डाक्टर साहब को स्पेशल फीस देनी होती है अन्यथा इलाज तो दूर रोगी प्रवेश द्वार पर ही प्राण तोड़ देगा। सोचो एक मजदूर जो अपना भरण पोषण ही मुश्किल से कर पाता है उसके साथ यह हालत गुजरती है तो उसके पास इस अधूरी आजादी पर आंसू बहाने के अलावा क्या विकल्प होगा ? आए दिन बड़े-बड़े अस्पतालों में दवाईयों के घोटाले सुनने में आते हैं तथा चन्द नोटों के लालच में झूठे मेडिकल बिल डॉक्टरों द्वारा बनाए जाते हैं। इसी प्रकार से बड़े-बड़े बांधों, भवनों एवम् राष्ट्रीय मार्गों या अन्य सड़कों के निर्माण में तकनीशियन या इन्जीनियर वर्ग द्वारा किए गए लाखों या करोड़ों रुपये के घोटाले आये दिन सुनने में आते हैं। विदेशों में पुलिस विभाग जिस कर्त्तव्यनिष्ठा से कार्य करता है तथा जो आदर उसको मिलता है उसके विपरीत हमारे यहां के पुलिस के छोटे सिपाही से लेकर उच्च अधिकारियों के कारनामे जो आम जनता के सामने आ रहे हैं—बड़े ही दर्दनाक हैं। उदाहरण स्वरूप दिल्ली का ओंकार सिंह हत्याकांड व गहलौर बलात्कार काण्ड......। आज चोरी, डकैती इत्यादि तभी होती हैं जब पुलिस से अनुमति मिल जाती है। पैसों की बदौलत खूनी बरी हो जाते हैं तथा शरीफ आदमी बलि के बकरे बना दिए जाते हैं। हमारे व्यापारी वर्ग की तो उदर पूर्ति ही बेईमानी व भ्रष्टाचार से होती है। जहां एक ओर मुद्रा स्फीति ब्लैक मार्केटिंग तथा जमाखोरी से प्रेरित महंगाई ने आम जनता की कमर तोड़डाली वहां घण्टों 'क्यू' में खड़े होने के बाद भी हमें 'बैरिङ्ग' होने को विवश होना पड़ता है वहां दूसरी ओर इस दूषित मुनाफे पर ये लोग भविष्य के सुन्दर स्वप्न संजोये बैठे हैं। आये दिन मिलावट की दवाइयों, शराब तथा खाद्य पदार्थों के उपयोग से हुई दर्दनाक मौतें सुनने में आती हैं। इससे बढ़कर नैतिक पतन और कृतघ्नता क्या हो सकती है। महंगाई तथा भ्रष्टाचार के विरोध में प्रतिदिन 'हिन्दुस्तान' के किसी न किसी कोने में हड़ताल, लूट—आगजनी तथा प्रदर्शन व नारा बाजी के समाचारों के दर्शन होते रहते हैं जिनका कि गोलियों, लाठीचार्ज तथा अश्रुगैस से यह 'भ्रष्ट' सरकार स्वागत करती है।

उपर्युक्त चर्चा का सिंहावलोकन करने के बाद यदि हम विचार करें कि गत आजादी के २६ वर्षों में आजाद भारत की जो बदसूरत तस्वीर बनी है उसका जिम्मेवार कौन है तो मेरी राय में प्रथम प्रशासन व द्वितीय समाज। मूलतः यह लोकतन्त्र का जामा पहने प्रशासन ही जन जीवन में व्याप्त असन्तोष व भ्रष्टाचार का मूल कारण है। रिश्वतखोरी तथा भाई भतीजावाद के आधार पर सेवाओं में चुने जाने वाले तथा प्रमोटिड होने वाले व्यक्तियों से हम न्याय व ईमानदारी की अपेक्षा तक नहीं कर सकते। एम० एल० ए० व एम० पी० के चुनावों में सफलता के लिए भ्रष्ट हथकण्डे अपनाए जाते हैं। ऐसी दूषित व घिनौनी राजनीति में भला व ईमानदार व श्रेष्ठ पुरुष पदार्पण कर सकता है ? अनाप शनाप पानी की तरह रुपये व मदिरा बहाई जाती है। सोचो इतने महंगे व भ्रष्ट चुनाव में विजयी प्रत्याशी से क्या हम न्याय व ईमानदारी की कल्पना कर सकते हैं? कदापि नहीं !

जिन लोगों के हाथ में स्वतन्त्र भारत की बागडोर है वे सूखी रोटी खाकर जवानी बिताने वाले लोग सत्ता में आते ही शान शौकत की जिन्दगी शुरु कर देते हैं। वास्तव में ये लोग राष्ट्र की निष्ठा भाव से सेवा के लिये नहीं बल्कि शान शौकत के जीवन के लिये ही राजनीति में पदार्पण किया करते हैं। जैसे कि सर्वोदय नेता जयप्रकाश नारायण के अनुसार "स्वयं नेहरु ने अपना ७ नम्बर का यार्क प्लेस वाला विशाल बंगला छोड़कर प्रधान सेनापति का उससे विशाल बंगला ले लिया और इसके पीछे कारण बताया Dignity of State. उसी प्रारम्भिक राजनीतिज्ञ ने ऐसी परम्परा डाली है कि मन्त्रि-गण पैसे पानी की तरह बहाते हैं। इसी शान शौकत के कारण ही गरीबों व धनवानों में खाई बढ़ती गई है और यही भ्रष्टाचार बेईमानी व असन्तोष का कारण बन रही है।

हरयाणा, पंजाब, प० बंगाल तथा उच्च प्रान्तीय सरकारों व राजस्थान के स्वर्गीय मुख्य मन्त्री खान सहाब ने भी भ्रष्टाचार उन्मूलन का नारा उद्‌घोष किया था लेकिन ये केवल सरकारी कागज़ों तक ही सीमित रह गना। प्रशासनिक भ्रष्टाचार के कारण ही "भारतीय भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम (1974), व प्रशासन के सुधार के लिये एपल्बी व श्री हनुमन्तैया द्वारा दी गई रिपोर्ट तथा अन्य सब कमेटी एवं कमीशनों द्वारा दिये गये सुझावों (जैसे पंजाब में हरचन्द सिंह समिति की रिपोर्ट) को भी अमल में नहीं लाया गया। इसी तरह की प्रशासनिक भ्रष्टता के कारण भूमि सीमाबन्दी व वितरण कानून तथा गेहूँ के थोक व्यापार का सरकारीकरण की सरकारी नीति विफल हो गई।

प्रशासन के साथ-साथ कुछ हद तक समाज भी इस वर्तमान भारत की दारुण परिस्थिति का जुम्मेवार है। किसी भी समय हम अपने कार्य को शीघ्र कराने तथा अनुचित को उचित ठहराने के लिये भ्रष्ट हथकण्डों को अपना लेते हैं तथा अपने छोटे छोटे स्वार्थों की पूर्ति के लिये राष्ट्रीय हित की भावनाओं को ओझल कर जाते हैं। संक्षेप में इस भ्रष्टाचार रूपी राक्षसी पौधे को हम ही सींचते हैं—पोषण करते हैं लेकिन जब यह बड़ा होकर हमें ही भक्षण करने को दौड़ता है तब हम पुकारते हैं हाय ! भ्रष्टाचार ! बेईमानी ! रिश्वतखोरी ! महंगाई ! जमाखोरी ! ·· ····· ।

सुझाव: – (अ) राष्ट्रीय भावना व एकता, अनुशासन एवम् उज्ज्वल चरित्र निर्माण के लिये वैदिक व शिष्टाचार की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिये जैसे गुरुकुलों में हुआ करती थी (सौभाग्य है, आज भी हरयाणा के कुछ गुरुकुलों में विद्यमान है)। अश्लील व सस्ते साहित्य तथा चलचित्रों पर रोक लगानी होगी जो किसी देश के नैतिक पतन के मूल कारण हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन होना चाहिए। अशिक्षित लोगों को शिक्षित व जागरूक करना होगा। आज भी 80% लोग अपने मत (Vote) का महत्व नहीं समझते।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

आचारः परमो धर्मः (सदाचार)

ब्र० दिलबाग सिंह सिहाग
गुरुकुल भैंसवाल कलां

अर्थात् शुद्ध आचरण हो सर्वश्रेष्ठ धर्म है। संसार में मानव ने जब कभी उन्नति को है तो अपने चरित्र बल के आधार पर। इतिहास इस कथन का साक्षी है। कुछ उदाहरण आपकी सेवा में प्रस्तुत करता हूं जिनसे स्पष्ट हो जाएगा।

पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के चरित्र की परीक्षा लेने में किसी ने कसर नहीं छोड़ी। दशरथ ने उनकी परीक्षा ली। जनक ने उनको तोला। बनवास में ऋषियों ने उनकी परीक्षा ली। सुग्रीव ने उनको जांचा और विभीषण ने भी परखा। परन्तु श्री राम सब परीक्षाओं में उत्तीर्ण। हुए श्री राम का आदर्श चरित्र कह रहा है कि त्रिछन बाधाओं से मत घबराओ।

यतिवर लक्ष्मण का चरित्र कितना आदर्श था। वे रामचन्द्र जी की सेवा के लिए अपनी विवाहित पत्नी चौदह वर्ष के लिए परित्याग कर कितना संयम पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। जिस समय दुष्ट रावण माता सीता को आकाश मार्ग से ले जा रहा था तो उस समय उनको ढूंढते हुए राम और लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव के पास आये तो सुग्रीव ने वे आभूषण राम को दिए।

आभूषणों को देखकर राम लक्ष्मण जी से कहते हैं इन्हें पहिचानो तब लक्ष्मण जी कहते हैं :—

नाहं जानामि केयुरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वाभि जानामि नित्यं पदाभिवन्दनात्॥

अर्थात् मैं केयूरों को नहीं जानता क्यों कि ये हाथ के आभूषण हैं, मैं कुण्डलों को भी नहीं पहचानता क्यों कि कान के आभूषण हैं वहां तक मेरी दृष्टि जाती ही नहीं थी, मैं तो केवल इन चरणों के आभूषण नूपुरों को पहिचानता हूँ, क्यों कि मैं नित्य माता सीता के चरणों की वन्दना करने जाया करता था।

धन्य है यतिवर लक्ष्मण को चौदह वर्ष पर्यन्त देवी सीता के पास रहते हुए भी उनका मुख तक नहीं देखते हैं। क्या आज का नवयुवक समाज इस घटना से शिक्षा ग्रहण करेगा।

उपयुक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो ाता है कि चरित्रवान् व्यक्ति आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। वह लाखों को प्रभावित कर नव शक्ति का संचार करता है। चरित्रवान् व्यक्ति की संसार पूजा करता है। यतिवर लक्ष्मण, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी तथा महात्मा भक्त फूलसिंह जी इत्यादि अपने उज्ज्वल चरित्र के प्रभाव से संसार के इतिहास में तब तक चमकते रहेंगे जब तक सूर्य और चन्द्रमा अपने प्रकाश से इस जगत् को प्रकाशित करते रहेंगे।

आज हमारा भारत स्वतन्त्र है। प्रत्येक पुरुष का कर्त्तव्य है कि उन्नति और समृद्धि में सहयोग दें। भारत सरकार की योजनायें चल रही हैं देश में सड़कों तथा रेलवे लाइनों का जाल बिछा हुआ है। और शानदार भवन आंखों को चका-चौंध कर रहे हैं।

अर्थात् भौतिक उन्नति के लिए हमारी सरकार सब कुछ कर रही है। परन्तु आज देश के लोगों की नैतिक दशा खराब होती जा रही है। आप शहर में जायें प्रायः सभी वस्तुओं में मिलावट चलती है। इसका कारण क्या है ? एक ही उत्तर है—चरित्र की कमी।

अतः मेरी विनम्र शब्दों में सानुरोध प्रार्थना है कि यदि राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाना है तो चरित्र निर्माण योजना बनाकर राष्ट्र के लिए चरित्रवान् नागरिक तैयार किये जायें जिस से आधुनिक भारत पुनः संसार का शिरोमणि बन सके।

स्मरण रखो रुपया पैसा रहे या न रहे स्त्री पुत्र घर परिवार रहे या न रहे किन्तु चरित्र धन आपके पास है तो घोर विपत्ति भी आपको पल भर भी विचलित नहीं कर सकती। संसार की कोई भी शक्ति आपको गिरा नहीं सकती। आप बराबर आगे बढ़ते चले जायेंगे।

उपसंहार में नम्र निवेदन है कि हम चरित्र रूपी धन का संचय करें।

सारी बुराईयों का मार्ग—'वर्तमान शिक्षा'

विद्यार्थी सत्यपाल आर्य
एम. ए. प्रथम वर्ष
आर्ष गुरुकुल टटेसर जौन्ती–दिल्ली-41

यह दुःख का विषय है कि हमारा आजका विद्यार्थी जीवन बड़ा ही विकृत और अस्वस्थ रूप लिए है। आज विद्यार्थियों को जो शिक्षा प्रदान की जाती है, वह कोरे पुस्तक ज्ञान तक सीमित रहती है। ज्ञान का सच्चा आलोक उन्हें नहीं मिलता। पुस्तकों के सफेद पन्नों पर विद्यार्थियों की प्रतिभा कुण्ठित हो जाती है। प्रकृति के मुक्त वायु-मण्डल से वंचित विद्यार्थीगण कक्षा के सीमित क्षेत्र में बन्द होकर पुस्तकों के अक्षरों पर अपने मस्तिष्क का अपव्यय करते हैं।

मैं स्वयं एक विद्यार्थी हूं, मुझे यह अनुभव गुरुकुल 'टेटसर' में रह कर कुछ उत्तम पुस्तकों का स्वाध्याय करने से हुआ है। वास्तव में विद्वानों के सम्पर्क में आने से व्यक्ति पर अनेक विचारों का अवश्य ही प्रभाव होता है। सर्व प्रथम मुझे स्वामी रतनदेव जी (कुलपति गुरुकुल कुम्भा खेड़ा) का सहारा मिला था। उस समय उन्होंने संन्यास नहीं लिया था, बल्कि आर्य विद्यालय निड़ाना (जींद) में मास्टर रतनसिंह जी के नाम से अध्यापक थे। उस समय उनके विचार इतने उत्तम एवं आदर्श थे कि मैं वर्णन नहीं कर सकता, उन्होंने शादी न करने की प्रतिज्ञा की थी। अध्यापक जीवन में ही सर्व त्यागी होकर समाज सेवक बन 'संन्यास' ग्रहण कर आज अनेकों छात्रों का चरित्र निर्माण कर रहे हैं। स्वामी इन्द्रवेश जी (वर्तमान प्रधान 'आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब') 25-8-1973 'शनिवार' को सायं जीप द्वारा गुरुकुल में आये, कुछ ही क्षण ठहर कर ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद दिया तथा मेरा कुछ परिचय लेते हुए पुनः जीप में जाने के लिए सवार हो गए। उनकी वाणी से मैं बड़ा ही प्रभावित हुआ और सोचा कि कॉलिज की शिक्षा और गुरुकुल की शिक्षा में महान् अन्तर है। 9-2-74 को ग्रेटर कैलाश में स्वामी अग्निवेश जी के मीठे वचन सुने, बड़ा ही आकर्षण था उन शब्दों में। 16-3-74 को आर्य समाज नरेला के उत्सव पर पूज्य स्वामी ओमानन्द के प्रभावशाली शब्द गूंज रहे थे। कहां तक वर्णन करूं आर्य विद्वानों का और उनकी आदर्श शिक्षा का।

यह वह अध्यात्मिक शिक्षा है जिसकी तरफ एक कॉलिज के रंग में रंगीन छात्र बलात् आकर्षित हो जाता है— उदाहरण के लिए स्वयं 'मैं'। इसके विपरीत स्कूल-कॉलिजों में प्रचलित वर्तमान शिक्षा-पद्धति में धार्मिक शिक्षा का नितान्त अभाव है।

धर्म-प्राण भारत में धार्मिक शिक्षा के अभाव से अनेक दुष्प्रवृत्तियां प्रविष्ट हो गई हैं। अनैतिकता बढ़ रही है। शुभाशुभ कर्म का कोई विचार नहीं है। देश की सभ्यता और संस्कृति अपना अस्तित्व खो रही है। जिस आर्य जाति के अन्दर यथार्थ दृष्टा का लक्षण "मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः ।।" आज उस आर्य जाति को चरित्र-हीनता के काले-धब्बे इतना कलंकित कर चुके हैं जो कि पृथक् होने असम्भव हो गए हैं। जिस मातृ-भूमि को सुजलाम् सुफलाम् शस्यश्यामला कहा जाता था, आज वह दाने-दाने को भिखारिन क्यों बनी हुई है? ऋषि मुनियों का यह देश जहां के वनों में सदा वेद मन्त्रों की मधुर गुंजार सुनाई पड़ती थी और सर्वत्र शांति का साम्राज्य था, आज उसी आर्यवर्त के अन्दर अत्याचार तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला है। धर्म को गिराया जा रहा है मानवता खुले बाजार में दिन दहाड़े बिक रही है। दानवता खुलकर नृत्य कर रही है। जिधर भी नजर दौड़ाते हैं उधर ही अशांति का साम्राज्य दृष्टि गोचर आता है। इन सब का मूल कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली है जो राष्ट्र, समाज तथा मनुष्यों को घुण की तरह खाए जा रही है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के 26 वर्ष पश्चात् भी शिक्षा के इस रोग का इलाज नहीं हो पाया है। एक चालाक अंग्रेज के मस्तिष्क की उपज आज भी स्कूल एवँ कॉलिजों में पूर्व की भांति चल रही है। इस शिक्षा प्रणाली के दुष्परिणाम आज हम अपनी आंखों से देख रहे हैं। यूनिवर्सिटियाँ जलाई जा रही हैं, देश की सम्पत्ति फूंकी जा रही है। प्रिंसीपल, प्रोफैसर और अध्यापक गुरुजनों की उन्हीं के शिष्य पिटाई करते हैं। उनका घेराव करते हैं। पुलिस के साथ मार-पीट, गलत नारे तथा हड़ताल एवं बसों का अपहरण तो प्रतिदिन का क्रम बन रहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वचन वास्तव में खरे उतर रहे हैं जो कि उन्होंने अपने पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखे हैं - अर्थात् "जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं, तब (राज्य) नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। आज राज्य के नष्ट-भ्रष्ट होने में कोई कसर नहीं है क्योंकि देश में सर्वत्र हाहाकार की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। यह थोड़ी बहुत कृपा है, तो उन आर्य विद्वानों की जो आरम्भ से ही इस राष्ट्र की रक्षा के लिए तन, मन, धन से अग्रसर रहते हैं।

हमारे राष्ट्रीय नेता प्राय अपने भाषण में कहा करते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन होना चाहिए। सरकार स्वयं भी यही कहती है कि आधुनिक शिक्षा-पद्धति से देश का हित असम्भव है, इसे बदलना चाहिए। स्टेज पर खड़े होकर अपने शब्दों को केवल आकाश में गुंजाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं। केवल परिवर्तन होना चाहिए, परन्तु कैसे? इस 'कैसे' पर विचार नहीं किया जाता। 'कैसे' पर विचार करने वाले हैं, तो वे हैं आर्य विद्वान्।

आर्य विद्वानों!एक संन्यासी ने सम्पूर्ण देश में हलचल क्रांति मचादी थी। उस समय जब कि विदेशी सत्ता का भी मुकाबला करना पड़ता था। आज तो भारतवर्ष में अनेकों संन्यासी हैं, यदि सब सप्रेम मिलकर कोशिश करें तो अवश्य ही सम्पूर्ण देश में महर्षि की आर्ष-पद्धति कामयाब हो सकती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब आर्य विद्वानों के हाथों में आर्ष-शिक्षा रूपी दरांती आजाएगी तो तब वर्तमान-शिक्षा रूपी मैकाले के मस्तिष्क की यह उपज कटनी शुरु हो जाएगी। इस के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है। आर्य समाज पुरुषार्थवाद के सिद्धांत को मानता है। 17 मार्च की साप्ताहिक आर्य ज्योति पत्रिका के पृष्ठ 7 पर "आर्य समाज के महान् सिद्धांत" शीर्षक में एक सिद्धांत मैंने पढ़ा, उसमें स्व० श्री मुनीश्वर देव जी सिद्धांत शिरोमणी ने लिखा है कि आर्य समाज प्रारब्ध से पुरुषार्थवाद को प्रधानता देता है। मनुष्य जीवन पर्यन्त पुरुषार्थी बनकर रहे। पुरुषार्थी की प्रभु सहायता करता है। देवता विद्वान् पुरुषार्थी को पसन्द करते हैं। ऐसी आर्य समाज की शिक्षा है।

अत: पुरुषार्थ के साथ संगठित होकर जहां शराब के विरुद्ध मोर्चा लगाने की 'आर्य ज्योति' पत्रिका में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी ने घोषणा की है, वहाँ वर्तमान शिक्षा-पद्धति 'जो स्कूल कॉलिजों में विद्यार्थियों का चरित्रिक पतन कर रही है" के विरुद्ध भी मोर्चा लगाना अति आवश्यक है क्यों कि सारी बुराईयों का मोर्चा यह वर्ततमान-शिक्षा ही है।

(पृष्ठ 8 का शेष)

(ब) प्रशासनिक भ्रष्टाचार के निवारण के लिए यह जरूरी है कि ईमानदार योग्य व श्रेष्ठ पुरुष (जो कि शिक्षा पर निर्भर करतो है) प्रशासन में आये। यह तभी सम्भव है कि शर्त (अ) पूरी हो तथा चुनाव प्रणाली इतनी महंगी नहीं रहे (जो वर्तमान में है) कि विधान सभा एवम् ससद केवल धनिकों तया ठगों का गढ़ मात्र न रहे तथा किसी भी विभाग में छोटे से पद से लेकर उच्च से उच्च पद के लिए पक्षपात व बेईमानी रहित चयन करना होगा ताकि श्रेष्ठ प्रशासन अधिकारी गण व नेता गण केवल शान शौकत के जीवन के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय हित की भावनाओं से ओत-प्रोत कर्त्तव्य निष्ठा से देश की सेवा करने के लिए अपने क्षुद्रस्वार्थों को तिलाञ्जलि देने के लिए तत्पर हो। किसी भी कार्य के क्रियान्वयन में अनुचित राजनैतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। जांच-पड़ताल के लिए बैठाए गए आयोग तथा अन्य कमेटियां तया आयोगों के उचित सुझावों को निस्संकोच अमल में लाना होगा तथा भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम के मातहत काला-बाजारी, मुनाफा खोरी, मिलावट करने वाले, रिश्वतखोरी एवं बेईमानी करने वाले इन भ्रष्टाचारियों को कड़ी से कड़ी सजा देनी होगी। वर्तमान गरीबी का निवारण करना होगा तथा अमीर व गरीब के बोच जो खाई बढ़ती जा रही है उसे काटना होगा अन्यथा एक दिन यह लोकतंत्रात्मक गणराज्य इस गरीबी व भ्रष्टाचार रूपी राक्षस का कालग्रास हो जाएगा और फिर ………।

देश-भक्ति

ब्र० देवराज सिंह सिहाग
गुरुकुल भैंसवाल कलां

★

जिस देश की पवित्र भूमि पर हमने जन्म लिया है, जहां की मधुर जलवायु का सेवन किया है। जहां की मिट्टी में हम खेल-कूद कर इतने बड़े हुए हैं, जहां के अन्न पानी से हमारा शरीर इतना हृष्ट पुष्ट हुआ है, उस देश की तन, मन, धन से सेवा करना परम कर्त्तव्य है।

इतना ही नहीं अपितु आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की आहुति दे देना ही देश-भक्ति कहलाती है। देश-भक्ति के विषय में किसी कवि ने ठीक कहा है:—

जिस को न निज गौरव तथा निज देश पर अभिमान है।
वह नर नहीं वह पशु निरा मृतक समान है ॥

अर्थात् जो व्यक्ति अपने देश पर गर्व नहीं कर सकता वह पशु ही नहीं अपितु मृतक के समान है। देश-भक्ति के विषय में अनेकों उदाहरण हैं जैसे:—

देश भक्त महाराणा प्रताप के विषय में भारत का बच्चा-बच्चा परिचित है क्योंकि जिस समय मुगल सम्राट अकबर को समस्त देश के राजा प्राणों से प्रिय स्वतन्त्रता का विक्रय कर चुके थे। उस समय महलों में रहने वाला महाराणा प्रताप सिंह पहाड़ों और बनों में भटकता रहा और घास की रोटी खाता रहा। परन्तु अंतिम दम तक अकबर के सामने सिर नहीं झुकाया तथा क्षण भर विना विश्राम किए देश हित के लिए सर्वस्व अर्पण कर दिया। इस प्रकार गुरु गोविन्द जी के बारे में सभी जानते हैं कि उनके चार पुत्र थे: दो तो मुगल सेना से लड़ते हुए चमकौर के स्थान पर वीर गति को प्राप्त हो गये थे। शेष दो पुत्र छोटे दश बारह वर्षीय फते सिंह तथा जोरावर सिंह को सरहिंद के सूबेदार ने पकड़ कर जीवित हो सरहिन्द की दिवारों में चिनवा दिया था। इस क्रूर अत्याचार से तथा पुत्रों के वियोग से व्याकुल होकर वीर पुत्रों की माता ने आवेश में आकर अपने पति देव जी से कुछ कहा तब गुरु गोविन्द सिंह जी ने हसते हुए कहा था: —

मातृ भूमि के देह पर चार दिए सुत वार।
चार मरे तो अभि क्या हुआ परन्तु जीवित कई हजार ॥

अर्थात् देश भक्त अपने हृदय के टुकड़ों का भी मोह नहीं करते।

शहिदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।

भारत की सब से भयंकर समस्या

* राष्ट्रीय चरित्र का अभाव *

बाल कृष्ण गुप्त, एम० ए०

★

हम क्या थे, क्या हो गये, और होंगे क्या अभी।
आओ मिलकर विचारें ये समस्यायें सभी ।।

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने भारत-भारती ग्रन्थ में ये पंक्तियां, यद्यपि एक दूसरे प्रसंग में लिखी थीं, पर आज भी इन पंक्तियों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। भारत को स्वतन्त्र हुए 27 वर्ष हो चुके हैं, स्यात हमने कुछ क्षेत्रों में उन्नति भी की है, पर जन साधारण के कष्ट घटे नहीं, अपितु बढ़े ही हैं। आज सारा देश आर्थिक संकट की चपेट में आया हुआ है। तिस पर आवश्यक वस्तुओं के अभाव ने साधारण व्यक्ति की कमर ही तोड़ दी है। प्रथम तो कोई चीज मिलती ही नहीं, यदि मिलती है तो उस के भाव इतने चढ़ गए हैं कि दिन प्रति दिन साधारण व्यक्ति की पहुंच से बाहर होते जा रहे हैं। आज का व्यक्ति अभाव और समाज में फैले व्यापक भ्रष्टाचार के दोहरे पाटों के बीच पिस रहा है। आखिर इसका कारण क्या है ? क्या वास्तव में देश में उत्पादन में एका-एक इतनी गिरावट आ गई है कि वस्तुओं के दर्शन दुर्लभ हो जायें। उत्तर है नहीं। यद्यपि उत्पादन में कुछ कमी है, पर इतनी नहीं जितनी दिखाई जा रही है।

वस्तुतः प्रकृति प्रकोप के कारण यदि कोई अभाव उत्पन्न होता है और देश वासियों में सहन शक्ति और इच्छा शक्ति हो तो विपत्ति के बादल छटने में देर नहीं लगती। पर मानव द्वारा उत्पन्न अभाव का कोई अन्त नहीं। प्राकृतिक प्रकोप तो अस्थाई होता है, पर मानव निर्मित यह अभाव सही उपचार के अभाव में स्थाई बन जाता है। आज देश में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि स्यात ही कोई क्षेत्र हो जो भ्रष्टाचार मुक्त हो। सरकारी कार्यालयों में बिना कुछ दिये काम नहीं होता। व्यापारी वर्ग जमाखोरी और

काला बाजारी कर रहे हैं। कृष्क और उत्पादक अपने उत्पादन को रोक कर कृत्रिम अभाव उत्पन्न करते हैं ताकि मूल्य बढ़े। इन सब से ऊपर देश के अर्थ तन्त्र का विनाश कर रही है विशाल स्तर पर की जा रही तस्करी, काला बाजारी, उत्पादन की चोरी और तस्करी ने देश में विपुल काला धन उत्पन्न कर दिया है। यह काला धन अर्थ तन्त्र को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है। कोई योजना सफल नहीं हो रही।

इन सब से छुटकारा कैसे मिले, काला धन, काला बाजार, भ्रष्टाचार और जमाखोरी आदि दैत्यों से कैसे निपटें। जब तक समाज में नैतिकता और इमानदारी नहीं होगी, ये बुराइयां दूर नहीं होंगी। हम में सब कुछ है पर नैतिकता और इमानदारी नहीं है। दूसरे शासन तन्त्र इस बुराई को मिटा सकता है। पर जब हम में इमानदारी नहीं तो यह अपेक्षा कैसे की जा उकती है कि शासन तन्त्र इमानदार होगा। इक्के दुक्के इमानदार व्यक्ति से शासन तन्त्र में इमानदारी नहीं आ सकती। यदि एक अधिकारी इमानदार नहीं तो उसका क्या करें? उसको बदल दें। पर उसके स्थान पर जो दूसरा आयेगा वह भी वैसा ही होगा। समस्या तो ज्यों की त्यों रही।

सारी समस्या का मूल कारण है हम में राष्ट्रीय चरित्र का अभाव। हम न अपने समाज को अपना समाज समझते हैं और न अपने देश को अपना देश। जब समाज और देश को अपना नहीं समझते तो उसके लाभ हानि से हमारा क्या सम्बन्ध रहा। आज यह स्थिति है कि हम अपने थोड़े से लाभ के लिए देश को भी बेचने को तैयार रहते हैं। ऐसे नागरिकों वाले देश का निस्तार कैसे हो सकता है। एक उदाहरण लें। सब जानते हैं कि देश के अर्थ तन्त्र का विनाश तस्करी से सब से ज्यादा हो रहा है। पर फिर भी तस्करी हो रही है और हमारे भाई ही कर रहे हैं। कोई यह प्रश्न भी कर सकता है कि तस्करी सब तो नहीं करते। लेकिन उनका तस्करी का सामान तो हम ही खरीदते हैं। यदि हम थोड़े से लाभ के लिए तस्करी का सामान खरीदना बन्द कर दें तो तस्कर तस्करी किस प्रकार कर सकते हैं? जब उनका सामान बिकेगा ही नहीं तो वे लायेंगे किस लिये। यह तो हुआ इसका एक पक्ष। दूसरा पक्ष है कि तस्कर अधिकारी तस्करी क्यों नहीं रोक सकते? क्यों कि उस में उनका भी भाग रहता है। यदि कोई व्यक्ति इमानदार हुआ तो उस की जान सुरक्षित नहीं रह सकती। तस्करों का रोष और अपने साथियों का असहयोग तथा अधिकारियों की उपेक्षा उसका जीना दूभर कर देते हैं। जब तक हमारा राष्ट्रीय चरित्र नहीं बनेगा, जब तक हम समाज, देश और अपने में द्वैत का भाव नहीं लायेंगे, तब तक किसी समस्या का समाधान नहीं होगा। यह स्थिति ऐसे ही बनी रहेगी, और बिगड़ जाएगी पर सुधरेगी नहीं।

कहा जाता है कि भारत एक आध्यात्मिक देश है। पर मुझे समझ नहीं आता कि हम में आध्यात्मिकता क्या है? क्या हम पाप करते हुये ईश्वर का भय मानते हैं? क्या

दूसरे मनुष्य को भाई तो क्या हम मनुष्य भी मानने को तैयार हैं ? नहीं। हम ईश्वर को केवल इतना ही मानते हैं कि उसके नाम से अपना स्वार्थ साधन करें या उसकी देन समझ कर मनुष्य की दी गई विपत्ति को चुप-चाप स्वीकार कर लें। आध्यात्मिकता तो अपने स्वार्थ से ऊपर उठना है। दूसरे के सुख से सुखी और दूसरे के दु:ख से दु:खी होना, सब में आत्मवत समाचरण करना आध्यात्मिकता है।

देश की इस दुरावस्था के लिए हमारी सरकारी नीति भी उत्तरदायि है। ठीक है हम धर्म-निरपेक्ष देश चाहते हैं, हमारे लिये यह है भी उचित, पर शिक्षा में नैतिकता को भी निकाल देना कहां की दूरदर्शिता है। नैतिकता की शिक्षा तो प्रारम्भ से दी जानी चाहिये। जब तक देशवासी एकमत-एकभाव होकर अपने में चरित्रबल उपलब्ध नहीं करेंगे, जब तक हम में राष्ट्रीय चरित्र उत्पन्न नहीं होगा, तब तक ये सब बुराइयां इसी प्रकार चलती रहेंगी। इन से छुटकारे की कोई सूरत नहीं। हमारा चरित्र बल ही हम को विवश कर सकता है कि हम बुरे आदमी का, चाहे वह हमारा कितना ही प्यारा हो, उस का बहिष्कार करें, उसे दण्ड दिलायें।

जहां चरित्र बल अपनी आत्मा से निकलता है, उस का दूसरा साधन भी है। वह है भय। गोस्वामी तुलसी दास नें भी कहा है— "भय बिनु होई न प्रीति।" शासन तन्त्र का राजदण्ड अपराधियों पर कठोरता से गिरना चाहिए। एक के लिए कठोर दण्ड शेष के लिये पाठ बन जाता है। पर आज का कानून क्या है—मकड़ी का एक जाला है, कमजोर इस में फंस जाता है, और ताकतवर इसे तोड़ डालता है।

अन्त में मैं तो यही कहूँगा कि किसी प्रकार भी हो देश में राष्ट्रीय चरित्र और नैतिकता के अभास में हम किसी विपत्ति से छुटकारा नहीं पा सकते। इसके अभाव में कर्मचारी भ्रष्ट और अपने कार्य के प्रति उदासीन रहेंगे। तस्करी, काला बाजार, जमाखोरी और मुनाफाखोरी होती रहेगी, देश और देशवासी जायें भाड़ में। अत: हम को सब से पहले इन्हीं गुणों—चरित्र और नैतिकता को अपने में उत्पन्न करना है। एक बार हम इन गुणों को प्राप्त करलें फिर अन्य विपत्तियां तो हंसते हंसते देखते-देखते दूर हो जाएंगी।

वाग्देव्या विलासः कालिदासः

श्री भीम सिंह शास्त्री
गुरुकुल भैंसवाल कलां
जिला सोनीपत ।

कालिदासस्य जन्म-भूमि विषये बङ्गदेशस्य काश्मीरस्य च नाम्नी कथ्येते । किंतु नैतदद्यावध्यपि निर्णिक्तं निर्णीतम् । महाकविरयमुज्जयिन्यै नगर्यै विशेषं पक्षपातमदीदृशत् तेन मन्यामहे इयमेवास्य जन्मभूमिः प्रतीयते इति । निःसन्देहं कालिदासः शैव आसीत् ।

"या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री । प्रत्यक्षाभिः प्रपन्न स्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टा भिरीशः" इति, "वेदान्तेषु यमाहूरेकपुरुषं व्याप्यस्थितं रोदसी, स स्थाणुः स्थिरभक्ति योग सुलभो निःश्रेयसायास्तुवः" इत्यादि श्लोकेषु मङ्गलाचरणे शिवस्मरणात् शैवोऽयमिति निश्चितं भवति। मेघदूते महाकालस्योपासनाँ प्रति तदाग्रहश्चापि इममर्थं पुष्णाति । भारतीय जनश्रुत्यनुसारं कालिदासो राज्ञो विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु मुख्य आसीत् । तत्प्रणीतग्रन्थेभ्योऽपि विक्रमेण सह तान्निवासस्य सूचना लभ्यते । शाकुन्तलानाटकस्याभिनयोऽपि मन्ये विक्रमस्य राज्ञः अभिरूप भूयिष्णायां परिपद्येवाभूत् ।

विक्रमोर्वशीयेनाटके विक्रमनामोल्लेखोऽपि विद्यते । 'अनुत्सेकः खलुविक्रमालङ्कारः । इत्यादि वाक्यानि उक्तसिद्धान्तस्य पुष्टिं कुर्वन्ति ।

भारतीयकवीनां समयनिर्धारणमतिकष्टसाध्यं कार्यम्' यतस्तैः स्वविषये किमपि नालेखि। अस्यां स्थितौ अन्यकृतैरुल्लेखैरनुमानेन च प्राचां कवीनां समयो व्यवस्थापनीयो भवति। अस्मादेव हेतोः कालिदासस्य समय सम्बन्धेऽपि प्राधान्येन त्रीनिमतानि सन्ति।

1- यीशोः षष्ठ्यां शताब्द्यां कालिदासः समुत्पन्नः इति प्रथमं मतम्।

2- यीशोः चतुर्थपञ्चम शतकमध्ये गुप्तकाले कालिदास आसीत् इति द्वितीयंमतम्।

3- यीशोः पूर्वप्रथमा शताब्दी कालिदासस्य समयः इति तृतीयंमतम्।

तत्राश्वघोषकालिदासयोः तुलनाकरणात् कालिदासः प्राचीनतरो विज्ञायते। एवं च कालिदासस्य समयः यीशोः प्राक् प्रथमा शताब्दीत्येव निश्चितं स्वीकर्तुमुचितमस्ति।

कालिदासेन इमे ग्रन्था व्यरचिषत—

1- ऋतुसंहारम्। इदं खण्डकाव्यम्, अस्मिन् लघुनि काव्ये षण्णामृतूनां वर्णनं स्वाभाविकं ललिततरमुपन्यस्तं कविना।

2- मेघदूतम्। इदमपिखण्डकाव्यम्। अस्मिन् वियोगविधुरायास्वस्त्रियाः पाश्वें यक्षेण मेघोदूतः कृत्वा प्रेषितः। तस्य निज प्रणय सन्देशवर्णनं ललितेन मन्दाक्रान्तावृत्तेन कविनोपनिबद्ध।

3 रघुवंशम्। इदंमहाकाव्यम् एकोनविंशति सर्गात्मकम्। अनेन महाकाव्येनैव कविरयं रघुकारः इत्यभिधीयते। काव्येऽस्मिन् रघोवंशस्य कथा निबद्धा। दशमसर्गादारभ्य पञ्चदशसर्गपर्यन्तं रामचन्द्रस्य कथा वर्णिता। तदुत्तरं रामवंश्यानां लवकुशादिनृपाणां चरियान्युपन्यस्तानि।

4- कुमारसंभवम्। इदमपि महाकाव्यम्। महाकाव्येऽस्मिन् कुमारस्य कार्तिकेयस्य जन्मवर्णितम्, येन तारकासुरो विनाशितः अस्य पञ्चमे सर्गे पार्वत्याः कठिनं तपोनुष्ठानं वर्णितं यत्पठितं सद् बलान्मनोहरति सहृदयानाम्।

5- अभिज्ञानशाकुन्तलम्। 6- विक्रमोर्वशीयम्। 7- मालविकाग्निमित्रम्।

इमानि त्रीणि नाटकानि सन्ति। एवं काव्यनाटकानां सप्त संख्या भवति।

महाकवेः कालिदासस्य कविता देववाण्याः शृङ्गारोऽस्ति । माधुर्यस्य मधुरः सनिवेशः, प्रसादस्य स्निग्धता, पदानां सरसा शय्या, अर्थस्य सौष्ठवम्, अलंकाराणां मञ्जुलः प्रयोगः इत्येतानि कमनीयस्य काव्यस्य समस्तानि लक्षणानि कालिदास्य कवितायां स्पष्टमुपलभ्यन्ते ।

भारतीय संस्कृतेः प्रतिनिधिरयं कविः मानवहृदयस्य परिवर्तनशीलानां वृत्तीनां बोधने अद्भुतं चातुर्यंधत्ते । उपमा कालिदासस्य इति लौकिकमाभाणकं तु प्रसिद्धमेवास्ति । दृश्यन्तां तावत् काश्चिदुपमाः—

"वागर्थाविव संपृक्तौ, पार्वती परमेश्वरौ ।।"

"काप्यभिख्या तयोरासीत् चित्रा चन्द्रमसोरिव ।।"

"श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् ।।"

"सुमित्रा सुषुवे पुत्रौ विद्याप्रबोधविनयाविव ।।"

"अयो घनेनाय इवाभितप्तं वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे ।।"

"संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ ।"

"पर्याप्त पुष्प स्ववकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लतेव ।"

इत्येव कालिदासोपमानां रसात्मकता रसपेशलता च नितान्तं मर्मस्पर्शिन्यौस्तः । शब्दविन्यासोऽपि कवेरस्य कव्यन्तर विलक्षणएव दृश्यताम् –

'ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी वधाय वध्यस्य शरं शरण्यः ।
जाताभिषङ्गो नृपतिर्निषङ्गादुद्धर्त्तुमैच्छत् प्रसभोद्धृतारिः ।।'

'तमार्यगृह्यं निगृहीतधेनुः मनुष्यवाचा मनुवंशकेतुम् ।
विस्माययन् विस्मितमात्मवृत्तौ सिंहोरूसत्त्वं निजगादसिंहः ।।'

'इत्थं द्विजेन द्विजराजकान्तिरावेदितो वेदविदां वरेण ।
एनोनिवृत्तेन्द्रिय वृत्तिरेनं जगाद भूयो जगदेकनाथः ।।'

किमीदृशी शब्दसज्जा क्वचिदपरकवि कृतावपि दृष्टा श्रीमद्भिः ? भारतीयैः पाश्चात्यैश्चोभयैरपि विद्वद्भिः कालिदासः संस्कृतभाषायाः सर्वमान्यः कविर्गण्यते । नाट्य-कलायाः सौन्दर्यंदृश्यताम्, काव्यस्य वर्णनच्छटा वा विलोक्यताम्, गीतिकाव्यस्य सरसा हृदयोद्गारा वा पाठ्यन्तां, सर्वत्र कालिदासस्य प्रतिभा सर्वातिशायिनी वर्तते ।

तस्य काव्यस्य माधुरी तथा प्रसिद्धा यथा नार्हति प्रस्तावनाम्। हृदयपक्षस्य चमत्कारि चित्रणं कालिदासस्य काव्येषु सर्वत्र प्राप्यते। मानवजीवनस्य सर्वाङ्गसम्पूर्णं चित्रमुपस्थापयितुमसौ रघुवंशं प्रणीतवान्। प्रेम्णः परं प्रकर्षं प्रकाशयितुं च कुमारसंभवं निर्ममे। महाकाव्ययोरनयोर्यारमणीयता सा वस्तुतो वचसामगोचरः।

शाकुन्तलनाटक विषये तु किमु वक्तव्यम्। नाटकमिदं तु अप्रति स्पर्द्धिभावेनावस्थितम्— 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।' पाश्चात्या विद्वांसोपि शाकुन्तल मुक्तकण्ठं प्रशंसन्ति। तत्र जर्मन विद्वान् गेटे महोदयस्तु अभिज्ञानशाकुन्तलं नाटकमित्थमुपश्लोकयति—

"वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद्ग्रीष्मस्य सर्वं च यत्,
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।

एकी भूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोक भूलोकयो,
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रिय सखे शाकुन्तलं सेव्यताम्॥"

॥ इति ॥

बधाई सन्देश

निवर्त्तमान राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि के स्थान पर श्री फखरूद्दीन अली अहमद, जो इस से पहले खाद्य मन्त्री रह चुके हैं, राष्ट्रपति चुने गए हैं। उप-राष्ट्रपति पद के लिए श्री जत्ती वासप्पा दानप्पा चुने गए हैं। श्री जत्ती, पहले उड़ीसा के राज्यपाल रह चुके हैं। दोनों महान् देश-भक्त हैं। आशा है देश, जिस का भविष्य उज्ज्वल है, इन के नेतृत्व में उन्नति की ओर अग्रसर होगा। समाज–सन्देश परिवार भी इन की सफलता पर हार्दिक बधाई देता है।

जहां पञ्च वहां परमेश्वर के दर्शन

लगभग सोलह वर्ष से कासेंढी गांव में दो आर्य परिवारों का जमीन पर झगड़ा चल रहा था। उसको निबटाने के लिए अनेक बार पंचायतें हुईं पर सफलता न मिली।

अपना कब्जा लेने के लिए दोनों परिवारों का विवाद बढ़ा। कुछ चोटें भी आई। परन्तु कोई जीवन हानि न हुई। श्री भद्रसेन जी शास्त्री ने श्री विष्णुमित्र जी उप कुलपति कन्या गुरुकुल खानपुर तथा गुरुकुल भैंसवाल से अपनी इच्छा प्रकट की कि गुरुजी ! मेरे विचार में अब दोंनों परिवार इकट्ठे हो सकते हैं आप इस कार्य में मेरी सहायता करें

उन्होंने भद्र जी की बात को स्वीकार किया। तदन्तर भद्रसेन जी तथा भक्त माईधन जी गोहाना दोनों पार्टियों से मिल दादा भले राम के पास पंचायत करने के लिए आहुलाना गए। दादा जी ने 6-8-1974 को गांव कासेंढी में इस पंचायत को किया।

पञ्चायत में भिन्न भिन्न गांवों के तथा गठवाला की खाप के लगभग तीन हजार आदमी कासेंढी में इकट्ठे हुए।

दोनों पक्षों को सब लोगों ने समझाया। पञ्चायत ने निश्चय किया जब तक इन दोनों पक्षों का समझौता नहीं होगा वह अपने स्थान से न उठेगी। हुआ भी ऐसा ही। रात्रि को भी दादा भलेराम के साथ सैकड़ों पञ्चायती रात्रि में जमीन पर ही भूखे प्यासे लेटे रहे।

पुनः प्रातः काल 7 बजे पञ्चामत हुई। जिसमें अनेक प्रकार के वाद विवाद के साथ तथा झगड़े के साथ पंचायत सफल हुई। दोनों पक्षों ने पञ्चायत के आगे सिर झुकाया। दादा को आश्वासन दिया कि जो कुछ वे कहेंगे, चाहे उनकी अपनी जमीन भी दादा जी लेलें उसे भी देने के लिए तैयार रहेंगे।

उनकी पूरी शान्ति के लिए श्री युधिष्ठिर पक्ष से महात्मा प्रभुआश्रित तथा श्री अमीचन्द नम्बरदार एक-एक लाख के जमानती बने। तदनन्तर अनेक गांवों से हस्ताक्षर करवाके दादा भलेराम ने पंचायत की सहायता से इस झगड़े को सदा के लिए निपटाया। इस पंचायत में दादा भलेराम जी का बुद्धि चातुर्य भी प्रकट हुआ।

भक्त जी महाराज के प्रिय गांव कासेंढी के समझौते से पञ्चायत को बड़ी प्रसन्नता हुई। पञ्चायत ने 'वैदिक धर्म की जय' 'पंचायत की शक्ति की जय के नारे लगाये।

इस कार्य से सारे इलाके में प्रसन्नता की लहर छा गई। पंचायत ने भी श्री युधिष्ठिर तथा श्री धनपाल के परस्पर हाथ मिलवाकर इस पञ्चायत की शक्ति को और अधिक बढ़ाया।

अब हमारा कर्त्तव्य है कि ग्रामों में वास्तविक पञ्चायती शक्ति का जागरण करें जिससे गांवों के भाई परस्पर मिलकर सुख से रह सकें।

सम्पदाक
समाज सन्देश

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दि के अवसर पर (उड़िया भाषा में) सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन

सारे आर्य जगत में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दि मनाने की व्यवस्था की जा रही है इस शुभावसर पर लाखों सत्यार्थ प्रकाश देश विदेश की अनेक भाषा भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है। परन्तु अन्य पिछड़ेपन की तरह उड़ीया वासी महर्षि दयानन्द की अमृत वाणी को अपनी भाषा में प्राप्त करने में असमर्थ रहे। इस महति कमी को दूर करने के लिए "गुरुकुल आश्रम आम सेना (काला हाण्डी) साधन अभाव होने पर भी आर्य बन्धुवों के सहयोग एवं विश्वास पर प्रकाशित करना शुरु कर दिया है। यदि कागज आदि समय पर मिल जाये तो श्रावणी तक सारा ग्रन्थ छप कर तैयार हो जाएगा।

ऋषि भक्त दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक दान देकर बनवासी जनता तक ऋषि संदेश पहुंचा कर यश के भागी बनें। जो सज्जन एक हजार दान देंगे उन का चित्र प्रकाशित किया जायेगा।

निवेदक
धर्मदेव स्नातक

Approved for Libraries by D. P. I's Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम

स्थान

पत्रालय

जिला

* विज्ञापन की दरें *

टाइटल पेज एक चौथाई—	...	...	५० रुपये
बैक पेज आधा—	...	...	६० रुपये
अन्दर का एक पृष्ठ—	...	...	४० रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ—	...	...	२० रुपये

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल से मुद्रित तथा प्रकाशित किया ।

नवम्बर/दिसम्बर, 1974

★ समाज सन्देश ★

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

स्वर्गीय श्री भक्त फूलसिंह जी

त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः ।
इन्द्र ज्यैष्ठयाय सुक्रतो ॥ (ऋ० १-५-६)

उत्तम कर्म विधायक नायक इन्द्रदेव ! तुम सुन्दर हो ।
सोमपान के हेतु शीघ्र बढ़ते जाते अन्दर हो ॥
ज्येष्ठ तुम्हीं हो वृद्ध जगत् में सदा श्रेष्ठता को लाते ।
शंसनीय तुम निज भक्तों को शुभ पथ भी हो दिखलाते ॥

—निधि

मूल्य : एक प्रति 55 पैसे   वार्षिक चन्दा 6 रुपये

विषय-सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा अखबार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार का पता—

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (रोहतक)

❀ ओ३म् ❀

व्यवस्थापक : श्री धर्मभानु

गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलाँ
तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का मासिक पत्र

* समाज सन्देश *

प्रकाशन तिथि : २५ नवम्बर १९७४

सम्पादक :
आचार्य हरिश्चन्द्र

सहायक सम्पादिका :
आचार्या सुभाषिणी

वर्ष पन्द्रहवां | नवम्बर/दिसम्बर, १९७४ | अङ्क : 8/9

सम्पादकीय

●

आर्य समाज का शताब्दी समारोह

आज से सौ वर्ष पूर्व श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने आर्यसभा की पुनः स्थापना की थी । आर्य समाज को स्थापित हुए सौ वर्ष व्यतीत हो गए । इस वर्ष सारे देश में बड़ी धूमधाम से नगर-नगर प्रांत-प्रांत में आर्यसमाज की शताब्दी मनाई जा रही है। यदि आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् पहले पचास वर्षों के इतिहास पर सिंहावलोकन करें तो आर्यसमाज ने सभी क्षेत्रों में बड़ा भारी काम किया हैं । सबसे प्रथम आर्यसमाज के संस्थापक भगवान् दयानन्द ने स्वतन्त्रता की ज्योति प्रज्वलित की । उनकी देशभक्ति का मूल्यांकन इन्हीं वाक्यों से किया जा सकता है कि "विदेशी राजा चाहे कितना ही धर्मात्मा क्यों न हो अपने पापी राजा से अच्छा नहीं ।" पहली अर्धशताब्दी में ही दलितोद्धार, स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह, राष्ट्रीय भाषा प्रचार आदि अनेक कार्य किए । इसी तरह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की रक्षा के लिए अनेक गुरुकुलों की स्थापना की । देश के कोने-कोने में आर्यसमाजों की स्थापना की । आर्यसमाजों का जाल सा बिछा दिया गया । स्वामी दयानन्द जी हालांकि गुजरात में पैदा हुए किन्तु आर्यसमाज के लिए उत्तरी भारत

को ही अपना क्षेत्र चुना। उनकी बदौलत ही उत्तरी भारत में अनेक आर्यसमाज के नेता उच्चकोटि के विद्वान् पैदा हुए। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, ला. लाजपतराय, पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी आदि ने आर्यसमाज के लिए तथा देश सेवा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाजपतराय जी आदि मे अनेक कारागार यातना तथा प्रवास के अनेक प्रकार के कष्टों को सहा। भक्तसिंह, चन्द्रशेखर अनेक नौजवानों ने देश की आजादी के लिए फांसी भी स्वीकार की। किन्तु आर्यसमाज व अपने नेताओं की आन को धक्का नहीं लगने दिए। पूर्वार्द्ध में इतिहास पढ़ने से मालूम होता है कि आर्यसमाज ने बड़ा ही काम किया। स्वतन्त्रता के आंदोलन में यदि आर्य नेताओं का योग न होता तो यह स्वतन्त्रता का स्वरूप साकार नहीं हो सकता था। अनेक देश-भक्त, सन्त, त्यागी, उद्भट विद्वान् आर्यसमाज ने देश को दिए।

आजादी के पश्चात् आर्यसमाज में पारस्परिक विद्वेष, कीर्ती की इच्छा, आदि से आर्यसमाज की प्रगति में बाधा आने लगी। पारस्परिक आपसी समाजों के झगड़े व चौधराहट के लिए लड़ाई से ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यसमाज में त्याग की भावना बिल्कुल ही समाप्त प्राय होती जा रही है। जो कार्य आर्यसमाज के पहले 50 वर्षों में नेताओं ने किया था उसकी पूर्णाहुति भी होती नजर आती है। पाठकगण इन पंक्तियों को पढ़कर बुरा न मानें आर्यसमाजियों के पारस्परिक विवाद, घृणित लांछन, व्यक्ति विद्वेष, से एसा प्रतीत होता है कि यह समाप्ति वर्ष न हो। हमारी आर्यसभा के कर्णधारों से विनम्र प्रार्थना है कि आत्म संयम त्याग भावना से कार्य करने में जुट जावें। जो नौजवान, साधु संन्यासी काम करने के अभिलाषी हों उनके कार्य में बाधा न बनें। कुछेक नेतागण तो आर्यसमाज को अपनी बपौती समझने लगे हैं। इस भावना का सर्वथा परित्याग करें। पद का लालच, त्याग कर सेवाभाव से कार्य करें जैसा कि समाज के संस्थापकों ने किया है। हमें बड़ी खुशी है अभी तक कई शहरों में कानपुर, अमृतसर, लुधियाना, शामली आदि में शताब्दी समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाये गये हैं। उत्सवों में एकता सद्भावना की झलक प्रतीत होने लगी है।

इधर हमारे यहां भी रोहतक में आर्य बन्धुओं ने दयानन्द मठ में बैठकर यह निर्णय किया है कि हरियाणा प्रांतीय आर्यसमाजों की ओर से रोहतक शहर में जोकि आर्य समाज का गढ़ है और हरियाणा का हृदय है शताब्दी समारोह किया जावे। स्वगताध्यक्ष, स्वागत मन्त्री तथा संयोजक सर्वश्री प्रो० शेरसिंह जी भूतपूर्व राज्य मन्त्री केन्द्रीय सरकार, आचार्य विष्णुमित्र जी उपकुलपति गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर, एव महाशय भरतसिंह जी को क्रमशः मनोनीत किया है। उन्होंने एक लाख की अपील भी की है। प्रत्येक आर्यसमाज से 101 रु० तथा एक मन अनाज लेने का निश्चय किया है। इसी प्रकार दानी श्रद्धालु जनों से भी दिल खोलकर दान देने की अपील की है। आशा है कि दानी महानुभाव दान देकर उदारता का परिचय देंगे। इसके साथ साथ शताब्दी समारोह के व्यवस्थापकों से अपील है कि समारोह के उपलक्ष में प्राप्त राशि का हिसाब किताब ठीक ठाक रखें और इमानदारी का परिचय दें।

संस्थाओं के वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल भैंसवाल का वार्षिक महोत्सव—

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल को स्थापित हुए 55 वर्ष हो चुके हैं। संस्था के अनेक विद्वान् स्नातकों ने गुरुकुल से शिक्षा दीक्षा लेकर अनेक क्षेत्रों में कार्य किया है। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक स्नातकों का योग बहुत ही सराहनीय है। विश्वविद्यालय काङ्गड़ी की वेदालङ्कार, विद्यालङ्कार की पढ़ाई की सुव्यवस्था है। संस्था के प्रति वर्ष महोत्सव मनाये जाते हैं जिससे गुरुकुल प्रेमी वार्षिक संस्था की प्रगति को निहार सकें। संस्था दिन-रात चौगुनी उन्नति कर रही है। यह सब दानी एवं गुरुकुल प्रेमी सज्जनों की कृपा का फल है। संस्था का इस वर्ष वार्षिक महोत्सव मार्च के पहले सप्ताह के शनिवार, रविवार, सोमवार को मनाया जा रहा है। आप सभी को हम सादर सप्रेम आमन्त्रित करते हैं।

गुरुकुल खानपुर का वार्षिक उत्सव—

गुरुकुल खानपुर की स्थापना हुये 37 वर्ष हो चुके हैं। श्री महात्मा भक्त फूलसिंह जी महाराज के 1942 में शहीद होने के उपरान्त विधिवत् इसकी स्थापना 1942 में हुई थी। 1939 से 1942 तक यहां चार पांच छात्राएं ही विद्या ग्रहण करती रहीं। केवल साधारण पाठशाला का ही रूप था। गुरुकुल स्थापना के उपरान्त संस्था ने दिन-रात चौगुनी उन्नति की है। भक्त जी महाराज के स्वर्गवास के बाद दोनों संस्थाओं की देखरेख का भार महामना श्री चौ० माडूसिंह जी शिक्षा मन्त्री पर रहा है। उनकी दूरदर्शिता तथा सतत परिश्रम से तथा जनता के सहयोग से आज संस्था ने विशाल वठ वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। संस्था के पास जमीन तथा एक दो अपने नलकूप भी हैं। डिग्री कालिज, हाई स्कूल, ट्रेनिङ्ग कालिज, आयुर्वैदिक डिग्री कालिज, तथा 2000 छात्राओं के लिए छात्रावास है। गौशाला भी बड़ी शानदार है। जङ्गल के अन्दर सुरम्य बस्ती बसी हुई है आने जाने के लिये आधुनिकतम साधन हैं। गोहाना से खानपुर तक अनेक बसें, स्कूटर, टम्पू आदि का प्रबन्ध है। संस्था ने सुन्दर नगरी का रूप धारण किया हुआ है। गुरुकुल खानपुर का उत्सव भी आगामी फरवरी मास के प्रथम सप्ताह के शनि, रवि के दिन उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। सभी धर्म प्रेमी जिज्ञासु श्रद्धालु सज्जनों से प्रार्थना है कि अवसर पाकर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

सम्पादक

"ढूंढ ली मंजिल उन्होंने"

सरोज

★

कौन कहता है कि चाचा चल दिये संसार से ।
वे तो सारे विश्व भर के हर जिगर में बस गये हैं ।।

फोड़कर अपना जिगर,
हर एक कण देखा है मैंने ।
अपनी पलकों के निलय में,
मधुरतम देखा है मैंने ।
वो तो सबके हर जिगर के हर ही कण में रस गये हैं ।
कौन कहता है कि चाचा……………………

अमिट हैं पगचिन्ह उनके,
अमिट उनका नाम है ।
अमर उनकी आत्मा है,
अमर उनका काम है ।
क्यों उन्हें कहते हो फिर कि वे यहां से चल दिये हैं ।
कौन कहता है कि चाचा……………………

पार करके मार्ग अपना,
ढूंढ ली मंजिल उन्होने ।
अमरता का मार्ग भी,
हमको दिखाया है उन्होंने ।
हा ! पर अरमान तो उनके अधूरे रह गये हैं ।
कौन कहता है कि चाचा……………………

चिन्ह उनके सफलता के,
मार्ग दिखलाते रहेंगे ।
कार्य उनके भी हमें,
कर्त्तव्य बतलाते रहेंगे ।

पर हा ! उनके शोक में संसार के अश्रु बहे हैं ।
कौन कहता है कि चाचा……………………

अनेक समस्याओं का एक हल

हरिश्चन्द्र रावत

★

आज हम देश की हालत पर विचार करते हैं तो हम देश को एक नाजुक परिस्थिति से घिरा हुआ पाते हैं। चारों ओर हलचल मची हुई है। कहीं लोगों को तन ढकने के लिए कपड़ा और जीवन यात्रा चलाने के लिए एक वक्त की रोटी भी नसीब नहीं, और कहीं पर दिन में लाखों रु० कमाकर अपनी तिजोरियों को भरने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है, निर्धन लोगों की रोजी लूटने का प्रयास किया जा रहा है।

स्मगलरों को सरकार की उन्नति में बाधक समझकर उनको गिरफ्तार करके जेलों में ठूंसा जा रहा है। किसी स्थान पर आन्दोलनकारियों को भ्रष्टाचार का उत्तरदायित्व सौंपकर उनके ऊपर पुलिस गोलियों की बौछार करके उनको दबाने का सतत प्रयत्न जारी है। आन्दोलन करने वालों ने सरकारी कर्मचारियों को ही भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महंगाई का कारण मानकर सरकार का तख्ता पलटने के लिए अंगड़ाई ले ली है।

और किसी ने अपने प्रान्तीयता और भाषा के क्षेत्र को लेकर अपनी आवाज को बुलन्द करने के लिए अपने अनेक तौर तरीकों को जारी किया है।

सरकार भी इन सबको अपने दृष्टिकोण में रखते हुए इन सब बातों पर काबू पाने के लिए इन सब को अयोग्य सिद्ध करने के लिए अपने अनेक फार्मूलों को लागू कर रही है। अन्न समस्या और महंगाई को मिटाने के लिए पैदावार बढ़ाने और ब्लैक को खत्म करने के लिए कानून बना रही है। आन्दोलनों को दबाने के लिए सरकार ने पुलिस कार्यवाही का सहारा ले लिया है। परन्तु अपने इन फार्मूलों को कायम करके भी शान्ति नहीं और सरकार इन समस्याओं को दबाने में सफल नहीं हो पा रही है। नये-नये हल निकालने के लिए आयोग रोजाना बैठा रहता है। परन्तु वह बेचैन है कि कभी नयी समस्या जन्म न ले ले।

सरकार ने सैंकड़ों फार्मूले लागू किये लेकिन इन काली करतूतों को दबाने में सफल नहीं हो सकी और हो भी नहीं सकती, क्योंकि ये फार्मूले अस्थिर हैं।

परन्तु इन सबको काबू में करने का केवल एक ही फार्मूला है जो एक बार लगाने से सारी स्थिति पर काबू किया जा सकता है और वह फार्मूला है—देश के अन्दर चरित्र

निर्माण के केन्द्र खोलकर देश की भावी आशाओं को सच्चा नागरिक बनाकर हर संकट के लिए तैयार करना होगा। हर शर्त पर देशभक्त तैयार करने के लिए सतत प्रयत्न करना पड़ेगा। युवकों के अन्दर कर्त्तव्य के प्रति आस्था जागरूक करनी होगी।

जिस समय देश के नवयुवक देश को समृद्धिशाली और उन्नतिशील बनाना और देश का सारे जहां में मान स्थापित करना अपना कर्त्तव्य समझेंगे, उन्हें अपना स्वार्थ छोड़ कर सब कुछ देश के अर्पण करना पड़े तो उससे जरा भी नहीं झिझकेंगे तभी देश ऐश्वर्य-शाली बन सकता है।

धनी लोग गरीबों का शोषण नहीं करेंगे और उनको ऊपर उठाने का प्रयत्न करेंगे। निर्धन लोगों के अन्दर भी वह मनोबल होगा कि वे किसी भी स्थिति में उनसे शोषित नहीं होंगे और इच्छाओं और जरूरतों पर सन्तुलन करेंगे तभी देश खुशहाल और उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा।

हम शोषण करने वाले वर्ग से बचने के लिए बुद्धि और मनोवेगों, परिवार और समाज, व्यक्ति और परिवार, धर्म, अर्थ और काम, न्याय और व्यक्तिक सम्बन्धों के बीच में सन्तुलन करना पड़ेगा। हम बड़ी से बड़ी आपत्ति आने पर भी घबरायेंगे नहीं और उसका सामना करने के लिए हर समय तैयार रहेंगे, हम आज की आविष्कार की वस्तुओं को छोड़कर प्राकृतिक वस्तुओं का सहारा लेंगे और हमें अपनी आवश्यकताओं को कम करना पड़ेगा तभी हम शोषित वर्ग से बचकर देश का सच्चा नागरिक बनने का गौरव प्राप्त कर सकते हैं।

अगर हमारा मनोबल गिर चुका है, हमारे अन्दर अपने विचार प्रकट करने का सामर्थ्य नहीं है हम भय के अन्दर फंस कर अपनी मान मर्यादा को, कर्तव्यपरायणता को भूल चुके हैं, अर्थात् हम बिल्कुल नामर्द (मुर्दादिल) बन चुके हैं तो इसी प्रकार शोषक वर्ग की चक्की में पिस कर परलोकगामी हो जायेंगे और एक दिन वह आयेगा कि हम देश के नाम पर कलंक का धब्बा देखेंगे।

इसीलिए हमें पहले ही तैयार होना पड़ेगा। हर संकट का सामना करने के लिए योजनाबद्ध होकर चलना होगा। अपने मनोबल को उज्ज्वल करना होगा और अपने चरित्र के बल पर विदेशों में धाक जमानी होगी। तभी हमारा देश आसमां का चमकता सितारा कहला सकेगा और तभी हम अपने देश पर गर्व करने का अहसास कर सकेंगे और एक बार फिर जगत् में "वसुधैव कुटुम्बकम" का नारा गुञ्जायमान कर सकेंगे।

परन्तु ये सब तभी हो सकता है जब देश के अन्दर सच्चे चरित्र निर्माण के केन्द्र लोगों को सन्मार्ग दिखायेंगे।

संसार शिरोमणि बनने का गौरव हमें प्राप्त हो।
सिंहनाद हमकर सकें न हमें कोई सन्ताप हो॥

धन्य धरा पंजाब की

देवराजसिंह सिहाग
भैंसवाल

शीश हथेली रखके निकलो आखिर जीत हमारी है।
हमें कूद जाना होगा यदि आग का दरिया जारी है।।

प्रागैतिहासिक काल से पंजाब भारतीय संस्कृति और सभ्यता का केन्द्र रहा है। जिस समय ससार अन्धकार में डूबा हुआ था, उस समय इसी धरती से द्यौलोक के अनन्त अन्तराल में ज्ञान के सुपर्ण बहुत दूर तक उड़े, इस काल में ऋषियों ने ज्ञान के नये क्षितिजों का निर्माण किया। रामायण काल में राष्ट्र को काव्य पुरुष और मर्यादा प्रदान की और महाभारत काल में गीता जैसा अमर ग्रन्थ और क्षात्र धर्म की नई भाषा प्रस्तुत की।

ईसा से 326 वर्ष पूर्व मकदुनियां के महान् विजेता सिकन्दर की विकराल सेनाएं एक के बाद दूसरे राष्ट्रों को पददलित करती, कला भवनों का नाश करती और मानव का सर्व संहार करती हुई पंजाब आ पहुंची। पंजाब की धरती पर सिकन्दर की पहली टक्कर सिंह पुरुष राजा पुरु से हुई। हिमालय से शौर्य वाले महाराजा पुरु और भारतीय वीर वाहिनियां द्वारा प्रदर्शित अप्रतिम वीर से रणोन्मत सिकन्दरी सेनाओं के भारत विजय के स्वप्न खण्ड खण्ड हो गये। पददलित सेनायें जब वापिस लोटीं तो मालवा क्षुद्रक, सौभूति, शिवि, कठ, भुषिक आदि आयुध जीवी गणतन्त्रों ने सिकन्दर और उसकी सेना का रहा सहा गर्व भी उतार दिया।

इसके बाद खंडित यूनानी गौरव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस ने किया, विजय दर्प से उन्मत सेल्यूकस को पंजाब की धरती पर अर्थशास्त्र के रचयिता महामति चाणक्य के नेतृत्व में चन्द्रगुप्त मौर्य की सेनाओं से न केवल मुँह की ही खानी पड़ी अपितु उपहार में अपनी प्राण प्रिय पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से करना पड़ा और उससे कछ प्रदेश चन्द्रगुप्त को दहेज में प्राप्त हुआ।

सन्त सिपाही गुरु गोविन्द सिंह ने कर्मक्षेत्र में अवतरित होते ही निःसत्व भारतियों को दहाड़ते सिंहों में बदल दिया। उन्होंने भक्ति को शक्ति से संयुक्त करके पंजाब की वीर परम्पराओं को चार चांद लगा दिये। इसके बाद का काल घोर अशांति का काल

है। इस समय में पंजाब के लोगों को नादिरशाह, अहमदशाह अब्दाली आदि कई आततताइयों से लोहा लेना पड़ा। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में जलियांवाला बाग के निर्मम हत्याकांड ने आग में घी का काम दिया। इस दुर्घटना ने ब्रिटिश शाही के कुकृत्यों पर से सदा के लिए पर्दा उठाकर रख दिया। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय और अमर शहीद सरदार भगतसिंह तथा उनके साथी राजगुरु और सुखदेव आदि के अनुपम बलिदानों ने राष्ट्र के कण-कण में एक नये ओज, एक नये साहस और एक नये बल विक्रम का संचार किया।

पंजाब की इन्हीं विलक्षण सफलताओं को देखकर राष्ट्र नायक श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था—मैं भारत के किसी एक भाग को दूसरे भाग से तुलना करना नहीं चाहता परन्तु इतना जरूर कहूंगा कि पंजाब और पंजाब वासियों का उदाहरण हम सब भारतवासियों के लिए शक्ति तथा प्रेरणा का स्रोत है। इस संदर्भ में भारतवर्ष पर 1962 में रणोन्मत चीन ने एकाएक जब आक्रमण किया उस समय भारत ही नहीं, सारा संसार आश्चर्य चकित रह गया। पर भारत की यह स्तब्धता बहुत देर तक नहीं रही सारा राष्ट्र एक राष्ट्र पुरुष के रूप में उठ खड़ा हुआ।

यह ठीक है कि उस समय सारे राष्ट्र ने जी जान से राष्ट्र रक्षा के महायज्ञ में आहुतियां डालीं परन्तु पंजाब की जनता ने दूसरी रक्षा पंक्ति के रूप में और इसके जुझारू सूरमाओं ने नेफा और लद्दाख के दुर्गम क्षेत्रों में जिस अप्रतिम शौर्य विलक्षण साहसिकता और उदात्त देशभक्ति का परिचय दिया उसका अन्यत्र उदाहरण मिलना असंभव है। परमवीर चक्र विजेता सर्वश्री धनसिंह थापा और जोगिन्दर सिंह, शहीद ब्रिगेडियर होशियार सिंह एवं सिंह शावक केवलसिंह जैसे शतशः सूरमाओं की कीर्ति कथा भारत के इतिहास में सर्वदा स्मरणीय और अनुकरणीय रहेगी। पंजाब के इस अप्रतिम साहस समर्पित कर्त्तव्यपरायणता और उद्दाम देशभक्ति को देखकर भारत के यशस्वी सेनापति श्री जयन्तनाथ चौधरी ने कहा था कि पंजाब के लोगों ने जिस कार्य क्षमता का परिचय दिया उसने स्टालिन ग्राड के समरांगण में प्रदर्शित रूसियों की यशोगाथा को भी धूमिल कर दिया है। ये हैं यशस्वी धरा पंजाब की कुछ झांकियां। धन्य है यह धरा और धन्य हैं इसके निवासी।

किसी कवि ने इस धरा के वीरों को संकेत करते हुए कहा—

झूम झूम कर आई पावन वेला है बलिदान की।
ओ भारत के वीर लगादो, बाजी अपनी जान की॥

पहले जरा आप मुस्कराइये

—जयप्रकाश
गु० कु० भैंसवाल

राम – (एक आदमी से) देखो साहब वह आदमी मेरे भाई को कितनी निर्दयता से पीट रहा है।

आदमी — तुमने पहले क्यों नहीं बताया ?

राम— क्योंकि पहले मेरा भाई उसे पीट रहा था।

× × ×

बिट्टु— मम्मी मैं स्कूल नहीं जाता।

मम्मी— क्यों नहीं जाता बेटे।

बिट्टु— क्योंकि मास्टर जी ने तो 5×4 = 20 बताये थे। लेकिन गणित में 10×2 = 20 लिखा है।

× × ×

एक युवक अपनी स्त्री को अपनी ससुराल से लेकर आ रहा था और रेलगाड़ी से जाना था और टिकट एक-एक मिल रही थी तो उसकी स्त्री टिकट लेने के लिए आगे थी और युवक पीछे था। स्त्री ने टिकट बांटने वाले से कहा—बाबू जी टिकट देना। उसे टिकट मिल गई। फ़िर युवक बोला–टिकट देना ससुर जी। टिकट बांटने वाला बोला – अबे क्या बकता है। युवक—जब तू मेरी स्त्री का बाबू लगा तो मेरा ससुर नहीं लगेगा ?

× × ×

एक बार एक साधु कहीं से जा रहा था। रास्ते में एक युवक खड़ा-खड़ा पेशाब कर रहा था। साधु बोला—बच्चा खड़ा-खड़ा पेशाब क्यों कर रहा है। उसका मित्र बोला—बाबा जी यह बी. एड. है। साधु बोला— तो फिर कुत्ता एम. ए. और गधा डबल एम. ए. होगा।

× × ×

एक बार एक औरत आटा पीस रही थी और उसके पास एक पढ़ी लिखी औरत बातें कर रही थी। जो आटा पीस रही थी उसका एक बच्चा ऊंघता हुआ आया और बोला—मां पेशाब करूंगा। तो पढ़ी लिखी औरत बोली—यह क्या परमिट काटेगी मोरी में पेशाब कर आ।

योग मार्ग

—आचार्य विष्णु मित्र

(चौथी किश्त)

साधनों से ही समाधि की सिद्धि होती है। सिद्धि को प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के उपाय किए जाते है। आसुरी साधन भी अपनाए जाते हैं। परन्तु यह बात सदा स्मरण रखिए आसुरी साधनों से आसुरी समाधि ही प्राप्त हो सकती है अतः साधना या साधन सदा दैवी ही अपनाने चाहिएं।

समाधि की सिद्धि के लिए तपस्वी, स्वाध्यायशील तथा ईश्वर के प्रति अर्पण की भावना वाला होना चाहिए। इसको इस प्रकार समझिए तपस्वी भी आज संसार में अनेक प्रकार के हैं। उलटी-सुलटी तपस्या करके लोग अपने को तपस्वी सिद्ध करना चाहते हैं। ऐसे तपस्वियों की पूजा चाहे जनता करने लगे परन्तु उन तपस्वियों को किसी भी प्रकार का शांति लाभ नहीं होता है। जिस कार्य के करने से स्वयं को भी शांति तथा सुख उपलब्ध न हो तो वह किस काम का है।

उत्तम कार्य को करने का दृढ़ निश्चय तप कहलाता है। आपने निश्चय किया है कि आप सच बोलेंगे, आप सदा ईमानदार रहेंगे, किसी प्रकार भी किसी प्राणी को कष्ट न देंगे, इन्द्रिय जयी रहेंगे, मन, वचन को पवित्र रखेंगे, दूसरे के धन को अनुचित प्रकार से कभी भी ग्रहण न करेंगे। जो काम आपको करने के लिए दिया गया है उसके करने में कभी भी शिथिलता न करेंगे इत्यादि कार्य सब तप में सम्मिलित किये जाते है। ऐसे कामों को जो स्थिरता से करता है वह तपस्वी कहलाता है।

स्वाध्याय से अभिप्राय है अपने को पढ़ना, आत्मनिरीक्षण करना, अपनी कमियों को देख उनको दूर करना। या उत्तम योग सम्बन्धी तथा वैदिक ग्रन्थों का अवलोकन करना।

जब तक मनुष्य में आत्म निरीक्षण की भावना नहीं आती है तब तक वह महान् नहीं बन पाता है। संसार में जिन्होंने अपने जीवन को उदात्त बनाया है वे सब स्वाध्यायशील रहे हैं।

ईश्वर प्रणिधान से तात्पर्य है ईश्वर को सदा अर्पण रहना। जब मानव मन, वचन, कर्म से ईश्वर को अर्पण होके कर्म में प्रवृत्त होता है तब उसका मार्ग दर्शन प्रभु स्वयं कराते हैं। बड़े-बड़े महात्माओं के मार्ग का अनुसरण जनता इसी लिए करती है क्योंकि वे महात्मा लोग प्रभु को अर्पण होके कार्य करते हैं। प्रभु में अर्पण होने से प्रभु का बतलाया मार्ग ही महात्माओं का मार्ग होता है।

पत्नी पति के लिए अर्पित होती है तभी तो पति-पत्नी का प्रेम होता है। छोटा बालक माता को अर्पित होता है अतः माता उसका ध्यान रखती है। इसी प्रकार प्रभु को अर्पित होकर काम करने वाले को संभालने का उत्तर दायित्व भी प्रभु पर ही हो जाता है। यदि वह आत्म-दर्शन या प्रभु-दर्शन की इच्छा करता है तो उसे आत्म-दर्शन तथा प्रभु-दर्शन होता है।

जो प्रभु को अपना सर्वे सर्वा दिल से मान कर काम करता है उसकी सब शुभ इच्छाओं को प्रभु पूरा करते हैं।

अतः जो मनुष्य समाधि का इच्छुक है उसका कर्त्तव्य है वह तपस्वी बने, स्वाध्याय-शील बने, ईश्वरार्पण होके काम करे।

स्वाध्यायशील होने से, तपस्वी होने से, ईश्वरार्पण होने से विचार शुद्धि होती है। विचार शुद्धि से मानव आत्मदर्शनाभिलाषी होता है। आत्मदर्शनाभिलाषी समाधि की ओर अग्रेसर होता है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश नामक जो क्लेश हैं उन से मानव का छुटकारा होता है।

अनित्य, अपवित्र, दुःख-ग्रस्त वस्तु को नित्य, पवित्र, सुखपूर्ण मानने का नाम अविद्या है।

जब मनुष्य साधना से यह जान लेता है कि यह शरीर अनित्य है, अपवित्र है, दुःखों से पूर्ण है तब वह क्लेश से मुक्त हो जाता है। वह नित्य आत्मा की शरण में जाता है।

शरीर तथा आत्मा को एक मानना अस्मिता नामक क्लेश है। जब तक शरीर तथा आत्मा को एक वस्तु स्वीकार किया जाता है तब तक क्लेश से छुटकारा नहीं होता है।

तपस्या, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान से मानव की विचार शुद्धि होती है तब उसे पता लगता है कि शरीर मेरी गाड़ी है, मैं तो आत्मा हूं। मेरा इससे इतना ही सम्बन्ध है कि मैं इससे काम ले सकूं। इस अभ्यास को बढ़ाने से शरीर का मोह कम होने लगता है। मोह नाम ही क्लेश है। मोह की निवृत्ति ही क्लेश की निवृत्ति है। इन्द्रियों के सुख को

ही सब कुछ मानकर उसको पूर्ण करने के लिए दिन-रात लगे रहना क्लेश है। इन्द्रियों के द्वारा जो भोग भोगे जाते हैं, वे भोग ही अन्त में क्लेशदायी होते हैं। विचार पूर्वक जब यह समझ लिया जाता है कि इन्द्रियों के सुख अस्थायी हैं तो उनके द्वारा भोगे जाने वाले भोगों की निवृत्ति हो जाती है। भोग प्रवृत्ति दुःख है तथा भोग निवृत्ति सुख है।

जिस वस्तु की प्राप्ति में जो रुकावट होती है, वह रुकावट द्वेष का कारण बनती है। जब मनुष्य इन्द्रिय जन्म विषयों को सुख न मानकर द्वेष मानने लगता है तब द्वेषरूपी क्लेश की निवृत्ति होती है।

मृत्यु भी क्लेश है। जीवन का मोह मानव को है। जब शरीर छुटने का अवसर आता है तो मृत्यु क्लेश मानव को दुःखी करता है। मनुष्य सोचता है कि ऐसा न हो जावे कि मेरी मृत्यु हो जावे। उस काल मृत्यु मानव को क्लेश रूप प्रतीत होती है।

जब आत्म निरीक्षण आदि साधनों से यह निश्चय कर लिया जाता है कि शरीर और आत्मा के संयोग का नाम जीवन है, शरीर तथा आत्मा के वियोग का नाम मृत्यु है। यह सब स्वाभाविक है। शरीर का आत्मा के साथ योग भी होगा और वियोग भी होगा। जो काम होना है, उसको कोई नहीं रोक सकता है। तब इस प्रकार के विचारों से मृत्यु का क्लेश भी दूर हो जाता है।

जो-जो क्लेश जिस-जिस स्थान से उत्पन्न होता है उस-उस उत्पत्ति के स्थान में हेय की भावना करने से वह क्लेश कम होने लगता है।

अविद्या के उत्पत्ति स्थानों की ठीक प्रकार से जांच पड़ताल करने से उस-उस स्थान की प्रसव-भूमि को बंजड़ बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। जिस प्रकार भूमि के बंजड़ हो जाने से बीज उसमें नहीं उगता है इसी प्रकार भोगों की प्रसव भूमि को विचारों के द्वारा बंजड़ बनाने से वहां पर भोग के विचार नहींउगते। भोग के विचारों के न उगने से स्वयं ही क्लेश की निवृत्ति होने लगती है।

इसके बाद पुनः निरीक्षण करे कि कहीं से किसी रूप में उसे क्लेश वृत्तियां दुःखी तो नहीं कर रहीं हैं? ये सब आत्म निरीक्षण आदि के द्वारा ही देखा जाता है। जब आत्म निरीक्षण, तपस्या, ईश्वरार्पण के भाव बद्ध मूल हो जाते हैं तब सब क्लेशों की निवृत्ति होने लगती है।

जिस प्रकार जड़ के कारण वृक्ष हरा-भरा रहता है, उसकी जड़ को काट देने से वृक्ष भी सूख जाता है, इसी प्रकार वासनायें ही क्लेशों का मूल कारण होती हैं।

जब तक वासनायें बनी रहेंगी तब तक क्लेशों की निवृत्ति नहीं हो सकती है। यह वासना ही इस जन्म में तथा आगे आने वाले जन्मों में घूमती रहती है। यह वासना इस प्रकार से लिपट जाती है कि छुटकारा पाने की इच्छा होने पर भी मानव का छुटकारा नहीं होने देती है।

वासनाओं के कारण ही मानव को मनुष्य, पशु, पक्षी आदि की योनियों में भ्रमण करना पड़ता है। जिस जाति में उसका जन्म होता है उसे उस जाति की आयु तथा उस जाति के भोग भोगने पड़ते हैं। जिस प्रकार रज्जु से बन्धी वस्तु रज्जु को खींचने के साथ साथ में ही खिची चली आती है, इसी प्रकार वासना रूपी रज्जु जीवों को अनेक जन्मों में भ्रमण कराती है।

जिस प्राणी की जैसी वासनायें होंगी तदनुसार ही वे वासनायें उसको उस उस जाति में उस उस भोग को भुगताने के लिये खींच कर ले जावेंगी। माँस भक्षी की वासनायें उसे हिंस्र प्राणी सिंह, वृक आदि बनायेंगी।

संसार में पाप कर्म करने से उनका फल शोकदायक होगा। धर्म के कार्य करने से हर्ष प्राप्ति होगा। पापी को सदा दुःख मिलेगा। धर्मात्मा सदा सुख प्राप्त करेंगे।

कुछ लोगों का विचार है कि कई बार धर्मात्मा मनुष्य दुःख प्राप्त करते देखे गये हैं तथा पापात्मा सुख भोगते दृष्टिगत होते हैं।

इस पर यदि गहनता से विचार करेंगे तो ज्ञात होगा, यहां भी कर्मानुसार व्यवस्था है। धर्मात्मा किसी जन्म में किये गये पापों को भोग रहा है। पापी किसी जन्म में किये गये शुभ कर्मों का फल सुख भोग रहा है। आप यह कभी नहीं मानें कि पाप से सुख होता है तथा धर्म से दुःख होता है।

पापात्मा सुख भोगता हुआ भी मन की शांति को प्राप्त नहीं करता है। धर्मात्मा दुःख भोगता हुआ भी शांति अनुभव करता है। यह सब धर्म का प्रभाव है।

अतः यह सदा निश्चय जानिये कि पुण्य से सुख तथा अपुण्य से दुःख होता है।

(क्रमशः)

"गौरवमयं भारतवर्षम्"

—यशपाल सिंह
गुरुकुल भैंसवाल

प्रकृतिः जीवनोपयोगिनि सर्वाणि वस्तुनि जनेभ्यः उदारमनसा निर्मापयांमास। विशेषतश्च भारतीयेभ्यः। प्राचीनकाले कृषकेभ्यः अल्पीयसैव श्रमेण प्रचुरं धनं लभ्यते स्म। अस्य देशस्य वनेषु तटीय भागेषु च बहवः ग्रामाः अधिवसितुं शक्ताः आसन्। न केवलं धनिकानां पार्श्वे एव पशवः आसन्, अपितु ऋषयोऽपि गाः रक्षन्ति स्म। खनिजांगारः स्वर्णम् अयः प्रभृतयः खनिजाः खनिषु प्राप्यन्ते स्म। रत्नाकरः रत्नानि ददाति स्म। भारतवर्षस्य जलवायुः जीवनोपयोगिनीं सुविधां प्रच्छति, किन्तु उत्पत्ति; भोगविलासितायाः सर्वाणि साधनानि प्रस्तुती करोति। अनया दशया एकतः दृष्टिकोणतः तु भारतीयाः सन्यासिनः दृश्यन्ते अन्यतश्च भोग विलासलिप्ताः सम्राजः।

प्राचीनं भारतवर्षं धार्मिक सहिष्णुतायै विख्यातः आसीत्। परन्तु अधुना तु भारतवर्षस्यान्य देव चित्रमवलोक्यते। सर्वे एव जनाः दुःखिनः सन्ति। न कोऽपि प्रसन्नः दृश्यते। अस्याः हीनतायाः एकमेव कारणम्। सच "चरित्राह्लास" इति नाम्ना ख्यातः। चरित्रमेव लब्ध्वा वयं सुखेन जीवितुं समर्थाः। वयं तदैव सुखिनो भवितुं समर्थाः यदा मानवस्य मानव-शोषण-वृत्तिरपनीयते, नान्यथा। शोषणस्यायं प्रभावः यत् क्वचित् प्राचुर्यस्यातिशयः अन्यत्र दारिद्रयस्य नग्न-नृत्यं दरीदृश्यते। मानवैः कथं शोषणवृत्ति हीनैः भाव्यमिति प्रश्न ? एतस्मै प्रयोजनाय जनानां बुद्धि शुद्धिः करणीया। सर्वे वयं भ्रातरः। सर्वेषामस्माकं पिता ईश्वरः। स सर्वेषां सुखमिच्छति। यः कश्चिद परेषां सुखाय यतते, स ईश्वरमेव प्रसन्नं करोति। स्वकर्मणा "इति शुद्ध बुद्धेः स्वरूपम्। अपरेषां विपत्ति दुःखा दीनां विचारं येन कुर्वन्ति ते पापभाजा एव ईश्वरस्य कोपभाजनं भवन्ति। इयं धार्मिक भावना भागवतधर्मे सविशेषं प्रतिपादिता। अनया भावनया सभूतस्यैकी करणं सम्भवति, राष्ट्रस्यै कमुखत्वं जायते, राष्ट्रबलं वर्धते, कर्मयोगश्च सम्पद्यते।

अपरं च इमे तपस्विनो ग्रामवासिनः सर्वदाऽभ्युदयरहिता वर्तन्ते। तेषां व्यक्तित्वस्य विकासः करणीयः। सुसंस्कृतम् भवतु तेषां व्यक्तित्वम्। जीवनस्योद्देश्यं प्रति जागरुकता

व्यक्तित्व विकास्य प्रथमं लक्षणम् । उद्देश्यं तु इह लोके शांतिमयं जीवनं. मरणान्ते च स्वर्गप्राप्तिः मोक्षो वा । शांतिमयं जीवनं मैत्रीभावेनाल्प व्ययेनार्जवेन च निष्पद्यते । भोगविलासादीनां प्रवृत्तिः वस्तुतः दुःखमयी एव भवति । यद्यपि अहङ्कार विमूढ़ः न तथा प्रत्येति । अयमेव महाजनानां मार्गः । इममनुसृत्य भवानपि सुखी भवतु लोके परलोके स्वर्ग प्राप्तये धर्मपथ एव सोपानं वर्तते । धर्माचरणेन इह लोकेऽपि सुखं जायते । धर्मस्य तत्वं ग्राम्यभाषायां सरल विधिना सर्वान् ग्राम जनान् बोधयितव्यम् । पुरा महर्षयः आचार्यश्च न केवलं विदुषां कृतेऽपितु ग्राम्याणां कृतेऽपि उपदेशित वन्तः । मोक्षस्य मार्गोऽपि तादृश एव वर्तते । ज्ञानेन तपसा च मोक्षो भवति । प्रतिदिनं स्वकार्येभ्यो विश्रान्तः जनः स्वाध्यायं कृत्वा मोक्षानुकूलं ज्ञानं प्राप्नोतु ।

स्वप्नधीगम्ये भारते चतुर्णामाश्रमाणाँ सम्यक् प्रतिष्ठा वर्तताम् । ये केचित् स्वव्यक्तित्वस्य सर्वोच्चविकासं वान्छन्ति ते वानप्रस्थसंन्यास पथं गृहीत्वा सर्वान् व कुर्वन्तु । तदैव भारतीयानां भारतीयता सफलीभवितुमर्हति । तदा एवच गांधिमहोयेन "राम राज्य" नाम्ना प्रकीर्तितः देशः भारतवर्षम् पुनः उत्थानं लप्स्यते ।

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनोपत) के स्नातकों

से

❀ निवेदन ❀

प्रिय स्नातक बन्धुओ !

आपकी सेवा में निवेदन है कि मैं राजकीय सेवा में नियुक्ति होने के कारण 19-10-74 को जाट कालेज, हिसार से राजकीय महाविद्यालय, नारनौल में आ गया हूं । अतः आप भविष्य में पत्र व्यवहार नवीन पते पर ही करें । जिन बन्धुओं ने 'स्नातक परिचय-पुस्तिका' निमित्त प्रपत्र भर कर नहीं भेजे हैं, वे भी इसी पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेज दें । भविष्य में भी किसी प्रकार के परिवर्तन की सूचना आपको इसी माध्यम से दे दी जाएगी ।

आपका बन्धु :

प्रकाशवीर एम० ए०

मन्त्री (स्नातक-संघ)

राजकीय महाविद्यालय नारनौल ।

तिथि 17-11-74

या मेधाँ देवगणाः पितरश्चो उपासते ।
त्वया मामद्य मेधया अग्ने मेधा विन कुरु ॥

—कर्ण सिंह
गुरुकुल भैंसवाल

★

दोहा— जीव शरीर के पाप से, रहें स्थावर अङ्ग
वाणी से पक्षी बने, मन से कीट पतङ्ग
चौरासी के चक्र में गये बहुत युग बीत
बिन कृपा भगवान् की कभी ना होवे जीत

कवित्त— असंख्य युग कल्प बीत गये बहा फिरे माया के नाल ।

(१)

तेरे से चेतनता पाकर नये-नये रोपे है जाल
काम क्रोध मद् लोभ शोक भय ये करते हैं बुरा हवाल
राग द्वेष दो योद्धा भारी तीन तापकी चमके भाल
वेद कहे निष्काम ओ३म् जप जन्म मरण दुःख छूटें बवाल ।

(२)

जिन पर कृपा होय भगवान् की, उनका हाल सुनो अब सारा
नर तन पाय मोक्ष की इच्छा, सन्त जनों का मिलना सहारा
छोटी सी यह बात नहीं है, पुण्य हुआ उस जीव से भारा
चौरासो की डगर रहै ना, कर्मों से मिलजा छुटकारा

(३)

श्रद्धा भक्ति का ले ले आश्रय जो चाहता है मोक्ष द्वारा
ध्यान योग में स्थिर होकर हो जायेगा भवसागर पारा
बेगमपुर में जाय बसेगा पांच तीन से होकर न्यारा
जन्म मरण की फांसी कट जाये क्यों घूमता मारा-मारा

(४)

पिता का ऋण दे देता है जो सन्तति है भाग्यवान्
भव बन्धन के छुड़ाने को आपसे भिन्न मतना जान
तीन ताप से कष्ट मिटेगा अपार ब्रह्म से ला ले ध्यान
आठों साधन साध योग के तब हो जायेगा कल्याण

(५)

ईश उपाधि महा तत्वादि कारण रूपा माया बताई
जीव उपाधि कार्य्य रूपा पांच कोष दीन्हें दर्शाई
इन दोनों का बोध होवेगा आपमें आप जाय समाई
जीव ईश का भेद रहै ना पूर्ण ब्रह्म दर्श हो जाई

कवित्त—

जिसने देवा कहे वेद में उनका ऐसे व्याख्यान
आठ वसु ग्यारह रुद्र बारह आदित्य लो जान
इन्द्र प्रजापति गिनाये यह सब सुनना करके कान
मात पिता गुरु अतिथि सबके ऊपर है भगवान्
पाँचों की पूजा बतलाई है 33 सों का चाहिये ज्ञान
विद्वानों के देव सही ये मूर्ख पुजवाते पाषाण
योगीराम निस्काम ओ३म् भजले यदि चाहता है कल्याण ।

कवित्त--
(अवतार)

अग्नि आदित्य अंगिरा वायु वेदों का कर गये उद्गार
ब्रह्मा विष्णु महादेव भी चले श्रुति के अनुसार

(६)

वेद विरोधि हिरण्यकशिपु था नरसिंह ने दीन्हां मार
धर्म के कारण राम कृष्ण जी भार गए भूमि का तार
बुद्ध शंकर दयानन्द जी भारत का कर गये सुधार
महापुरुष युग-युग में होते ईश्वर नहीं लेता अवतार
योगीराम नित्य ओ३म् जपाकर यही जगत् में है इक सार ।

(७)

पच्चीस वर्ष रहे ब्रह्मचारी बल बुद्धि का तेज बढ़ावें
पच्चीस वर्ष गृहस्थी बनकर पांचों यज्ञ करे सुख पावें
पच्चीस वर्ष वानप्रस्थ साधके शम दम से मन स्थिर हो जावें
पच्चीस वर्ष संन्यास करें फिर अमृतपद में जाय समावें

(८)

जागृत स्वप्न सुषुप्ति तीनों का साक्षी है यह निगम कहा है
जीव ईश और प्रकृति के अन्तर बाहर यह व्याप रहा है
इशति भ्यांति प्रिय सिंधु नाम रूप से दूर गया है
जिनपै दया हुई सन्तों की उन सन्तों ने यह स्वरूप लहा है

(९)

सावित्री सति अपने सत् से उजड़े घर को फिर बसा गयी
सुकन्या ने करी तपस्या वृद्ध पति का रोग नशा गयी
अनसूया अपने तप से आत्रेय नाम की गंग रसा गयी
सती सुलोचना राम दलों से अपने पति के सिर को ला गयी

(१०)

नहुष स्वर्ग से गिरा दिया था भस्मासुर की भस्म बनायी
कुटुम्ब सहित रावण भी मर गया वन में सीता जाय चुराई
106 कीचक भी खपे थे एक चिता में गई आग जलायी
किन-किन के अब नाम गिनाऊं बड़े-बड़े गये भोग तबाही

कविता— सन्त समागम सम सुख नाहीं - कष्ट रहें तंगी में अपारा

(११)

निन्दा का बड़ा पाप कहा है - धर्म बताया परोपकारा
सन्त रहें पर सुख राजी - पर दुःख में राजी हत्यारा
नर शरीर सम और नहीं है - चौरासी का ये सरदारा
नर तन पा के ओ३म् भजे ना - उस जीवन को सौ धिक्कारा

कविता-- सोलह कला कही ईश्वर से प्राण श्रद्धा सत्य विश्वास

(१२)

पांचों तत्त्व मन मन्त्र अन्न से वीर्य्य का प्रकाश
तप और कर्म हुए मिल पन्द्रह सोलह कहा धर्म का वास
प्रश्न उपनिषद् का लेख ये छटा अध्याय करता पास

नारद के प्रश्नों का उत्तर सन्त कुमार द्वारा

(१३)

जो विद्या ली सीख आज तक उसका सच्चा सुनो बयान
ऋग् यर्जु अथर्व देखा साम वेद में लाया ध्यान
आर्यु धर्नु और अर्थ समझ गया - गंधर्व का मैंने पूर्ण ज्ञान
सांख्य शास्त्र न्याय शास्त्र योग शास्त्र लीन्हा जान
वेदान्त मीमांसा पढ़ा वैसेसिक आत्म की हुई ना पहचान
दया करो गुरु भेद खोलदो जब मेरा होवे कल्याण

राष्ट्र भाषा हिन्दी

ब्र० जगवीर सिंह आर्य
गुरुकुल भैंसवाल

प्रत्येक स्वाधीन राष्ट्र की अपनी भाषा होती है। जिस राष्ट्र में अपनी भाषा का सम्मान नहीं होता, उसकी संस्कृति व सभ्यता नष्ट हो जाती है। जो देश अपनी भाषा होते हुए भी दूसरे देश की भाषा पर आश्रित रहता है, उसकी संस्कृति कभी भी समृद्ध नहीं हो सकती। वह देश स्वाधीन होते हुए भी मानसिक रूप से परतन्त्र होता है। भारत में अधिकतर लोग हिन्दी के माध्यम से ही व्यवहार करते हैं। और वे भी जो अंग्रेजी अथवा प्रान्तीय भाषाओं में व्यवहार करते हैं। प्रायः हिन्दी के जानकार अवश्य हैं। विश्व में जनसंख्या के आधार पर बोली जाने वाली भाषाओं में से हिन्दी का चतुर्थ स्थान है। अभिव्यक्ति की पूर्णता, लिपि की सुगमता, शिक्षा में सरलता एवं शब्द रचना विधान की उर्वरता की दृष्टि से इसका स्थान विश्व भाषाओं में प्रथम होना चाहिए।

अंग्रेजी भारत की भाषा नहीं हो सकती क्योंकि वह अखिल भारत की सम्पर्क भारती नहीं हैं। दो सौ वर्ष तक अंग्रेजी सत्ता के बल पर प्रचारित की हुई यह भाषा मुश्किल से दस प्रतिशत की भाषा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूर्ण करती है। अधिकतर लोग आज भी न इसे जानते हैं और न इसके साथ उनका अनिवार्य सम्बन्ध है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राकृत और पाली की कालकम से परिवर्तित होती हुई शृंखला भाषा है। इसलिए सहस्रों वर्षों के भारतीय इतिहास धर्म और संस्कृति इस भाषा में लिखी हुई है। इसके विस्मरण का अर्थ होगा अपने आपको भूल जाना। कोई राष्ट्र अपने गौरवपूर्ण अतीत को भुलाकर प्रगति नहीं कर सकता। वर्तमान का महल भूतकाल की नींव पर खड़ा है। जिन लोगों ने अपनी वेशभूषा व भाषा बदल कर आंग्ल परिधान एवं भाषा को अङ्गीकार किया है, उनसे पूछिये—वे क्या हैं ? किस

निधि से वे गौरवान्वित हैं ? क्या मकान, दुकान, रुपया, डालर अथवा पौण्ड के सिक्कों से ? नहीं, मनुष्य का गौरव उसका सच्चरित्र है। चरित्र का परम्परा से प्राप्त चिरन्तन अभिलेख शास्त्रों में है। और शास्त्र राष्ट्र की अपनी भाषा में सुरक्षित है।

वस्त्र का अञ्चल पकड़ने से सारा वस्त्र हाथ में आ जाता है। इसी प्रकार भाषा के साथ आचार, व्यवहार, धर्म और संस्कृति सभी आते हैं। जब अपनी भाषा विद्यमान है तो विदेशी भाषा दासता भरी भाषा को अपनाना उचित कैसे है ? जिस दिन भारतीय संस्कृति व हिन्दी में बोलने का गर्व अनुभव करेंगे उसी दिन पूर्ण स्वतन्त्रता मिली समझी जायेगी। हिन्दी के महान् कवि भारतेन्दु कहते हैं—"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।" वास्तविकता यह है कि अपनी भाषा में हमारे संस्कार बोलते हैं। हमारी संस्कृति सहज ही अभिव्यक्त होती है।

आज भारतीय सरकार हिन्दी को पहले की अपेक्षा अधिक प्रयुक्त कर रही है। हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री बंसीलाल के हिन्दी के प्रति उठाए गए कदम सराहनीय हैं। वैसे संविधान के अनुसार तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा ही स्वीकार किया गया है, किन्तु उसे सही व्यवहार में नहीं लाया गया है।

सरकार एवं जनता का कर्त्तव्य है कि वे अपना व्यवहार जहां तक हो सके, हिन्दी में ही करें।

"देवनागरी की गागर में किस दिन हम सब सुधा भरेंगे।
भेदभाव को भूल, सुखों की वैतरणी पर साथ तिरेंगे॥

विश्ववन्दनीय श्री श्री १००८ भगवान् महावीर स्वामी
२५०० वाँ निर्वाण महोत्सव

दीपावली १९७४ से दीपावली १९७५ के उपलक्ष में
मानव महावीर से भगवान् महावीर

तथा उनके सिद्धान्त, सन्देश एवं उनकी मानवता

[भगवान् महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव समिति,
रोहतक हरियाणा के सौजन्य से]

महावीर वचनामृत

★

* जरा और मरण के वेग वाले प्रवाह में जीवों के लिये धर्म ही एक मात्र द्वीप, प्रतिष्ठा, गति और उत्तम शरण है।

* ज्ञानी होने का सार यही है, कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

* जो भाषा कठोर हो, दूसरों को भारी दु:ख पहुँचाने वाली हो, वह चाहे सत्य ही क्यों न हो, नहीं बोलनी चाहिये।

आज से अढ़ाई हजार (2500) वर्ष पूर्व भारत में प्रादेशिक जनतन्त्र वैशाली का शासक चेटक था। इसी वैशाली के कुण्डपुर नामक ग्राम के गण राजा सिद्धार्थ के साथ चेटक की बहिन त्रिशला का पाणि ग्रहण हुआ था। राजा सिद्धार्थ और त्रिशला दोनों क्षत्रीय कुल के अलङ्कार थे और परम्परा से भगवान् पाशर्व-नाथ के अनुयायी थे। जब महावीर त्रिशला के गर्भ में थे तो त्रिशला ने चौदह स्वपन देखे थे जिनका फलितार्थ ज्योतिष के पण्डितों ने बताया कि:—

"सिद्धार्थ के घर एक ऐसा कुल दीपक तेजस्वी पुत्र जन्म लेगा जो अपने जीवन की गौरव गरिमा से और ज्ञान के महाप्रकाश से विश्व के रङ्गमंच को प्रकाशित करता हुआ मानव जगत् का कल्याण करेगा।"

ईसा से 599 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन क्षत्राणी त्रिशला ने जिस पुत्र रत्न को जन्म दिया वही थे हमारे मानव महावीर। पुत्र के जन्म से कुल की सुख स्मृद्धि और मान प्रतिष्ठा अनेक रूपों में बढ़ी और इसी वृद्धि के कारण माता-पिता ने नवजात पुत्र का नाम वर्धमान रखा।

कहते हैं कि भावी मानवों के लक्षण बचपन में ही अंकुरित होते हुए दिखाई देते हैं। यही कारण था कि वर्धमान राजकुमार होते हुए भी राजकीय वैभव की ओर आकर्षित होते प्रतीत नहीं

होते थे। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान ज्यों-ज्यों वर्धमान बढ़ते जाते थे त्यों-त्यों उनकी बीरता, योग्यता एवं ज्ञान गरिमा का परिचय परिजन एवं पौरजनों को होता जाता था। बहुत छोटी अवस्था में ही वर्धमान ने अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। लोग उनकी योग्यता और प्रतिभा पर चकित हो जाते थे।

वर्धमान से वह महावीर कैसे बने ? इस पर अनेक किंवदन्तियां प्रचलित हैं। एक किंवदन्ती के अनुसार एक बार जब वर्धमान अपने सङ्गी साथियों के साथ एक वृक्ष के समीप खेल रहे थे तो उन्होंने वृक्ष के साथ एक भयङ्कर सर्प को फुङ्कारते हुए देखा। सब साथी भयभीत होकर भागने लगे किन्तु वर्धमान ने नागराज को निडरता से उठाकर सभी को सांत्वना दी। तबसे लोग वर्धमान को महावीर के नाम से पुकारने लगे। दूसरी किंवदन्ती के अनुसार वे इतने निर्भीक या निडर थे कि अत्यन्त साहसपूर्ण कार्यों को भी सुगमता से कर डालते थे।

संसार के बाह्य विषयों के जीतने में ही वीरता दिखाई नहीं देती। किन्तु सबसे बड़ी वीरता तो उनकी वह वीरता है जो उन्होंने सांसारिक द्वन्द्वों राग-द्वेष, वासना विकारों को जीतने में प्रकट की है। इस प्रकार के शत्रुओं पर महान् विजय के कारण ही वर्धमान महावीर के नाम से प्रख्यात हुए।

इसके पश्चात् आरम्भ हुआ विलासमय जीवन के साथ संघर्ष। जिस राज परिवार में उनका जन्म हुआ था उसका जीवन पूर्णरूपेण विलासमय था। किन्तु महावीर की आत्मा उस जीवन का अनुभव न कर सकी। उनकी अन्तरात्मा से पुकार उठने लगी "सच्चे सुख का मार्ग गृहस्थ जीवन नहीं है। यदि वैभव भोगविलास का जीवन सुखदायी होता तो संसार में पग-पग पर दुःख का अनुभव क्यों होता। कुछ भी हो मुझे इस दुःखमय जीवन से ऊपर उठना है और संसार को भी दुःखों से मुक्ति दिलवानी है। इसके लिए संसार का त्याग करूंगा। दूसरों पर राज्य करने की अपेक्षा मुझे अपने आप पर भी राज्य करना सीखना है।"

इस चिन्तन के परिणाम स्वरूप उन्होंने 30 वर्ष की अवस्था में ही राजपाट, ऐश्वर्य और धन धान्य सब कुछ त्याग दिया और कुण्डग्राम के समीप एक वन में जाकर जैन साधु की

* जागो ! समझते क्यों नहीं ? मृत्यु के बाद ज्ञान प्राप्त होना दुर्लभ है। बीती हुई रात्रियाँ नहीं लौटतीं और मनुष्यजन्म भी फिर मिलना सरल नहीं है।

* क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का नाश करता है, माया मित्रता का नाश करती है और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

* चावल और जौ आदि धान्यों तथा सुवर्ण और पशुओं से परिपूर्ण यह समस्त पृथ्वी भी लोभी मनुष्य को तृप्त कर सकने में असमर्थ है— यह जानकर संयम का ही आचरण करना चाहिए।

* काम-भोग शल्यरूप हैं, विष-रूप हैं और विषधर के समान हैं। काम-भोगों की लालसा रखने वाले प्राणी उन्हें प्राप्त किये बिना ही अतृप्त दशा में एक दिन दुर्गति को प्राप्त हो जाते हैं।

* आयुष्यमन् ! विवेक से चले, विवेक से खड़ा हो, विवेक से बैठे, विवेक से सोये, विवेक से भोजन करे और विवेक से ही बोले, तो पाप-कर्म नहीं बन्ध सकता ।

* जो सब जीवों को अपने समान समझता है, अपने-पराये, सब को समान दृष्टि से देखता है, जिसने सब आस्रवों का निरोध कर लिया है, जो चञ्चल इन्द्रियों का दमन कर चुका है, उसे पाप-कर्म का बन्ध नहीं होता ।

* सुनकर ही कल्याण का मार्ग जाना जाता है । सुनकर ही पाप का मार्ग जाना जाता है । दोनों ही मार्ग सुनकर जाने जाते हैं । बुद्धिमान् साधु का कर्त्तव्य है, कि पहले श्रवण करे और फिर जिससे कल्याण हो, उसका आचरण करे ।

* जो न तो जीव (चेतनतत्त्व) को जानता है, और न अजीव (तत्त्व) को जानता है, वह जीव-अजीव के स्वरूप को न जानने वाला साधु भला किस तरह संयम को जान सकेगा ?

दीक्षा ग्रहण की । आत्मबल प्राप्ति के लिए अपने निश्चय पर अटल रहने वाले महावीर ने अपने सब बान्धवों से नाता तोड़ दिया और इन्द्रीय दमन का मार्ग अपनाया । इस साधना के पथ पर उन्हें अनेक रोमांचकारी कष्ट सहन करने पड़े किन्तु वे तनिक भी विचलित नहीं हुए । वे केवलमात्र अकेले आत्मसाधना में तल्लीन हो गए । उनकी कष्ट सहिष्णुता, ब्रह्मचर्य का पालन, देह के प्रति अनासक्ति, जगत् जन्तुओं के प्राणघातक आक्रमण आदि अनेक घोर यातनायें किस को आश्चर्य चकित नहीं कर देती ! भारत-भूमि के रत्न, आत्म-मन्थन में लीन इस महावीर को संसार की कोई भी यातना आत्म-साधना से विचलित करने वाली नहीं थी ।

13 वर्ष तक इस प्रकार के अनेक कष्टों को सहन करके महावीर ने राजग्रह प्रदेश के जम्बीय ग्राम के समीप ऋजु बालिका नदी के किनारे एक खेत में शालवृक्ष के नीचे ध्यानमग्न अवस्था में उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई । पश्चात् कुछ जानना बाकी नहीं रह जाता । दूसरे शब्दों में वे सर्वज्ञता की स्थिति को प्राप्त हुए । इस प्रकार पहले वर्धमान फिर महावीर और अन्त में भगवान् महावीर के रूप में वे संसार में प्रख्यात हुए ।

सिद्धान्त और महावीर का सन्देश:—

केवल ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् महावीर ने विश्व कल्याण के लिए अपने प्रवचन देने आरम्भ किए । उनके उपदेश इतने रोचक एवं सारगर्भित होते थे कि जिन्हें सुनने के लिए भारत के अनेक प्रदेशों से सब जातियों के लोग बड़ी संख्या में आया करते थे । उनके उपदेश को सुनकर उनके शिष्यों की संख्या उत्तरोतर बढ़ती जाती थी । इन शिष्यों में मगध, कौशल, विदेह आदि प्रदेशों के विद्वान् ब्राह्मण थे जो बाद में जाकर उनके गणधर कहलाए । महावीर की सभाओं में जाति-पाति और ऊँच-नीच का भेद-भाव नहीं था । वहां निर्धन-धनाढ्य, राजा-रङ्क, पापी-पुण्यात्मा स्त्री और पुरुष समान भाव से मिलकर बैठते थे और उनके आत्म कल्याणकारी उपदेश सुनते थे :

भगवान् महावीर के प्रवचनों का मूलाधार अहिंसा एवं अनेकान्त था । इनको हम सिद्धान्त की कोटि में रखते हैं । भगवान् महावीर का कहना था कि आत्मोन्नति के लिए संयम, तप, त्याग परमावश्यक है । कर्मवाद को तो वे धर्म की आधारशिला मानते

थे। अपरिग्रह के प्रचार के द्वारा उन्होंने प्राणीमात्र को सुखी बनाने का प्रयत्न किया था। इसी प्रकार अनेकाँत के सिद्धान्त द्वारा वे संसार में सदा के लिए शांति स्थापित करने का उपदेश देते रहे।

जैन धर्म के सिद्धांत:—

सम्पूर्ण जैन दर्शन की आधारशिला अहिंसा और अनेकान्त के सिद्धांत हैं। हिंसा से निवृत्त होना ही अहिंसा कहलाता है। यह विचार पूर्ण रूप से तब तक समझ में नहीं आ सकता जब तक यह स्पष्ट न किया जाए कि हिंसा किस की होती है एवं हिंसा कौन और किस कारण से करता है तथा उनका परिणाम क्या है? इसी प्रश्न को स्पष्ट समझाने की दृष्टि से मुख्यतया चार विद्याएं जैन परम्परा में फलित हुई हैं।

1. आत्म-विद्या, 2.कर्म-विद्या, 3 चरित्र-विद्या, 4.लोक-विद्या। इसी प्रकार अनेकान्तवाद के सिद्धांत द्वारा मुख्यतया श्रुत-विद्या और प्रमाण-विद्या का निर्माण हुआ है। इस प्रकार अहिंसा अनेकान्त और तन मूलक विद्याएं ही जैन धर्म का प्राण हैं।

1- आत्म-विद्या:— प्रत्येक आत्मा चाहे वह पृथ्वीगत, जलगत या वनस्पतिगत हो या कीट, पतंगे, पशु-पक्षी या मानव रूप हो वह सात्विक दृष्टि से समान हैं। यही जैन आत्म-विद्या का सार है। इसे शुद्ध भाव से पालन करना ही अहिंसा है। सार रूप में जैसे हम अपने दु:ख का अनुभव करते हैं वैसे ही पर दु:ख का अनुभव करना चाहिए।

2- कर्म-विद्या:— इसके अनुसार अच्छा या बुरा कर्म करने में जीव स्वतन्त्र है। वही अपने वर्तमान और भविष्यत का निर्माता है। कर्मवाद कहता है कि बर्तमान का निर्माण भूत के आधार पर और भविष्यत् का निर्माण वर्तमान के आधार पर होता है। तीनों काल की पारस्परिक संगति कर्मवाद पर ही आधारित है। यही पुनर्जन्म के विचार का आधार है।

जैन परम्परा के अनुसार आत्मा प्रत्येक शरीर में अलग-अलग है। वह स्वयं शुभ-अशुभ कार्य का कर्त्ता और कर्म के फ़ल सुख-दु:ख आदि को भोगता है। वह जन्मान्तर के समय स्थानान्तर को जाता है और स्थूल देह के अनुसार संकोच, विस्तार धारण करता

* कोई भले ही नग्नावस्था में फिरे, या मास के अन्त में एक बार भोजन करे, परन्तु यदि वह मायावी है, तो उस को बार-बार गर्भवास प्राप्त होगा।

* सुबह-श्याम नहाने से यदि मोक्ष मिलता है, तो पानी में रहने वाले अनेक जीव मुक्त हो जाते।

* पानी पाप कर्मों को धो सकता हो, तो पुण्य कर्म भी धुल जाते। पानी से पाप धोने का सिद्धान्त मनोरथमात्र है।

* सिर मुन्डा लेने से कोई श्रमण नहीं होता। ॐ का जाप कर लेने से कोई ब्राह्मण नहीं होता। निर्जन वन में रहने से कोई मुनि नहीं होता। और कुशा के बने वस्त्र पहन लेने से कोई तपस्वी नहीं बनता।

है। यही मुक्ति पाता है और मुक्ति काल में सांसारिक सुख-दुःख ज्ञान-अज्ञान आदि शुभ-अशुभ कर्मों से सर्वथा छुट जाता है।

3- चरित्र विद्या:— चरित्र का कार्य जीवनगत विषमता के कारणों को दूर करना है जो जैन परिभाषा में सम्वर कहलाता है। विषमता के मूल कारण अज्ञान का निवारण, आत्मा की सम्यक् प्रतीति से होता है और राग-द्वेष जैसे क्लेशों का निवारण माध्यस्थ की सिद्धि से होता है। इसलिए आन्तर चरित्र में दो ही बात आती हैं। 1. आतम-ज्ञान, विवेक, ख्याति। 2 माध्यस्थ या राग-द्वेष आदि क्लेशों का जय, ध्यानव्रत, नेम तप आदि जो उपाय आन्तर चरित्र के पोषक होते हैं वे ही बाह्य चरित्र रूप से साधक के लिए उपादेय माने जाते हैं।

4- लोक-विद्या:— लोक-विद्या में लोक के स्वरूप का वर्णन है। जीव-चेतन अजीव-अचेतन या जड़ इन दो तत्वों का सहचार ही लोक है। ये दोनों चेतन और अचेतन तत्व न तो पैदा हुए और न ही कभी नाश होते हैं। संसार काल में चेतन को ऊपर अधिक प्रभाव डालने वाला द्रव्य एकमात्र जड़ परमाणु पुंज पुगदल है। जो नाना रूप से चेतन के सम्बन्ध में आता है और उसकी शक्तियों को परमादित भी करता है।

* जो सदा क्रोध, मान, माया, लोभ — इन सब का परित्याग करता है, जो ज्ञानी पुरुषों के वचनों का दृढ़ विश्वासी रहता है, सर्व परिग्रह का त्याग करता है, सांसारिक सम्बन्ध नहीं रखता, वह भिक्षु है।

* शरीर को नाव कहा है, और जीव को नाविक, तथा संसार को समुद्र बतलाया है। इसी संसार-समुद्र को महर्षिजन पार करते हैं।

महावीर की मानवता

भगवान् महावीर अपने समय के क्रांतिदर्शी जननायक थे। जनता जनार्दन की निष्काम भाव से सेवा करना यह अपना कर्त्तव्य मानते थे। एक बार उनके प्रमुख शिष्य इन्द्रभूति गौतम ने उनके चरणों में बैठकर कहा— 'भगवन्! एक प्रश्न मनको अशांत कर रहा है। आज्ञा हो तो पूछलूं।" भगवान् महावीर ने शांत मुद्रा में कहा — "गौतम! जो पूछना चाहते हो, निःसंकोच पूछ सकते हो।" गौतम ने पूछा— "भगवन्! दो व्यक्ति हैं उन में से एक आप की दिन-रात सेवा करता है। आपके नाम की माला फेरता है, आपकी स्तुती करता है, आपके दर्शन करता है और आपका प्रवचन सुनता है उसके आस पास अनेक प्राणी दुःखी हैं, पीड़ित हैं, दुःखों से कराह रहे हैं। वह आपका भक्त धनवान् है। चाहे तो उनकी सहायता कर सकता है। किन्तु वह आपकी सेवा में इतना तल्लीन है कि इन दीन-दुखियों की सेवा करने का उसके पास समय नहीं है।

दूसरा वह व्यक्ति है जिसके मनमें आपके प्रति श्रद्धा तो है परन्तु न तो वह आपके दर्शनों के लिए आता है। न ही आपके उपदेश को सुनने आता है क्योंकि दीन-दुखियों की सेवा में वह इतना तल्लीन है कि उसके पास आपके दर्शन करने का समय नहीं है। वह तो अपने हाथों से गरीबों के आंसू पोंछता है। रोगियों को औषधि देता है और सबके दुःख दर्द का साथी है। आपके इन दोनों प्रकार के भक्तों में सच्चा एवं श्रेष्ठ भक्त कौनसा है?"

भगवान् महावीर ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में इन्द्रभूति गौतम को उत्तर देते हुये कहा "गौतम! जो दीन-दुःखियों की सेवा करता है वही पुण्यवान् है तथा दोनों में श्रेष्ठ है।

❀ ओ३म् ❀

'शत हस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर ।'

सौ हाथों से बटोर, हजार हाथों से धर्मार्थ दान कर।

महर्षि दयानन्द की निर्वाणस्थली को खरीदने के लिए
तत्काल आर्थिक सहायता दीजिए।

अपील

महर्षि दयानन्द का देहावसान राजा साहब भिनाय की अजमेर स्थित कोठी में हुआ था। वह कोठी 'भिनाय हाउस' के नाम से प्रसिद्ध है। उक्त कोठी को राजा साहब भिनाय ने टुकड़े-टुकड़े करके विभिन्न व्यक्तियों के हाथ बेच दिया है। जिस कोठी को आर्यसमाज के हाथ में आकर महर्षि दयानन्द के अन्तर-राष्ट्रीय स्मारक के रूप में लोक-सेवा का केन्द्र बन जाना चाहिए था, वह अब खण्ड-खण्ड होकर विभिन्न व्यक्तियों के अधिकार में है और यदि उसे तत्काल आर्यसमाज की ओर से न खरीदा गया, तो वह शीघ्र ही विभिन्न व्यक्तियों के निवास गृहों के रूप में बदल जाएगी। फिर उसे देखकर कोई यह न कह सकेगा कि यही वह कोठी है जिस में आधुनिक भारत का निर्माण करने वाले महर्षि दयानन्द ने 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो,' यह कहकर अपनी जीवन-लीला समाप्त की थी। हम सब यह अनुभव करते हैं कि यदि ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति बन गई, तो यह आर्यसमाज के महान् संगठन के लिए घोर लज्जा की तथा प्रत्येक आर्य के लिए गहरे शोक की बात होगी।

अजमेर के एक छोटे से आर्यसमाज— आर्यसमाज नला बाजार ने आर्यसमाज एवं आर्य बन्धुओं को लज्जा एवं शोक की इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से बचाने का बीड़ा उठाया है। उसने संकल्प किया है कि उस कोठी को उसके समस्त स्वामियों से खरीद कर उसे महर्षि दयानन्द के स्थायी अन्तर-राष्ट्रीय स्मारक का रूप दिया जाए। उसने यह निश्चय ही नहीं किया है अपितु उसको क्रियान्वित करने की दिशा में पहला कदम भी उठा लिया है। उसने उस कोठी के महर्षि के देहावसान से सम्बद्ध अंश को उसके वर्तमान स्वामी से खरीदने का सौदा भी पक्का कर लिया है और तदर्थ दस हजार रुपये पेशगी भी दे दिए हैं। कोठी के मूल्य का शेष रुपया उसे छः सप्ताह के भीतर चुकाना है। यदि इस अवधि के भीतर कोठी का मूल्य न चुकाया जा सका, तो पेशगी दिया हुआ धन मारा जाएगा और उस कोठी के आर्यसमाज के हाथ में आने की समस्त सम्भावनायें सदा के लिए समाप्त हो जायेंगी।

आर्यसमाज नला बाजार ने इस गुरुतर कार्य को अपने दुर्बल कन्धों पर सम्पूर्ण आर्य जनता की उदार वित्तीय सहायता की आशा में ही उठा लिया है। उसे भिनाय कोठी के महर्षि सम्बद्ध अंश को आर्यसमाज के अधिकार में लाने के लिए तत्काल एक लाख रुपए की आवश्यकता है। हम प्रत्येक आर्यसमाज तथा प्रत्येक आर्य से अपील करते हैं कि वह अविलम्ब आर्यसमाज नला बाजार को अधिक से अधिक वित्तीय सहायता भेजे। कोई आर्यसमाज और कोई आर्य बन्धु ऐसा नहीं रहना चाहिए, जो इस पवित्र कार्य में अपना योगदान न दे। सभी आर्यसमाज सर्वोच्च प्राथमिकता देकर धन-संग्रह के कार्य में जुटपड़ें और क्रॉस्ड ड्राफ्ट से धन भेजते जायें। जिन आर्य बन्धुओं के पास धन मांगने वाला कोई व्यक्ति न पहुँच सके, वे सीधे ही अपनी सहायता मनीआर्डर से भेजने की कृपा करें। इस पते पर भेजा जाना चाहिये:—

आर्यसमाज नला बाजार, अजमेर (राज०)

धन-सग्रह का कार्य जोरों से आरम्भ हो चुका है। आप भी इस में जुट पड़िए। ध्यान रखिए कि अगला महर्षि-निर्वाणोत्सव भिनाय की कोठी में ही मनाना है अतः प्रयत्न में किसी भी प्रकार की ढील मत छोड़िये। हमें विश्वास है कि सम्पूर्ण आर्यजगत एक व्यक्ति की तरह आर्यसमाज नला बाजार के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़ा हो जाएगा।

योजना की रूपरेखा

अजमेर स्थित भिनाय हाउस को खरीद कर उसे महर्षि दयानन्द सरस्वती के अन्तर-राष्ट्रीय स्मारक का रूप देने की योजना तीन चरणों में पूर्ण की जाएगी। इस योजना की संक्षिप्त रूपरेखा निम्नलिखित है:—

प्रथम चरण— एक लाख रुपये एकत्रित करके भिनाय हाउस के महर्षि दयानन्द सरस्वती समबद्ध अंश को खरीदना, उसको 'महर्षि दयानन्द स्मारक भवन' नाम देना, उसके संचालन के लिए एक 21 सदस्यीय ट्रस्ट का निर्माण करना और उसमें जनता की सेवा के लिए एक वाचनालय तथा चिकित्सालय स्थापित करना।

द्वितीय चरण— पांच लाख रुपये एकत्रित करके पूरे भिनाय हाउस को खरीद कर उसका उपयुक्त पुनः निर्माण कराना।

तृतीय चरण— दस लाख रुपयों का स्थायी कोष बनाना, जिसके सूद से भवन में निम्नलिखित कार्य करना:—

(1) एक ऐसे आश्रम की स्थापना, जिसमें वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए वृद्धता

अथवा रुग्णता को प्राप्त विद्वानों, वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों के लिए निशुल्क निवास, भोजन, चिकित्सा एवं यथाशक्ति काम की व्यवस्था रहेगी।

(2) एक प्रचार-विभाग की स्थापना— जो ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में और विशेषकर शिक्षा-संस्थाओं में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ योग्य एवं प्रशिक्षित व्याख्याताओं, प्रवचन-कर्त्ताओं और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं उपलब्ध करेगा।

(3) भोले भाले हिन्दुओं को जो ईसाई मिशनरी पतित कर रहे हैं, उनको विधर्मी होने से बचाना और उनके लिए योजनाबद्ध प्रयत्न करना।

(4) एक प्रसार-विभाग की स्थापना, जो वैदिक धर्म के प्रचारकों, आर्य शिक्षा संस्थाओं के अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण के लिए संगोष्ठियों, कार्यगोष्ठियों तथा साधनाशिविरों का आयोजन करेगा।

(5) एक विशाल सन्दर्भ पुस्तकालय एव वाचनालय की स्थापना, जिसका उपयोग प्रसार विभाग, प्रचार-विभाग, प्रकाशन-विभाग तथा शोध-कार्यकर्त्ताओं द्वारा किया जायेगा।

(6) एक शोध एवं प्रकाशन विभाग की स्थापना, जो महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट आर्ष ग्रन्थों के सस्ते तथा सानुवाद संस्करण और आधुनिक जीवन की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं वैक्तिक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने वाला वेदानुकूल साहित्य प्रकाशित करेगा।

योग के आठ अंग

—वेदतीर्थ धर्मदेव मनीषी

★

योग का तीसरा अंग आसनः—

सूत्रः— स्थिर सुखमासनम् ।।२।४६।।

अर्थः— (स्थिर सुखम्) स्थिर अर्थात् निश्चल शरीर का निश्चल रूप सुख जिसमें हो वह (आसनम्) है ।

महर्षि दयानन्दार्थः— तथा (तत्र स्थिर०) जिसमें सुखपूर्वक शरीर और आत्मा स्थिर हो, उसको आसन कहते हैं । अथवा जैसी रुचि हो वैसा आसन करे ।

तत्त्वबोधः— आसन के भेदः—पद्मासन, वीरासन, भद्रासन, स्वस्तिक, दण्डासन, सोपाश्रय ,पर्यङ्क, क्रौञ्चनिषदन, हस्तिनिषदन, सम संस्थान, स्थिर सुख और यथासुख इत्यादि आसन के भेद हैं ।

सूत्रः— ततो द्वन्द्वानभिघातः ।।२।४८।।

अर्थः (ततः) तब द्वन्द्वानभिघातः) द्वन्द्वों शीत-उष्ण आदि का अभिघात प्रभाव वा कष्ट नहीं होता ।

महर्षि दयानन्दार्थः— (ततो द्वन्द्वा०) जब आसन दृढ़ हो जाता है, तब उपासना करने में कुछ परिश्रम करना नहीं पड़ता है और न सर्दी गर्मी अधिक बाधा करती है ।

तत्त्वबोधः— आसन सिद्ध होने से योगी के शरीर को शीतोष्ण सुख दुःखादि द्वन्द्व नहीं सताते, वह आसनों से सब उपाय कर लेता है । उसको ऐसे आसन लगाने की विधि आ जाती है जिससे सर्दी न लगे गर्मी न लगे, पेट की गड़बड़ दूर हो अन्य अनेक कष्टों की और रोगों तक की निवृत्ति हो सके ।

योग का चौथा अंग प्राणायामः—

सूत्रः— तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः ।।२।४९।।

अर्थः— (तस्मिन् सति) उस आसन के लग जाने पर (श्वास प्रश्वासयों) श्वास प्रश्वासों की (गति विच्छेदः) गति का बन्द होना (प्राणायामः) प्राणायाम है ।

महर्षि दयानन्दार्थः— (तस्मिन्सति०) जो वायु बाहर से भीतर को आता है उसको 'श्वास' और जो भीतर से बाहर जाता है उसको 'प्रश्वास' कहते हैं । उन दोनों के जाने आने को विचार से रोकें । नासिका को हाथ से कभी न पकड़े, किन्तु ज्ञान से ही उनके रोकने को प्राणायाम कहते हैं ।

तत्त्वबोधः— आसन सिद्ध हो जाने पर बाह्य वायु को जो ग्रहण किया जाता है उसे श्वास कहते हैं तथा भीतर की वायु को जो बाहर निकालता है उसे प्रश्वास कहते हैं उन दोनों की गति का अवरोध है अर्थात् दोनों का अभाव उसे प्राणायाम कहते हैं ।

सूत्रः—स तु बाह्याभ्यन्तर स्तम्भवृत्तिदेशकाल संख्याभिःपरिदृष्टोदीर्घसूक्ष्मः ।२।५०।

अर्थः— (बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्त) बाह्यवृत्ति, आभ्यान्तर वृत्ति, स्तम्भ वृत्ति प्राणायाम (देशकाल संख्याभिः) देश, काल, संख्या के साथ, (परिदृष्टः) अभ्यास में लाया हुआ (दीर्घसूक्ष्मः) दीर्घसूक्ष्म होता है ।

महर्षि दयानन्दार्थः— और यह प्राणायाम चार प्रकार से होता है—(स तु बाह्या०) अर्थात् एक बाह्य विषय, दूसरा आभ्यन्तर विषय, तीसरा स्तम्भ वृत्ति ।

सूत्रः— बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी चतर्थः ।।२।५१।।

अर्थः— (बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी) बाह्य और आभ्यान्तर विषय का आक्षेप करने वाला (चतुर्थः) चतर्थ प्राणायाम है ।

महर्षि दयानन्दार्थः— और चौथा जो बाहर भीतर रोकने से होता है । अर्थात् जोकि (बाह्याभ्यं०) इस सूत्र का विषय । वे चार प्राणायाम इस प्रकार के होते हैं कि जब भीतर से बाहर को श्वास निकले, तब उसको बाहर ही रोक दे, इसको प्रथम प्राणायाम कहते हैं । जब बाहर से श्वास भीतर को आवे, तब उसको जितना रोक सके, उतना भीतर ही रोकदे, इसको दूसरा प्राणायाम कहते हैं । तीसरा स्तम्भ वृत्ति है कि न प्राण को बाहर निकाले और न बाहर से भीतर ले जाय, किन्तु जितनी देर सुख से हो सके, उसको जहां का तहां ज्यों का त्यों एकदम रोकदे । और चौथा यह है कि जब श्वास भीतर से बाहर को आवे, तब बाहर ही कुछ-कुछ रोकता रहे, और जब बाहर से भीतर जावे, तब उसको भीतर ही थोड़ा-थोड़ा रोकता रहे, इसको बाह्याभ्यन्तराक्षेपी कहते हैं । और इन चारों का अनुष्ठान इसलिए है कि जिससे चित्त निर्मल होकर उपासना में स्थिर रहे ।

तत्त्वबोधः— महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं - "प्रच्छर्दन विधारणाभ्यां वा प्राणस्य ।।" योगसूत्र (समाधिपादे सू० ३४)।।

जैसे अत्यन्त वेग से वमन होकर अन्न जल बाहर निकल जाता है वैसे प्राण को बल से बाहर फेंक के बाहर ही यथाशक्ति रोक देवे। जब बाहर निकालना चाहे तब मूलेन्द्रिय को ऊपर खींच रखें तब तक प्राण बाहर रहता है। इसी प्रकार प्राण बाहर अधिक ठहर सकता है। जब घबराहट हो तब धीरे-धीरे भीतर वायु को लेके फिर भी वैसे ही करता जाय जितना सामर्थ्य और इच्छा हो और मन में (ओ३म्) इसका जाप करता जाय। इस प्रकार करने से आत्मा और मन की पवित्रता और स्थिरता होती है। एक "बाह्य विषय" अर्थात् बाहर ही अधिक रोकना, दूसरा "आभ्यन्तर" अर्थात् भीतर जितना प्राण रोका जाय उतना रोके। तीसरा "स्तम्भवृत्ति" अर्थात् एक ही बार जहां का तहां प्राण को यथाशक्ति रोक देना। चौथा "बाह्याभ्यन्तरपेक्षी" अर्थात् जब प्राण भीतर से बाहर निकलने लगे तब उससे विरुद्ध उसको न निकलने देने के लिए बाहर से भीतर से और जब बाहर से भीतर आने लगे तब भीतर से बाहर की ओर, प्राण को धक्का देकर रोकता जाय। ऐसे एक दूसरे के विरुद्ध क्रिया करें तो दोनों की गति रुककर प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियें भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है कि जो बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती हैं। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर स्थिर बल, पराक्रम, जितेन्द्रियता, सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझकर उपस्थित कर लेगा। स्त्री भी इसी प्रकार योगाभ्यास करे।"

सूत्रः— ततः क्षीयते प्रकाशावरणम् ।।२।५२।।

अर्थः— (ततः) उस प्राणायाम के अभ्यास से (प्रकाशावरणम्) प्रकाश-ज्ञान प्रकाश का आवरण (क्षीयते) क्षीण हो जाता है।

महर्षि दयानन्दार्थः— (ततः) इस प्रकार प्राणायाम पूर्वक उपासना करने से आत्मा के ज्ञान का आवरण अर्थात् ढापने वाला जो अज्ञान है, वह नित्य प्रति नष्ट हो जाता है और ज्ञान का प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता जाता है।

तत्त्वबोधः— चारों प्रकार का प्राणायाम सिद्ध होने से बुद्धि सत्त्व के प्रकाश का जो आवरण और उससे उत्पन्न पाप उसका क्षय हो जाता है। यथाह मनुः—

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातुनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ।।६।७१।।

जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होते हैं वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं।

सूत्र:— धारणासु च योग्यता मनसः ॥२।५३॥

अर्थ:— (धारणासु) धारणाओं में (मनसः) मन की (योग्यता) योग्यता हो जाती है ।

महर्षि दयानन्दार्थ:— उस अभ्यास से यह भी फल होता है कि–(किञ्च धारणा०) परमेश्वर के बीच में मन और आत्मा की धारणा होने से मोक्ष पर्यन्त उपासना योग और ज्ञान योग्यता बढ़ती जाती है । तथा उससे व्यवहार और परमार्थ का विवेक भी बराबर बढ़ता रहता है । इसी प्रकार प्राणायाम करने से भी जान लेना ।

तत्त्वबोध:— प्राणायाम के अभ्यास से जब ज्ञान को आवरण करने वाला मल क्षय हो जाता है तब प्राणायाम का दूसरा फल यह होता है कि योगी का चित्त धारणाओं में स्थिर होने के योग्य हो जाता है । (क्रमशः)

भिनाय कोठी (महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के निर्वाण स्थली)
खरीदने के सम्बन्ध में पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती
ने अपने उद्‌गार पत्र द्वारा इस प्रकार प्रकट किये हैं ।

नई देहली
14-3-74

मेरे प्यारे वैद्य मोहनलाल जी,

आनन्दित रहो ।

पत्र मिला । मेरे बस की बात होती तो मैं भिनाय की कोठी स्वयं खरीद लेता । परन्तु मेरे पास तो मेरा शरीर ही है । यदि कोई मेरा शरीर गिरवी रखना चाहे तो अपने आप को बेच दूंगा ।

सेवक
आनन्द स्वामी सरस्वती

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के उपरोक्त उद्‌गार पढ़कर क्या आप पीछे रहेंगे ? जिस ऋषि दयानन्द सरस्वती ने संसार की भलाई के लिए जीवन अर्पित किया, क्या उसके स्मारक बनाने हेतु सहयोग न देंगे ? नहीं तो शीघ्र ही महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण स्थली खरीदने हेतु अपनी सहायता उदारता के साथ निम्न पते पर भेजिए:—

मन्त्री
आर्य समाज नला बजार, अजमेर

संस्कृत गीतम्

प्रणेता— प्रशस्य मित्र शास्त्री, एम०ए० (गोल्डमैडलिस्ट)
प्राध्यापक संस्कृत विभाग,
फिरोज गांधी कालेज, राय बरेली (उ०प्र०)

("फिरकी वाली तू कल फिर आना," इत्यादि हिन्दी चलचित्र गीतेनानु प्रणितध्वनि भेदम्

भारतदेशो विभूषितवेशो विशेषविलासस्त्रिभुवते विराजते,
मन देशो वेद भारतीं प्रकाशते ।
भवनेषु धूम: शुभगन्ध युतोऽयं व्याप्नुते हवनाश्रितो;
विद्यापिपासु ब्रह्मचारी गणोऽयं राजन च कुले गुरो:,
आम्रनिकुञ्जे ३—आम्रनिकुञ्जे कोकिल कुजो गुञ्जति वारंनारम्
पश्य शोभा कथं रमणीया सदा वरणीया वसन्त समागमे ।
मम देशो वेद भारतीं प्रकाशते ॥1॥

बहवो बभूवुरिह क्षत्रियवीरा धार्मिका जन पालका: ;
श्री कृष्णचन्द्रं रामभद्रं राघवं को न बोधति धन्विम्,
महाभारते ३—महाभारते युद्धे भीमार्जुनयोर्विक्रम चरितम्
वीरभूमे ! नमो मातृभूमे ! धान्यधनपूर्णे ! सदासस्यश्यामले ।
मम देशो वेद भारतीं प्रकाशते ॥2॥

चरणानि यस्य सततं क्षालयते दक्षिणादिशि सागरो;
शैलाधिराजो रमते चोत्तरस्यां देवतात्महिमालयां,
गङ्गातीरे ३—गङ्गातीरे निर्मल नीरे नृत्यति नौकायानम्
शीतवातोऽरविन्द सुगन्धं प्रसारतेऽयं विशालसरोवरे ।
मम देशो वेद भारतीं प्रकाशते ॥3॥

शोक सन्देश

श्री पं० प्यारे लाल जी धीमान अग्निहोत्रीय का देहावसान 11-10-1974 की रात्रि को उनकी जन्म भूमि में हो गया। उनके सुपुत्र श्री बाबू राम जी शर्मा विभाकर गुरुकुल के अध्यापक रहे हैं जो योग्य अध्यापक हैं। हमें शोक सन्तप्त परिवार से पूर्ण सहानुभूति है। प्रभु परिवार को उनके वियोग को सहने की शक्ति प्रदान करे।

महामुनि
आचार्य गुरुकुल भैंसवाल, सोनीपत

Approved for Libraries by D. P. I's Memo No. 3/44—1961—8. Dated 8-1-62.

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश'—डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम अध्यक्ष,

स्थान वाचनालय गुरुकुल कांगड़ी विश्व०, हरिद्वार

पत्रालय

जिला जि० - सहारनपुर (उ.प्र.)

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल से मुद्रित तथा प्रकाशित किया।

समाज सन्देश

(हिन्दी मासिक)

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलाँ,

कन्या गुरुकुल खानपुर कलाँ,

बी० पी० एस० एम० कालिज फॉर वीमेन,

खानपुर कलां

बी० पी० एस० कालिज ऑफ़ एजूकेशन खानपुर कलाँ

का

संयुक्त मुखपत्र

आपके लिए प्रस्तुत हैं—

आपत्कालीन घोषणा

सुख प्राप्ति कैसे हो ?

शतायु—आर्य समाज

महिला—क्रीड़ा जगत्

वन्य प्राणियों का शिकार—पाप है

छोटी कहानियां तथा गणित पहेली

अगस्त, 1975

मूल्य एक प्रति 90 पैसे
वार्षिक चन्दा 10 रु०

विषय-सूची

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

धर्म भानु

व्यवस्थापक समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत)

※ ओ३म् ※

श्री भक्त फूल सिंह जी
संस्थापक
गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

समाज सन्देश

प्रकाशन तिथि : 25-7-1975

वर्ष सोलहवां | अगस्त, १९७५ | अङ्क : 5

लेख भेजने तथा समाज सन्देश सम्बन्धी पत्र व्यवहार का पता:—

धीरेन्द्र कुमार विद्यालंकार

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

सम्पादकीय

"आपत्कालीन घोषणा"

26 जून को देश में आपात स्थिति की घोषणा की गई जिसके अनन्तर केन्द्रीय शासन ने कुछ महत्त्वपूर्ण आदेश जारी किये हैं। 27 जून को राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने सविधान की धारा 359 (I) के अन्तर्गत आपात स्थिति के बाद गिरफ्तार व्यक्तियों के धारा 14, 21 और 22 के अन्तर्गत अदालतों में अपील करने के अधिकार को आपात स्थिति की अवधि तक के लिए समाप्त करने का आदेश दिया। 30 जून को राष्ट्रपति ने आन्तरिक सुरक्षा कानून (मीसा) में संशोधन का अध्यादेश जारी किया जिसके अनुसार अब 25 जून 1975 को या उसके बाद आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत गिरफ्तार व्यक्ति को अपनी गिरफ्तारी के कारण जानने का अधिकार नहीं होगा। यदि नज़रबन्दी आदेश जारी करने वाले अधिकारी ने यह घोषित किया हो कि नज़रबन्द व्यक्ति की नजरबन्दी आपात स्थिति के कार्य को प्रभावशाली ढंग से करने के लिए आवश्यक है और इस प्रकार की सूचना उस व्यक्ति को दी हो तो ऐसे व्यक्ति की नज़रबन्दी पर 15 दिन के भीतर राज्य सरकार पुनर्विचार करेगी और यह निर्णय करेगी कि उसकी नजरबन्दी जारी रहे अथवा नहीं। पुनर्विचार के बाद राज्य सरकार को घोषणा करनी होगी कि आपात स्थिति की जरूरतों के लिए उक्त व्यक्ति की नजरबन्दी जरूरी है। 4 मास के भीतर राज्य सरकार नजरबन्द व्यक्तियों के विषय में फिर से विचार करेगी और इस बात का निश्चय करेगी कि जनहित और आपात स्थिति की जरूरत के अनुसार व्यक्ति की नजरबन्दी आगे जारी रहनी चाहिए या नहीं। इस प्रकार का पुनर्विचार हर 4 मास की अवधि में एक बार होगा। यह अध्यादेश आपात स्थिति की अवधि या अधिक से अधिक 12 मास की अवधि तक लागू रहेगा। कोई भी व्यक्ति जो इस अध्यादेश के जारी होने के बाद या 25 जून को एमरजेन्सी घोषित होने के बाद आंसुका (मीसा) के तहत नजरबन्द हुआ है जमानत पर मुक्त होने का अधिकार नहीं रखता।

राष्ट्रपति द्वारा दी गई आपत्कालीन घोषणा का भारत व विदेशी राष्ट्रों के अनेक नेताओं ने स्वागत किया है। उनके विचारानुसार देश में कुछ तत्त्वों ने ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी थीं जिनके कारण प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति को कठोर कदम उठाने को विवश होना पड़ा। स्वयं प्रधानमन्त्री ने 26 जून को आकाशवाणी पर राष्ट्र के नाम अपने सन्देश में कहा था कि "विघटन तत्त्व पूर्ण रूप से सक्रिय हैं और साम्प्रदायिक भावना उभारी जा रही है जिससे हमारी एकता को खतरा है। यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम एकता और स्थायित्व की रक्षा करें। राष्ट्र की अखण्डता के लिए

कठोर कार्यवाही जरूरी है।"

एमरजेन्सी लागू होने के बाद प्रधानमंत्री ने जनता के सामने एक 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम रक्खा है जिसके अन्तर्गत भारतीय अर्थव्यवस्था को ठोस और कारगर बनाने तथा साधारण जनता की आर्थिक हालातों को बेहतर बनाने के लिए कठोर पग उठाये जायेंगे। प्रधानमन्त्री के इस कार्यक्रम की सभी क्षेत्रों में सराहना की जा रही है।

तस्कर इस देश के लिए अभिशाप हैं। ये देश की वित्तीय व्यवस्था में भारी असन्तुलन पैदा करते रहे हैं। फलस्वरूप जनता की गरीबी पिछले वर्षों में बढ़ती ही रही है। अभी उस दिन एक दूरदर्शन साक्षात्कार में कांग्रेसी संसद् सदस्य श्री शशिभूषण का कथन था कि हमारे देश की जमीन में तस्करों ने पच्चीस हजार करोड़ रुपये मूल्य का विदेशी सोना दबाया हुआ है जो कि देश के लिए पीले जहर के समान है। मीसा के अन्तर्गत तस्करों की गिरफ्तारी व उनकी सम्पत्ति को जब्त करने का निश्चय सरकार ने किया है। आशा की जानी चाहिए कि सरकार उक्त सोने को बाहर निकालने में कोई कसर नहीं छोड़ रक्खेगी।

सरकार ने अनेक ऐसी संस्थाओं पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया है जिनसे समाज व देश की शान्ति, एकता व सुरक्षा को खतरा पहुँचने की आशंका थी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, आनन्द मार्ग प्रभृति संस्थाओं के कार्यालयों से अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्र पकड़े गए हैं। आनन्द मार्ग के कार्यालयों से तो अनेक नरमुण्डों (Human Skulls) के प्राप्त होने के समाचार भी मिल रहे हैं। ये नर मुण्ड उन व्यक्तियों के प्रतीत होते हैं जिन्होंने शायद उक्त संस्था के आदेशों, नियमों का पालन करने से इन्कार किया हो और किसी प्रकार की सहायता संस्था को देने से असमर्थता जाहिर की हो। पुलिस छापे मार कर इन संस्थाओं के व्यक्तियों को गिरफ्तार करने में तत्पर है।

फिलहाल आपात स्थिति की घोषणा के बाद से जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट के समाचार हैं जिनसे भारतीय जनता को महंगाई से राहत मिलेगी। भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियों को भी पदच्युत किया जा रहा है जिसका सुखद परिणाम यह है कि अब सरकारी कामकाज चुस्ती, मुस्तैदी व शीघ्रता के साथ सम्पन्न हो रहे हैं।

हम आशा करते हैं कि आपात स्थिति के रहते देश के आलस्य का अपनोदन होगा और देश की आर्थिक स्थिति में सन्तोषप्रद सुधार होगा जिसका लाभ स्पष्टतः भारतीय जनता को ही मिलेगा।

—सम्पादक
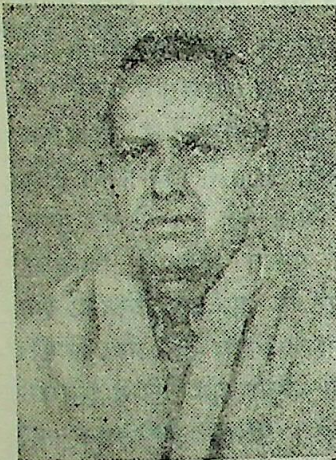
सुख प्राप्ति कैसे हो ?

—आचार्य विष्णुमित्र

★

सारा संसार सुख चाहता है। वह सुख के लिए प्रयत्न करता है। दुःख कोई नहीं चाहता अतः उसकी प्राप्ति के लिये कोई प्रयत्न भी नहीं करता है। इतना होने पर भी मानव को दुःख क्यों प्राप्त होता है तथा वह दुःखी क्यों रहता है इस पर विचार करना चाहिये।

वैसे यह सत्य है कि संसार में सुख अधिक है तथा दुःख थोड़ा है परन्तु जब वह दुःख मानव पर आकर पड़ता है, वह उसे बहुत अधिक दिखाई देता है। संसार में भले पुरुष अधिक हैं बुरे मनुष्य कम हैं परन्तु बुरे अधिक दिखाई देते हैं इसका कारण यह है कि बुरे बुराई के लिये अधिक सक्रिय होते हैं अतः थोड़े होते हुए भी वे अधिक दिखलाई देते हैं। परस्पर विरोध भी कम है परन्तु उसके मूल कारण के न समझने से वह भी अधिक दिखाई देता है।

प्रभु के बनाये हुए संसार में अच्छी वस्तुएं अधिक हैं तथा बुरी थोड़ी हैं परन्तु वे भी अधिक दिखाई देती हैं क्योंकि बुराई अधिक प्रभावशाली बन जाती है।

अब यह विचारना है कि इस दुःख को कैसे दूर किया जावे ? पिता अपने पुत्रों को दुखी करना या तंग करना नहीं चाहता परन्तु वे अपनी भूलों के कारण दुःख को अनुभव करते हैं। संसार सुखमय है परन्तु मानव ने इसको अपनी भूलों से दुःख का स्थान बना लिया है।

इस संसार को सुखमय रखने के लिए यह आवश्यक है कि अग्रेसर, विद्वज्जन स्वयं अच्छे बनें तभी वे दूसरों को अच्छा बना सकते हैं। स्वय दोषी बने हुये माता पिता गुरु अपने पुत्रों या शिष्यों को उत्तम नहीं बना सकते।

पिता या माता दुर्व्यसनों में फंसे होकर भी अपनी सन्तान को दुर्गुणों में नहीं फंसाना चाहते। परन्तु हम देखते हैं ऐसे माता पिता की सन्तान न चाहते हुये भी माता पिता के दोषों से ग्रस्त होती जाती हैं।

सज्जनों के उत्तम आचरण, कर्म संसार को सुखी बनाते हैं। कहा भी है— यद् यदा चरति श्रेष्ठः तद् तदेवेतरो जनाः। स यत्

प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते। भले पुरुष जिस आदर्श को सामने रख कर उसके अनुसार जो उत्तम कर्म करते हैं सामान्य लोग उनकी नकल किया करते हैं क्योंकि उनके लिये वे व्यक्ति प्रामाणिक होते हैं।

हम प्रतिदिन देखते हैं कि जो नवयुवक एक्टरों को आदर्श पुरुष मानते हैं वे उन जैसा ही वेष बनाकर अपने को धन्य-धन्य मानते हैं। गांधी जी को आदर्श मानने वालों ने गांधी टोपी पहनी। नेहरू को आदर्श मानने वालों ने नेहरू जैसी कोटी पहनी। अतः यह सिद्ध हुआ कि मनुष्य का स्वभाव अपने से बड़े का अनुकरण करने का है। यदि उत्तम अनुकरण होगा तो उत्तमता आवेगी, निकृष्ट अनुकरण होगा तो नीचता आवेगी।

इन सब बातों को देखते हुये अपने अनुयायियों को सुखी बनाने के लिये महान् पुरुषों को उत्तम काम करने चाहियें जिससे यहां सुख का प्रसार हो। यह संसार सुखमय दिखलाई दे। जब घर, परिवार, राष्ट्र में बड़े पुरुष वैर विरोध, वैमनस्य भ्रष्टाचार, असत्य भाषण आदि करते दिखलाई देंगे तब छोटों में कभी भी साधुता का संचार नहीं होगा।

पृथिवी मानव मात्र की माता है क्योंकि इसी से प्राणिमात्र या मानव मात्र का भरण पोषण होता है। उसी पर सभी मानव रहते हैं। सब परस्पर भाई हैं। एक का सुख दुःख दूसरे का सुख दुःख है तो हमको एक दूसरे को सुखी करने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि आप दूसरे को दुःखी करके सुख प्राप्त करने की इच्छा करते हैं तो यह कभी भी संभव न हो सकेगा। हम सब पृथिवी माता के सुपुत्र हैं। वह हमारे सुख दुःख को सहन करती है। अनेक प्रकार से हमको पालती है। उसको आदर्श मान कर हम परस्पर कभी न लड़ें न भिड़ें। एक दूसरे की सहायता करें। जो दुःख आज एक पर आया है वह दूसरे पर भी आ सकता है इस भावना से एक दूसरे की पूर्ण सहायता कर सुख को प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह मानने से आपका दुःख सुख में परिवर्तित हो जावेगा।

मति, बुद्धि के द्वारा ही मानव शुभ अशुभ कर्म करता है। यदि सुमति हो तब श्रेष्ठ कर्म करता है यदि कुमति हो तब निकृष्ट कर्म किया करता है। यदि भाग्य से आपको उत्तम वस्तु प्राप्त हो गई हो तो समझदारी यही है कि आप उसे बिगड़ने न दें। तलवार आपकी रक्षा भी कर सकती है आपके अङ्गों को काट भी सकती है। यह आप पर निर्भर है कि आप उसका किस प्रकार प्रयोग करते हैं।

इसी प्रकार बुद्धि को यदि सुबुद्धि, मति को यदि सुमति बनाकर उससे परिष्कृत करके जो काम करेंगे वे सब कार्य सुखदायी होंगे। कुमति से किये गये सारे काम विनाशकारी होते हैं।

जब बुद्धि को जंग या मल लग जाता है तब वह विकृत हो जाती है। नये-नये अनुभवों से बुद्धि का विकास होता है। बुद्धि की शक्ति बढ़ती है परन्तु यदि अनुभवों के आधार पर असत्य सिद्ध हुई बात को हम सत्य रूप में स्वीकार करते हैं तो उससे विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

जितने सम्प्रदाय देश देशान्तर फैले हैं या फैलने लग रहे हैं यदि उनके साथ नवीन सुमति का समावेश किया जावे तो विकास प्रशस्त होता है, परन्तु होता इससे विपरीत है। प्राचीन विचारधारा के आधार पर जो

वस्तुयें इस समय अप्रमाणित हो चुकी हैं तो भी अपने आग्रह, या अन्ध श्रद्धा से उन पर पुराने विचारों का घेरा डाल कर हम चिपटे बैठे हैं इससे बुद्धि का विकास नहीं होने पाता है। अत सुख की प्राप्ति के इच्छुक मानव का परम कर्त्तव्य है कि वह सुख की प्राप्ति के लिये नवीन सुमति का प्रयोग करके बुद्धि को विकसित कर उत्तम कर्म करने का दृढ़ निश्चय करले उससे सुख की प्राप्ति तथा दुःख की हानि होती है। सर्वत्र सुख के ही दर्शन होते हैं।

पापी जो पाप करता है वह बुद्धि के बिगड़ने से ही करता है। अतः विद्वान् लोग कहते हैं कि पापी से घृणा न करो तथा पाप से घृणा करो। अपने अन्दर सुमति का संचार कर उस सुमति का इन्जेक्शन दूसरों को भी लगाइये जो पापाचरण में ग्रस्त हैं। यदि आपकी सुमति आपका ही संस्कार करने में समर्थ है अन्यों का संस्कार नहीं कर पाती तो वह अभी अधूरी है, निर्बल है, उसे सबल बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

बड़े-बड़े महापुरुषों अपनी सुमति के द्वारा अनेक पथभ्रष्टों को पथ पर लगाया है। अनेक दुःखियों को सुखी बनाया है। नारद के उपदेश से ही रत्नाकर डाकू बाल्मीकि ऋषि बने। बुद्धदेव के उपदेश से ही अङ्गु ली माल डाकू भक्त बना। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अमीचन्द तहसीलदार वैदिक धर्म का सच्चा उपदेशक बना। इसी प्रकार अनेक उदाहरण हैं जिससे पापात्मा धर्मात्मा बन पाये हैं।

पापा जब बुराई करता है तब वह पाप के पङ्क में फंसकर करता है जब उसे यह पता लग जाता है कि यह पङ्क तो मुझे मलिन तथा निन्दित करने वाला है तब वह उस पङ्क से अपने को दूर कर लेता है। जिस प्रकार कीचड़ में फंसा मानव स्वयं तो मलिन होता ही है अन्यों को भी मलिन करता है इसी प्रकार पाप में लिप्त पुरुष स्वयं तो दुःख प्राप्त करता ही है उसके संग में जो रहते हैं उनको भी वह दुःख प्रदान करता है। पाप से दुःख होता है धर्म से सुख होता है। कोई भी इस का अपलाप नहीं कर सकता है।

अतः सुख प्राप्ति के लिये तथा दुःख निवारण के लिए यह आवश्यक है कि अग्रे-गण, विद्वद्गण शुभ कर्म करें। सब पृथिवी माता के पुत्र हैं ऐसा मानकर बन्धुत्व धारण करें। नवीन सुमति का प्रयोग करें। पापी के पाप को दूर करें तभी सुख की प्राप्ति तथा दुःख की निवृत्ति होगी।

❀ चार बातों को याद रखें— बड़े बूढों का आदर करना, छोटों की रक्षा तथा उनसे स्नेह करना, बुद्धिमानों से सलाह लेना और मूर्खों के साथ कभी नहीं उलझना।

शतायु—आर्यसमाज

— उदयवीर सिंह शास्त्री
(डिलहा) मैनपुरी

★

[आर्य समाज सम्बन्धी लेखों में से हमें यह लेख काफी जानदार लगा है —सं]

यह आर्य समाज का शताब्दी वर्ष है। आज से 100 वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने आर्य समाज की स्थापना की थी, जो कि भारतवर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है।

कोई माने या न माने किन्तु आज भारत में जो धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व शैक्षणिक तौर पर जो उन्नति दिखाई दे रही है वह आर्य समाज की ही देन है, उसमें आर्य समाज का बहुत बड़ा भाग है।

जिस समय आर्य समाज का उदय हुआ था उस समय भारत की कुरीतियों ने घेर रखा था। एक ओर हमारी अन्ध-श्रद्धा और अविवेकता थी तो दूसरी ओर धार्मिक संकुचितता ने हमें विदेशियों के समक्ष हास्यास्पद बना रखा था। विदेशी शिक्षा ने तो भारतीयों के मस्तिष्क को ही बदल दिया था जिससे उन्हें अपने देश, धर्म और संस्कृति से घृणा होती जा रही थी। ठीक उसी समय सभ्य कहाये जाने वाले संसार में धर्म के विरुद्ध एक अन्य प्रकार की क्रान्ति का बीजारोपण हो रहा था। पदार्थ विज्ञान के नवीन आविष्कारों से प्रभावित होकर भूतल पर निवास करने वाली अनेक जातियों के समागम और उनके साहित्य, इतिहास और संस्कृति का अवलोकन तथा समाज की आर्थिक व्यवस्था की छानबीन कर क्रान्ति के वे नेता इस परिणाम पर पहुँचे कि सारे सांसारिक दु खों का कारण एकमात्र "धर्म" की कल्पना है। उन्होंने कहा कि धर्म अफीम की एक गोली है जो निराश्रित और निरवलम्बों को दी जाती है, ताकि वे अपने दुःखों को उनके वास्तविक रूप में अनुभव ही न कर सकें। उनमें धार्मिक विचार और सामाजिक प्रथाओं के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न होने लगी। उन्होंने समझा कि धर्म ही उनके समस्त बन्धनों का मूल है और उसको तिलाञ्जलि देना ही आनन्दोपभोग का साधन है। इस विचारधारा ने भारत को भी प्रभावित किया। भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़कर निकले हुये युवक जब कार्यक्षेत्र में उतरे तो उन्होंने जनता में इन विचारों को फैलाना आरम्भ किया। तर्क और विज्ञान से विमुख हमारी खोखली धार्मिक अन्ध-श्रद्धा इस नवीन विचारधारा से टक्कर लेने में असमर्थ थी। अतएव शिक्षित वर्ग में धर्म के प्रति अश्रद्धा और अनास्था बढ़ने लगी।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इस धारा

को मोड़ने के लिए तर्क और विज्ञान का सहारा लिया। जहां उन्होंने अन्ध-श्रद्धालु जनता को यह बताया कि उनकी अनेक कल्पनायें यथा अवतारवाद और मूर्ति पूजा जो कि तर्क की कसौटी पर नहीं उतर सकती। धर्म का अंग नहीं बन सकती, वहां वैज्ञानिकों को यह भी बताया कि वैदिक धर्म की सब बातें यथा आस्तिकवाद और पुनर्जन्म का सिद्धान्त इत्यादि सबकी सब तर्क सिद्ध हैं और विज्ञान उन्हें झुठला नहीं सकता।

भारतीयों को महर्षि दयानन्द की दूसरी देन भारत का उज्ज्वल इतिहास है। ऋषि से पूर्व सौ वर्षों की दासता के कारण भारत के प्राचीन इतिहास पर मनों मिट्टी पड़ी हुई थी। साथ ही अंग्रेजों ने स्वार्थवश उसे और भी विकृत बना दिया था। महर्षि ने कूड़ा कर्कट में पड़े हुए भारतीय इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठों को भारतीयों के सम्मुख रख कर उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप का उनके गौरवशील अतीत का तथा उनकी अनुकरणीय सभ्यता का दर्शन कराया, फलस्वरूप भारतीयों में अपने राष्ट्र के प्रति अभिमान उत्पन्न हुआ।

इसके पश्चात् महर्षि दयानन्द के शिष्य-वृन्द एक हाथ में तर्क की तलवार और दूसरे हाथ में वैदिक सभ्यता की उज्ज्वल इतिहास रूपी ढ़ाल लेकर समाज सुधार के क्षेत्र में उतरे तो उन्होंने कुछ वर्षों के लिए जनता में एक प्रकार की हलचल मचादी। उनके विचार नवीन किन्तु वैदिक थे। सुनने वाला अपने को नई दुनियां में अनुभव करने लगता था। वह अपने अन्दर अदम्य उत्साह और प्रबल वेग अनुभव करता था। वह स्थित प्रज्ञ और दृढ़ संकल्पवान् होता था। बिरादरी के बहिष्कार, सरकार की वक्र दृष्टि और सम्बन्धियों के मोहजाल उस पर तनिक भी प्रभाव नहीं करते थे। इसलिए आर्य समाज अपने समाज सुधार के कार्यों में बड़ी तेजी के साथ सफल हुआ। इस क्षेत्र में आर्य समाज ने स्त्री-शिक्षा, स्त्री स्वातन्त्र्य, जाति-गत बन्धनों को तोड़ना, वर्ग-व्यवस्था जन्मानुसार न होकर कर्म अनुसार होना और निराकार परमेश्वर का पूजन आदि अनेक विषयों पर आवाज उठाई और उन सब में समाज ने सफलता प्राप्त की। अब इन विषयों में आर्य समाज के विचारों से किसी को मतभेद नहीं है। किन्तु वर्तमान काल में आर्य समाज का नवीन कार्य क्षेत्र क्या होना चाहिये यह एक समस्या है।

आर्य समाज के आरम्भ काल में महर्षि के द्वारा दी हुई समस्यायें ही हमारे लिए पर्याप्त थीं। लेकिन मात्र बाप-दादाओं की विरासत पर जीने वाले वंशज अधिक उन्नति नहीं कर सकते। आज हमें देश की वर्तमान समस्याओं की तरफ अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे पूर्वज उच्च सभ्यता को प्राप्त कर चुके थे, उन्होंने साम्राज्य स्थापित किये थे, वे अपने जमाने में संसार के गुरु थे, यह कह कर अथवा किसी वैज्ञानिक सिद्धान्त को वेद प्रतिपादित बता कर अपने को कृत-कृत्य नहीं मानना चाहिए। अपितु हमें समझना चाहिये कि वही जाति वही संस्था उन्नति कर सकती है जो नावों के काल में जहाजों की सोचे और जहाजों के काल में विमानों की और विमानों के काल में राकेट्स की और राकेट्स के काल में ऐसे यानों की सोचे जिनमें बैठकर नक्षत्रों की

यात्रा कर सके।

आजकल समाजवाद, साम्यवाद, उन्मूलन-वाद इत्यादि अनेक वाद खड़े हो गये हैं इन वादों का भी हमें उसी प्रकार से प्रतिकार करना होगा जिस प्रकार हमने दूसरी बातों का किया था। आज शिक्षित वर्ग इन अवैदिक वादों की तरफ तीव्रता के साथ खिचता चला जा रहा है। अतः आज आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि वह इन का प्रतिकार करे और अवैदिक बातों में बिखरते हुए समाज को सीधे मार्ग पर लाये। अन्यथा निश्चय जानिए कि आधुनिक शिक्षा प्रसार के साथ जनता शनैः-शनैः आर्य समाज के प्रभाव से परे होती चली जावेगी।

आर्य समाज एक जीती जागती संस्था है अतः इसे और जीवन्त बनाते हुए हमें अपनी कार्य करने की गत परम्परा को योजनाबद्ध करके आगे बढ़ाना चाहिये। हमें अपने सिद्धान्तों को पूर्णतः आचार में लाकर उनके आदर्शों को स्थापित करना चाहिए और एतदर्थ समस्त आर्य विद्वान् बैठकर बदलते हुए युग के अनुरूप व्यावहारिक योजना बनायें और समाज को उस पर आचरण करने के लिये बाधित करें।

कुंवर सुखलाल आर्य रुग्ण अवस्था में

लाला रामगोपाल जी शाल वाले द्वारा सहायता का आश्वासन

दिल्ली, (वि० प्र०) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शाल वाले ने एक वक्तव्य में कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर की रुग्णावस्था में प्रत्येक प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दिया है। श्री शाल वाले गत दिवस कुंवर जी के निवास स्थान ग्राम अरुनियां जिला बुलन्दशहर में उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने गए थे। श्री शालवाले ने बताया कि कुंवर जी की इच्छा है कि आर्य समाज के कार्यकर्ता आपसी मतभेद भुलाकर ऋषि के मिशन के लिए काम करें। श्री शालवाले ने आर्य जगत् को श्री कुंवर जी की तन मन धन द्वारा सहायता करने की अपील की है।

"वन्य प्राणियों का शिकार मनोरञ्जन नहीं, हिंसा है—पाप है"

—श्री ब्रह्मदत्त स्नातक

★

[जब एक आदमी शेर को मारना चाहता है तो इसे शिकार का शौक कहा जाता है। जब एक शेर आदमी को मारना चाहता है तो कहा जाता है कि जानवर कितने हिंसक होते हैं। —जार्ज बर्नाड शा]

युगों से हमारे देश के विचारक एवं निवासी वन्य प्राणियों के बीच रहते आये हैं। यदि वन उनका निवास रहा तो वन्य प्राणी उनके जीवन सहचर। इन दोनों ने ही भारत को ही नहीं, अपितु विश्व को न केवल अध्यात्म, अपितु संस्कृति, कला सभ्यता एवं विज्ञान के क्षेत्रों में अपना अनुरूप योगदान दिया है। सारा काव्य वन्य प्राणियों एवं वन्य जीवन पर ही मूलत: आधारित है। हिरण सी आंखें, तोते जैसी नाक, सिंह जैसी कमर, हाथी के सूँड जैसी जांघ, बैल के से कन्धे न केवल शारीरिक सौष्ठव को बताते हैं, कोयल की सी बोली, हाथी की सी चाल और शेर की सी फुर्ती, कुत्ते की सी स्वामी भक्ति का वर्णन करने के लिये भी हमें इन प्राणियों की ओर ताकना पड़ता है। वृक्ष से लिपटी लतायें, तालाब में खिला कमल, उभरती गुलाब सी कली, अनार जैसे उरोज—इन सभी ने तो काव्य को नयी कल्पनायें एवं दृष्टि दी है। क्या मानव समाज इन वन्य प्राणियों के इस कारण को कभी चुकाने में समर्थ हैं ? कदापि नहीं।

सभ्यता के प्रकाश ने हमें इन वन्य प्राणियों से दूर ला पटका है। परन्तु सच पूछें तो वन्य जीवन से बाहर जाकर मानव ने अपनी मनुष्यता को गंवाकर 'जंगलीपन' (यह वन्य शब्द का दुरुपयोग है) का जामा पूरी तरह से ओढ़ लिया है। अतः अब हमें नये सिरे से वन्य प्राणियों से अपनी निकटता को बढ़ाना चाहिये। इनकी पूरी सुरक्षा की व्यवस्था अपने और समग्र राष्ट्र और मानव समाज के हित में हमें करनी होगी। शिकार द्वारा हम इन प्राणियों को संहार करके अपने हाथों अपनी कब्र खोद रहे हैं। मानव कल्याण के हित में अब हमें तीर-कमान, हाका मचान, फरसा-लाठी के अलावा परोश-लाइट, राइफल व जीप जैसे आधुनिक साधनों से इनका शिकार बन्द करके इनको निकट से देखना व कैमरे से फोटू खींचकर अपनी आंखों के सामने रखना चाहिए। सधे सूरमा और कला पारखी का यही कर्त्तव्य है। यह सोचकर कि इन प्राणियों के विकास के बिना मानव सुरक्षित नहीं रह सकता। इनकी हिंसा करना निरी मूर्खता है। प्रकृति में

एक अद्भुत् साम्य शक्ति है और इन वन्य प्राणियों के सह अस्तित्त्व को मानव समुदाय के लिये आवश्यक माना गया है।

हमारा देश वन्य प्राणियों की दृष्टि से संसार के सुन्दरतम देशों में से एक है। अफ्रीका, अमरीका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देश इसके सामने कोई तुलना नहीं रखते। वन्य प्राणी जिसमें वन्य पशु एवं पक्षी दोनों आ जाते हैं. यहां की विविध भौगोलिक परिस्थितियों एवं जलवायु के कारण बड़े अन्य भागों से यहां आकर स्थायी रूप से बस गए हैं, जिससे यहां की प्राकृतिक सुषमा को चार चांद लग गये हैं।

परन्तु पिछले एक सौ पचास वर्षों में वनों के साथ इन वन्य प्राणियों का भीषण संहार किया गया यहां तक कि इनकी कुछ जातियां लगभग समाप्त सी हो चली हैं। चीते, जंगली भैंसे, नील गाय, सांभर, बारहसिंगा, चौसिंगा, कस्तूरी हिरन, हाथी, मैंडे, अजगर भिन्न-भिन्न प्रकार के सांप व छिपकली किस्म के प्राणियों के अलावा हजारों किस्म के पक्षी हमारे देश में पाये जाते हैं. परन्तु अब उस में से कुछ प्राणी या तो विनष्ट हो गये हैं या बहुत ही कम पाये जाते हैं। गेंडा किसी जमाने में हिमालय के सारे पश्चिमवर्ती प्रदेश, यहां तक कि पंजाब में भी पाया जाता था, जो अब केवल असम के काजिरंगा एवं मनास अभयारण्यों तक सीमित रह गया है। एशियाई बबर शेर अब केवल गीर के जंगलों में सुरक्षित रखा गया है। जंगली भैंसे, भालू, बर्फ का चीता, बारहसिंगा आदि वन्य प्राणी बहुत कम बाकी बचे हैं। यही हाल कतिपय पक्षियों का है।

इनकी सुरक्षा के लिये सारे देश में स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य बनाये जा चुके हैं और नये-नये स्थापित किये जा रहे हैं। फिर भी जब तक जनसाधारण में वन्य प्राणियों को सुरक्षित रखने की भावना पूरी तरह नहीं जमती और वे लोग अपना सहयोग नहीं देते; केवल कानून के सहारे इतना महत्वपूर्ण काम लक्ष्य तक नहीं पहुँच पायेगा। उत्तर प्रदेश के तराई फार्म में मैंने वहां के विस्थापित किसानों में से कई को मोर की हत्या करके उसे साइकिल के पीछे बांधकर ले आते देखा है। पीलीभीत के जंगलों में से एक बार मैंने एक सप्लाई अधिकारी को एक जीप में मरे हिरण, नीलगाय व खरगोश को ले जाते हुए स्वयं देखा है। स्वयं दिल्ली के चारों ओर टीलों के आस-पास दुर्लभ पशु एवं पक्षी पहाड़ी व रेतीले इलाकों में बड़ी सख्या में कई किस्म के हिरण देखे जा सकते थे, जो अब समाप्त होते जा रहे हैं। चीता, लकड़बग्घा, भेड़िया व जंगली सुअर अब यहां यदा-कदा ही मिलते हैं।

यहां हम कानून द्वारा सरक्षा प्राप्त पक्षियों एवं पशुओं की सूची दे रहे हैं, जिनकी हिंसा पकड़ने या घायल करने पर दण्ड का विधान है। ऋग्वेद में 'शं नो अस्तु द्विपदे चतुष्पदे'–कहकर सारे दो पैर वाले मनुष्य और पक्षी व चार पैर वाले पशुओं के प्रति कल्याण एवं समृद्धि की ईश्वर से कामना की गई है, परन्तु नीचे दी गई 37 प्राणियों की सूची राष्ट्रीय रक्षा प्राप्त प्राणियों की है:-

भारतीय बबर सिंह, चीता, धब्बेदार चीता, शेर, सफेद शेर, बर्फ के प्रदेश का

चीता, कर कल, धारीदार लिनसांग सुनहरी बिल्ली, संगमभूरी बिल्ली मटमैली बिल्ली. सुनहरी लंगूर, पौंडा, बारासिंगा, भूरे रग का हिरण, चौसिंगा, काला सांभर, चिनकारा, हंगुल, कस्तूरी मृग, गैंडा, हाथी, जंगली भैंसा, छोटा सुग्रर, भरग्रौर, शापू जंगली गधा, ताकिन, मगरमच्छ ग्रजगर, पैंगोलिन, बस्टार्ड सफेद जंगली बतख, गुलाबी कलंगी वाली बतख, मोर, ट्रागोयन ग्रौर तितली।

हमारे देश में प्राचीनकाल से शिकार करने वाले ग्रौर ग्रादिवासी भी कुछ नियमों तथा मर्यादाग्रों को ध्यान में रखकर वन्य प्राणियों का शिकार करते थे। उदाहरण के लिए, वर्ष के कुछ खास दिनों में शिकार बिल्कुल नहीं किया जाता था। ग्रन्य ग्रवसरों पर भी कुछ खास प्राणियों का शिकार नहीं होता था। ऐसा करने में उम्र का भी ध्यान ग्रावश्यक रूप से रखा जाता था। इन प्राणियों का काम क्रीड़ा व गर्भावस्था के दिनों में, या पक्षी जब ग्रण्डे दे रहे हों, तब शिकार करना वर्जित है।

परन्तु देश में स्वाधीनता ग्राने के बाद 'ग्रधिक ग्रन्न उगाग्रो' ग्रान्दोलनों तथा जंगलों की सफाई करने से तथा देशी रियासतों के विलय के पश्चात् ग्रौर हथियारों के लाइसेंस ग्रधिक देने के कारण ग्रन्य प्राणियों का विनाश तेजी से होने लगा।

भारतवर्ष जैसे महान् देश में जहां कि ग्रधिकांश जनसंख्या निरामिष भोजी है, जहां बुद्ध, महावीर, ग्रशोक ग्रौर गांधी ने ग्रहिंसा तथा विनम्र प्रेम के सन्देश दिये, इन वन्य प्राणियों की रक्षा के लिये हम सब को स्वयं ग्रपने हित में ग्रधिकाधिक योगदान करना चाहिए।

जाने कैसे !

—श्री महेश 'सन्तोषी'

★

तुमने कोई मल्हार नहीं गाया फिर भी,
जाने कैसे यह मेरी ग्रांख छलक ग्राई !
कोई पुरवैया बही न पिय की पाती ले,
फिर भी मेरे गीतों का ग्रांचल भीग गया;
सागर ने शायद मेहा ग्रभी नहीं भेजा–
बेमौसम कोई घायल बादल भींग गया;
तुम ने तो पनघट से प्यासा लौटाया पर,
फिर-फिर हर बदरी मेरा घट भरने ग्राई !
बूंदें बन-बन बरसा न ग्रभी बोझिथ बादल,
फिर सरिता किस शबनम से उमर चुरा लाई ?

मिट्टी को मिला नहीं मेघों का ग्रामंत्रण–
नभ से मिलने की मधुऋतु ग्रभी नहीं ग्राई;
शायद प्रिय के नयनों की शबनम सूख गई,
ग्रसमय में मुरझाई सपनों की ग्रमराई !
प्यासा पंछी पी-पी कह मौन हुग्रा जाता,
कोई ग्राह्वन भरी ग्रावाज नहीं ग्राती;
ग्रनजाने में नयनों में जो बदरी घिरती–
वह तो प्राणों की सोई प्यास जगा जाती;
मैंने सावन का प्यार नहीं पाया लेकिन,
हर सांस किसी बादल को साथ उड़ा लाई !

डियागो गार्सिया में अमेरिका क्यों ?

—धीरेन्द्र कुमार विद्यालंकार

★

हिन्द महासागर के देशों के प्रबल विरोध के वावजूद फोर्ड प्रशासन ने अपनी उस नीति पर कायम रहने का विचार किया है कि डियागो गार्सिया में अमेरिकी वायु सेना का अड्डा स्थापित किया जाए। पिछले दिनों अमेरिकी प्रशासन ने इसके पक्ष में एक दलील दी थी कि अमेरिका के राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए ऐसा आवश्यक है। सोवियत संघ के बारे में अमेरिका का आरोप है कि वह भी हिन्द महासागर में अपने अड्डे स्थापित कर रहा है। अमेरिकी रक्षा मन्त्री श्री श्लेसिंगर के मत में सोवियत संघ ने बेरबेरा (सोमालिया) में एक सैनिक अड्डा स्थापित कर लिया है। उन्होंने अपने मत की पुष्टि में सीनेट को अनेक चित्र व रेखाचित्र भी दिखाए। मगर श्लेसिंगर का यह बयान एकदम बेतुका एवं सिर्फ बहाना है क्योंकि सोमालिया की सरकार ने इस कथन का खण्डन किया है कि सोवियत संघ ने उसके यहां कोई अड्डा स्थापित किया है। अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी सी. आई. ए. के निदेशक श्री कोल्बी ने भी यह कहा है कि हिन्द महासागर में सोवियत संघ का कोई अड्डा नहीं है। फिर श्लेसिंगर की वकालत एकदम झूठ पर आधारित मालूम होती है।

यह बात नहीं कि अमेरिकी जनता यह चाहती है कि हिन्द महासागर के क्षेत्र में अमेरिकी सैनिक दबाव कायम हो। अमेरिकी कांग्रेस ने फ़ोर्ड प्रशासन द्वारा मांगे गए इस मद के लिए राशि में से लगभग आधा काट दिया है। सीनेट के डेमोक्रेट पार्टी के नेता माइक मैन्सफील्ड ने अमेरिकी प्रशासन के निर्णय पर अपनी कठोर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि अमेरिका को दुनियां भर का पुलिसमैन बनने की क्या जरूरत है। सेनेटर साईमिंग्टन ने डियागो गार्सिया में अड्डा स्थापित करना एक बड़ी भूल बताया। अमेरिकी सेनेट के ही एक अन्य सदस्य श्री कैनेडी ने इस बात के लिए अमेरिकी विदेश नीति की बड़ी आलोचना की है कि स्वयं दूसरे देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करके युद्ध मोल लेता है फिर हार कर इसे भागना पड़ता है। उन्होंने इस बात की आलोचना की कि सोवियत संघ के भय का हौवा खड़ा करके अमेरिकी प्रशासन का हिन्द

महासागर में सैन्य अड्डा बनाना उसका अक्षम्य अपराध है। सोवियत संघ को वह मुकाबला करने की ओर प्रेरित करेगा और वहां विएटनाम वाली स्थिति को ला देगा। मगर फोर्ड प्रशासन ने इस सब विरोध को ताक में रखकर अमेरिकी सैन्य अड्डा बनाने की अपनी नीति पर दृढ़ रहने का विचार किया है। [डियागो गार्सिया में इस अड्डे पर 17 करोड़ 30 लाख डालर (लगभग 1 अरब 29 करोड़ पिचहत्तर लाख रुपये) खर्च किया जाएगा जिसमें से दस करोड़ खर्च हो चुका है।]

आखिर अमेरिकी प्रशासन हिन्द महासागरीय देशों की इस विरोधी प्रतिक्रिया के मूड को क्यों नहीं ध्यान देता है। अमेरिकी प्रशासन की दलील है कि इस क्षेत्र में सोवियत संघ का जो हानिकर प्रभाव का जमना है उसे अमेरिका कम करना चाहता है तथा अमेरिकी अर्थव्यवस्था के हित में यहां अड्डा बनाना उचित ही है। किन्तु सच तो यह है कि वह इस क्षेत्र में सोवियत प्रभाव को कम करने की बजाय प्रतिद्वन्द्विता स्थापित कर रहा है। वह समझता है कि स्वेज नहर के खुलने से सोवियत संघ से हिन्द महासागर की दूरी कम नहीं रही है तथा वह इस स्थिति को सहन नहीं कर सकता कि सोवियत संघ का इस क्षेत्र में प्रभाव इस कदर बढ़ जाए कि वह फारस की खाड़ी से ही हाथ धो बैठे। ईरान और पाकिस्तान भी अमेरिकी सैनिक सहायता की ओर मुँह बाये पड़े हैं। इस स्थिति में अमेरिका की यह दलील कि यह अड्डा विदेशी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा—कहां तक विश्वसनीय है ?

❀ चार चीजें पहले दुर्बल दीखती हैं, परन्तु परवाह न करने से बहुत बढ़कर दुःख के गढ़े में डाल देती हैं— अग्नि, रोग, ऋण और पाप।

❀ चार चीजों का सदा सेवन करना चाहिए - सत्संग, सन्तोष दान और दया।

❀ चार अवस्थाओं में मनुष्य बिगड़ता है— जवानी, धन, अधिकार और अविवेक। अतः इनसे सावधान रहना चाहिये।

महिला वर्ष के उपलक्ष्य में—

महिला : आसपास स्वतन्त्र चिंतन

—वाचस्पति यादव

★

आदिम युग था। निस्हाय नारी भटक रही थी। वह बेहाल थी। इतने में धनुर्धारी पुरुष आया तथा उसने नारी को कहा, क्यों भटक रही है चल मेरे साथ, गुफा में रहेंगे तथा आपस में सहयोग करेंगे।

❀ ❀ ❀

इसके बाद आदि युग का मध्य दौर आया। मनुष्य ने नारी को कहा, हम अकेले क्यों भटकें सदा के लिए साथ क्यों ना रहें। शत्रुओं से भी एक साथ मिल कर मुकाबला करेंगे। यह एक समझौता था।

❀ ❀ ❀

आदिम युग का अन्तिम दौर आया। नर ने स्त्री से कहा, क्या करें अब तो इन बालकों से प्रेम हो गया है। मैं तेरी व इन बच्चों की रक्षा करूंगा।

❀ ❀ ❀

परन्तु ऐतिहासिक युग के प्रारम्भ में पुरुष ने स्त्री को झिड़क दिया, "खबरदार जो बिना इजाजत घर से बाहर कदम भी रखा।" पुरुष ने स्त्री को अपनी सम्पत्ति समझ लिया था।

❀ ❀ ❀

और समय बीतता गया पुरुष ने नारी पर अत्याचार किये। नारी बेचारी सब सहती रही। और फिर ...... आजकल स्त्रियां फारवर्ड हो चुकी हैं। पश्चिमी देशों में तो आजकल स्त्रियों ने आन्दोलन चला रखा है "Hate men movement" स्त्रियों के प्रति भारतीय दृष्टिकोण फिर भी 'क्लासिक' रहा जब कि पश्चिम में 'रोमांटिक'।

चाहे कुछ भी हो नर एवं नारी सृष्टि की अनुपम कृतियां हैं। महिला शब्द का अर्थ है "भारी उत्तरदायी"। अतः महिला का तात्पर्य भार या उत्तरदायित्व को वहन करने वाली। प्रारम्भ से ही हमारी भारतीय संस्कृति ने नारी को गौरव दिया है। हमारे यहां स्त्रियों की पूजा होती रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने सीता को त्यागने

के बाद भी यज्ञ में सोने की सीता की मूर्त्ति बनाकर यज्ञ किया था । हमारी प्राचीन नारियों यथा:— विश्वारा, घोषा, और लोपमुद्रा को वेदों का ऋषि (मन्त्रदृष्टा) होने का गौरव प्राप्त है। कालिदास की पत्नी विद्योत्तमा के पाण्डित्य से सब परिचित हैं। आजकल के युग में जरा नजर घुमाइये तो आप जानेंगे कि भारतीय स्त्री किसी भी सभ्य देश की स्त्रियों से पीछे नहीं आगे बेशक हो। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, विजयलक्ष्मी, भण्डार नायके एवं अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करती हुई स्त्रियां अब भी पूर्ण गौरवयुक्त हैं इसमें सन्देह की कतई गुंजाइस नहीं।

जिन स्त्रियों का कार्यक्षेत्र मात्र घर था, पर्दे व क्रूरता का शिकार वो ही स्त्रियां आज बड़ी-बड़ी सेवाओं में काम कर रही हैं। I. A. S. में इस साल एक लड़की ही सर्वप्रथम रही है। पुलिस, सेना, तथा शासकीय क्षेत्रों में स्त्रियों ने पुरुषों को मात दे दी है। स्त्री को पैर की जुत्ती समझने वाला पुरुष आज उसके पराक्रम से स्तब्ध है। जब पति की चिता पर जबरदस्ती लिटा दिया जाता था, बेचारी नारी सब सहन करती थी पर अब नहीं करेगी। नारी कोई सहानुभूति का रुझान लिए हुए हो मेरे सम्बन्ध में यह बात नहीं है। पर सोचने की बात है—नर नारी एक गाड़ी के दो पहिये हैं। यदि एक पहिये को छोटा दूसरे को बड़ा कर दिया जाता है तो गाड़ी क्या सुगमता से चल सकेगी ? नहीं।

अब आप इन को छोड़कर स्त्रियों के प्रति मानव का दृष्टिकोण क्या होना चाहिए इस पर विचार कीजिए। लज्जा, सेवा, ममता, त्याग, क्षमा तथा सहनशीलता इन्हीं गुणों से एक स्त्री 'देवी' कहलाती है और पुरुष 'संत' संत से एक ऐसे पुरुष से अभिप्राय है जो सभ्य, संयमी, सदाचारी हो। पुरुष अनिश्चित काल से स्त्रियों को विलास की सामग्री समझता आया है। साथ साथ सामाजिक खूंटे से भी बांधना चाहता है यह अन्याय नहीं तो क्या न्याय है ? पुरुष अपने आपको तो पक्षी की तरह आजाद चाहता है पर स्त्रियों को पिंजरे में बन्द ही देखना चाहता है। अत: मैं यह कहना चाहता हूं कि पुरुष को चाहिए कि वह अपना दृष्टिकोण बदले। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं कि स्त्रिया दूध की धुली हैं। ऐसी भ्रष्ट भी स्त्रियां हैं जो अपने आचरण के कारण पुरुष की घृणा का पात्र बनी रहीं। यद्यपि कुछ स्त्रियों ने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया पर उनमें आंकड़ों के अनुसार 95% असफल रहीं।

अब स्त्रियों की शिक्षा पर सोचिए। स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए पर नौकरी के उद्देश्य से नहीं। यदि विवाह से पूर्व लड़की नौकरी करती है तो पति आज्ञा से नौकरी छोड़ देनी चाहिए। यदि स्त्रियों से पति आज्ञा की अवेहलना होगी तो गृह कलह होगा। शिक्षित स्त्री आधुनिक ढंग से गृहकार्यों को कर सकती है। आजकल महिला वर्ष की धूमधाम है। यदि स्त्रियां अपने सहज गुणों को छोड़ देंगी तो समाज का अधःपतन हो जाएगा। आजकल पुरुषों को अपना स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण बदल लेना चाहिए। पर स्त्रियों को भी उनकी यथार्थ सामाजिक सीमा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए इसी में दोनों का हित है।

एक गणित पहेली :

'राजा बुद्धिमान' बनें

—श्री कर्णसिंह तोमर

एक किले के छः दरवाजे हैं प्रत्येक दरवाजे पर कुछ-कुछ सैनिक हैं। कुछ चोर पहले द्वार पर आये। प्रत्येक द्वार पर खड़े सैनिकों को पता चल जाता है क़ि पहले द्वार पर कुछ चोर चोरी करने आए हैं। प्रत्येक द्वार से उतने-उतने ही सैनिक आ गए जितने कि पहले द्वार पर थे। चोर फिर दूसरे द्वार पर गए। जितने सैनिक दूसरे द्वार पर शेष बचे उतने-उतने ही सैनिक बाकी सब द्वारों से आ गए। वहां से हटकर चोर तीसरे द्वार पर पहुँचे। जितने सैनिक तीसरे दरवाजे पर शेष बचे उतने-उतने बाकी सभी द्वारों से आ गए। चोर वहां से भी हट गए और चौथे द्वार पर पहुँचे। लेकिन जितने सैनिक चौथे द्वार पर शेष बचे उतने-उतने ही शेष प्रत्येक द्वार से आ गए। चोर फिर पांचवें पर पहुँचे वहां पर भो जितने सैनिक द्वार पर शेष थे उतने-उतने शेष सभी द्वारों से आ गए। छटे द्वार पर चोरों के पहुंचे जाने पर छटे द्वार पर शेष सिपाहियों की संख्या जितने सभी द्वारों से आ गए। अन्त में देखा गया तो सैनिक प्रत्येक द्वार पर बराबर बराबर मिले। बतलाइये चोरों के आने से पहले प्रत्येक द्वार पर कितने-कितने सैनिक थे तथा कितने सैनिक अन्त में सभी द्वारों पर अलग-अलग थे ?

[नोट—विद्यापीठ के गणित विभागाध्यक्ष श्री कर्णसिंह तोमर द्वारा प्रस्तुत यह पहेली पाठकों के सम्मुख पेश है। आप यथाशीघ्र इस पहेलो का उत्तर भेजिए तथा "राजा बुद्धिमान" का खिताब जीतिए। प्रतियोगी अपने पासपोर्ट साइज की फोटो भी साथ भेजें। पहेली का उत्तर 31 अगस्त 1975 तक पहुँच जाए।]

बाल जगत् :

दो कहानियां

चतुर वैद्य (1)

—श्री सतीश भाटिया

★

एक राजा के एक लड़की पैदा हुई। वह लड़कियों को नहीं चाहता था। वह इसी फिक्र में रहने लगा कि लड़की कब बड़ी हो और कब उसकी शादी हो। फिर उसने यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई वैद्य उसकी लड़की को जल्दी बड़ा कर देगा, वह उस को एक लाख रुपये देगा।

राजा की घोषणा सुनकर एक वैद्य ने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज ! मैं यह काम कर सकता हूं, मुझे एक लाख रुपये दिलवाइए।"

"चिकित्सा के लिए कितना समय लोगे ?"—राजा ने पूछा।

"एक महीने तक ओषधि का सेवन करने से राजकुमारी बड़ी हो जायेगी,"—वैद्य ने कहा। राजा मान गया।

कई वर्ष बीत गये। इस बीच राजा ने कई बार चिकित्सक को बुलाकर पूछा—"क्या चिकित्सा हो गई ?"

"राजन् ! अभी जड़ी बूटियां नहीं आई हैं। उनके आते ही ओषधि तैयार हो जायेगी और ओषधि पीते ही राजकुमारी बड़ी हो जायेगी।" हर बार वैद्य ने यह कह कर बात आगे को टाल दी। इस बीच राजकुकारी बड़ी हो गई। एक दिन वैद्य ने कहा—"महाराज ! चिकित्सा पूरी हो गई है।" राजा ने राजकुमारी को बुला कर देखा। वह सचमुच बड़ी हो गई थी। प्रसन्न होकर राजा ने वैद्य को एक लाख रुपया दे दिया।

प्रत्युत्पन्नमति (II)

—श्री अवतार सिंह

किसी समय एक राजा था। उसे ज्योतिषियों से अपना भविष्य जानने का बहुत शौक था। संयोगवश एक वृद्ध ज्योतिषी बनारस जाते हुए उसकी राजधानी में रुका। राजा ने उसे बुला भेजा। उसने उससे अपने भविष्य का हाल पूछा। ज्योतिषी ने इस सम्बन्ध में कुछ अशुभ बातें बताईं। राजा बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने उसे मृत्यु-दण्ड की आज्ञा दी और कहा—"तुम्हारे जैसे मनुष्यों को जीवित रह कर विश्वशांति को भंग नहीं करना चाहिए।"

किन्तु फांसी देने के लिये भेजने से पहले उसके मस्तिष्क में दूसरा ही विचार आया। उसने ज्योतिषी की परीक्षा लेनी चाही।

उसने ज्योतिषी से पूछा - "तुम कब तक जीवित रहोगे ?"

ज्योतिषी यह सुनकर सोच में पड़ गया। वह बचने का उपाय खोजने लगा। उस ने मन में कहा —"यदि मैं कहता हूँ कि आज के दिन से अधिक जिऊंगा तो राजा मुझे आज फांसी पर चढ़ाकर मुझे झूठा सिद्ध कर देगा।"

फिर कुछ क्षण चुप रह कर उसने अपने को सम्हाल कर उत्तर दिया - "नक्षत्रों का कहना है कि मैं आप से एक सप्ताह पूर्व ही मर जाऊँगा। अतः मैं आपसे विदा लेता हूँ। मैं वहां आपका भव्य स्वागत करने के लिए शक्ति भर प्रयत्न करूंगा। अब आप मुझे शीघ्र वहां भेज दें।"

इस पर राजा बड़ा क्रोधित हुआ। उसने आंखों से आग बरसाते हुए कहा—"निकाल दो इस दुष्ट को। इसको पुनः यहां मत आने देना।"

वृद्ध ने जल्दी ही अपना रास्ता नापा। जान बची लाखों पाए।

दूसरी एशियाई एथलेटिक प्रतियोगिता : दूसरा स्थान

सियोल में हुई दूसरी एशियाई एथलेटिक प्रतियोगिता में कुल मिला कर भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन काफी उत्साहवर्द्धक रहा। चीन की अनुपस्थिति में भारत को दूसरा स्थान मिलना तो निश्चित ही था। हां, जापान की स्थिति में तब भी कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता था क्योंकि तेहरान में हुई एशियाई खेलों और पहली एशियाई एथलेटिक प्रतियोगिता (मनीला—1973) में भी 'कौन कहां रहा' की सूची में पहला स्थान मिला था।

1973 में मनीला में हुई एशियाई एथलेटिक प्रतियोगिता में भारत ने कुल मिला कर 16 पदक (4 स्वर्ण, 6 रजत और 6 कांस्य) जीते थे।

भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाने का गौरव 23 वर्षीय हरिचन्द को, जो सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स में सब-इन्स्पैक्टर हैं, प्राप्त हुआ। उन्होंने 10,000 मीटर की दूरी को 29 मिनट और 12 सैकिंड में पार किया। इस फासले की दौड़ का एशियाई रिकार्ड 1973 में जापान के इशिओ सातो ने 29 मिनट 54.5 सैकिंड का मीटर रिकार्ड स्थापित किया था। सेना के 28 वर्षीय शिवनाथ सिंह ने इस दूरी को 29 मिनट 14.6 सकिंड में पूरा किया। तीसरा स्थान जापानी खिलाड़ी को मिला।

11 जून का दिन भारत के लिए सबसे अच्छा रहा। इस दिन भारत ने तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किये। गोला फैंकने की प्रतियोगिता में भारत के लौह पुरुष 29 वर्षीय बहादुर सिंह ने, जिन्हें तेहरान एशियाई खेलों में रजत पदक प्राप्त हुआ था, 17.70 मीटर गोला फैंक कर इस बार स्वर्ण पदक प्राप्त किया। भारत के जगराज सिंह ने 17 47 मीटर गोला फैंक कर रजत पदक प्राप्त किया।

लम्बी कूद के खिलाड़ी टी. सी. योहानन ने 7.65 मीटर लम्बी छलांग लगा कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तेहरान में उन्होंने 8.07 मीटर लम्बा कूद कर नया एशियाई रिकार्ड स्थापित किया था।

श्री राम सिंह ने 400 मीटर और 800 मीटर के फासले की दौड़ों में दो स्वर्ण पदक प्राप्त किये। श्री रामसिंह ने तेहरान खेलों में भी 800 मीटर में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। पहले तो उन्होंने 400 मीटर के फासले को 47.03 सैकिंड में पूरा करके स्वर्ण पदक प्राप्त किया और अगले ही दिन उन्होंने 800 मीटर की दूरी 1 मिनट 47.8 सैकिंड में पूरा करके स्वर्ण पदक प्राप्त किया। छठा स्वर्ण पदक प्राप्त करने का गौरव हरबेल सिंह को प्राप्त हुआ जिन्होंने 3,000 मीटर की स्टीपलचेज प्रतियोगिता 8 मिनट 46.6 सैकिंड में जीती।

चक्का फैंकने की प्रतियोगिता में भारत के प्रवीण कुमार और ईरान के जलाल कश्मीरी के बीच पुरानी प्रतिद्वंद्विता चली आ रही है। कभी कश्मीरी इस में स्वर्ण पदक प्राप्त कर जाते हैं तो कभी प्रवीण कुमार। 1970 में हुई एशियाई खेलों में प्रवीण ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। तेहरान में हुए एशियाई खेलों में कश्मीरी ने प्रवीण कुमार को पछाड़ कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया था लेकिन इस बार प्रवीण कुमार ने अपनी पिछली हार का बदला तो लिया है साथ ही एशियाई स्पर्द्धा का नया रिकार्ड भी स्थापित किया। इस बार प्रवीण कुमार ने 54.78 मीटर दूर चक्का फैंक कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया जब कि कश्मीरी ठीक उनसे एक मीटर कम (53 78 मीटर) चक्का फैंक सके। वैसे 27 वर्षीय पुलिस इन्स्पैक्टर प्रवीण कुमार का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 56 74 मीटर रहा है।

14 जून की प्रतियोगिता के अन्तिम दिन भारत ने दो स्वर्ण पदक और प्राप्त कर लिए। डिकेथलन प्रतियोगिता में सुरेश बाबू 6,931 अंक बना कर प्रथम रहे। इस के अतिरिक्त भारत ने 4×400 मीटर की रिले (सुच्चा सिंह, रणजीत सिंह, उदय प्रभु और श्री राम सिंह) दौड़ में भी स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

5000 मीटर के फासले की दोड़ में शिवनाथ सिंह ने रजत पदक और हरिचन्द ने कांस्य पदक प्राप्त किया।

प्रश्न उठता है कि इस बार चीन प्रतियोगिता से क्यों अलग रहा। एक कारण तो उसका वही पुराना राग (ताइवान को निकालो) है पर कुछ लोगों का यह भी विचार है कि चीन इन दिनों आगामी ओलिंपिक खेलों की तैयारी में जुटा हुआ है।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि क्योंकि पिछले दिनों चीन ने अपने यहां कुछ अमेरिकी एथलीटों को आमन्त्रित किया था इसलिए उसने अपने खिलाड़ियों को सियोल भेजना मुनासिब नहीं समझा।

—पदक सूची—

दूसरी एशियाई एथलेटिक प्रतियोगिता में विभिन्न देशों की स्थिति इस प्रकार रही: –

क्रम	देश	स्वर्ण पदक	रजत पदक	कांस्य पदक	क्रम	देश	स्वर्ण पदक	रजत पदक	कांस्य पदक
1.	जपान	15	20	18	8.	ईरान	1	1	0
2.	भारत	9	5	5	9.	सिंगापुर	0	2	1
3.	ताइवान	5	2	5	10.	इन्डोनेशिया	0	1	1
4.	दक्षिण कोरिया	4	4	4	11.	क्वैत	0	1	0
5.	इस्राईल	2	1	3	12.	नेपाल	0	0	1
6.	थाइदेश	2	0	0	13.	श्रीलंका	0	0	1
7.	मलयेसिया	1	2	0	—	—	—	—	—

गुरुकुल – समाचार

ऋतु - रंग

गुरुकुल भैंसवाल में परीक्षायें समाप्त भी नहीं हुई थी कि गर्मी का आक्रमण जोरों से शुरु हो गया था। गर्मी ने अपना विस्तार किया और गुरुकुलवासियों को तपश्चर्या की परीक्षा में झोंक दिया। लेकिन अभी बरसात हुई थी कि चारों ओर प्रसन्नता छा गई है। लम्बी कष्ट पंक्ति को झेलकर जब चैन रूपी राशन मिला तो दिल बाग बाग हो उठा। मन-मयूर नाच उठा। दिल कुहुकने लगा। सबके चित्त आह्लाद-पय से आप्लावित हो रहे थे। वर्षा का सभी ओर से स्वागत हो ही रहा था कि एक छात्र चिल्ला उठा –

'बरखा रानी जरा झूम के बरसो' साथी से रहा न गया उसने नारा दिया— आया सावन झूम के।

परीक्षा परिणाम

लम्बी प्रतीक्षा के बाद आखिर रिजल्ट आ ही गया। महाविद्यालय (College Section) का रिजल्ट शत-प्रतिशत रहा। छात्रों को इस बार कठोर अंकदान (Hard Marking) की शिकायत रही। विद्याधिकारी प्रथम तथा द्वितीय खण्ड के अधूरे परिणाम पहुँचे हैं। अब तक पहुँचे रिजल्ट के अनुसार गुरुकुल भैंसवाल का रिजल्ट शत-प्रतिशत परिक्षार्थियों की सफलता का सन्देश लेकर आया है। रिजल्ट का पूर्ण विवरण इस प्रकार है:—

विद्यालंकार द्वितीय वर्ष (B. A. Final)—

प्रथम श्रेणी— श्री अरविन्द कुमार।

द्वितीय श्रेणी— सर्वश्री बालकृष्ण, गोविन्द, राजपाल, हरिराम, जयप्रकाश तथा चान्दराम।

विद्यालकार प्रथम वर्ष (B. A. II Year)—

उत्तीर्ण— सर्वश्री भीम सिंह, धीरेन्द्र कुमार, वाचस्पति, बलभद्र।
(इस श्रेणी में श्रेणी विभाजन का विवरण नहीं दिया जाता है)।

विद्याविनोद द्वितीय वर्ष (Intermediate)—

द्वितीय श्रेणी— सर्वश्री जगमोहन, नीलकण्ठराव ।

विद्याविनोद प्रथम वर्ष (Prep)—

प्रथम श्रेणी— सर्वश्री रमेशचन्द्र, वसन्तराव ।
द्वितीय श्रेणी - सर्वश्री सोमदेव, धर्मवीर ।

गुरुकुल भैंसवाल में प्रवेश रोकना पड़ा

प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी प्रवेश के लिए सैंकड़ों प्रार्थना पत्र आये। संस्था में पहली से बी. ए तक की पढ़ाई का उत्तम प्रबन्ध है। यहां इस संस्था का अपना छात्रावास है जहां छात्र को प्रत्येक समय नियमों में बन्धा रहना पड़ता है। उसका एक-एक मिनट उसके संरक्षक की नजरों में बीतता है। इससे इस संस्था का स्नातक एक नम्र, सुशील युवक बनकर ईमानदारी से राष्ट्रसेवा तथा भक्ति-भाव से माता-पिता की सेवा में लग जाता है। बिहार में गुरुकुल के स्नातक ऐसी जगहों पर काम करते हैं जहां उनके साथी जनों ने भ्रष्टाचार से काफी धन कमा लिया मगर गुरुकुल के स्नातक की धूम है जिसने छत्तीस वर्ष की उसी सेवा में अपना पक्का मकान भी तैयार नहीं किया है। उड़ीसा में राष्ट्र को ईसाईयों के कराल गाल में फंसे जाने से पूर्व सुधार करने के लिए देश प्रसिद्ध श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती तन मन धन से लगे हैं। हमारे यहां उसी प्रदेश के ब्रह्मचारी श्री गोविन्द सिंह पढ़ते थे। स्वामी ब्रह्मानन्द जी के साथ उन्होंने भी प्रतिज्ञा की है कि वे आजीवन ब्रह्मचारी रहकर आर्य समाज का प्रचार करेंगे। गुरुकुल भैंसवाल के प्राचार्य को भेजे गए पत्र में उन्होंने वहां की दशा का मार्मिक विवेचन किया है तथा उसे सुधारने के लिए कृत संकल्प होने की घोषणा की है। उसमें यह भावना कैसे आई? इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने 'गुरुकुल भैंसवाल की शिक्षा - दीक्षा, उपदेश एवं वातावरण का प्रभाव है" कहकर दिया है। आज उस छात्र की समस्त प्रदेश में धूम मची है। इस संस्था का प्रत्येक छात्र जहां भी गया है सफलता प्रदान की है। यहां का विद्यालंकार (बी. ए) यदि B. Ed. में प्रवेश चाहता है तो कॉलिज उसे प्राथमिकता देता है, यदि वह एम ए. में प्रवेश चाहता है तो कॉलिज या विश्वविद्यालय स्कालरशिप भी प्रदान करते हैं उसकी शिक्षा में योग्यता देखकर। यहां दर्शन करने आए सभी व्यक्तियों ने इस संस्था की हार्दिक सराहना की। यहां पर छात्रों की प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखा गया है। इसके छात्रों के लिए एक पुस्तकालय है जिसमें लाखों रुपये की पुस्तकें छात्रों के अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं। अत्याधुनिक सुविधाएं जैसे वाचनालय, दूरदर्शन-गृह की भी सुविधायें छात्रों को दी गई हैं। प्रशिक्षित एवं अपने विषय में मास्टर अध्यापकों को नियुक्त किया गया है तिस पर शिक्षा निश्शुल्क है। आज भी यहां बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र, बनारस जैसे दूरस्थ प्रदेशों से शिक्षा ग्रहण करने छात्र आए हुए हैं। छात्रों के

प्रवेश-पत्रों की इतनी भीड़ देखकर तथा छात्रावास में स्थान की कमी को देखते हुए यहां परीक्षा के आधार पर छात्रों को प्रवेश दिया गया। फिर भी समय से पूर्व प्रवेश रोक दिया गया है। इस वर्ष एक अन्य छात्रावास के बन जाने पर आगामी वर्ष प्रवेश होने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावनाएं हैं।

—वाचस्पति यादव विद्यालंकार

बी० पी० एस्, मैमोरियल कालिज खानपुर कलां (सोनीपत) 15 जुलाई को कालिज खुल गया है। प्रवेश की इच्छुक छात्राओं तथा उनके अभिभावकों के दर्शन इधर-उधर सर्वत्र दिखाई दे रहे हैं। प्रतिनिधि जब प्राचार्या से तात्कालिक गतिविधियों की ताजा रिपोर्ट लेने गया तो उसने पाया कि वहां प्रवेश के सन्दर्भ में काफी व्यस्तता है। प्राचार्या कुन्ती रानी जी ने बताया कि इस वर्ष बी. एस सी. (गृह विज्ञान) के इस संस्था में आ जाने से व्यस्तता में वृद्धि हो गई है। यह पूछे जाने पर कि आपके यहां छात्राओं के प्रवेश के लिए इतनी भीड़ किस लिए है उन्होंने बताया कि यहां का परिणाम हमेशा शानदार रहता है। यूनिवर्सिटी के परिणाम और यहां के परिणाम में 1 : : 3 का अनुपात तक रहता है। इस बार के रिजल्ट का औसत 92 5% रहा है, जो बी० ए० फाईनल के यूनिवर्सिटी के औसत से काफी अच्छा है। उन्होंने शत प्रतिशत रिजल्ट न आने का दु:ख माना तथा विश्वास प्रकट किया कि आगामी वर्ष इससे काफी अच्छा रिजल्ट लाने का कड़ा प्रयत्न किया जायेगा। प्रतिनिधि के यह पूछने पर कि इस बार कुछ छात्राओं के फेल होने के क्या कारण हैं? क्या आपके प्रबन्ध में कुछ ढील आई है? प्राचार्या महोदया ने बताया कि यूनिवर्सिटी भर का रिजल्ट बहुत कड़ा (Strict) है। इस बार अंक प्रदान (Marking) कठिन रहा है। मगर प्राचार्या ने इस बात पर गौरव तथा प्रसन्नता व्यक्त की कि इस संस्था की छात्राएं हर क्षेत्र में आगे आई हैं। स्मरण रहे इस कालिज का अपना उत्तम व्यवस्थायुक्त छात्रावास है जिसमें छात्रा की प्रत्येक गतिविधि पर कड़ी नजर रखी जाती है। इस वर्ष से पहले वर्ष तक इस का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा है।

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

* नये स्तम्भ *

हमें खेद है कि हम आपकी प्रिय पत्रिका 'समाज सन्देश' में चिर-प्रतीक्षित नये स्तम्भ स्थानाभाव के कारण शामिल न कर सके। हम अगले अंक से कुछ नये स्तम्भ इस पत्रिका में जोड़ने वाले हैं :—

* सम्पादक के नाम पत्र—

इस स्तम्भ में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। आप यह बताना न भूलें कि आपको यह अंक कैसा लगा।

* विशेष इन्टरव्यू (भेंट वार्त्ता सम्बन्धी) -

इसके अन्तर्गत पत्रिका के प्रतिनिधि समय-समय पर आपके लिए भेंट वार्त्ताएं प्रस्तुत करेंगे।

* एक महापुरुष की कहानी:—

महापुरुषों को स्मरण रखना प्रत्येक देशवासी का कर्त्तव्य है। पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने क्षेत्र के महापुरुषों की जिनके कारनामों से राष्ट्र और समाज को सुधार का सन्देश मिला हो भेजें। हम साहसिक कार्य करने वाले व्यक्तियों के विवरणों को प्राथमिकता देंगे।

—सम्पादक

❀ आभार प्रदर्शन ❀

अब तक समाज सन्देश नितान्त सजधज के साथ आपके हाथों में पहुँचता रहा है। इस पर अनेक मार भी आईं। अनेक विज्ञापनों को अधार्मिक कहकर ठुकरा दिया तथा इसकी पवित्रता को बरकरार रखा गया। समय-समय पर इसने अनेक विशेषांक, जो कि प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रहणीय हैं निकाले हैं। हर बार इस पत्रिका को अपने नाम के अनुसार सर्वोत्तम बनाये रखा गया। इस सब का श्रेय श्री धर्मचन्द जी शास्त्री (उप-मन्त्री महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां) को जाता है। उन्होंने अपनी व्यस्तता के कारण इस पत्रिका का भार नये कन्धों पर सौंपने की अपनी इच्छा जाहिर की। हमने उन्हें विवश तो नहीं किया कि वे इसे सम्भालें मगर प्रार्थना भी की कि वे इसे समय-समय पर अपने बेशकीमती सुझावों से रास्ता सुझाते रहें। श्री शास्त्री जी के उदार दिल ने इसे खुशी से स्वीकार कर लिया। हम श्री शास्त्री जी के इस पत्रिका के अब तक के संचालन में प्रमुख सहयोगी के नाते काम करने के नाते आभारी हैं।

—आचार्य विष्णुमित्र उपकुलपति

गुरुकुल अनुशासन और नेहरू जी

बात 1958 की है। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार में स्वर्ण जयन्ती का आयोजन था। तत्कालीन प्रधान मन्त्री स्व० नेहरू जी को दीक्षान्त अभिभाषण के लिए आमन्त्रित किया गया था। दोपहर के भोजन के पश्चात् नेहरू जी की आदत आराम तथा सिगरेट पीने की थी।

वहां भी ऐसा ही हुआ। खाने के उपरान्त वे कालीन पर तकिये के सहारे लेट गये और बोले, "कैप्सटन सिगरेट मंगवाईये।"

बगल में श्री प्रकाशवीर शास्त्री बैठे थे। उन्होंने नेहरू जी से निवेदन किया, "पंडित जी, यहां तो सिगरेट मिलेगी नहीं पर किसी को तुरन्त गाड़ी से भेज कर ज्वालापुर से सिगरेट मंगवाये देते हैं।"

इस पर नेहरू जी आश्चर्य चकित रह गये। बोले, "कमाल है, यहां इतना बड़ा बाजार लगा है, पर सिगरेट बेचने वाला कोई नहीं है?" उत्तर में श्री शास्त्री जी ने निवेदन किया, "पंडित जी, बात यह है कि यहां सिगरेट पीना और बेचना दोनों ही मना हैं। गुरुकुल के नियमों के अनुसार यहां धूम्रपान सर्वथा निषिद्ध है।"

नेहरू जी का अंगरक्षक उनकी बातें ध्यान से सुन रहा था। उसने तुरन्त कैप्सटन का डिब्बा निकाला और नेहरू जी की ओर बढ़ाया। इस पर नेहरू जी ने कहा, "जब यहां दूसरों के सिगरेट पीने पर पाबन्दी है तो मैं ही सिगरेट कैसे पी सकता हूँ?" और वे बिना सिगरेट पिए ही तकिये के सहारे झपकी लेने लगे।

※ चार गुण बहुत दुर्लभ हैं—धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया, और अधिकार में निरभिमानिता।

दोनों संस्थाओं द्वारा श्रीमती गांधी में आस्था व्यक्त

कन्या गुरुकुल खानपुर में हुई महासभा की कार्यकारिणी समिति ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के साहसपूर्ण कदम की सराहना की है। प्रेस रिपोर्ट में बताया गया है कि कन्या गुरुकुल खानपुर, बी. पी. एस. एम. डिग्री कालिज खानपुर कलां, भक्त फूलसिंह कालिज ग्राफ़ एजूकेशन, ग्रायुर्वैदिक कालिज खानपुर कलां, गुरुकुल विद्यापीठ भैंसवाल कलां की कार्यकारिणी (Executive Committee) का विश्वास है कि ग्रापात् स्थिति लागू होने के बाद सरकार को देश के विकास करने के ज्यादह ग्रवसर मिलेंगे। समिति ने दलगत भावनाग्रों को सामने रखकर देश के हित की उपेक्षा करने वाले तत्त्वों की कड़ी भर्त्सना की। समिति ने सरकार की भ्रष्टाचार तथा साम्प्रदायिक विरोधी नीति की सराहना की।

प्रेस विज्ञप्ति के एक ग्रन्य भाग में श्रीमती इन्दिरा गांधी को देश की लोकप्रिय एवं समर्थ नेता बताया है। समिति राजनीतिक भावना से श्रीमती इन्दिरा गांधी का समर्थन नहीं कर रही है प्रत्युत् राष्ट्रीय हितों का तकाजा है कि देश में ग्रराष्ट्रीय विचार-धारा तथा ग्रराजकतावादी विचारों को फैलने से रोकने के लिए नेता परिवर्तन की नहीं प्रत्युत् वर्तमान नेता को सभी ग्रोर से समर्थन एवं सहयोग की ग्रावश्यकता है।

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

❀ स्नातक बन्धुग्रों से निवेदन ❀

मान्यवर बन्धुग्रो !

मैं राजकीय महाविद्यालय नारनौल से स्थानान्तरित होकर इन्दिरा चक्रवर्ती राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक में राजकीय सेवार्थ ग्रा गया हूँ। ग्रतः ग्राप से निवेदन है कि 'स्नातक–परिचय–पुस्तिका' सम्बन्धी पत्र व्यवहार नवीन पते पर ही करें।

सधन्यवाद !

ग्रापका बन्धु—

प्रकाशवीर दलाल

आर्य समाज की स्थापना का लक्ष्य क्या था ?

—श्री हरिदत्त

क्रान्तिकारी धार्मिक नेता स्वामी विरजानन्द जी के पट्ट शिष्य स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने अपने अर्जित अनुभव को अपने महान् गुरु के अनुभवों के प्रकाश में शोध कर जब युग सत्य से जोड़ दिया तब उनके हृदय में स्फूर्ति, मस्तिष्क में चमत्कारिक बुद्धि और हाथों में कर्म कौशल आ गया। उन्होंने अपने देश की पराधीनता, उसके कारणों, उसके संवाहकों और संवाहकों के दलालों को अच्छी तरह से समझा और उसके साथ ही पराधीनता के शत्रुओं यानी कि अपने मित्रों को भली भांति पहचाना। साथ ही अपने देश को, उसकी संस्कृति सभ्यता को, उसकी अच्छी बुरी प्रवृत्ततियों को, उसके इतिहास, दर्शन परम्परा को बड़ी गहराई से जाना। उन्होंने अपने युग को भी बड़ी गहरी दृष्टि से देखा। सब कुछ समझ बूझकर, देख भालकर वे राष्ट्रीय मंच पर उतर आये और उसके लिए आर्य समाज नाम से एक प्लेट फार्म बनाया।

विकृतियों पर कड़े प्रहार

अपने इस मञ्च का उन्होंने शक्ति भर विस्तार किया और सारे देश में अपने तौर पर जागृति का शंखनाद किया। इस जागृति को उन्होंने सीधे वैदिक युग से लेकर उनके अपने युग तक उनकी अपनी समझ के अनुसार जितनी सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और धार्मिक विकृतियां आ गई थीं, उन सब पर जोर-शोर से प्रहार प्रारम्भ कर दिये। यद्यपि उन्होंने अपना क्षेत्र धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक रखा लेकिन अर्थ नीति और राजनीति की महिमा उनके मन, मस्तिष्क से ओझल नहीं थी। उन्होंने संस्कृति, अर्थनीति और रणनीति के समन्वय के महत्त्व को बड़ी अच्छी तरह से चीह्ना और अनेकानेक विधियों से राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के सैनिक तैयार करने प्रारम्भ कर दिये।

इसके लिए उन्होंने सभी क्षेत्रों में कार्यक्रम बनाये और एक विधि संहिता तैयार की। विचारधारा, कार्यक्रम, विधि संहिता और कार्य नीति तैयार करके उन्होंने एक महान् संगठन राष्ट्रीय कर्णधार की भूमिका अदा करनी प्रारम्भ कर दी।

स्वाधीनता संग्राम में योगदान

यह सुविदित है कि हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज द्वारा तैयार हुए अनगिनत हिंसावादी और अहिंसावादी कार्यकर्त्ता और नेता आगे आते रहे। इनमें से अनेक विदेशों में भी गये और वहां पर उन्होंने अपने देश की आजादी का झण्डा फहराया। इस सिलसिले में यूरोप में क्रान्तिकर्म करने वाले श्याम जी कृष्ण वर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है जो गोर्की जैसे महान् क्रान्तिकारी लेखक की प्रशंसा के भी पात्र बने। रूस के इस क्रान्तिकारी चेतना के विपुल धन (मैक्सिम गार्की) ने श्याम जी कृष्ण वर्मा के बारे में अपनी स्वनामधन्य लेखनी से एक लेख लिखा। इसी प्रकार भाई परमानन्द, लाला हरदयाल व राम बिहारी बोस भी स्वामी जी से प्रभावित रहे।

बात यह है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में या कहना चाहिए रग रग में राष्ट्रीयता की भावना समायी हुई थी और उसी के आधार पर उन्होंने अपनी आस्था और विश्वास के दृढ़ सेतु तैयार किये थे। जिन पर से उन्होंने अपनी योद्धा कार्यकर्त्ता दल उतार कर महाशक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्यवादियों से लड़ाया। निश्चय ही स्वामी जी का यह कृतित्व हमारे देश के सर्वपक्षीय इतिहास का सुनहरा पृष्ठ बन गया है।

इस सन्दर्भ में स्वामी जी की एक विशेषता यह भी रही कि उन्होंने अपनी सत्यमयी प्रगाढ़ आस्था और ओजमय विश्वास का निर्माण तर्क के माध्यम से किया। यूं भी कह सकते हैं कि वे आस्था और विश्वास की शीर्ष पर तर्क की सीढ़ी पर चढ़कर पहुँचे। ये बात उन्होंने अपने अनुवर्तियों को भी सिखाई, यह बात अलग रही कि उनके बहुत से अनुवर्ती तर्क को ठीक तरह से न समझ पाकर कुतर्की बन गए। तर्क का पकड़ना या तर्क के सोपान पर चढ़ना सरल कार्य नहीं होता, बहुत जटिल होता है। लेकिन उनके अनुवर्तियों में ऐसे लोग भी स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ते हैं जिन्होंने तर्क को ठीक तरह से पकड़ा। इनमें नवयुवक भी थे, उदाहरण के तौर पर अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल और शहीदे आजम भगत सिंह। इन दोनों के जीवनवृत इस बात के साक्षी हैं कि इन्होंने शत्रु मित्र, देश और काल को पहचान कर और तदनुसार संघर्ष करके अपने अनुभवों के सही निचोड़ निकाल कर तर्क प्रतिष्ठापित किए।

स्वामी जी की तर्क प्रतिष्ठा ने सबसे अधिक लाभ धर्म के क्षेत्र में पहुँचाया। उन्होंने अन्धविश्वास, रूढ़िवाद और पाखण्ड के रूपों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करके विश्वास, ज्ञान और सत्य के मार्ग पर आरूढ़ करने की सफल चेष्टाएं कीं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि स्वामी जी ने अनेक मुस्लिम आक्रमणकारियों और शासकों तथा बाद के आक्रान्ता ब्रिटिश, पुर्तगाली व फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों के सांस्कृतिक आक्रमणों को भी पर्याप्त गहराई में जाकर समझा और उनके सारतत्व को समाज को समझाया।

उन्होंने समाज में अपने सांस्कृतिक अभ्युदय की भावनायें भरकर उसके आर्थिक और राजनीतिक पथ को प्रशस्त किया।

इन सबको और भी विस्तार और गहनता के साथ समझने की आवश्यकता है क्योंकि अपने इतिहास और अपनी परम्परा को ठीक तरह से समझे बिना हमें सही रास्ता नहीं मिल सकता। अपने भूत का वर्तमान के लिए लाभउठाने के हेतु भूत की अनुपयोगी प्रवृत्तियों को छोड़कर और उपयोगी वृत्तियों को लेकर हर नई पीढ़ी को आगे बढ़ना पड़ता है। इसी भाव से वह युग सत्य को पहचान कर उसे ग्रहण कर सकती है। दरअसल भूत, वर्तमान व भविष्य एक ही नदी के तीन तीर्थ स्थल हैं। इनकी एकतानता प्रगति के लिए नितान्त आवश्यक है।

आर्यसमाज का दायित्व

इस दृष्टि से स्वामी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का विश्लेषण करते हुए हमारे समाज और विशेषकर आर्य समाज के लिए यह बड़ा आवश्यक हो जाता है कि वह देश में फैले विकारों को दूर करके अच्छे संस्कारों का निर्माण करें। कौन नहीं जानता कि हमारे देश में धर्म को अधर्म, संस्कृति को विकृति, अर्थनीति को अनर्थनीति और राजनीति को कुराजनीति बनाने की कितनी चेष्टायें की जा रही हैं। नाना छद्मवेषों में पुराने और नये साम्राज्यवादी एजेण्ट इस देश पर सांस्कृतिक और बौद्धिक आक्रमण कर रहे हैं। उनके ही दलाल कालेधन के व्यापारी काली संस्कृति, काली समाज नीति, काली अर्थनीति और काली राजनीति की कालिमा को गुहरा रहे हैं। चतुर्दिक नये-नये प्रकार के झूठ फरेब, भ्रम, पाखण्ड और अन्धविश्वास फैलाये जा रहे हैं। काले अन्धियारे के असुरों ने एक ऐसा चक्र-व्यूह रच दिया है जिसमें जनसाधारणरूपी अभिमन्यु फंसा खड़ा है।

❀ चार चीजें मनुष्य को बड़े भाग्य से मिलती हैं—भगवान् को याद रखने की लगन, सन्तों का संग, चरित्र की निर्मलता और उदारता।

गीत

—**—

निर्मल सर में विकसित उत्पल !
सुरभित सांसों में मधु भरते,
जन–जन के करते प्राण तरल !

कण–कण में बिखरा नवजीवन
कण–कण में प्राण हुए हर्षित
दल–दल पर छायी हरियाली
दल–दल के गीत हुए मुखरित

प्रति गीत-गीत के बन्द बन्द
में जाग उठे मृदु भाव सरल

रंगीन सरकती बूंदों से
गिर–गिर जाती निशि की बातें
सा स्वप्न बिखर जाते जल में
ले जाती लहरों की घातें

तब कूल-कूल के फूल-फूल से
बह जाते आंसू विह्वल

डूब गये रजनी के आँसू
डूब रहे वे दूर सितारे
दूर कहीं क्षितिपर पंछी-दल
ढूंढ रहे पथ पंख पसारे

पंख - पंख के प्राण-प्राण में
भरी हुई द्रुतगति चंचल

पानी के ऊपर कमलों के
नयनों में है संगीत भरा
भ्रमरी के प्यासे अधरों में
रस पीने का उन्माद भरा

पर अरुण परी की सांसों से
हिल-हिल जाते श्यामल शतदल

मदमाते सरवर के उत्पल !

—श्री चिरंजीलाल एकांकी'

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश' —डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. D/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम

स्थान

डाकघर

जिला

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर ( ) से मुद्रित तथा समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल से प्रकाशित किया

श्री भक्त फूलसिंह जी
संस्थापक
गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

समाज सन्देश

सामाजिक, सांस्कृतिक लेखों का संगम
हिन्दी मासिक

* दीपावली विशेषांक *

अक्तूबर/नवम्बर, 1975

मूल्य एक प्रति 90 पैसे
वार्षिक चन्दा 10 रु०

विषय-सूची

समाज सन्देश में छपे विचारों से हमारा सहमत होना या न होना आवश्यक नहीं। समाज सन्देश में हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी मत से सम्बन्ध रखता हो अपने लोकहितकारी विचार अथवा लेख प्रकाशनार्थ भेज सकता है। उसकी मौलिकता का लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

लेख भेजने तथा समाज सन्देश सम्बन्धी पत्र व्यवहार का पता:—

धीरेन्द्र कुमार विद्यालंकार

गुरुकुल भैंसवाल कलां (सोनीपत)

॥ ओ३म् ॥

समाज सन्देश

गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां
(जिला सोनीपत)

प्रकाशन तिथि : 25-10-1975

वर्ष सोलहवां | अक्तूबर, नवम्बर, 1975 | अङ्क : 7/8

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः॥

सच्चे मिठास से भरे ये सोमबिन्दु हैं।
इन्द्रस्वरूप जीवहित आनन्दसिन्धु हैं॥
झरते पवित्र भावना रस को समस्त ये।
भर भव्य दिव्यता करें अत्यन्त मस्त ये॥

—विद्यानिधि

सम्पादकीय

❀

आर्य लोग विश्रृङ्खल न हों मिलकर चलें तो बेहतर है

अभी भी उत्तर भारत में आर्यसमाज का काफी दबदबा है। आर्यसमाज ने उत्तर भारत को जितना शिक्षित किया है, जितना सभ्यता का पाठ पढ़ाया है—उतना वह दक्षिणी अंचल में नहीं कर सका है। यह उसकी नितान्त कमजोरी बताई जाती है। आज ईसाई मिशनरियां दक्षिणी असभ्य इलाकों में इसाईयत का काफी प्रचार कर रहे हैं। रोजाना सैंकड़ों व्यक्ति ईसाई धर्म की दीक्षा ले लेते हैं। ऐसा क्यों है? क्या वे भी संगठन के विषय में शोर शराबा करते हैं? क्या वे भी प्रधान या महासचिव पद के लिए किसी शहर में अधिवेशन बुलाते हैं। अम्बाला छावनी के आर्य कन्या महाविद्यालय में हुए अधिवेशन में वाइस चांसलर श्री आचार्य विष्णुमित्र जी ने सभी आर्य जनों से मार्मिक अपील की थी कि "सभी सच्चे आर्य बनें - आपा' खोकर आर्यसमाज का प्रचार करें। प्रधान-उपप्रधान आदि पद तो सिर्फ झगड़े-फूट लाने के स्थान हैं? क्या इन पदों पर बैठकर व्यक्ति आर्यसमाज की सच्ची सेवा कर सकता है?" यह नग्न तथ्य है कि आर्यसमाज के इन पदों ने सिर्फ राजनीति को आश्रय दिया है। आर्यसमाज से पद-भावना एकदम से निकल जानी चाहिए। आर्यसमाज की प्रगति में सभी आर्यजनों का एक एक कदम मिलकर ही होना चाहिए फिर चाहे कोई भी अग्रेसर बने उसे सभी से आगे चलना होगा। जो अधिक तेज और शक्ति से आगे बढ़ेगा—दुनिया उसी को प्रधान समझेगी। श्री शाल वाले ने तथा अनेक ने कुछ आर्यसमाजी भाइयों की निन्दा की। मगर वे समय की पुकार समझें तथा एक एक व्यक्ति का सक्रिय सहयोग लें। कर्मठ व्यक्ति को वे कार्य दें—जिम्मेदारी दें—यदि वह व्यक्ति एक बार फिसलता है तो उसे अपना हाथ देकर उठाएं—वह जरूर आर्यसमाज का स्तम्भ बन जाएगा। श्री शालवाले जी के आदर्श स्वप्न को साकार कराने में वह एक कड़ी का काम देगा। जब कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा लगाया गया है तो हम में पद-लिप्सा की भावना तथा किसी के प्रति अनार्य भावनाओं को त्यागकर सभी को अपने आर्य सिद्धान्तों से वशीभूत करने की शक्ति आनी चाहिए। तीनों पृथक् सभाएं अपने अपने अधिकारियों पर अंकुश रखें कि वह पीछे तो नहीं हट रहा है। ध्यान रहे यदि अग्रेसर आगे चल रहा है तो निश्चय ही आर्यसमाज में आस्था रखने वाली जनता कभी शिथिल नहीं रहेगी। वह उसके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करेगी।

❀❀

सम्पादक के नाम पत्र

समाज सन्देश हमें कैसे लगा ?

महोदय,

'समाज सन्देश' की पहली प्रति (अगस्त '75) देखी। मेरा मन आल्हादित हो उठा। समाज सन्देश के लिए मेरा मन सौ सौ आशीर्वाद एवं शुभ कामनाएं देता है। सामान्य ज्ञान के कालम की कमी खटकती है।

—राजेश्वर वन्द्योपाध्याय
बैलविदर, कलकत्ता-27

❀

महोदय,

'समाज सन्देश' का मैं नियमित ग्राहक रहा हूं। 'समाज सन्देश' में सामाजिक भावनाओं के लेखों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होना चाहिए। 'डियागो गर्सिया' जैसे मसाले सामाजिकता से परे हैं। इन्हे हटाकर आप समाज सुधार से सम्बद्ध लेख रख सकते हैं।

– एस एन. सिन्हा
पटना (बिहार)

❀

महोदय,

अगस्त अंक के 'सुख प्राप्ति कैसे हो' तथा सितम्बर मास के 'हे मानव शुभ कर्म कर' के लेखक का मैं चिर ऋणी रहूँगा। श्री आचार्य विष्णुमित्र जी ने वेद शास्त्रों की कठिन चर्चा की जिस सरलता के साथ मुझ में आध्यात्मिक प्रेरणा पहुँचाई है, मेरा मस्तक आदर से उनके चरणों में प्रणत है।

—शिवाजीराव जाधव
राजर्षि साहू कॉलिज, लातूर, (महाराष्ट्र)

❀

महोदय,

लाईब्रेरी में आपकी पत्रिका को मैंने संयोगवश अपनी आंखों आगे उठाकर देखा। आचार्य 'विष्णुमित्र' जी का 'सुख प्राप्ति कैसे हो ?' नितान्त प्रेरणादायक लेख है। 'डियागो गार्सिया' से सम्बद्ध लेख, जो श्री धीरेन्द्रकुमार विद्यालंकार द्वारा सारगर्भित शब्दों में पेश किया है—वह ज्यादह संक्षिप्त हो गया है, उनके इस लेख से सम्बद्ध कई बातें यद्यपि इसमें शामिल हो गई हैं—मगर अप्रत्यक्ष रूप में। कृपया उन्हें सूचित करें कि वे लेख को जरा ज्यादह लम्बा बढ़ा दें (दूसरी किश्त में)।

—वी. पी. आर्य एम. ए.
देहली विश्वविद्यालय, दिल्ली

क्या हम आर्य हैं ? अपनी पहचान करें

—आचार्य विष्णुमित्र

❀
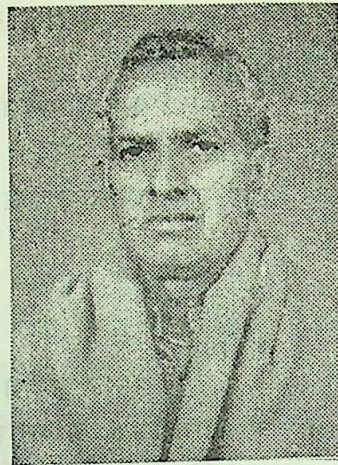
आर्य शब्द ऋ गतौ धातु से बना है। जो गतिशील हो उसे आर्य कहते हैं। गति स्वास्थ्य से आती है। जिसका शरीर, मन, बुद्धि नीरोग हों वही स्वस्थ है। स्वस्थ उसे कहते हैं जो अपने में स्थित हो। अपने में स्थित नीरोग ही हो सकता है। रोगी पुरुष रोग के कारण कुछ नहीं कर पाता है।

आर्य उसे कहते हैं जो शरीर से स्वस्थ हो, मन से स्वस्थ हो, बुद्धि से स्वस्थ हो। अतः चरक में कहा है—

धर्मार्थ काममोक्षाणामारोग्यमूलमुत्तमम्।
रोगास्तस्यापहर्त्तारः श्रेयसो जीवितस्य च ॥

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति का प्रथम साधन आरोग्य है। रोग आरोग्य को नष्ट करने वाले होते हैं। आर्य का शरीर स्वस्थ तथा नीरोग हो। शरीर को स्वस्थ रखने के साधन इस प्रकार बतलाये हैं—हिताशीस्यात् मिताशीस्यात्, कालभोजी, जितेन्द्रियः। हितकारक भोजन करे। स्वाद में कोई ऐसा भोजन न करे जो शरीर को रोगी बनाने वाला हो। देखा गया है कि मनुष्य जीभ के लोभ में ऐसा भोजन कर लेता है जिससे वह रोगी हो जाता है। परिमित जितना शरीर हजम कर सके उसी भोजन को खावे। भूख लगने पर ही भोजन करे, बिना भूख कभी भोजन न करे, इन्द्रियों का गुलाम न बने। आर्यगण इन्द्रियों के गुलाम नहीं होते हैं। नियमित शरीरोपयोगी व्यायाम करे। इन नियमों को पालने से शरीर को स्वास्थ्य प्राप्ति होती है। वह अनेक प्रकार के रोगों से बचता है। कोई भी रोग उसपर आक्रमण नहीं कर पाता है। इसी प्रकार भोगों में आसक्त होने वाला रोगों का शिकार होता है। रोग ही वार्धक्य है। कहा भी है—'भोगे रोगभयम्' भोगों में आसक्ति से रोग बढ़ते हैं। शरीर इससे निर्बल हो जाता है। अतः यह सिद्ध हुआ कि शरीर को स्वस्थ न रख

सकने वाला आर्य श्रेणी से पतित सा हो जाता है। रोगी होने में 75% मनुष्य का अपना दोष होता है। प्रत्येक मनुष्य अपने शरीर की गतिविधि से परिचित होता है वह आने वाले रोग को जान लेता है। अतः यह निश्चय जानिये कि रोगी होना भी आर्यत्व से पतित कराने वाला है अतः सदा शरीर से स्वस्थ रहो।

जो शरीर से निर्बल हैं, कार्य करने में असमर्थ हैं, शरीर से निस्तेज हैं, निराशाओं से घिरे रहते हैं। वे कैसे अपने को आर्यों की श्रेणी में सम्मिलित करेंगे।

मन के रोगी बहुत हैं। जब भी ऐसे व्यक्ति अकेले बैठे होते हैं सदा अनिष्ट की चिन्ता करते रहते हैं, आगे क्या होगा, यह चिन्ता उन्हें खाये जाती है, किसी भी काम में उनको उत्साह नहीं होता है। उनको सदा निराशा और अन्धकार का मार्ग दिखाई देता है। वे जीवित होते हुए भी मृत के समान रहते हैं। दूसरों की उन्नति उनको नहीं भाती, वे आप काम करने का साहस नहीं करते दूसरों के काम में नुकताचीनी करते रहते हैं। ये सब मन के रोगी हैं। आर्य मन के रोगी नहीं होते हैं। यदि मन के आप रोगी हैं तो आप आर्य नहीं हैं। आर्य सदा प्रसन्न रहते हैं। उनमें सजीव भावनायें सदा विद्यमान रहती हैं। उन्हें कोई काम कठिन नहीं मालूम होता है, विश्व के प्रत्येक मानव से वे प्यार रखना चाहते हैं। उनका विश्व विशाल होता जाता है। उनके विषय में ही एक नीतिकार ने कहा है—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह मेरा है। यह दूसरे का है यह छोटे दिल वालों की बात है। विश्व को अपना घर मानने वालों के लिए यह विश्व ही उनका घर हो जाता है। मानवमात्र उनसे प्रेम करने लगता है।

स्मरण रखिये मन का काम संकल्प विकल्प करना है। सत्संग से, स्वाध्याय से, प्रभु भक्ति से मन का परिमार्जन होता है। जिस मानव का स्वभाव सत्संग में जाने का हो जाता है, उत्तम ग्रन्थों के पढ़ने का जो अभ्यासी हो जाता है, प्रभु में जिसकी लौ लग जाती है। ऐसे व्यक्ति का मन सर्वथा परिमार्जित हो जाता है। यदि इतना करने पर भी मानव का मन परिमार्जित नहीं होता है तो समझिए उसने सत्संग, स्वाध्याय तथा प्रभु भक्ति की ही नहीं है। प्रदर्शनमात्र किया है यह निश्चयपूर्वक जानें।

जिनकी बुद्धि अपवित्र है वे सदा चिन्ता मे निमग्न रहते हैं। दूसरों का भला कभी भी वे नहीं सोच सकते हैं। उनको अपनों पर भी विश्वास नहीं होता है। उनको अपनों से भी डर लगता रहता है। वे अपना भी ठीक ठीक भला नहीं सोच सकते। ऐसे पुरुष आर्यों की संख्या में नहीं आ सकते हैं। आर्य की बुद्धि सदा पवित्र रहती है। वे अपना तो भला सोचते ही हैं दूसरों का भी भला उनकी बुद्धि सोचती रहती है। उनके विषय में ही कहा है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माभूत् कश्चिद् दुःखभाक् ॥

अर्थात् संसार के सारे प्राणी सुखी होवें। सारे रोग रहित होवें। सब प्राणी एक दूसरे का भला करें। संसार का कोई भी प्राणी दुःख में निमग्न न हो। यह भावना या विचार सुबुद्धि वाले मानव का होता है। जिसमें इस प्रकार के विचार ठाठें मारते हों वह मानव ही आर्य है इससे विभिन्न प्रवृत्ति वाले अनार्य गण में सम्मिलित किये जाने चाहियें।

शरीर स्वस्थ तथा शुद्ध रखने के लिये जहां अनेक साधन हैं वहां नियमित स्नान भी शुद्धि तथा आरोग्य उत्पन्न करता है। मन को स्वस्थ करने के लिए मन, वचन, कर्म में सत्य का समावेश करना चाहिए। जितना जितना जीवन में, व्यवहार में, कर्म में, वचन में सत्य का समावेश होता जाता है उतना उतना मन स्वतः ही पवित्र होता जाता है। जितना जितना मानव का मन सत्य से पवित्र होता जाता है मानव के मन मन्दिर से मन के रोग स्वतः ही दूर होने लगते हैं। सत्य की पराकाष्ठा को प्राप्त मानव का मन सर्वथा नीरोग हो जाता है। उसमें जो उलटे सुलटे सकल्प विकल्प चक्कर काटते रहते थे वे स्वयं ही दूर होने लगते हैं। तब उसे अनुभूति होने लगती है कि जिन वस्तुओं के लोभ में आके तेरे मन में बेचैनी, व्याकुलता बढ़ती थी, वे सब के सब अनर्थ तथा अस्वास्थ्य के कारण हैं। तब वह मन के रोग से मुक्त हो जाता है। सदा प्रसन्न रहने लगता है। उसे संसार में सर्वत्र सुख ही सुख दिखाई देता है। ऐसी अवस्था में ही वह अपने को आर्य कहने का अधिकारी होगा।

बुद्धि भी अज्ञान से, दुश्चिन्तन से अपवित्र बन जाती है। बुद्धि की अज्ञानता के कारण ही भिन्न भिन्न विचारधाराओं का प्रचलन हुआ है। जब सत्य दो दो—चार के समान है। तब सच्चा ज्ञान भी एक ही है। उसको भिन्न भिन्न प्रकार अपने मतानुकूल परिवर्तित करना भी अज्ञान है। सब महात्माओं की सत्य वार्तायें एक हैं। उनमें भिन्नता का समावेश अज्ञान, हठ, दुराग्रह आदि से आया है।

अतः अपने ज्ञान को परिमार्जित कीजिए। जब तक आपको किसी वस्तु का भली प्रकार ज्ञान न हो उस बात को सत्य कहके प्रचारित न कीजिए। ज्ञान की प्राप्ति के लिए, वस्तु की तह तक पहुंचने के लिए प्रयास कीजिये तो आपको ज्ञान की प्राप्ति होगी। ज्ञान की प्राप्ति के साथ बुद्धि भी पवित्र हो जावेगी। बुद्धि की पवित्रता के साथ ही आप अपने को आर्य कहलाने के अधिकारी होंगे।

वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है। जो वेद नहीं पढ़ते, वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय नहीं करते, वेद या वैदिक ग्रन्थों का श्रवण नहीं करते, उत्तम वैदिक धार्मिक बातों का श्रवण करने के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं वे आर्य कहलाने के अधिकारी नहीं हैं।

राजा अश्वपति की तरह जो निश्चय से यह कहने में समर्थ है कि मेरे परिवार

में कोई चोर नहीं, मेरे परिवार में कोई कंजूस नहीं, कोई अकर्मण्य नहीं, कोई शराबी या नशीली वस्तुओं का सेवन करने वाला नहीं, मेरे परिवार में कोई ऐसा नहीं जो वेदादि शास्त्रों की बातों पर श्रद्धा न रखता हो, मेरे परिवार में कोई भी असत्य का आचरण नहीं करता, मेरे परिवार में कोई धोके धड़ी का शिकार नहीं, कोई कटु शब्द का प्रयोग नहीं करता; वे ही या उनका परिवार ही आर्य कहलाने का अधिकारी है।

राम के युग की अयोध्या आर्यों की नगरी थी। अयोध्या के विषय में रामायण में लिखा है—

कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित्।
द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान् न च नास्तिकः॥
सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीलाः सुसंयताः।
मुदिताः शीलवृत्ताभ्यां महर्षय इवामलाः॥
दीर्घायुषो नराः सर्वे धर्मं सत्यञ्चाश्रिताः।
सहिताः पुत्रपौत्रैश्च नित्यं स्त्रीभि पुरोत्तमे॥
नासीत् पुरे वा राष्ट्रे वा मृषावादी नरः क्वचित्।

अयोध्याधिपति के राज्य में कोई विषय लोलुप, अकर्मण्य, स्वार्थी, कठोर स्वभाव वाला, अविद्वान् तथा नास्तिक पुरुष न था। सारे नर और नारी धर्मात्मा तथा संयमी थे। शान्त तथा सदाचारी थे। सब पुरुषायुष प्राप्त करते थे। धर्म तथा सत्य के पुतले थे। पुत्र तथा पौत्रों और स्त्रियों समेत प्रसन्न रहते थे। उनके राज्य में कोई असत्य बोलने वाला नहीं था।

प्रारम्भिक आर्यों के आचरण भी आदर्श होते थे जिसके कारण भारत में, अदालतों में, पंचायतों में आर्यों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। सब उनकी बातों का विश्वास करते थे। सबका यह विश्वास था कि आर्य कभी धोका नहीं करता, असत्य तथा कटु शब्द नहीं बोलता, धर्म का व्यवहार करता है, सुख शान्ति फैलाने वाला होता है, उसके मन वचन कर्म में एक सा व्यवहार होता है। वह बाहर भीतर से एक होता है, वह संसार का उपकार किया करता है। संसार में शान्ति का साम्राज्य फैलाना इसके जीवन का उद्देश्य होता है, इत्यादि भावना, विश्वास आर्यों के विषय में अन्य जनों का रहा है।

आज हमको सोचना होगा कि अपने को आर्य कहने वाले जन क्या इन गुणों को धारण कर रहे हैं। क्या अपने पूर्व पुरुषों से उपार्जित यश को स्थिर रखने में समर्थ हैं। यदि यह निर्बलता आ गई है तो इसे दूर करना चाहिये।

राजनैतिक पदों के अभिलाषी राजनीतिज्ञों की तरह आर्यों में भी इसी भावना का उदय होता जा रहा है। बातें आदर्शों की करते हैं परन्तु व्यवहार में दिनों दिन

निर्बलता आती जा रही है। आर्यों की श्रद्धा जो जनता-जनार्दन में थी वह भी समाप्त होती जा रही है।

अतः इसे पुनरुजीवित करना चाहिये। किसी काम को पूर्ण करने के लिये स्वयं उद्यत होना चाहिये। मैं उन लोगों में नहीं हूं कि हम कहें कि हम पुनः अपनी प्राचीन अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकते। मैं मानता हूं जो काम हमारे पूर्वज करके गये हैं वैसा हम कर सकते हैं। उनसे अच्छा भी कर सकते हैं। परन्तु उन कामों के करने की लगन का उदय हमारे दिलों में जब होगा तभी यह काम होगा।

जब आर्य गण सुख समृद्धि से पूर्ण घर को छोड़कर वैदिक धर्म के दीवाने बनकर वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए घर से निकलेंगे तभी वे इस काम को पूरा कर सकेंगे। केवलमात्र चुनाव से प्रधान, मन्त्री या सभा के अधिकारी बनने से आर्य बनने बनाने का काम पूरा न हो सकेगा। आदर्श संसार को बनाने के लिए आदर्श पुरुषों की नितान्त आवश्यकता है।

वृद्धों की अनुभूत विचारधारा तथा युवकों की कर्म शक्ति ये दोनों मिलकर किसी काम को पूर्ण करने में समर्थ होते हैं। वृद्धों के साये में युवक काम करें। आर्य युवकों को वृद्धों का हार्दिक आदर करना चाहिये। वृद्धों का भी कर्तव्य है कि वे युवकों का परिशोध करके उनको उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरणा दें। प्रेरणा से ही संसार चलता है। प्रेरणाहीन संसार मृतवत् हो जाता है। उपदेश तथा प्रवचन भी प्रेरणाप्रद होने चाहियें। समाज में ऐसे प्रवचनों का प्रचलन होना चाहिये जो प्रेरणाप्रद हों। केवलमात्र इधर उधर की बेकार की बातें समाज क्षेत्र में नहीं होनी चाहियें। कुछ अच्छे अच्छे उपदेशक माने जाने वाले ऐसी बातें कहते हैं जो भावना को तो उभारती हैं परन्तु उनका लक्ष्य कुछ नहीं होता। प्रवचन आत्मिक, शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक शक्ति को बढ़ाने वाले न हों। विचारिए ग्रामों में अनेक प्रकार की नैतिक, सामाजिक दुर्बलतायें आ गई हैं उन्हें दूर करने के लिए आर्यों को सन्नद्ध होना होगा। यदि इधर ध्यान न दिया गया तो ऋषि दयानन्द ने जिस वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया है वह भी एक सम्प्रदायमात्र होके रह जावेगा।

पुनः मेरा निवेदन है कि आर्य बनने के लिये शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक स्वास्थ्य प्राप्त करें। सत्य का आचरण करें, सदा प्रसन्न रहें। विद्वान् बनें परन्तु आस्तिक बनें रहें। विश्व को उत्तम बनाने के लिए प्रयत्नशील बनें। सदाचारी बनें। अपने समय का कुछ भाग संसार को आर्य बनाने के लिए व्यतीत करें तभी आर्य कहलाने के अधिकारी बनेंगे। आप में जो कमियां आ गई हैं उनको दूर कर वास्तविक आर्य बनें।

दशहरा (विजयादशमी)

(गीतिका)

आ गया प्यारा सुनहरा यह दशहरा आ गया ।
नव शरद् के चन्द्रमा का सेहरा बन आ गया ॥

मन भरा वर्षा वधू का, वह विरक्ता हो गई ।
शारदा श्यामा बनी अनुरागिनी रस पा नया ॥

जल भरे भी जल गए हैं बादलों के दल सभी ।
स्वच्छ कोमल शान्त शीतल दृश्य नभ में छा गया ॥

दूर होती जा रही हैं सब दिलों की दलदलें ।
इन्द्र ने पाई जयश्री वृभ है मारा गया ॥

दशहरा भी दश दिशाओं से हरा अब हो रहा ।
द्यौ गगन भू में निराली दिव्य शोभा ला गया ॥

आज बनकर वीर सब रणधीर यात्रा को चले ।
शत्रु को जीतें स्वयं यह काल है समझा गया ॥

शीघ्र निज विजयार्थ निकलें शस्त्र सज्जा से सजे ।
क्षत्रियों को देखकर अब भीरु मन मुरझा गया ॥

धान्य नूतन खेत में ये हैं कृषक भी बो रहे ।
जानकर यह शुभ समय सब का हृदय हर्षा गया ॥

पुण्य आश्विन मास की तिथि शुक्ल दशमी आज है ।
पर्व यह दश देवगण की शक्तियां दर्शा गया ॥

धन्य है प्रभु देव की प्रिय उच्च महिमा धन्य है ।
वर्ष में जो हर्ष के मृदु ओसकण बरसा गया ॥

—आचार्य विद्यानिधि शास्त्री
प्राध्यापक 'संस्कृत विभाग'

मनुष्य जाति उन्नति कर रही है या अवनति ?

—श्री भगवानदास केला

❀

यह संसार परिवर्तनशील है। आदमी की हालत भी बदलती रहती है—बचपन होता है, जवानी आती है, पीछे बुढ़ापा आ घेरता है। ये परिवर्तन धीरे धीरे होते रहते हैं, यहां तक कि कभी कभी कई महीनों तक कुछ भी परिवर्तन मालूम नहीं होता। तो भी हम इस बात का अनुमान कर सकते हैं कि थोड़ा बहुत परिवर्तन हर समय होता रहता है। जैसे एक आदमी की बात है, उसी तरह आदमियों के समूहों की बात है। मां बाप यह देखते हैं कि जिस समय वे बच्चे थे, लोगों का रहन सहन, व्यवहार कुछ दूसरी तरह का था, अब कई बातों में बहुत फर्क हो गया है। इतिहास बताता है कि हम जितने ज्यादह पुराने जमाने की बात लेते हैं, उतना ही इस समय के मुकाबले आदमियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक हालत में ज्यादह फर्क मिलता है।

इससे यह स्पष्ट है कि मनुष्य जाति की हालत में धीरे धीरे परिवर्तन हो रहा है। परिवर्तन कई तरह का हो सकता है, और यह जरूरी नहीं कि सभी तरह के परिवर्तन एक साथ हों, या सब तरह के परिवर्तनों की रफ्तार एक सी कभी हो। एक तरह का परिवर्तन विशेष रूप से होता है, कभी दूसरी तरह का। फिर संसार के कितने ही हिस्से एक दूसरे से जुदा और बहुत दूर हैं, एक हिस्से में एक तरह का परिवर्तन बहुत ज्यादह होता है, दूसरे हिस्से में बहुत कम। हां, अब जैसे जैसे आमदरफ्त और यातायात की उन्नति और वृद्धि होती जाती है, एक देश में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव थोड़े बहुत समय में दूसरे देशों पर पड़े बिना नहीं रहता।

इस तरह मनुष्य जाति के व्यवहार और रहन सहन आदि में परिवर्तन होता रहता है, यह स्पष्ट है। इसमें मतभेद नहीं। अब सवाल यह है कि इन परिवर्तनों से मनुष्य जाति की उन्नति होती है, या अवनति। ध्यान रहे कि मनुष्य जाति की उन्नति अवनति का निश्चय करने के लिए पांच दस वर्ष तो क्या एक दो पीढ़ी का हिसाब लगाना भी काफी नहीं है। मनुष्य जाति की उम्र लाखों नहीं करोड़ों वर्ष की है। उसकी उम्र में पचास सौ वर्ष ऐसे ही समझने चाहियें, जैसे आदमी की उम्र में एक दो दिन। हम किसी आदमी की एक दो दिन की हालत देखकर ठीक ठीक यह नहीं कह सकते कि वह सुधर रही है या बिगड़ रही है। सम्भव है, जिस समय की हालत का हमने विचार किया है, वह समय असाधारण या विशेष प्रकार का रहा हो। उसके आधार पर कोई व्यापक अनुमान करना भ्रमपूर्ण हो सकता है। इसी तरह मनुष्यों की एक दो पीढ़ियों की हालत का विचार करके मनुष्य जाति की उन्नति-अवनति का ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। खासकर अपने समय के हालात को देखकर तो बहुत ही कम आदमी

निष्पक्ष निर्णय देने में समर्थ होते हैं। बात यह है कि हमें अपने समय में अकसर कुछ असुविधायें, कुछ असन्तोष और कुछ शिकायतें रहती हैं। हम उनसे प्रभावित होकर मनुष्य जाति की अवनति की बात किया करते हैं। इस तरह हम गम्भीरतापूर्वक दूर तक की बात नहीं सोच सकते। और हां, यह भी सम्भव है कि कुछ आदमी अपने समय के आविष्कारों आदि का बड़ा गर्व या अभिमान करें और पूर्वजों को असभ्य और कम अक्ल मानते हुए अपने आपको बहुत उन्नत समझें। एक अंग्रेज कवि ने लिखा है—जैसे जैसे हममें बुद्धि आती जाती है, हम अपने बुजुर्गों को बेवक़ूफ समझते हैं। हमारी सन्तान हम से अधिक बुद्धिमान होगी, और वह हमें निस्सन्देह मूर्ख ख्याल करेगी।

इस तरह मनुष्य जाति उन्नति कर रही है या अवनति इस विषय में आदमियों में दो विचारधारायें हैं। कुछ आदमी ऐसा विश्वास करते हैं कि भूतकाल बहुत अच्छा था। वह सतयुग था। सब जगह सुख शान्ति थी। किसी को कुछ कमी या कष्ट न था। अब तो अवनति होती जा रही है। लोगों का चरित्र गिर गया। छल, कपट व्यभिचार, ईर्ष्या द्वेष आदि बढ़ रहा है। शारीरिक शक्ति का ह्रास हो रहा है। आदमी तरह तरह के दुख पा रहे हैं, कलियुग ही ठहरा। उपाय ही क्या है। जहां तक हो सके, हमें अपने प्राचीन आदर्शों की प्राप्ति का प्रयत्न करते रहना चाहिये, उन्हें पूरी तरह हासिल करना तो मुमकिन ही नहीं है, उनसे आगे बढ़ने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसे विचार वाले आदमी थोड़े बहुत सभी जगह मिल सकते हैं। भारतवर्ष तथा दूसरे पूर्वी देशों में ऐसे ही विचारों की प्रधानता है। ऐसे विचारों से कुछ हद तक निराशा का भाव पैदा होता है। नए काम करने के लिये उत्साह नहीं होता। हमारे एक लेखक मित्र, जिसमें अच्छी प्रतिभा थी, कहा करते थे कि अच्छे से अच्छा साहित्य तो लिखा जा चुका है, उससे अच्छा कुछ नहीं लिखा जा सकता, और उससे घटिया लिखना व्यर्थ है। इस प्रकार अब साहित्य कार्य अनावश्यक है। ऐसी धारणा अब कम होती जा रही है। लोगों के विचार बदल रहे हैं। फिर भी अभी काफी आदमी इस तरह का दृष्टिकोण रखते हैं। खास तौर से धार्मिक भावना वालों और प्राचीन ग्रन्थों में श्रद्धा रखने वालों में अधिकांश का यही मत है।

हां, जबकि कुछ लोग यह मानते हैं कि सतयुग या स्वर्णयुग चला गया और सदैव के लिए चला गया, बहुत से हिन्दुओं का विचार है कि कालचक्र घूमता रहता है। सतयुग के बाद त्रेता और द्वापर नामक युगों के बीतने पर कलियुग आता है। उसके बाद फिर सतयुग आ जाता है। इस तरह सतयुग और कलियुग बारी-बारी से आते हैं, अर्थात् पहले उत्थान फिर पतन, इसके बाद फिर उन्नति और फिर अवनति होती रहती है। इस मत के अनुसार अब अवनति का चक्र चल रहा है और अभी कुछ समय तक यही चलता रहेगा।

दूसरी विचारधारा उन लोगों की है, जो भविष्य की ओर देखते हैं। ये विकासवाद को मानते हैं। इनके विचार से प्राचीनकाल में आदमी बिल्कुल जंगली

हालत में था। उसने धीरे-धीरे उन्नति की। प्रत्येक पीढ़ी के आदमी अपने पूर्वजों से कुछ न कुछ आगे बढ़ते हैं। विकासवादी यह मानते हैं कि आदमी दूसरे प्राणियों का विकसित स्वरूप है। वैज्ञानिकों का मत है कि पहले पृथ्वी आग की तरह गरम थी, वह धीरे-धीरे ठण्डी हुई। तब उसके चारों ओर की भाप का पानी बन गया, उस पानी से समुद्र बना। पानी में पहले घास की तरह के जीव बने, और उन जीवों से मछलियां या घोंघे आदि। फिर इनसें कछवे मेंढक आदि बने, जो जल में भी रह सकते हैं और थल यानी खुश्की पर भी। ज्यों-ज्यों जमीन की हालत बदली, त्यों-त्यों उसपर रहने वाले पशु, पक्षी भी बदलते गये। ये परिवर्तन धीरे-धीरे लाखों वर्ष में हुए हैं। सबसे आखिरी पशु बन्दर और बनमानुस हैं, उन्हीं से बदलकर आदमी बना है। आदमी और जानवरों में बड़ा फर्क यह है कि आदमी में बुद्धि या तर्क शक्ति होती है, वह नये-नये आविष्कार करता रहता है।

हिन्दुओं के दस अवतारों का क्रम भी विकासवाद के अनुसार है। हिन्दू शास्त्रों में कहा गया है कि महाप्रलय के बाद सृष्टि में केवल जल ही जल रह गया था। पहला अवतार 'मत्स्यावतार' मछली के रूप में हुआ, जो जल में रहती है। दूसरा अवतार 'कूर्मावतार' कछवे के रूप में हुआ जोकि जल में रहता ही है, पर जरूरत होने पर थल भाग में भी रह सकता है। तीसरा अवतार 'वाराहावतार' हुआ जो जल और थल दोनों में रहता है। इसके बारे में यह कथा है कि इसने जल में डूबी हुई पृथ्वी का उद्धार किया और धीरे धीरे पृथ्वी पर लता पेड़ पौधों के साथ जीव की सृष्टि होने लगी। चौथा अवतार 'नरसिंह' का हुआ। इसका आधा रूप आदमी का आधा सिंह का था। इसका अर्थ यह है कि अभी आदमी पूर्ण रूप से प्रगट नहीं हुआ, उसका सिर्फ आधा शरीर मनुष्य का हो सका है। शेष आधा तो पशु ही है, इसे भी धीरे धीरे मनुष्य के शरीर में बदलना है। पांचवां अवतार वामन का है, इसमें जीव पशु-योनि से मानव योनि में आता है। इसमें यह भी भाव है कि छोटे से शरीर वाला मनुष्य अपने मन या बुद्धि की चतुराई के कारण पृथ्वी, आकाश और पाताल इन तीनों लोकों को अपने अधीन करने की सामर्थ रखता है। छठा अवतार 'परशुराम' का है, इसमें क्षात्रबल या शारीरिक शक्ति का महत्व बताया गया है। वामनावतार को मानव देह का चार अंश वाला अवतार कहा गया है, परशुराम को आठ अंश वाला, और उसके बाद आने वाले सातवें अवतार 'रामचन्द्र' को बारह कला वाला समझा गया है। रामचन्द्र जी को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। इसका आशय यह है कि अब आदमी उच्छृङ्खल जीवन व्यतीत नहीं करता, वह कुल या वंश की मर्यादा का ध्यान रखता है और अनुशासन प्रेमी है। आठवां अवतार 'श्रीकृष्णचन्द्र' का है, वह पूरा सोलह कला का माना गया है। इसमें केवल कुल या वंश की बात नहीं, समाज के धर्म की कल्पना यानी कर्त्तव्यों का विचार किया गया है। समाज के ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र, इन चार भागों के गुण कर्म व्योरे वार बताये गये हैं। नवां अवतार भगवान 'बुद्धदेव' का हुआ। इनके उपदेश की विशेषता यह है कि

अब तक ईश्वर या देवी देवता आदि के नाम से जो हिंसात्मक कर्मकाण्ड होता था, वह बन्द किया जाय। समाज की सारी व्यवस्था का आधार अहिंसा, प्रेम और दया हो, जाति-भेद, रंग-भेद और सम्प्रदाय-भेद आदि का अन्त हो। मानव-समाज एक है, और उसकी एकता को मान्य करके सब प्रकार की नीति निर्धारित हो। हिन्दुओं के विचार से दसवां अवतार 'कल्कि अवतार' नाम से होने वाला है जो इस समय के प्रचलित दोषों को दूर कर मानव समाज का हित साधन करेगा।

अवतारवाद का सार यह है कि आदमी का धीरे-धीरे विकास होता रहता है। इस समय संसार की जो हालत है, वह सृष्टि से शुरु से अब तक की पीढ़ियों के आदमियों की सिलसिलेवार तरक्की का नतीजा है। जब लोगों में यह भावना होती है कि संसार तरक्की कर रहा है और हम उस तरक्की में हिस्सा ले सकते हैं तो उनका काम करने का उत्साह बढ़ता है, उनमें उन्नति करने की उमंग रहती है। नित्य नए नए आविष्कार किए जाते हैं। उन्नति की कोई सीमा नहीं मानी जाती। सुधार और तरक्की की गुँजायश हमेशा स्वीकार की जाती है। भविष्य उज्ज्वल समझा जाता है। योरुप, अमेरिका में ज्यादातर आदमियों की धारणा इसी प्रकार की है। विज्ञान के प्रचार के साथ साथ ऐसी भावना बढ़ती जाती है। अब भारतवर्ष में भी बहुत से आदमी इसी तरह के विचार वाले हो गए हैं, और होते जाते हैं।

साधारण तौर से यह समझ में नहीं आता कि आदमी को शुरु में ऐसी बुद्धि, तर्कशक्ति, भाषा आदि हासिल हो गई कि वह कामों को सोच विचारकर करने लगा, और पीछे जाकर उसके गुणों का ह्रास हो गया। यह अनुमान होता है कि आदमी का ज्ञान धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। कुछ बातों में अपवाद मालूम होते हुए भी कुल मिलाकर मनुष्य जाति उन्नति कर रही है, और कई मंजिलें तय करके वह अपनी मौजूदा हालत में आई है।

इस सम्बन्ध में यह याद रखना जरूरी है कि बिलकुल शुरु में मनुष्य जाति के सब हिस्सों की हालत एक जैसी थी, पीछे एक हिस्से ने किसी बात में उन्नति की, दूसरे ने किसी और बात में, और कुछ हिस्सों ने बहुत ही कम उन्नति की। यहां तक कि इस समय किसी-किसी देश के आदमी कुछ बातों में ऐसे हैं, जैसे दूसरे देश के आदमी अब से सैकड़ों या हजारों वर्ष पहले थे। बहुधा बोलचाल में कहा जाता है कि अमुक देश विज्ञान की दृष्टि से सत्रहवीं या अठारहवीं सदी में है। इसका मतलब यह है कि वह उन्नत देशों की दो सौ तीन सौ बर्ष पहले की अवस्था में हैं! इस तरह विज्ञान में सब देशों की उन्नति बराबर न होते हुए तथा बहुत से देशों के बहुत पिछड़े हुए होने पर भी यह माना जाता है कि मनुष्य जाति विज्ञान में उन्नति कर रही है इसी तरह दूसरे विषयों का विचार किया जा सकता है।

गीत

—नरेश 'अनजान'

❀

यह सोच नहीं जीवन में दुख ही दुख,
दुख है अनन्त तो सुख का भी है पार नहीं।

जब-जब होती है रात अन्धेरा होता है,
खो जाती है हर-एक दिशा हर एक डगर।
लेकिन, जब-जब ऊषा मुसकाती पूरब में,
रंग जाते हैं स्वर्णिम रंग में अवनी-अम्बर।

जब-जब मानव की आशा टूटा करती है,
तब-तब उसका मन चूर चूर हो जाता है।
लेकिन, जब जब उसके सपने सच होते हैं,
उसका मन अनगिन खुशियों में खो जाता है।

अस्तित्व उजाले का भी है इस धरती पर,
इस धरती पर केवल तम का अधिकार नहीं।
यह सोच नहीं जीवन में केवल दुख ही दुख,
दुख है अनन्त तो सुख का भी है पार नहीं।

जीवन में सिर पर जीत के भी सेहरे बंधते,
जीवन में पग-पग पर होती है हार नहीं।
यह सोच नहीं जीवन में केवल दुख-ही दुख,
दुख है अनन्त तो सुख का भी है पार नहीं।

जब-जब निष्ठुर पतझर आती है धरती पर,
इसको उजाड़कर रूपहीन कर देती है।
लेकिन, बहार आ, इसके सूने आंगन में,
फिर से अपार शोभा-सुषमा भर देती है।

जितना दुख का सम्बन्ध जुड़ा है जीवन से,
उतना ही सुख का होता उससे नाता है।
जैसे आती है रात, रात के बाद दिवस,
वैसे ही जीवन में सुख-दुख भी आता है।

रस-रूप-रंग वाली बहार भी आती है,
आती है केवल दुखदायी पतझार नहीं।
यह सोच नहीं जीवन में केवल दुख-ही-दुख,
दुख है अनन्त तो सुख का भी है पार नहीं।

खुशियों की चहल-पहल भी होती जीवन में,
जीवन में होता केवल हाहाकार नहीं।
यह सोच नहीं जीवन में केवल दुख ही दुख,
दुख है अनन्त तो सुख का भी है पार नहीं।

सोवियत फौजों का विजयी अभियान : जब बंकर में हिटलर ने आत्महत्या की

—श्री राजवल्लभ

❀

राइखस्टाग भवन से दृष्टि हटाते ही दूसरी दिशा में ब्रैण्डेनबुर्ग द्वार से थोड़ी दूर पर वह स्थान है, जहां युद्ध के अन्तिम समय बकर में छिपकर बर्लिन की रक्षा के नाम पर पराजय को अनिवार्य जानते हुए भी हिटलर युद्ध को जारी रखने का आदेश देता जा रहा था। उसकी दृष्टि में प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय का कारण राजनीतिज्ञों की मूर्खता थी। द्वितीय विश्व युद्ध के समय वह स्वयं "1914-18 के बेवकूफों" की श्रेणी में आ गया था। प्रथम विश्व युद्ध में सैनिक और द्वितीय विश्वयुद्ध में राजनीतिज्ञ हो जाने के कारण वह सैनिकों और राजनीतिज्ञों के मत्थे हार का दोष कैसे मढ़ता। इसलिए बंकर में अक्सर अर्ध-पागलपन की अवस्था में वह जनरल स्टाफ को गालियां देता और कहा करता कि इस युद्ध में जनरलों की गद्दारी के कारण पराजय होगी।

आत्महत्या के पहले हिटलर ने जर्मन नौ सेना की सराहना करते हुए ऐडमिरल दोनित्ज को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और हिमलर तथा गोरिंग को जीवन के अन्तिम क्षण में गालियां देता रहा। जिस समय पोट्स ढैमर प्लाट्ज में सोवियत टैंकों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी, बंकर में हिटलर और उसके साथ उपस्थित अन्य नात्सी नेताओं के होश फाख्ता हो गये।

हिटलर ने प्राय: पागलपन की दशा में बर्लिन की सुरक्षा के लिए अन्तिम क्षण तक नाजी सैनिकों और जर्मन किशोरों को रक्त बहाने के लिए आदेश दिया और इधर बंकर के 21वें नम्बर के कमरे में 29 अप्रैल, 1945 को उसने इवाब्राउन से शादी की। 30 अप्रैल को दोपहर तक युद्ध की स्थिति से यह स्पष्ट हो गया था कि अब कुछ ही क्षणों में लाल झण्डा गड़ जायेगा। फ्रेडरिलस्ट्रासे के भूगर्भ रेलवे स्टेशन पर लाल सेना का अधिकार हो गया था। चान्सलरी के निकट रूसी गोले गिर रहे थे। टियरगार्टेन का पूरा क्षेत्र सोवियत कब्जे में आ गया था। पोट्सडैमर, प्लाट्स और स्प्री नदी के वाइडन डैमर पुल तक सोवियत सैनिक पहुंच गए थे। इस स्थिति की सूचना मिलते ही एक हजार वर्षों के लिए फासिस्ट शासन कायम करने का ख्वाब देखने वाला हिटलर 12 वर्षों के शासन के बाद ही अपना अन्त निकट जानकर विचलित हो उठा।

हिटलर द्वारा आत्महत्या :

30 अप्रैल को तीसरे पहर 3½ बजे हिटलर ने इवाब्राउन के साथ आत्महत्या कर ली। इवाब्राउन ने जहर की गोली खाकर अपनी प्राण लीला समाप्त की और हिटलर ने मुँह में पिस्तौल की गोली मार ली थी। चांसलरी के उद्यान में इनकी लाश जलाई गई।

हिटलर के अन्तिम दिनों के विश्वासपात्र साथी गोबेल्स और गोरमैन ने सोवियत सेनापति मार्शल जुकोव के पास जनरल हेन्स फ्रेब्स को भेजकर सशर्त आत्मसमर्पण का सुझाव प्रस्तुत किया था। उस समय जनरल फ्रेब्स जर्मन जनरल स्टाफ का प्रधान तो था ही, किन्तु मास्को के जर्मन दूतावास में कई वर्ष तक फौजी प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने के कारण सोवियत सेना के कई बड़े अधिकारियों को जानता था।

हिटलर की मृत्यु के बाद 30 अप्रेल को आधी रात के समय वह सोवियत सेना के सदर मुकाम पहुँचा। आत्मसमर्पण सम्बन्धी जो पत्र लेकर वह जनरल जुकोव के पास गया था, उसपर गोबेल्स और वोरमैन के हस्ताक्षर थे। सोवियत सेनापति ने बिना शर्त आत्म-समर्पण कर देने का आदेश दिया। इस स्थिति से निराश होकर एक मई को रात में करीब साढे आठ बजे झूठ को सच बनाने में अन्ततः विफल गोबेल्स ने अपनी पत्नी और 6 बच्चों के साथ आत्महत्या करके अपने कलंकपूर्ण जीवन का अन्त किया।

गोबेल्ज के नाम फुसिक का पत्र :

हिटलर के इस प्रपंची प्रचार मन्त्री का स्मरण आते ही चेकोस्लावाकिया के शहीद पत्रकार और साहित्यकार फुसिक द्वारा 1940 में गोबेल्स के नाम लिखा गया खुला पत्र मेरी आंखों के सामने खुल-सा गया और उसके शब्द वातावरण में तैरने लगे। फुसिक ने गोबेल्स को लिखा था……'तुमने……चैक संस्कृति के खिलाफ जेहाद बोलने के पूर्व स्वयं अपनी जर्मन संस्कृति के खिलाफ विनाशकारी जेहाद छेड़ रखा था। तुमने महान् जर्मन वैज्ञानिकों को खदेड़ा, तुमने श्रेष्टतम जर्मन कवियों को मार भगाया या उत्पीड़न द्वारा मार डाला। तुमने महानतम जर्मन दार्शनिकों को फूँक डाला और तुमने जर्मनी चित्रशालाओं को महान् शिल्पियों के चित्रों से खाली करा दिया। तुमने जर्मन थियेटरर की कीर्ति को धूल में मिला दिया और तुमने जर्मन साहित्य के रचयिताओं में एक महान् विभूति हेनरिख हाइने का नाम साहित्य से मिटा देने का दुस्साहस किया। तुमने इसी प्रकार के नामों को भी मिटाने की कोशिश की। तुमने गेटे और शिलर की कृतियों की काट-छांट की। तुमने सांस्कृतिक क्षेत्र को व्यापक रेगिस्तान के रूप में परिवर्तित कर दिया।……लोग स्वयं इस युद्ध का अन्त करेंगे, तुम्हारी योजनाओं को विनष्ट कर देंगे और ऐसे यूरोप का निर्माण करेंगे जो आज अभी केवल कल्पना है। वह यूरोप नाजियों से मुक्त, किसी प्रकार के फासिस्टों से मुक्त और शोषण करने वाले शैतानों से मुक्त होगा। वह यूरोप स्वतन्त्र श्रमिकों और स्वतन्त्र लोगों का सच्चे अर्थों में एक नया और समाजवादी यूरोप होगा।'

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों का मूल्यांकन करने पर ज्ञात होगा कि सोवियत संघ के अतिरिक्त यूरोप के कई देशों के लोगों ने समाजवादी व्यवस्था को अपना लिया और इस प्रकार उन्होंने फुसिक की आकांक्षा को मूर्त्त रूप प्रदान किया है 8 सितम्बर, 1943 को जूलियस फुसिक को नात्सियों ने फांसी पर लटका दिया था, मगर उस अमर शहीद की भविष्यवाणी के अनुसार समाजवाद युगधर्म बन गया है।

पंजाब के क्रान्तिकारी

—देवराजसिंह

★

शहीदों की चिताओं पर, लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का, यही बाकी निशां होगा ।।

इस देश के अन्दर इतना अन्धकार है कि देश का हरेक मनुष्य जो एक्टरों के नाम तो जानता है परन्तु उन वीरों को भुला दिया है जिन्होंने अपने देश के प्रति सर्वस्व लुटा दिया।

भगतसिंह का नाम कौन नहीं जानता जिसका नाम होठों पर आते ही बूढों की भुजाएं फड़कने लगती हैं। इसी तरह चन्द्रशेखर आजाद, जिसने अपने देश को आजाद कराया जैसे—राजगुरु, कुन्दनलाल, रणवीर, सुखदेव, हंसराज आदि बहुत से क्रान्तिकारी हैं। इन्हीं क्रान्तिकारियों ने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला साण्डर्स को मारकर लिया। जब साईमन कमीशन लाहौर पहुंचा तो वहां की जनता के एक विराट जलूस का प्रबन्ध भगवतीचरण और भगतसिंह आदि की भारत सभा द्वारा किया गया था। लाला जी उस समय पंजाब के राजनैतिक नेता थे। जुलूस जब स्टेशन के समीप पहुंचा तो स्थानीय पुलिस कर्मचारियों ने उन्हें एक ऐसा सबक सिखाना चाहा जैसा कि उनके पूर्वज जनरल डायर ने 11 वर्ष पहले भारतवासियों को जलियां वाले बाग में दिया था। पुलिस जानती थी कि लाला लाजपतराय उस विराट् समूह के नेता थे। पुलिस सुपरिन्टेन्डेण्ट को आज्ञा दी कि पुलिस जन समूह को लाठी चलाकर तितर बितर कर दे। उसका यह संकेत लाला जी की ओर था। साण्डर्स के इस आदेश पर लाला जी के सिर पर लाठियों की वर्षा कर दी, और वे इस शारीरिक पीड़ा से बहुत पीड़ित हुए स्वर्ग सिधार गये। लाला जी ने मरते हुए कहा था कि ये मेरे शरीर पर लगी लाठी की चोट अंग्रेजी राज्य की अर्थी में कील बनेगी। इसका बदला भगतसिंह, जयगोपाल, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु आदि ने लिया।

जब साण्डर्स ऑफिस से निकला तब उन पंजाब केसरी क्रान्तिकारियों ने उस साण्डर्स को मोटर साईकल पर सवार होते हुए उसी समय गोली का शिकार बनाया और मारकर कालेज की दीवार को पार कर और कालेज से साईकिल उठाकर भाग निकले और पुलिस ने उनका पीछा किया किन्तु वे लाहौर से निकल चुके थे। उन्होंने अपनी वेषभूषा बदल कर पुलिस की आंखों में धूल झोंकी। पुलिस हाथ पर हाथ धरे बैठी रह गई।

ऐसे थे भारत के अन्दर एक पंजाब प्रान्त के वीर। इन वीरों को फांसी की सजा हुई। 24 दिसम्बर को फांसी पर लटकाया गया। फांसी से कुछ पहले

उन्होंने जो पत्र श्री बटुकेश्वरदत्त को और प्रोफेसर मोतीसिंह को लिखा था, उसकी ये पक्तियां मृत्यु के उस महान् साधक के आह्लाद को कितनी स्पष्टता से अपने में समाए हुए हैं—

नाव आई सी माई गोड इन हिज विजिएबल फोरम ओन दी गैलोज। अर्थात्—

मैं देख रहा हूं अपने ईश्वर को दर्शनीय रूप में फाँसी के तख्ते पर ·····।

बहुतों ने, बहुत रूप में, बहुत प्रकार से, ईश्वर को पाया है। पर मृत्यु की साधना से अपने महान् जीवन आदर्श के रूप में ईश्वर को पाने वाले भगतसिंह तो अपनी जगह, अपने रूप में अकेले ही खड़े हैं।

कविवर श्री कल्याणकुमार शशि के छन्दों में इस मृत्यु साधना का नई पीढ़ियों को सन्देश है। जैसे—

साहसी को बल दिया है, मृत्यु को मारा नहीं है।
राह ही हारी सदा, राही कभी हारा नहीं है।
बिजलियां काली घटाओं से कहां रोके रुकी हैं।
डूबते देखे भंवर ही, डूबती धारा नहीं है।
जो व्यथायें प्रेरणा दें, उन व्यथाओं को दुलारो।
जूझकर कठिनाइयों से, रग- जीवन का निखारो।
दीप बुझ-बुझ कर जला है, वृक्ष कट कट कर बढ़ा है।
मृत्यु से जीवन मिले तो, आरती उसकी उतारो॥

भगतसिंह जब छोटे ही थे तब के एक दो उदाहरण प्रस्तुत करता हूं। वे छोटे छोटे तिनके जमीन में रोप रहे थे तब भगतसिंह से उसके पिता जी कहते हैं कि भगतसिंह तुम क्या कर रहे हो। तब भगतसिंह जी अपनी तोतली जीभ से कितना सुन्दर उत्तर देते हैं कि पिता जी मैं अपने खेत में बन्दूकें बो रहा हूँ। पिता जी को उसके उत्तर ने स्तब्ध कर दिया।

एक दूसरा और उदाहरण है कि जब भगतसिंह जी चौथी श्रेणी में पढ़ते थे विद्यार्थियों से पूछते थे कि तुम बड़े होकर क्या करोगे ? कोई कहता नौकरी करूंगा, तो कोई कहता खेती करूंगा, तो कोई कहता दुकानदारी। उनकी सब बातें सुनते रहते, पर जब कोई कहता कि मैं शादी करूंगा तो भगतसिंह जी जोश में आकर कहते कि शादी करना क्या बड़ा काम है। मैं सारी जिन्दगी विवाह नहीं करूगा। मैं तो अंग्रेज़ों को देश से निकालूँगा। ये थे भगतसिंह जी के बचपन के विचार ऐसे वीरों के प्रति कवि अपने शब्दों में कहता है कि -

ऐसे वीर महान जगत में रोशन अपना नाम करेंगे।
इस भारत भूमि की स्वतन्त्रता के कारण जियेंगे, मरेंगे॥

अमेरिका में भी लोकतंत्र नहीं है

—वसन्तराव होलकर
महाराष्ट्र

❀

प्रेसिडेन्ट फ़ोर्ड को समझना अब कठिन हो गया है। अब तक की राजनयिक मान्यता यह रही है कि कोई राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र के मामले में प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप नहीं करता है। अमेरिका की विदेश नीति को तो यह शिष्टाचार उसको कभी भी पसन्द नहीं आया है। उसने हमेशा दूसरे देशों के मामले में किसी न किसी तरह टांग अड़ाई है। वियतनाम, इस्रायल-अरब, कोरिया आदि देश अब साम्राज्यवादी नीति के शिकार हो रहे थे। उसने बंगला देश में पाक द्वारा पाशविक अत्याचार की निन्दा तो इसलिये नहीं की कि उसने यह पाकिस्तान का आन्तरिक मामला समझा था—मगर भारत में शान्ति के लिए, अनुशासन लाने के लिए प्रयुक्त आपात्कालिक घोषणा को अपनी विदेश नीति के तहत माना कि वे इसपर टिप्पणी कर सकते हैं।

17 सितम्बर को एक पत्रकार-सम्मेलन में उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया था कि उन साठ करोड़ लोगों ने वह सब कुछ खो दिया है जो उन्हें 1940 के आसपास प्राप्त हुआ था (उनका तात्पर्य 1947 से था—जिस वर्ष भारत आजाद हुआ था)। यह एक खेदजनक घटना है तथा आशा करता हूं कि शीघ्र ही भारत में लोकतन्त्र की प्रक्रियाओं की पुनः स्थापना होगी। फोर्ड द्वारा प्रयुक्त लोकतन्त्र' की परिभाषा क्या होगी—यह जानना कठिन है। सी. आई. ए. ने जिसके वे जबर्दस्त हिमायती बन रहे हैं चिल्ली में लोकतन्त्र को क्यों उखाड़ फेंका। सी. आई. ए. अपने ही लोकतन्त्रवादी देश में सरकार के झण्डे के नीचे अपने ही नागरिक का पीछा करती है—हर सम्भव उसे 'ठीक' रास्ते पर लाने की कोशिश करती है। यह वही लोकतन्त्री देश है जहां निकसन जैसे व्यक्ति वाटरगेट स्कैण्डल में फंसने के बावजूद इस्तीफा देने को झूठ बोल बोलकर टालमटोल करते रहे। क्या यह वही लोकतन्त्री फोर्ड प्रशासन है जिसने 'चीन' के सन्दर्भ में कुछ नहीं कहा—जहां की जनता तानाशाही एवं यातनाओं के बीच मानवाधिकारों से वंचित है ? अमेरिका में बहुत थोड़ा लोकतन्त्र शेष है। फिर उसे क्या हक है किसी विकासशील देश के प्रशासन की निन्दा करे जहां लोकतन्त्र के विकास के लिए ही जनता में अनुशासन, आत्मविश्वास लाने का प्रयत्न किया है। अमेरिका को भारत से सम्बन्ध सुधारने ही चाहियें जिससे उप महाद्वीप में शान्ति स्थापित होने में मदद मिल सके।

दीपावली (दिवाली)

आ गई सौभाग्यशाली यह दिवाली आ गई ।
प्रेम की प्याली निराली शान वाली आ गई ॥१॥

पुण्य कार्त्तिक की अमावस्या सदा स्मरणीय है ।
आज जो काली निशा में जगमगाहट ला गई ॥२॥

युक्त ही है सर्वथा फैला अंधेरा दूर हो ।
दीपकों की ज्योति इससे सब दिलों को आ गई ॥३॥

भव्य लक्ष्मी आ रही है आज ही सबके यहां ।
दीन दिल की भावना भी देख लो सरसा गई ॥४॥

बंट रहे मिष्ठान्न, खीलें खेल कूद हो रहीं ।
हास वा उल्लास शुभ अभिलाष आशा छा गई ॥५॥

प्रेम से संयुक्त हो खा पी रहे हैं सब जने ।
वैश्य जन की श्री विभूति श्रेष्ठ शोभा पा गई ॥६॥

द्यूत या अश्लील बातें आर्य तो करते नहीं ।
वेद का सिद्धान्त मानो बात यह समझा गई ॥७॥

वह दया आनन्द नामी आज योगी धन्य है ।
हर्ष से विष पान कर जिसको अमर छवि छा गई ॥८॥

तुच्छ दीपों से भला काली कराली यह निशा ।
क्या मिटेगी इस लिये ज्वाला धधकती आ गई ॥९॥

देश अथवा धर्म पर बलि हेतु जल जाओ खड़े ।
कह रही यह दीपमाला क्या समझ में आ गई ॥१०॥

—आचार्य विद्यानिधि
महाविद्यालय, गुरुकुल विद्यापीठ

अम्बाला से आंखों देखी रिपोर्ट

"अब युग है कि आर्यसमाजी अपने आप को सुधारें"—आचार्य विष्णुमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का अधिवेशन समाप्त

अनेक व्यक्ति आर्यसमाज से निष्कासित

अम्बाला कैन्ट—14 सितम्बर। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के एक बृहदाधिवेशन में उपकुलपति श्री आचार्य विष्णुमित्र जी ने आर्यसमाजियों से अपील की कि वे सच्चे अर्थों में आर्य समाजी बनें। वे गुटवादिता के चक्कर से ऊपर सबको साथ लेकर चलें। उन्होंने आर्यसमाज में व्याप्त विवादों की कड़ी निन्दा की। उन्होंने सभी वर्गों में आर्यसमाज का प्रचार व प्रसार करने का संकल्प लेने का उद्घोष किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रमुख कार्यालय दयानन्द मठ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सौंप देने की अपील की। उन्होंने पदों पर आने को उत्सुक व्यक्तियों की कड़ी भर्त्सना करते हुए कहा कि पद तो स्वत: उसी को मिल जाता है जो काम करता हुआ सब से आगे निकल आता है।

सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य इस सभा का तीन राज्यों में पृथक् पृथक् बंटवारे की पुष्टि कराना तथा चुनाव सम्पन्न कराना था। बंटवारा क्यों हुआ—यह तो विवादास्पद प्रश्न है। मगर आर्यसमाज बंटवारे के पश्चात् क्या प्रगति करेगा, उसकी प्रगति का क्या स्वरूप होगा—यह चिन्तनीय है। आर्य प्रतिनिधि सभा अनेक वर्षों तक हाईकोर्ट में मुकद्दमेबाजी में फंसी पड़ी थी जिसका अन्त अट्ठारह मास बाद पानीपत का चुनाव था। उस चुनाव में श्री स्वामी इन्द्रवेश प्रधान चुने गए थे। पानीपत के उस चुनाव ने अपना एक विस्तृत दायरा बना लिया था। नई दिल्ली के प्रमुख अखबार उसे अपने प्रमुख कालमों में स्थान देने लगे थे। चुनाव हो गया था। किन्तु वर्तमान अधिवेशन तक आर्यसमाज की प्रगति के एक अंश की भी वृद्धि नहीं हुई थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि जहां इन नवयुवकों ने (स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश) अनुभवी व्यक्तियों के अनुभवों का फायदा नहीं उठाया वहां यह भी कारण था कि वे दलगत राजनीति के कीचड़ में फंस गए। इस अधिवेशन में उस गुट की काफी निन्दा की गई। श्री वीरेन्द्र, मन्त्री आ० प्र० नि० सभा पंजाब ने तो उन्हें तथा उनके साथियों को धोखा देने वाला बताया। श्री वीरेन्द्र ने अपने पंजाबी भाईयों के वोटों से उनको जिताया था। श्री शालवाले, सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा ने उन्हें फटकारा और ऐसे अन्य गुमराह व्यक्तियों को आर्यसमाज के विकास एवं प्रसार में बाधा बनने के विरुद्ध चेतावनी दी। श्री शाल वाले ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच घोषणा की कि आज से कुछ वर्षों के बाद ही विश्वमार्यम्' का हमारा स्वप्न साकार होने वाला है। श्री शाल वाले ने लोगों से सामाजिक बुराईयों से दूर रहने की अपील की। उन्होंने जयप्रकाश नारायण के यज्ञोपवीत तोड़ो आन्दोलन की निन्दा करते हुए हर्ष प्रकट किया कि उन्होंने अपना आन्दोलन वापिस ले लिया है। बंटवारे का प्रस्ताव प्रो०

शेरसिंह ने रखा। इस विभाजन में यह प्रस्ताव है कि आ० प्र० नि० सभा पंजाब की चल सम्पत्ति का 35% हरयाणा, 35% पंजाब, 30% देहली राज्य को मिलेगा। तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं का अधिकार क्षेत्र उनकी अपनी राजकीय सीमाओं के आधार पर होगा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा यू० पी० की अन्य समाधीन संस्थाओं के संचालन के लिये तीनों प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों की समिति नियुक्त की जायेगी। प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया। प्रस्ताव का विरोध करते हुए भालोट के श्री पं० रामचन्द्र ने इसे हरियाणा वासियों के लिए धोखा बताया। उनके भाषण के बीच में मच के नीचे अनेक व्यक्तियों ने शेम-शेम' और 'मुँह काला करो' के नारे लगाए। पं० रामचन्द्र विभाजित प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री थे। सम्मेलन में उपस्थित लगभग एक हजार प्रतिनिधियों ने प्रस्ताव के पक्ष में मत दिये। एक व्यक्ति ने विपक्ष में मत दिया।

एक प्रस्ताव जिसे आचार्य विष्णुमित्र जी ने पेश किया, सर्वसम्मिति से पास हुआ जिसके अन्तर्गत हरयाणा प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों के चुनाव के लिये एक समिति नियुक्त की जायेगी। समिति के सदस्यों की संख्या नौ रहेगी। इस समिति में महासभा के महासचिव श्री महेश्वरसिंह जी मलिक भी शामिल हैं। हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पानीपत के श्री दिलीपसिंह आर्य चुने गये हैं। अन्य पदाधिकारियों की घोषणा बाद में की जायेगी।

—धीरेन्द्रकुमार विद्यालंकार
विशेष प्रतिनिधि द्वारा प्रस्तुत

मेघ

—श्री नकुलचन्द्रदेव भगत
सुन्दरगढ़, उड़ीसा

ओ काले मेघ! हे मेघ! बिन्दु बरसा,
कृषकों की तू प्यास बुझा,
वसुधा की वनस्पतियों में,
सुमधुर नूतनता ला,
ओ काले मेघ! हे मेघ! बिन्दु बरसा।

नील वर्ण है तनु तुम्हारा,
फिर भी तू है जग का प्यारा,
मेघराज है नाम तुम्हारा,
वसुधा को बना दो सोने की रखवाला।
ओ काले मेघ! हे मेघ! बिन्दु बरसा।

करते हैं गुणगान तुम्हारे,
सुन लो हे याचक के प्यारे,
मिटने दो मेरे मन की ज्वाला,
बरसने दो अपनी पीयूष धारा,
ओ काले मेघ! हे मेघ! बिन्दु बरसा।

CROCODILE TEARS

By—C. B. L. Asthana
M. A. (English & History)
former Head of the Deptt. of English
A. I. J. H. M. College, Rohtak
now Lecturer in English,
Gurukul Bhainswal Kalan.

Nature's ways were believed to be mysterious by man before the advent of modern scientific development. But the ways of politicians, diplomats and statesmen continue to be mysterious and seem to be growing more and more shrouded in mystery in spite of the marvellous progress made byscience in the various spheres of life. U. S. A. claims to be the oldest and the most powerful democracy of the present day world. Yet we find that she has been doing her level best to weaken and to uproot demo- cratic governments and to help such powers as aimed at crushing democratic opinion under their feet.

The way U. S. A. tried her best to crush North Vietnam and to uphold the puppet government of president Thieu in South Vietnam is well known to every reader of modern history. But for the brave and stubborn struggle for freedom carried on by the Vietnamese people, U. S A. would have been happy to ruin that country completely and to keep it under her heels in the name of her puppet.

Similarly the popular government of the Chilean people was overthrown by underhand methods employed by the C. I. A. under the tacit approved and active support of the Government of U. S. A. And only the other day president Ford very proudly declared that his government would not refrain from toppling governments in other countries if the interests of his country warranted such an action. Is this not the height of hypocrisy to uphold the banner of democracy all over the world and yet suppress the will of the people with an iron hand when-

ever the interests of U. S. A seems to warrant such an action in the opinion of her worthy president.

Of late there has been another declaration made by the U. S. president who tried to shed crocodile tears over the sad plight of democracy in India.

In order to create a favourable climate in Peking which President Ford plans to visit this November, he took the opportunity of cancelling his proposed visit to New Delhi on the plea that democracy was in a bad way in India these days and he prayed for an early dawn of freer days in this country when his excellency might deem it fit to honour her with his kind visit

It is hardly three months since the declaration of emergency was made in India and only a few constitutional rights were suspended temporarily for the restoration of internal peace and security. And no visitor from any foreign country is debarred from visiting India and finding out for himself what things are actually like here. Yet very responsible heads of state like the U S. president are led astray to make such irresponsible remarks about a sister democracy which is much bigger in size than U. S. A herself.

What is still more mysterious is the feat that U. S. A. herself has been keeping emergency in force since 1933 when president Roosevelt declared it under the pressure of a world wide slump in the economic sphere. During his short period of office as U. S President Mr. Ford has himself vetoed as many as thirty-six bills passed by the House of Representatives. The condition of the coloured citizens of U S. A. is far worse than that of their white brethren in that country. Again the U. S. Government actually assists the white regime in South Africa to continue with her in-human policy of Apartheid against the original residents of South Africa. Keeping these things in view one feels that U. S. anxiety for freedom and democracy in India is nothing short of shedding crocodile tears.

सितम्बर मास के संक्षिप्त समाचार

विदेशीय—

❀ संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति फोर्ड पर 17 दिन के अन्दर दो बार घातक हमले हुए। आक्रमणकारी दोनों ही बार महिलाएं थीं। किन्तु सौभाग्य से फोर्ड महोदय बाल बाल बच गए।

❀ पश्चिम एशिया में मिश्र तथा इजराइल के बीच 'साइनाई" समझौता सम्पादित हुआ जिसपर जेनेवा में दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिए। इसके अनुसार 3 वर्ष तक मिश्र तथा इजराइल युद्ध से अलग रहेंगे और इजराइल "साइनाई" के तेल क्षेत्र को खाली कर देगा तथा अपनी सेनाएं भी और पीछे हटा लेगा। किन्तु दोनों देशों की सेनाओं के द्वारा खाली किए गये प्रदेश में अमेरीकी विशेषज्ञ नियुक्त रहेंगे जो किसी संभावित आक्रमण की सूचना सम्बन्धित पक्षों को तुरन्त देंगे।

❀ पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन में सेना को सतर्क कर दिया गया है तथा देश में आपत्काल की घोषणा कर दी गई है।

❀ स्पेन के शासक जनरल फ्रैन्कों ने विश्वमत की अवहेलना करके 5 नवयुवकों को प्राणदण्ड दे दिया जिनपर कुछ अधिकारियों को मारने का आरोप था। समस्त यूरोप तथा विश्व के प्रमुख नगरों में इसका घोर विरोध किया गया।

❀ पैट्रोल निर्यात करने वाले देशों ने पैट्रोल के मूल्य को 10% प्रतिशत बढ़ा दिया है। इसके कारण भारत को एक अरब एक करोड़ रुपया और अधिक, तेल आयात पर व्यय करना होगा।

देशीय—

❀ राष्ट्रपति के विशेष आदेश के द्वारा भूमिहीन किसानों तथा मजदूरों के पुराने ऋण रद्द घोषित कर दिए गए। भूमिहीन मजदूरों तथा हरिजनों एवं अनुसूचित जाति के लोगों को भारत सरकार तथा राज्य सरकार की ओर से मकान बनाने के लिए भूखण्ड दिए गए हैं तथा उन्हें मकान निर्माण के लिए आर्थिक सहायता भी दी गई है।

❀ देहाती क्षेत्रों में नये बैंक खोले गए हैं। ऐसा करने से किसानों को सस्ती दर पर ऋण देकर उन्हें साहूकारों के चंगुल से छुड़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

❀ नगरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़े लिखे बेरोजगार नवयुवकों को बैंकों से ऋण दिला कर निजी धन्धे शुरु करने को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

❀ विशेष अध्यादेश द्वारा राष्ट्रपति जी ने स्त्रियों को पुरुषों के समान कार्य के लिए समान वेतन देना अनिवार्य कर दिया है।

❀ कई राज्यों - जैसे उत्तर प्रदेश में—राज्य सरकारों में दहेज विरोधी नियमों को सख्ती से लागू करने का आदेश जिला अधिकारियों को दे दिया है। बिहार, उत्तर प्रदेश तथा उड़ीसा के बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए प्रधान मन्त्री के रक्षा कोष धन तथा सामान निःशुल्क भेजने के आदेश डाकघर तथा रेल विभाग को दे दिए गए हैं तथा जनता से उदारतापूर्वक सहायता की अपील की गई है।

❀ भारत की जनता ने अमेरिकी प्रेसिडेन्ट फोर्ड के वक्तव्य पर रोष प्रकट किया है कि उन्हें क्या अधिकार है कि वे भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करे ?

खेल जगत्—

❀ भारत ने डेविड कप ईस्ट ज़ोन चैम्पियनशिप के प्रथम मैच में जो अमृतसर में खेले गए थे थाईलैण्ड़ को 5—0 से पराजित कर दिया। अब भारतीय टैनिस खिलाड़ियों का मुकाबला जापान से होगा।

❀ आज ही यानी 30-9-75 को भारत की हॉकी टीम अजित्पाल सिंह के नेतृत्व में न्यूजीलैण्ड के 3 सप्ताह के दौरे पर सिडनी रवाना हो गई।

❀ नवाब मंसूरअली खां पटौदी प्रथन श्रेणी तथा टेस्ट क्रिकेट-जगत् से रिटायर हो गए हैं। अब टेस्ट के कप्तान श्री वेंकट राघवन होंगे। बम्बई क्रिकेट क्लब के कप्तान श्री सुनील गावस्कर होंगे।

❀ श्री रामप्रकाश मेहरा अखिल भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के प्रेसिडेन्ट निर्वाचित हुए हैं। वे प्रति वर्ष चुनाव लड़कर तीन वर्ष तक प्रधान रहेंगे।

❀ एम. सी. सी. लन्दन की टेस्ट टीम 1976-77 में भारत पहुँच रही है। तिथि की घोषणा बाद में की जायेगी।

❀ दशहरे के अवसर पर गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कलां में खेलों का लिशाल आयोजन हो रहा है। क्रिकेट, कबड्डी, वॉलीबाल, शूटिंग व एथलेटिक्स की अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं।

स्वाध्याय के योग्य पुस्तकें

१- स्थावर जीव-मीमांसा (हिन्दी)
(वृक्षों में जीव है)
लेखक श्री महामुनि जी दर्शनाचार्य — 2 रुपये

२- योगिराजस्य श्रीकृष्णस्य चरितम् (संस्कृत)
लेखक श्री आचार्य विष्णुमित्र जी — 2 25 रुपये

३- श्री जवाहरलाल नेहरो चरितम् (संस्कृत)
लेखक श्री आचार्य विष्णुमित्र जी — 3.25 रुपये

४- मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रस्य चरितम् (संस्कृत)
लेखक श्री आचार्य विष्णुमित्र जी — 2.50 रुपये

५- संक्षिप्ते रामायण महाभारते (संस्कृत)
लेखक श्री आचार्य विद्यानिधि जी

६- अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह का संक्षिप्त जीवन चरित्र (हिन्दी)
लेखक श्री कपिलदेव जी शास्त्री — तीस रुपये सैंकड़ा

७- आर्यसमाज के स्तम्भ भक्त फूलसिंह का विस्तृत जीवन चरित्र (हिन्दी)
लेखक श्री आचार्य विष्णुमित्र जी — 5 रुपये

८- इन्दिरा चरितम् (संस्कृत)
लेखक श्री विष्णुमित्र जी — 3.50 रुपये

पुस्तकों के मूल्यों के अतिरिक्त पोस्टेज का व्यय भी ग्राहक को देना होगा।

प्राप्ति स्थान—

मैनेजर, विद्यापीठ बुक स्टोर
गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत)
पिन कोड 124409

Approved for Libraries by D. P. I'S Memo No. 3/44—1961—B. Dated 8-1-62

Approved by the Chairman, Central Library Committee, Panjab Vide their Memo No. PRD-Lib.-258-61/1257-639 dated Chandigarh, the 8th Jan. 1962.

For—

1. The Secretary to Government, Punjab, Housing and Local Government Department, Chandigarh.
2. The Director of Panchayats, Chandigarh.
3. The Director of Public Instruction, Panjab Chandigarh.
4. The Deputy Director Evaluation, Development Department Panjab Chandigarh.
5. The Assistant Director, Young Farmers and Village Leaders, Development Department, Panjab Chandigarh.
6. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Jullundur.
7. The Assistant Director of Panchayats, Rohtak.
8. The Assistant Director of Panchayats, Panjab Patiala.
9. All Local Bodies in the Panjab.
10. All District Development and Panchayat Officers in the State.
11. All Block Development and Panchayat Officers in the State.
12. All District Public Relations Officers in the State.

'समाज सन्देश' —डाक घर गुरुकुल भैंसवाल कलां

Regd. No. P/RTK-21

सदस्य संख्या

नाम पुस्तकालय

स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,

पत्रालय जि० सहारनपुर (यू. पी.)

जिला

व्यवस्थापक श्री धर्मभानु गुरुकुल भैंसवाल ने नेशनल प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर कार्यालय समाज सन्देश गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत) से मुद्रित तथा प्रकाशित किया ।